गोरखनाथ विरचित
दुर्लभ
शाबर
मंत्र
तांत्रिक बहल

गुरु गोरखनाथ विरचित

दुर्लभ शाबर मंत्र

शाबर मंत्र, यंत्र और टोटकों पर आधारित ऐसी प्रामाणिक पुस्तक जिसकी सहायता से आप अपनी हर समस्या का समाधान स्वयं कर सकते हैं।

प्रस्तुति : तांत्रिक बहल

राजा पॉकेट बुक्स
330/1, बुराड़ी, दिल्ली–110084

नवीन संस्करण : 2016

● दुर्लभ शाबर मंत्र : तांत्रिक बहल

ISBN : 978-81-849-1057-5

विशेष सूचना : प्रस्तुत पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को प्राचीन भारतीय ऋषि-मुनियों और साधकों द्वारा अपनाई गई तंत्र (टोटका) विद्या की जानकारी देना मात्र है। किसी भी प्रकार की साधना अथवा टोटका सिद्ध करने के लिए पाठक सम्बंधित विषय के विशेषज्ञों से मार्गदर्शन अवश्य ले लें। अल्पज्ञान के आधार पर किए गए किसी भी 'सिद्धि कर्म' में अनिष्ट अथवा असफलता के लिए प्रकाशक अथवा लेखक जिम्मेदार नहीं होंगे। हम आशा करते हैं कि पाठक प्रस्तुत पुस्तक का दुरुपयोग न करके, इसका प्रयोग समाज के लाभ और कल्याण के लिए ही करेंगे।

प्रकाशक :

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, मेन रोड, बुराड़ी, दिल्ली-110084

फोन : 27611410, 27612036, 27612039,
65172310, 32938774, 27611227

ई-मेल : sales@rajcomics.com

वेबसाइट : www.rajapocketbooks.in

शोरूम (होलसेल व रिटेल बिक्री केंद्र)

राजा पॉकेट बुक्स

112, फर्स्ट फ्लोर, दरीबा कलां, दिल्ली-110006

फोन : 23251092, 23251109, 32500860

मुद्रक :

राजा ऑफसेट

1/51, ललिता पार्क,

लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

मूल्य : ₹ 110

लेखकीय

गुरु गोरखनाथ शाबर मंत्रों के रचयिता थे। ये कितने शक्तिशाली थे, इसका प्रमाण रामायण में गोस्वामी तुलसीदासजी देते हैं——

प्रगट प्रताप महेस प्रतापू।
कलि विलोकि जगहित हर गिरिजा।।
साबर मंत्र जाल जिन सिरजा।।

महाभारत का युद्ध अभी प्रारंभ नहीं हुआ था, भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को परामर्श दिया कि अगर वह महाभारत के युद्ध में विजयी होना चाहता है, अगर उसकी इच्छा मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की है तो वह भगवान शिव की साधना करे।

गोरखनाथजी शिव के अंशावतार थे। भगवान शिव के अवतार गोरखनाथ और उनके द्वारा प्रदत्त शाबर मंत्र जीवन में सफलता, तंत्र साधनाओं में सिद्धि और जीवन का सुख, सौभाग्य प्राप्त करने के लिए शाबर मंत्र साधना से श्रेष्ठ और कोई माध्यम हो ही नहीं सकता है।

गोरखनाथ ने क्लिष्ट संस्कृत के गूढ़ अर्थ वाले मंत्रों का सरलीकरण शाबर मंत्र के रूप में किया था, लेकिन समय के साथ-साथ अवैज्ञानिक ढंग से शब्दों में परिवर्तन होता गया, फलतः शाबर मंत्र एक ढकोसला बनकर रह गए।

इसी बात को देखकर तांत्रिक बहल ने नाथ संप्रदाय, औघड़ों, अघोरियों, अवधूतों और ओझाओं के समीप रहकर अब तक गोपनीय रहे प्राचीन दुर्लभ शाबर मंत्रों को प्राप्त किया और उन्हें पुनः इस पुस्तक में जनहितार्थ ज्यों-का-त्यों प्रस्तुत कर दिया।

तांत्रिक बहल का एक और सार्थक प्रयास जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए, कम ही रहेगी।

गोरखनाथ द्वारा प्रणीत शाबर मंत्र जो सहज, सरल और सुगम तो हैं ही, साथ ही चमत्कारी और तुरंत फलदायक शक्ति से ओत-प्रोत भी हैं।

दो शब्द

मंत्र वह है, जिसका सीधा सम्बंध किसी दैवीय शक्ति से हो और जिसका जाप करने पर साधक को उसकी इच्छा के अनुसार फल प्राप्त हो सके। आकर्षण, विकर्षण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन, विद्वेषण, मारण के लिए अनेक प्रकार के मंत्रों की शृंखला तांत्रिक प्रकरणों में है।

गुरु गोरखनाथ विरचित मंत्र-यंत्र केवल जन कल्याण के लिए हैं। आम बोलचाल की भाषा में इन्हें **शाबर मंत्र** कहा जाता है।

गुरु गोरखनाथ ही एकमात्र ऐसे शिष्य थे, जिन्हें अपने गुरु से भी अधिक शक्ति और प्रसिद्धि प्राप्त हुई थी।

गुरु गोरखनाथ अपने गुरु को सावधान करते हुए कहते हैं—**"जाग मछेन्द्र गोरख आया।"** यह सुनकर गुरु मछेन्द्रनाथ को सावधान होना पड़ा था।

गुरु गोरखनाथ विरचित शाबर मंत्रों की शक्ति असीमित है। शाबर मंत्र अणु की तरह काम करते हैं।

शाबर मंत्र इतने सरल होते हैं कि इनका प्रयोग साधारण पढ़ा-लिखा साधक भी कर सकता है। ये सरल, सुगम और सहज होते हुए भी स्वयं में अनेक प्रकार की चमत्कारी शक्तियां संजोए होते हैं।

प्रत्येक साधक को तंत्र की शक्ति प्राप्त करने के लिए शाबर मंत्र साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

स्मरण रखें, शाबर मंत्र की शक्ति प्राप्त होने के पश्चात आध्यात्मिक शक्तियां स्वयं जाग्रत होती हैं। आप एक बार शाबर मंत्र साधना करके देखें।

—प्रकाशक

अनुक्रमणिका

तंत्र की खोज, सत्य की खोज

यह कैसे आश्चर्य की बात है कि मैंने अपनी पुस्तक के प्रारंभिक अध्याय का नाम 'मुझे भी कुछ कहना है', न रखकर 'तंत्र की खोज, सत्य की खोज' रखा है। इसका कारण यह है कि मुझे जो भी कहना है, तंत्र के बारे में ही कहना है और वास्तव में तंत्र सत्य का ही दूसरा स्वरूप है। यही विचार कर मैंने अपनी पुस्तक के प्रथम अध्याय का शीर्षक **'तंत्र की खोज, सत्य की खोज'** रखा, तंत्र का दूसरा स्वरूप शक्ति भी है। तांत्रिक शक्ति का पुजारी होता है और साधु शिव का अनुयायी होता है। बाहरी रूप देखने पर दोनों अलग-अलग प्रतीत होते हैं, पर भीतर से एक ही हैं। शिव और शक्ति दोनों एक ही हैं (देखें अर्द्धनारीश्वर रूप पृष्ठ 9 पर।)।

शक्ति की खोज हजारों वर्ष से चल रही है। आदि मानव को सर्वप्रथम स्त्री में सृजन शक्ति का अनुभव हुआ, फिर वह सृजन और संहार के मध्य शक्ति के खेल को जानने-पहचानने और उसे वश में करने में लग गया। तृणमूल को जन्म देती शाकंभरी यानी पृथ्वी, शक्ति के उपासकों की परंपरा में अनादिकाल की देन है।

वैदिक काल में शक्ति की परिभाषा बदल गई। समाज पुरुष प्रधान बन गया, लेकिन देवताओं की मां अदिति, अनंत, निबंध शक्ति की परिभाषा बनी रहीं। उन्होंने आदित्यों को जन्म दिया। इंद्र, वरुण, मित्र, अर्यमन, भग, दक्ष, रुद्र जैसे प्रतापी देवता उनके पुत्र थे। कहा गया है कि हर जन्म लेने वाला प्राणी अदिति की ही संतान होगा।

उपनिषदों में स्त्री को यज्ञ की अग्नि माना गया है। वही वेदी भी है और

समिधा भी, जो अंत में सृजन करती है। शक्ति विश्व में निरंतर बदलाव लाती रहती है। जब वह जागती है तो उसे पहला विचार आता है कि मैं ब्रह्म हूं। यह सात्विक अवस्था है। फिर उसमें शक्तियों को दिखाने की इच्छा पैदा होती है। यह राजसी अवस्था है। यहां चेतना दो भागों में बंट जाती है—अनंत चेतना और अनंत बल। फिर जीव का सृजन होता है।

शक्ति को तंत्र शब्दावली में महामाया कहा गया है। रामकृष्ण परमहंस के अनुसार जो कुछ भी प्रकट नजर आता है, वह आद्याशक्ति की ऊर्जा है। ब्रह्म और उसकी शक्ति में कोई अंतर नहीं। महामाया ब्रह्म को घेरे रहती है। जब वह आवरण हट जाता है तो उसके मूल स्वरूप को हम जान लेते हैं और तब 'मैं ही तुम और तुम ही मैं हूं' की स्थिति पैदा हो जाती है। शैव मतों में चरम सत्य को शक्ति के साथ जोड़ा गया। जिससे शाक्त संप्रदाय का जन्म हुआ। ये मुख्य देवताओं की शक्तियां हैं, जो महान शक्ति देवी की सहायता करती हैं।

प्राचीन काल में देवी के विभिन्न रूपों की तीन धाराएं बनीं—पहली, जिसमें उमा-पार्वती थीं। दूसरी, जिसमें दुर्गा थीं और तीसरी, जिसमें काली थीं। दुर्गा मूलतः युद्ध की देवी चंडिका थीं। बाद में वे भी शिव पत्नी और अनाज की देवी बन गईं। कुछ लेखकों ने काली को उमा-दुर्गा-पार्वती के साथ जोड़ दिया। काली पहले अग्नि की सात जीभों में से एक थीं, इसलिए उन्हें पार्वती की काली मांसपेशियों से उद्भूत देवी के रूप में लिया गया। शक्ति-तंत्र संप्रदाय जैसे-जैसे बढ़ा, काली का स्वतंत्र विकास होता गया। उनके साथ महाविद्याएं, नित्याएं, मातृकाएं, नायिकाएं और योगिनियां भी जुड़ती गईं। देवी तारा के आठ रूपों—तारा, उग्रा, महोग्रा, बज्र, नीला, सरस्वती, कामेश्वरी और भद्रकाली को भी काली के साथ जोड़ा गया।

तंत्र मार्ग में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण दस महाविद्याएं हैं, जिनके नाम हैं—काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला। ये शक्ति के दस रूप हैं। शक्ति असंख्य रूपों की साधना विद्या कहलाती है। सबसे विशिष्ट और अद्भुत है छिन्नमस्ता, जिसमें देवी के सृजनात्मक एवं संहारात्मक भाव एक साथ प्रकट होते हैं। दैत्यों का नाश करने के लिए दुर्गा ने 64 योगिनियों और नौ कात्यायनियों का सृजन किया था। वैदिक युग की वैरोचनी, कन्याकुमारी और
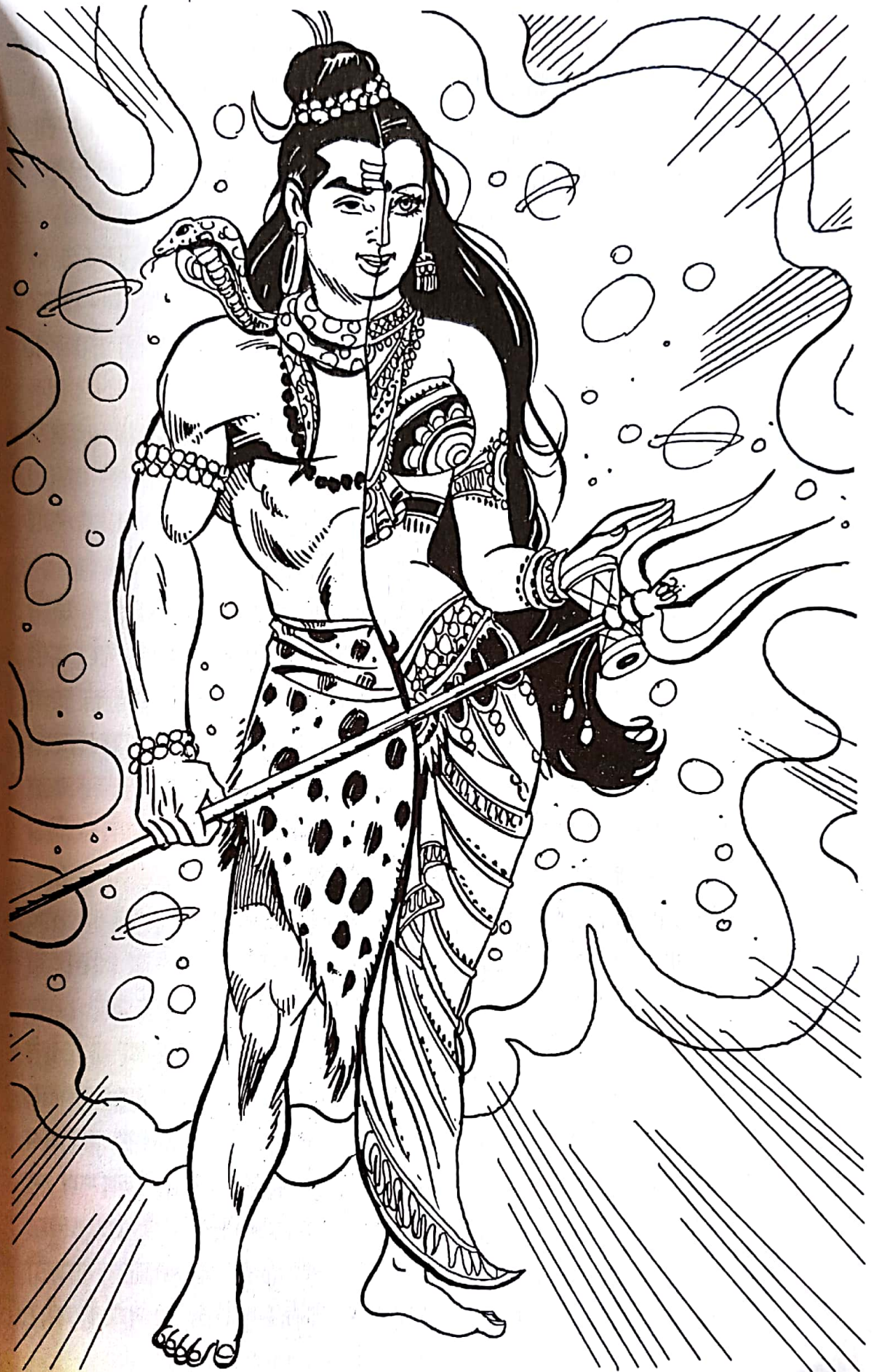
कात्यायनी नामक देवियां बाद में बौद्ध और हिन्दू धर्मों में सम्मिलित कर ली गईं। मत्स्य पुराण में देवी के 108 नाम और कूर्मपुराण में उनके 1000 नाम आए हैं। दुर्गा के नौ नाम इस प्रकार हैं—शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चंद्रघंटा, कूष्मांडा, स्कंदमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदात्री। इन नामों से उनके कार्यों का पता चलता है। उनके नौ अन्य नाम हैं—उग्रचंडा, प्रचंडा, चंडोग्रा, चंडनायिका, चंडा, चंडावती, चंडरूपा, अतिचंडिका और रुद्रचंडा। ये नाम उनके तेवरों को दर्शाते हैं। हरिवंश पुराण में कई देवियों की चर्चा है। उनके नाम हैं—कालरात्रि, निद्रा, कात्यायनी, कौशिकी, विरूपा, विरूपाक्षी, विशालक्षी, महादेवी, कौमारी, चंडी, दक्षी, शिवा, काली, भयदा, चैताली, शकुनी, योगिनी, भूलदात्री, कूष्मांडी आदि। ये तांत्रिक देवियों के रूप में भी जानी जाती हैं।

आज शक्ति बल के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित है। बल स्वयं कार्य नहीं करता। यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह अपने बल को विध्वंस की तरफ ले जाता है या निर्माण की तरफ। साधु का बल है उसकी साधुता, योगी का बल है नियम। वैरागी का बल है त्याग। बल विघटनकारी न हो, उसे सही दिशा मिले, इसके लिए आवश्यकता होती है बुद्धि की। बुद्धि ही बल को कार्य की दिशा में लगाती है, लेकिन बुद्धि ऐसी चाहिए, जो किसी साधु द्वारा दीक्षित हो। 'विदुर नीति' में विदुर राष्ट्र चलाने के लिए पांच प्रकार के बल की बात धृतराष्ट्र को संबोधित करते हुए बताते हैं—बाहु बल, अर्थ बल, साधु-चरित्र मंत्री बल, परम्परा बल तथा प्रज्ञा बल। यह प्रज्ञा बल बुद्धि बल ही है।

तंत्र साधना हो या गृहस्थ की उपासना, अर्चना अथवा साधु का हठयोग या तपस्या, सबका एक ही उद्देश्य होना चाहिए। वह है—सेवा। सेवा से उत्तम कर्म और दूसरा नहीं है, तभी तो कहा गया है—सेवा परमो धर्मः। एक बार किसी ने एक संत से प्रश्न पूछा कि लोग पैसे को इतना महत्त्व क्यों देते हैं, क्या धर्म का फल धन है? इसके उत्तर में संत ने कहा कि धर्म का फल धन नहीं, धर्म का फल सेवा है, धर्म का फल पदार्थ नहीं, जन-कल्याण है। धन से पदार्थ तो खरीदे जा सकते हैं, परंतु सुख नहीं। जैसे—धन से बिस्तर तो ला सकते हैं, किंतु नींद नहीं, धन से भोजन तो लाया जा सकता है, किंतु भूख नहीं, धन से ग्रंथ तो ला सकते हैं, लेकिन ज्ञान नहीं लिया जा सकता। धन ही सब कुछ नहीं है, इससे आगे भी बहुत कुछ है। जहां हमारी पहुंच नहीं है और

धन के माध्यम से पहुंच भी नहीं सकते। आज व्यक्ति धन के माध्यम से धर्म को खरीदना चाहता है। जैसे कोई अबोध शिशु धन के माध्यम से खरीदे गए खिलौने के साथ खेलकर आनंद का अनुभव करता है। उसी प्रकार हम सांसारिक पदार्थ प्राप्त कर आनंद का अनुभव करते हैं, किंतु यह क्षणिक आनंद ही वास्तविक आनंद में बाधक है।

लोगों का विश्वास है कि पापी सुखी हैं, धर्मात्मा दुखी हैं, अतः पापी होना अच्छा है तथा धर्म पर चलना या धर्म का पालन करना निरर्थक है। आज जो पापी सुखी है, वह आज के पाप के कारण सुखी नहीं है। उसने पूर्वकाल में जो बीज बोए थे, वह उनकी फसल काट रहा है। आज जो बोएगा, भविष्य में वह उसी फसल को काटेगा। आप स्वयं मनन कीजिए। आप किसी को अपशब्द कहेंगे तो क्या वह आपसे प्यार करेगा?...नहीं करेगा, इसलिए जो आज पाप कर्म कर रहा है, वह कल उसका फल अवश्य भोगेगा। पाप और पुण्य कभी पचते नहीं हैं, सामने आकर ही रहते हैं।

आजकल समाधि का भी खूब चलन है। कोई भोग के द्वारा समाधि तक पहुंचता है, कोई तंत्र द्वारा समाधि की मंजिल पाता है, तो कोई तप द्वारा समाधि का रहस्य समझ पाता है। सबसे चमत्कारी बात तो यह है कि कोई हजारों व्यक्तियों के सामने गड्ढे में जाकर समाधिलीन होता है और समाधि से बाहर भी हजारों लोगों की उपस्थिति में आता है। अब इसका क्या औचित्य है, यह तो वही जाने।

समाधि के विषय में अनेक बातें कही जाती हैं। योगाचार्यों ने समाधि के अनेक रूपों का वर्णन किया है, परंतु साधारण रूप में समाधि का अर्थ यह है कि जब पूर्ण रूप से श्वास का अवरोध हो जाए, इसका भीतर-बाहर आना-जाना रुक जाए और हृदय संतुलन की अवस्था में जा पहुंचे, वही समाधि है, परंतु समाधि की अवस्था में मनुष्य को जीवन का नहीं, वरन् अस्तित्व का अनुभव होता है। उस अनुभव को अन्य किसी प्रकार की अनुभूति की अपेक्षा भी नहीं रहती, क्योंकि हृदय की स्थिति आत्मा पर पहुंचकर परमात्मा को प्राप्त करने की होती है।

साधक को जीवन का अनुभव तभी होता है, जब वह अस्तित्व की सीमा से बाहर आ जाता है, क्योंकि अस्तित्व से हटने पर ही जीवन का बोध होता है। परमात्मा का भी अस्तित्व है, जीवन या मरण नहीं है और यही स्थिति

आत्मा की है। वह भी जीवन मृत्यु से परे, केवल अस्तित्वमय ही है। जो वस्तु अस्तित्व से परे नहीं, जीवन मृत्यु से परे है, उसके मरने की तो कोई आशंका ही नहीं रहती, तब उसे जीवनदायिनी ऑक्सीजन की अपेक्षा क्यों हो?

बस वही समाधि है, उसी में आत्मा की अनुभूति होती है। उसी के द्वारा जीवन के अस्तित्व और आत्मा के अंतर का ज्ञान होता है। यही वह स्थिति है, जिसे अष्टांग योग का अंतिम चरण कहते हैं। योग का उद्देश्य इसी स्थिति पर पहुंचना है। समाधि में जब आत्मा के पश्चात परमात्मा का अनुभव होता है, तब वह एक महान स्थिति होती है। समस्त स्थितियां उसके समक्ष निरर्थक रहती हैं। यहां लौकिक क्रियाओं की उपेक्षा नहीं रहती, ऑक्सीजन की भी आवश्यकता अनुभव नहीं होती, क्योंकि यह अवस्था सत्ता का अनुभव कराती है, जीवन का नहीं।

अपनी बात पूर्ण करने से पहले मैं गुरु गोरखनाथ के जीवन की एक घटना लिख देना अति आवश्यक समझता हूं। कथा कुछ इस प्रकार है—

एक बार गोरखनाथ घूमते-घूमते, गोदावरी के निकट आभा नगर के जंगल में आए। वहां उन्हें भूख ने बहुत सताया, परंतु वहां उन्हें जल तक नजर नहीं आया। दोपहर के समय उन्हें एक दस वर्ष का बालक खेत में खड़ा दिखाई दिया। वह भोजन करने की तैयारी में था, तभी गोरखनाथ ने उसे आवाज दी। योगी की आवाज सुनकर वह बोला—"आप इस समय जंगल में कैसे आए?"

उसकी बात सुनकर गोरखनाथ बोले—"हम तो कभी भी कहीं भी चले जाते हैं, लेकिन बच्चा! इस समय तो हम अत्यंत भूखे हैं, कुछ अन्न-जल हमें भी दो, तुम्हें पुण्य मिलेगा।"

बालक बोला—"हां-हां आ जाओ, खाना तैयार है।"

जब गोरखनाथ खाना खाने के लिए बैठे, तब उसने उनका बड़ा आदर-सत्कार किया और पानी पिलाकर प्रसन्न किया, तब गोरखनाथ ने बालक से उसका नाम पूछा तो वह बोला—"बाबा आपका काम हो गया, अब नाम पूछकर आपको क्या करना है? अब अपने मार्ग पर जाओ।"

इस पर गोरखनाथ बोले—"बच्चा, तुम जो कहते हो, वह ठीक है, लेकिन तुमने मुझे भोजन कराया है, इसलिए मैं तुम पर प्रसन्न हूं। मुझसे जो इच्छा हो, मांग लो।"

बालक बोला—"तुम स्वयं तो अन्न-जल मांगते फिरते हो, मुझे क्या दे सकते हो?"

गोरखनाथ बोले—"बच्चा, आज जो तुम मांगोगे, मैं तुम्हें वही दूंगा।"

बालक को गोरखनाथ की बात उचित नहीं लगी। वह बोला—"आप मुझे क्या दे सकते हो! मैंने जो कुछ देना था दे दिया, अब अपना मार्ग देखो।"

उसकी बात सुन गोरखनाथ ने सोचा—'बच्चे अनपढ़ व कम बुद्धि के होते हैं। फिर यह तो ग्रामीण है। मुझे इसका कुछ-न-कुछ भला अवश्य करना चाहिए।' ऐसा सोचकर गोरखनाथ बोले—"अगर तुम कुछ लेते नहीं हो तो कुछ दे ही दो, बोलो मैं जो मांगूंगा तुम मुझे दोगे?"

बालक बोला—"हां दूंगा, आप मांगो।"

गोरखनाथ बोले—"जिस वस्तु की तुझे सबसे अधिक इच्छा हो, उसे ही त्याग देना, मैं तुमसे केवल यही मांगता हूं।"

बालक ने गोरखनाथ का कहा मान लिया। जब वह शाम के समय सिर पर बोझा रखकर घर जाने के लिए तैयार हुआ, तब वह गोरखनाथ के वचनों को सोचकर खड़ा-का-खड़ा रह गया, वह खाली हाथ घर आ गया। घर आकर जब उसे भोजन की इच्छा हुई, तब प्यारी चीज त्यागने की बात स्मरण करके उसे अपने वचन की याद आई। इस प्रकार उसने भोजन त्याग दिया। प्यास लगी तो उसे पानी पीने की इच्छा हुई, किंतु उसने पानी का भी त्याग कर दिया। अंततः वह सब कुछ त्यागकर केवल हवा ही खाने लगा और सूखकर उसका शरीर केवल ढांचा मात्र रह गया। वह पत्थर की शिला के समान केवल एक ही स्थान पर खड़ा-का-खड़ा ही रह गया।

इधर गोरखनाथ बद्रिकाश्रम जा पहुंचे और बद्री-केदार के चरणों में गिर पड़े, तब चौरंगीनाथ के हाल-चाल जानने के लिए उन्होंने गुफा का पत्थर हटाया, तो क्या देखते हैं कि चौरंगीनाथ के शरीर पर मिट्टी की परत जम गई है। वहां से केवल शिव-शिव की ध्वनि निकल रही है।

गोरखनाथ ने उसके शरीर से मिट्टी साफ की, फिर बोले—"मैं गोरखनाथ तुम्हें देखने आया हूं।" इतना कह वे चौरंगीनाथ को उठाकर बाहर लाए और उसे दिव्य दृष्टि से देखा। तब उसमें शक्ति आ गई, फिर वह गोरखनाथ के चरणों में गिर पड़े और हाथ जोड़कर बोले—"आज मैं फिर सनाथ हुआ।"

तब गोरखनाथ ने पूछा—"भोजन की व्यवस्था ठीक रही?"

चौरंगीनाथ बोले—"कुछ पता नहीं।"

फिर उन्होंने चामुंडा से पूछा तो वह बोली—"मैं बराबर फल लाकर रखती रही हूं, परंतु इन्होंने खाने-पीने से संबंध ही नहीं रखा।" ऐसा कह देवी ने फलों का लगा हुआ अम्बार गोरखनाथ को दिखाया। जिसे देख उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर चौरंगीनाथ के मस्तक पर अपना हाथ रख उन्हें अपने साथ बद्री-केदार ले जाकर शिव-पार्वती के दर्शन करवाए और वहां कुछ माह ठहरकर विद्या अभ्यास कराया और शास्त्रास्त्र विद्या के लिए आशीर्वाद दिया। तब बद्री-केदार को प्रणाम कर चौरंगीनाथ के साथ गोरखनाथ कौडिल्यपुर गए और चौरंगीनाथ को माता-पिता से मिलने को कहा और कहा कि इन्होंने तुम्हारे हाथ-पैर तोड़े थे, अब इन्हें अपना चमत्कार दिखाओ। गोरख गुरु की आज्ञा मान चौरंगीनाथ ने बाग की तरफ जाकर वातास्त्र की भस्मी को मंत्रित कर उसे राजा के बाग की ओर फेंका, उससे इतनी तेज हवा चली कि राजा के बाग के सारे माली उस हवा से उड़ने लगे और वातास्त्र समाप्त होते ही वे सब एकदम नीचे गिरते ही मूर्च्छित हो गए।

राजा ने जब मालियों की दुर्दशा की खबर सुनी तो उन्होंने अपने पहरेदारों से कहा कि पता लगाओ यह किसका चमत्कार है। पहरेदारों को तालाब पर दो योगी दिखाई दिए, तब उन्होंने राजा से जाकर कहा—"महाराज! तालाब पर दो योगी आए हुए हैं। यह चमत्कार उनमें से ही किसी का हो सकता है।"

अपने पहरेदारों की बात सुनकर राजा ने समझा कि गोरखनाथ व चौरंगीनाथ ही होंगे। उनकी शरण में मुझे हाथ जोड़कर चलना चाहिए, क्या पता उनके मन में क्या है, न मालूम वे सारा नगर ही जलाकर समाप्त कर दें। तब राजा अपनी सेना सहित योगियों की शरण में आया, तब गोरखनाथ ने चौरंगीनाथ को अपना प्रताप दिखाने को कहा, अपने गुरु की आज्ञा मिलते ही उसने पुनः वातास्त्र छोड़ा और राजा अपनी सेना सहित आसमान में उड़ गया।

दोबारा आज्ञा मिलते ही उसने पर्वतास्त्र छोड़ा और वातास्त्र निकाल लिया, जिससे सब धीरे-धीरे नीचे उतर आए। तब गोरखनाथ की आज्ञा से चौरंगीनाथ अपने पिता के श्रीचरणों में गिर पड़ा और राजा को उनका पुत्र होने की पहचान दिखाई। तब राजा ने बेटे को पहचानकर छाती से लगाया और गोरखनाथ के कदमों में गिर पड़ा। राजा ने महल में चलने का आग्रह

किया, तब चौरंगीनाथ ने राजा से कहा—"हम आपके महल में नहीं जाएंगे, क्योंकि आपने सौतेली माता की कपट भरी वार्ता सुनकर मेरे हाथ-पैर तोड़कर बाहर फिंकवा दिया था।"

ऐसा कहकर चौरंगीनाथ ने सारी कथा राजा को सुनाई। तब राजा ने जाना कि मेरी रानी भुजावती व्यभिचारिणी है। वह क्रोध में भरकर अपने सेवकों से बोला—"तुम रानी को मारते, पीटते और घसीटते हुए यहां ले लाओ।"

लेकिन चौरंगीनाथ ने राजा से कहा—"माताजी को यहां लाने की कोई आवश्यकता नहीं है। उन्हें जो कुछ भी आपको कहना हो, वह सब महल के भीतर ही कहना।"

तब राजा दोनों योगियों को पालकी में बिठाकर राजमहल में ले गया और रानी को सारी बात बताकर और बुरा-भला कहकर घर से निकाल दिया। तब गोरखनाथ ने राजा को शांत किया और तीसरा विवाह करने की आज्ञा दी और अपना वरदहस्त उसके मस्तक पर रखकर कहा कि तीसरा विवाह करने से तुम्हारा वंश चलेगा।

कौडिल्यपुर छोड़ने के पश्चात फिर दोनों योगी प्रयागराज गए और उस चरवाही को बुलाकर अपने गुरु के बारे में पूछा, तब वह भयभीत हो थर-थर कांपने लगी। फिर वह सोच-समझकर बोली—"रानी ने मुझे धमकाकर जब मुझसे पूछा, तो मुझे सब कुछ बताना पड़ा। अब गुरुजी की क्या दशा हुई, उसकी मुझे कोई जानकारी नहीं है।"

चरवाही की वार्ता सुन गोरखनाथ को शंका हुई, तब वे सुरंग में देखने के लिए गए तो उन्हें वहां कोई शव दिखाई नहीं दिया, तब वे रोने लगे।

गोरखनाथ को रोता देख चरवाही बोली—"आप चुप बैठे रहें, मैं रानी से पूछकर अभी आती हूं, शव के विषय में तब भेद खुलेगा।"

वह तुरंत ही राजमहल में पहुंचकर रानी से बोली—"मैंने मछेन्द्रनाथ का शव आपके सुपुर्द किया था, अब बारह वर्ष पूरे होने पर गोरखनाथ आए हैं। मैं उनसे क्या कहूं।"

इतना सुन रानी ने चरवाही को अलग ले जाकर कहा—"मैंने उस शरीर के टुकड़े-टुकड़े करके जंगल में फिंकवा दिए थे, जिसे काफी समय हो गया। अब तक तो लाश के उन टुकड़ों को जंगली जानवर खा गए होंगे।"

रानी की बात सुनकर वह बहुत भयभीत हुई और आकर गोरखनाथ को

सारी बात बताई। तब उन्हें बड़ा क्रोध आया। उन्होंने रानी को सजा देने की धारणा बनाई। फिर सोचा मेरे गुरु की स्त्री तो मेरी माता हुई, ऐसा विचार कर रानी को सजा देने का विचार छोड़ दिया और मछेन्द्रनाथ के शव के टुकड़े ढूंढने में लग गए, लेकिन टुकड़े नहीं मिले। वे तो पहले ही वीरभद्र के पास कैलाश पर्वत पर पहुंच चुके थे। हारकर वे कैलाश पर्वत पर गए, तब वीरभद्र ने सुना कि अब गोरखनाथ आने वाला है, क्योंकि बारह वर्ष बीत चुके हैं, इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए। इतना सुनते ही गोरखनाथ और चौरंगीनाथ दोनों ने मिलकर सोचा और झोली-खप्पर लेकर तैयार हुए।

गोरखनाथ ने प्रथम सूर्य पर पर्वतास्त्र की योजना की, जिससे सूर्य को रथ चलाने में बाधा उत्पन्न हुई। तब सूर्य ने वज्रास्त्र से पर्वतास्त्र को तोड़ दिया और बोले—"मेरा मार्ग रोकने वाला कौन पैदा हो गया?"

फिर जाना यह सब गोरखनाथ का कार्य है, इसलिए सूर्यदेव उनके सम्मुख आकर खड़े हो गए और किसी को मेरा ताप न सताए, इसलिए चंद्रास्त्र की योजना कर हजारों चंद्रमाओं को उत्पन्न कर दिया। जिससे किसी को गरमी ने नहीं सताया। तब दोनों योगी सूर्य के चरणों में गिर पड़े।

सूर्य बोले—"आप लोगों ने मुझे क्यों व्यर्थ परेशान किया?"

गोरखनाथ बोले—"हे पिता, मेरे गुरु मछेन्द्रनाथ का शव शिवगणों के पास कैलाश पर्वत पर है। आप हमें ऐसा मार्ग बताएं कि हम अपने गुरु का उद्धार कर सकें। आपका हम पर बड़ा उपकार होगा।"

गोरखनाथ की बात सुन सूर्यदेव दोनों योगियों के साथ कैलाश पर्वत पर गए। शिवगण सूर्य के चरणों में गिर पड़े और दर्शन देने का कारण पूछा। तब सूर्य देवता ने गोरखनाथ के प्रताप से वीरभद्र को आगाह किया और उनकी नम्रता की प्रशंसा की, परंतु वीरभद्र पर इस बात का कोई प्रभाव न पड़ा और वह कहने लगा—"मछेन्द्रनाथ ने हम लोगों की बुरी गत बनाई थी, अब हमारा अवसर है।"

तब सूर्य ने उसे समझाया—"अगर तुम्हें अपने ऊपर इतना घमंड है तो उस समय तुम्हारी शक्ति कहां चली गई थी। अब तुम अकड़ दिखा रहे हो, परंतु गोरखनाथ को कम न समझना, वह अपने गुरु से एक कदम आगे है। अकेले मछेन्द्रनाथ ने तुम्हारी क्या दशा की थी, यह तुम भली प्रकार जानते हो। अब तो तुम्हारा गोरखनाथ और चौरंगीनाथ दो योगियों से सामना है।"

वीरभद्र पर सूर्यदेव की बात का कोई प्रभाव न पड़ा। उसने उत्तर दिया—"हम मछेन्द्रनाथ के शव के टुकड़े किसी भी कीमत पर वापिस नहीं देंगे, जिसे जो करना है करे।"

इस पर सूर्यदेव बोले—"अगर तुम्हारी युद्ध करने की इच्छा है तो पृथ्वी पर करो। अगर तुम मेरी बात नहीं मानोगे तो यह कैलाश पर्वत छिन्न-भिन्न हो जाएगा।" इतना कहकर सूर्यदेव अंतर्धान हो गए।

अब वीरभद्र ने शिवगणों को आज्ञा दी—"तुम लोग आगे चलो, पीछे से मैं भी आता हूं।"

इस युद्ध में अष्ट भैरव और चौरासी लाख शिवगण अस्त्र-शस्त्र सहित पधारे थे। शिवगणों की सेना देख गोरखनाथ और चौरंगीनाथ दोनों योगी भी तैयार हुए। दोनों तरफ के लोग युद्ध करने लगे, परंतु चौरंगीनाथ ने मोहनी अस्त्र व वातास्त्र के प्रयोग से वीरभद्र का सारा दल तितर-बितर कर दिया। वे भयभीत हो, भ्रम में पड़ गए, तभी वीरभद्र चामुंडा को साथ ले युद्ध करने आ पहुंचा और अपने दल को भागते देख क्रोध से पागल हो गया। उसने देखा कि उसकी सेना एक दूसरे का नाश करने के लिए आपस में लड़ रही है। उसने तुरंत अपने अस्त्रों का प्रयोग किया, लेकिन गोरखनाथ की संजीवनी योजना से दानव दल जी उठा। यह देख देवताओं ने अपने-अपने विमानों में बैठकर, बैकुंठ जाकर सब समाचार भगवान विष्णु को कह सुनाया और हाथ जोड़कर कहा—"प्रभु क्या आपको पृथ्वी पर फिर अवतार लेना पड़ेगा?"

इतना सुन भगवान विष्णु ने शिव को अपने पास बुलाकर कहा—"क्या वीरभद्र पागल हो गया है, जो बात इतनी बढ़ गई।"

अब इस झगड़े को समाप्त करने के लिए शिव गोरखनाथ के पास गए और उन्हें प्यार से समझाया और फिर वे वीरभद्र से बोले—"मछेन्द्रनाथ का शरीर मेरे हवाले करो, तभी यह झगड़ा समाप्त होगा।"

भगवान शंकर की आज्ञानुसार चामुंडा को भेज, मछेन्द्रनाथ के शरीर के टुकड़े मंगवाए और उन्हें गोरखनाथ को सौंपकर सब राक्षसों को रूपोश होने की आज्ञा दी। तब गोरखनाथ बोले—"ये सब संजीवनी मंत्रों के प्रभाव से पैदा हुए हैं। ये तो अवतार धारण करके मारने से ही मरेंगे।"

इसके पश्चात भगवान शंकर ने एकादशी के दिन अवतार लेकर उनका नाश किया, फिर वीरभद्र के नाश की तैयारी हुई और वाताकर्षण अस्त्र की

योजना कर और शाबर मंत्र पढ़कर विभूति फेंकते ही वीरभद्र सहित, सब राक्षस मरकर धरती पर गिर पड़े, तब शिवजी और विष्णु ने मछेन्द्रनाथ को जीवित करने की बात की और गोरखनाथ ने अग्न्यास्त्र की योजना कर मरे हुए राक्षसों का दाह संस्कार कर दिया।

यह वाताकर्षण प्रयोग नाथपंथी योगियों के सिवाय किसी को भी पता नहीं है। यह आज तक गोपनीय है।

प्रिय पाठको! नाथ संप्रदाय के योगी साधक में ऊर्जा के व्यापक प्रवाह की विशेषता रहती है। इस प्रवाह से मन में एक अद्भुत मस्ती का जन्म होता है, जो इंद्रियों से कभी अनुभव नहीं हुई। इस अलौकिक मस्ती में हृदय झूमता है। सोमरस के पान से जैसे व्यक्ति अपने होश गंवा बैठता है, वैसे ही इस मस्ती में हृदय का अनुभव भी लुप्त हो जाता है और शरीर को इसके लिए बाध्य करता है। शरीर भी एक ऐसे क्रम में सक्रिय रहने लगता है, जिससे यह अनुभव होता है कि यह किसी दिव्य शक्ति के अधिकार में है और उसी के निर्देशों-आदेशों पर चल रहा है। यह आनंद की पुलक शरीर में घटित होती है, परंतु शरीर की होती नहीं। इस दशा में उच्च सत्ता के साथ एकता की संभावनाओं का अनुभव होता है। इसके पश्चात जब सिद्ध भाव का जागरण होता है तो साधना की पूर्णता समझनी चाहिए। यही परम आनंद की दशा है, जो महाशक्ति के परम अनुग्रह से प्राप्त होती है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी नाथ योगी तांत्रिक साधना और तपस्या करते हैं।

गुरु गोरखनाथ का चरित्र बहुआयामी है। वे अनेक प्रकार की चमत्कारी सिद्धियों के स्वामी थे। उनकी शक्तियां चमत्कार के लिए नहीं, वरन् जन-कल्याण, गुरु सेवा और दुष्टों के संहार के लिए थीं। हम सब उनके सामने नतमस्तक होकर अपने कल्याण, परिजनों के कल्याण और देश के हित की प्रार्थना करें।

।।आदेश।।

तांत्रिक बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी-4, राधापुरी, कृष्णानगर
(यमुना पार) दिल्ली-110051

तंत्र ज्ञान के गुप्त सूत्र

हमारे धर्म में अनेक देवी-देवता हैं। हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में 33 करोड़ देवी-देवताओं का विवरण मिलता है। ऐसी परिस्थिति में साधक के लिए यह निश्चित करना कठिन हो जाता है कि उसके लिए किस देवी-देवता की साधना करना अधिक फलदायी रहेगा। अनेक बार ऐसा भी होता है कि साधक द्वारा पूरी श्रद्धा और लगन के साथ इष्ट की साधना करने पर भी भौतिक एवं आध्यात्मिक लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो पाती। ऐसा देवी-देवता के अनुपयुक्त चयन के कारण होता है। अब प्रश्न यह है कि इष्ट का चयन कैसे हो? इस विषय में भारतीय ज्योतिष शास्त्र निर्देश देने में सक्षम है।

हमारे लिए कौन से देवी-देवता की साधना ठीक रहेगी, इसका निर्णय गुरुमुख के द्वारा अथवा ज्योतिष विज्ञान के द्वारा जानना ठीक रहता है।

जन्म पत्रिका में पंचम स्थान को बुद्धि का और नवम स्थान को धर्म का प्रतीक माना गया है। पंचम भाव से जहां बुद्धि एवं प्रवृत्ति का ज्ञान होता है, वहीं नवम भाव से साधक के अनुकूल देवी-देवता का ज्ञान होता है, अतः कोई भी साधना करने से पूर्व यह अवश्य ज्ञात करना चाहिए कि उसे किस देवी या देवता की साधना करनी चाहिए? पंचम भवन का स्वामी, पंचम भाव में स्थित ग्रह, नवम भवन का स्वामी नवम भाव में स्थित ग्रह, इन चारों में जो अधिक बली हो उसके आधार पर निर्णय किया जाता है। गुरुमुख से प्राप्त साधना में ज्योतिष के योग देखने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं होती है।

अगर पंचम भवन में शुभ ग्रह हो और चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, पंचमेश शुभ ग्रह हों, तो जातक सात्विक भाव का साधक होता है। अगर पंचम भवन में

राहु, केतु उपस्थित हों, तो साधक भूत-प्रेत, जादू-टोना, आदि निम्न कोटि के देवी-देवताओं का साधक होता है। अगर पंचम भवन का स्वामी पाप ग्रह सूर्य, मंगल, शनि हो अथवा पंचम में पाप ग्रह उपस्थित हों, तो साधक राजसिक, तामसिक साधक होता है।

आओ, अब थोड़ा ज्ञान भवनों के माध्यम से प्राप्त करें। नवम भाव में पुरुष ग्रह जैसे सूर्य, मंगल, गुरु हों अथवा नवम भवन का स्वामी पुरुष ग्रह हो, तो पुरुष संज्ञक देवता की साधना लाभ देती है। गुरु बृहस्पति हो, तो साधक को सात्विक साधना में प्रवेश करना चाहिए अथवा किसी वैष्णव देवी-देवता की साधना करनी चाहिए। सौम्य चंद्र तथा शुक्र स्त्रीलिंगी ग्रह है, अतः अगर नवम में शुक्र या चंद्रमा हो, अथवा नवम भाव का स्वामी चंद्रमा या शुक्र हो, तो साधक के लिए देवी के किसी भी रूप की साधना सिद्धिदायक होती है।

कुमार बुद्ध एवं शनि उभय लिंगी ग्रह हैं। अगर नवम भवन में बुद्ध अथवा शनि बैठे हों या नवमेष शनि हो, तो जातक के लिए शिव साधना फलदायक होती है। नवम भवन में बुध होने से अथवा नवमेश बुध होने पर साधक देवी का ही साधक होता है। नवम भवन में अकेला एक ही ग्रह हो, नवम में कोई ग्रह न होने पर नवमेश से ही देवी-देवता निर्धारित करना चाहिए। नवम भाव में एक से अधिक ग्रह हों तो नवमेश से जिसकी पुष्टि हो, उसे स्वीकार करना चाहिए। अगर नवम भाव में राहु-केतु में से कोई बैठा हो, तो उग्र रूप की साधना लाभदायक होगी।

किसी भी साधक के ज्योतिषीय विश्लेषण के पश्चात बारी आती है, साधना हेतु रत्न, मंत्र, पूजन अथवा विशिष्ट अनुष्ठानादि की। रोग-निवृत्ति एवं स्वास्थ्य लाभ, तांत्रिक अनुष्ठान आदि तंत्र साधनाओं में प्रायः मंत्र, यंत्र एवं तंत्र का प्रयोग होता है। मंत्र, यंत्र एवं तंत्र तात्विक रूप से एक ही साधना (विद्या) के तीन रूप हैं। साधक की भीतरी शक्ति को उदीप्त कर, उसमें शक्ति का संचार करने वाला गूढ़ रहस्य 'मंत्र' कहलाता है। मंत्र की आकृति यंत्र एवं क्रियात्मक रूप तंत्र कहलाता है। तंत्र सिद्धि अथवा अभीष्ट कामना की पूर्ति इसी विज्ञान पर आधारित है।

तंत्र शास्त्र के अनुसार उच्चारित किया हुआ मंत्र ही साधक को शुभ या अशुभ फल प्रदान करता है या फिर विधि में किसी भी प्रकार का दोष रहने पर मंत्र सिद्धि नहीं होती। इस विषय में पाठकों के हित के लिए मंत्र प्रारंभ

का समय, जप की दिशा, आसन का चयन तथा माला का पूर्ण विज्ञान स्पष्ट किया जा रहा है।

वर्णमाला का प्रत्येक अक्षर ब्रह्म के किसी-न-किसी रूप का प्रतिनिधित्व करता है। वर्णों के संयोग से मंत्रों की रचना होती है। यूं तो कई शब्द स्वयं में मंत्र हैं, जैसे एकाक्षरी बीज मंत्र। मंत्र देवी शक्ति का ध्वन्यात्मक रूप है। उनकी पुनरुक्ति से वातावरण में एक ऊर्जामय कंपन का वातावरण बन जाता है, जो साधक को मनोकामना पूर्ति का अवसर प्रदान करता है। आप जीवन में स्वयं देखें कि अपशब्द हमें क्रोधित करता है, प्रशंसा से हम मुस्करा उठते हैं, रोना हमें करूणा में डुबो देता है, चीत्कार से हम रोमांचित होते हैं। ऐसा क्यों होता है? भीतर से हमारे ज्ञान तंतु हमें ऐसा करने के लिए प्रेरित करते हैं। यह सब इतने स्वाभाविक रूप से होता है कि हम समझ ही नहीं पाते हैं कि कब किसने हमें आदेश दिया या आदेश वापस लिया।

मंत्र-साधक को सदाचारी, जितेन्द्रिय, क्रोधरहित, समदर्शी, विनम्र तथा जिज्ञासु होना चाहिए। वह किसी सिद्ध तांत्रिक से दीक्षित हो तथा मंत्रदीक्षा एवं गुरु-चरणों में उसकी असीम निष्ठा होनी चाहिए। अगर साधक सात्विक मंत्र का जप प्रारंभ करना चाहता है तो स्थिर लग्न में प्रारंभ करना चाहिए। इसी प्रकार मंत्र का शुभारंभ चर लग्न में करना उचित है तथा देवी साधना के लिए मंत्र चयन हेतु द्विस्वभाव लग्न ग्रहण किया जाना चाहिए।

तंत्र मार्ग में जाप तीन प्रकार का बतलाया गया है। ईश्वर की शक्तियों से मन-ही-मन प्रार्थना करना, किसी मंत्र को बार-बार दोहराना 'जप' कहलाता है। मन्द स्वर में किसी मंत्र को बोलना भी जप कहलाता है। जप माला के सहयोग से अथवा बिना माला के किया जाता है। यह जप तीन प्रकार का होता है—

मानसिक जप : जिसमें मंत्र का अर्थ समझते हुए मन-ही-मन जप किया जाता है, उसे मानसिक जप कहते हैं। मानसिक जप में मुख के अंगों का संचालन नहीं होता।

उपांशु जप : इसमें केवल जिह्वा का संचालन होंठों के भीतर थोड़ा-सा होता है। इसमें मन से देवता का ध्यान भी किया जाता है।

वाचिक जप : इसे मंद स्वर में उच्चारित किया जाता है तथा इसमें जीभ तथा होंठों का संचालन होता रहता है।

मानव के भीतर भौतिक सुख-सुविधाओं की लालसा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। उसकी यह इच्छा लगातार रहती है कि उसे दैहिक, बौद्धिक, आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक क्षेत्रों में सफलता प्राप्त होती रहे। उसके सामने कोई बाधा, दुःख या संकट न आए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह मंत्र जाप अथवा साधना करता है।

किसी भी कार्य हेतु यूं ही तंत्र साधना प्रारंभ न करें। सर्वप्रथम ज्योतिष द्वारा जांच कर लें कि अमुक कार्य सफल होने की संभावना है या नहीं, अगर सफलता की संभावना बनती है, तो ही साधना मार्ग को स्वीकार करें, अन्यथा नहीं। इससे आपकी ऊर्जा का सदुपयोग होगा एवं यश भी स्थिर रहेगा, किसी के अनिष्ट हेतु कभी कोई साधना न करें, भले ही धन प्राप्ति सघन रूप से ही क्यों न हो। सदैव जन-कल्याण की भावना मन में रखें।

प्राचीनकाल से ही मानव समाज अलौकिक एवं दिव्य शक्तियों में आस्था और विश्वास स्वरूप महर्षियों, तांत्रिकों और योगियों के ज्ञान, अनुभव व साधना के फल के रूप में तंत्र मार्ग को उपयोग में लाता रहा है।

वस्तुतः किसी यंत्र, मंत्र शक्ति व धातु/वनस्पति इत्यादि वस्तु विशेष की शक्ति से तैयार किया गया सुरक्षा प्रदायक तथा समस्या निवारक, रहस्यमय शक्ति का समय-समय पर प्रयोग किया गया है। आस्थानुसार तंत्र विज्ञान अशुभता के अंधकार को दूर करके शुभता के प्रकाश को प्रदान करता है। हजारों वर्षों के इतिहास के उपरांत आज भी समाज में तंत्र विज्ञान का चलन है।

आओ, अब थोड़ा मालाओं के विषय में भी जानें। माला अनेक वस्तुओं से तैयार की जाती हैं तथा उनके जप का फल निम्नानुसार है।

रुद्राक्ष की माला : रुद्राक्ष के 30 दानों से बनाई गई माला जप कर्म में धन देने वाली होती है। 27 दानों की माला पुष्टिदायिनी और पच्चीस दानों की माला कर्म में फलदायक होती है। 108 दानों की माला उत्तमोत्तम मानी गई है। रुद्राक्ष माला से मंत्र गणना करने पर अनंत गुने फल की प्राप्ति होती है।

शंख की माला : सफेद शंख के मनकों से बनी माला से जप का सौ गुना फल होता है।

मूंगे की माला : मूंगे के मनकों से निर्मित माला से जप का फल हजार गुना होता है।

कुश मूल (जड़) की माला : कुश की गांठ से बनी माला द्वारा जप करने पर अनंत गुने फल की प्राप्ति होती है।

तुलसी की माला : तुलसी से निर्मित मनियों की माला वैष्णवों को श्रेष्ठ तथा अनंत फलदायक है। यह माला श्रीविष्णु को सर्वाधिक प्रिय है।

स्फटिक की माला : स्फटिक की माला से जप का फल दस हजार गुना होता है।

मोतियों की माला : मोतियों की माला से जप का फल एक लाख गुना होता है।

पद्म बीज की माला : पद्म बीज की माला से जप का फल दस लाख गुना होता है।

शांति कर्म में श्वेत, वशीकरण में लाल, अभिचार में काली और ऐश्वर्य के लिए रेशमी सूत की माला विशेष फलदायक होती है। विभिन्न कामनाओं और विभिन्न देवताओं के अनुसार भी भिन्न-भिन्न मालाओं का प्रयोग होता है।

गुरु से मंत्र की आज्ञा प्राप्त कर स्नान आदि से निवृत हो और पूर्व की ओर मुख करके साधना शुरू करनी चाहिए। माला से जप करने से पूर्व माला का संस्कार करना चाहिए। इस हेतु माला में विष्णु, शिव, शक्ति, सूर्य और गणेश का आवाह्न करके माला की पूजा करनी चाहिए। तत्पश्चात माला को पंचगव्य में डालकर **'ॐ हे सौः'** मंत्र से जाप कर उसे पवित्र पात्र में रखें। उसको पंचामृत से स्नान कराकर जल से स्नान कराएं। चंदन, कस्तूरी आदि सुगंध द्रव्य माला को अर्पित कर **'हे सौः'** मंत्र का 108 बार जप करें। इसके पश्चात माला में नवग्रह, गुरु और इष्ट की पूजा करके माला को जप हेतु प्रयोग करें।

कोई भी साधना की जाए, उसमें श्रद्धा एवं विश्वास का होना परम आवश्यक है तथा जो भी नियम बताए गए हैं, उनका पालन तथा मुहूर्त के प्रति सदैव जागरूक रहना भी अनिवार्य है, तभी साधना फलीभूत होगी। हमारे देश में देवी-देवताओं की संख्या बहुत अधिक है। इनके अलावा ऐतिहासिक संदर्भ में नौ नाथ और चौरासी सिद्ध भी हुए हैं, जो सहस्त्रों वर्षों तक जीवित रहते हैं। भागवत पुराण के छठे स्कंध के सातवें अध्याय में वर्णन आता है कि देवराज इंद्र की सेवा में जहां देवगण और अन्य साध्यगण थे, वहीं सिद्ध भी शामिल थे।

पौराणिक ऋषियों में कपिल मुनि को सर्वश्रेष्ठ सिद्ध माना गया है। आठवीं,

नौवीं शताब्दी के हिन्दी साहित्य में नाथों और सिद्धों का उल्लेख आता है। नाथों में एक गुरु गोरखनाथ हुए हैं।

इस प्रकार नौ नाथों और चौरासी सिद्धों में गुरु गोरखनाथ का नाम प्रमुख है। बाबा गोरखनाथ के विषय में प्रसिद्ध है कि इनका जन्म युगों-युगों में होता रहा है। सतयुग में ये स्कंद, त्रेता में कौल और द्वापर में महाकौल के नाम से जाने गए।

प्राचीन मान्यता के अनुसार बाबा गोरखनाथ को भगवान शिव का अंश अवतार माना जाता है। कुछ भक्त बाबाजी को नौ नाथ चौरासी सिद्धों की परंपरा में आने वाले योगी के रूप में पूजते हैं। ऐसी धारणा है कि बाबा गोरखनाथ अल्प आयु में ही अपना घर छोड़कर चारों धाम की यात्रा करते-करते शाह तलाई स्थान पर पहुंचे थे। शाह तलाई (हि.प्र.) में ही रहने वाली माई रत्नो नामक महिला ने बाबाजी को अपनाया। यहां पर बाबा बालकनाथ के चमत्कार बहुत प्रसिद्ध थे। गुरु गोरखनाथ को जब यह ज्ञात हुआ कि एक बालकनाथ बहुत ही चमत्कारी शक्ति वाला है तो उन्होंने बाबाजी को अपना शिष्य बनाना चाहा, लेकिन बाबाजी के इनकार करने पर गुरु गोरखनाथ बहुत क्रोधित हुए। जब गोरखनाथ ने उन्हें बलपूर्वक शिष्य बनाना चाहा तो बाबाजी शाह तलाई से उड़कर धौलगिरि पर्वत पर पहुंच गए, जहां आजकल बाबा बालकनाथ जी की पवित्र गुफा है और बाबाजी का सुंदर मंदिर भी बना हुआ है।

पौराणिक नाथ साहित्य तथा उसमें विद्यमान विचारों को हमारे प्राचीन नाथों ने जनमानस को सुलभ कराया है। ज्ञान के दृष्टा तथा सदाशयता से परिपूर्ण होने के कारण वे सिद्ध नाथ कहलाए। ये अपने इन्हीं सद्गुणों और लोक कल्याण को प्राथमिकता देने के कारण सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित हुए तथा ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा परिवर्द्धन, संवर्धन के कार्य में सदैव लगे रहे।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि नाथ संप्रदाय से जुड़े संत, नाथ आज भी स्वयं को जनता का सेवक मानते हैं और उनकी समस्याओं के निदान हेतु आज भी कार्यरत हैं।

अब मैं गुरु गोरखनाथ विरचित एक शाबर मंत्र प्रस्तुत कर रहा हूं। यह मंत्र इस रूप में आज तक गोपनीय था। आप प्रातः स्नान तथा संध्या आदि

से निवृत्त होकर, श्रद्धा विश्वास से श्री गोरखनाथ का स्मरण करके एवं संकल्प करके किसी एकांत स्थान पर बैठकर निम्न मंत्र का प्रतिदिन 1009 बार जप करें। लगातार इक्तालीस दिन तक जप करके इस मंत्र को सिद्ध कर लेने से भूत-प्रेत, पिशाच आदि सभी मानवेतर अदृश्य योनियों के भय से मुक्ति मिल जाती है। इस मंत्र के सिद्ध हो जाने से अनेक कष्ट तथा भय स्वयं नष्ट हो जाते हैं। ग्रहादि-निवारण में यह मंत्र अचूक है।

'ॐ ऐं हीं श्रीं क्लीं हां हूं हें हौं हः महाबलाये पराक्रमाय भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, शाकिनी, यक्षिणी, पूतना, मारी, महामारी, यक्ष, राक्षस, बेताल, ग्रह, भक्षणीं, राक्षसादिकम् हन भैजय भैजय मारय मारय शिक्षय शिक्षय महामारेश्वर गोरखनाथ हुं फट् स्वाहा। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र इश्वरो वाचा।'

इसके साथ ही एक और अत्यंत प्रभावी शाबर मंत्र प्रस्तुत है।

'ॐ नमो आदेश माया मच्छिन्द्र का काली चिड़ी चिंग चिंग करे, दौड़ा आवे गोरखनाथ यती रुद्र भूतनाथ हांक मारे अथवाई बाई जाय भंगाई हवा भरे गुरु की शक्ति मेरी भक्ती फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।'

इस प्रकार उपर्युक्त मंत्रों को सविधि सिद्ध कर आप अपना उद्देश्य सिद्ध कर सकते हैं। शाबर मंत्र प्रयोगों में जप भी अभीष्ट सिद्धि देता है।
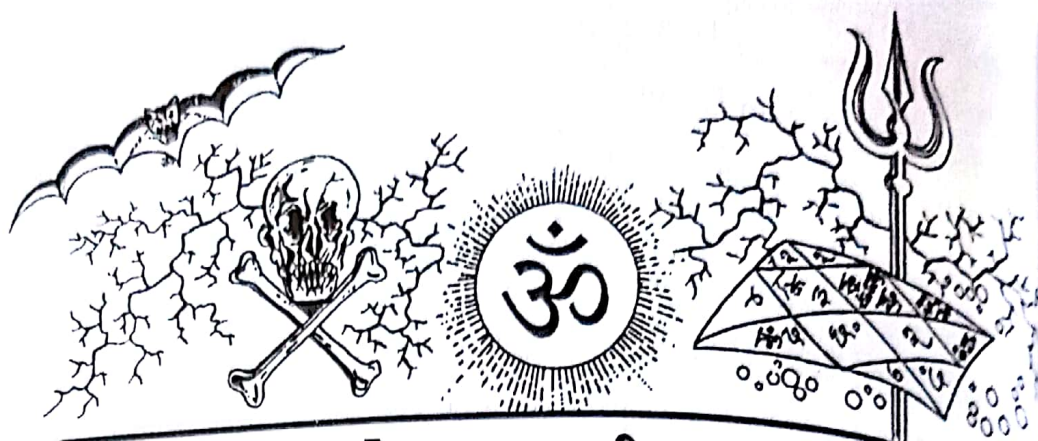
श्री गोरखनाथ जीवन चरित्र

कलियुग के प्रारंभ में भगवान विष्णु ने, द्वारिका से नव नारायणों को लाने के लिए नारद को भेजा। उस समय भगवान कृष्ण के पास ही उद्धव विराजमान थे। कुछ समय के पश्चात नव नारायण विमान द्वारा आ पहुंचे। भगवान विष्णु ने उन्हें अपने समीप ही बैठाया। बैठने के पश्चात नव नारायण बोले—"प्रभु आपने हमें यहां किस लिए बुलवाया है?"

तब भगवान विष्णु ने कहा—"आप सबको कलियुग में अवतार लेना है और मृत्युलोक के लोगों के कष्ट दूर करने हैं।"

विष्णु की आज्ञा सुनकर नव नारायण बोले—"प्रभु! हमें अवतार किस प्रकार लेना होगा और क्या करना होगा? कृपा कर हमें समझाएं।"

श्री विष्णु बोले—"आप सब पृथ्वी पर अवतार लेकर, नाथ संप्रदाय स्थापित करें, आप ये न समझें कि केवल आप लोगों को ही अवतार लेना है। आपके साथ मेरे अन्य अंश भी अवतार लेंगे और मैं स्वयं भी अवतार लूंगा।"

इतना सुनकर नव नारायण बोले—"प्रभु! हम लोगों को कहां और किस प्रकार अवतार लेना है, इसके लिए भी आदेश करें।"

श्री हरि बोले—"इसका पहले ही ऋषि व्यास ने भविष्य पुराण में सब वर्णन कर दिया है कि ब्रह्माजी के वीर्य से 88 हजार ऋषियों का जन्म हुआ है। उसी समय वीर्य का कुछ अंश जगह-जगह पर गिरा, उसी में से फिर कुछ अंश लगभग तीन बार समुद्र में भी गिरा, जिसमें से दो अंश तो दौने में गिरे और तीसरे को एक मछली निगल गई, उसी मछली के उदर से मछेन्द्रनाथ का जन्म हुआ। भगवान शंकर ने तीसरे नेत्र से अपनी अग्नि निकालकर कामदेव

को भस्म किया था। तब उस अग्नि के प्रभाव से अंतरिक्ष नारायण अग्नि के गर्भ से प्रकट होकर जालन्धरनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए। कुरूवंशी राजा जन्मेजय ने नाग यज्ञ किया। उन्हीं के वंश के वृद्धसर्वा राजा के यज्ञ करने से अग्नि द्वारा 88 हजार ऋषि उत्पन्न हुए। ब्रह्माजी के वीर्य का कुछ अंश रेवा नदी के किनारे गिरा था, जिससे चमस नारायणरेवण सिद्ध के नाम से प्रकट होंगे। उसी वीर्य का कुछ भाग एक नागिन ने खाया, तभी से नागिन के गर्भ में ब्रह्मबीज है। यह जानकर आस्तिक ऋषि ने उसे बड़ के वृक्ष के नीचे दबाकर रखा है। पूरे दिन होने पर वह वहीं अंडे रखकर चली जाती है और अंडे वहीं पड़े रहते हैं, उसी एक अंडे में से अविहोत्र नारायण ने जन्म लेकर नागनाथ के नाम से प्रसिद्धि पाई। मछेन्द्रनाथ का सिद्ध किया सूर्य यंत्र गोबर के ढेर पर फेंकने से गोरखनाथ उत्पन्न होंगे और गोरख के नाम से प्रसिद्धि पाएंगे। दक्ष प्रजापति की कन्या पार्वती को विवाह के मंडप में देखते ही ब्रह्माजी का वीर्यपात हुआ, जिससे शर्मिन्दा होकर उन्होंने उसे चारों ओर पैरों से पृथ्वी पर रगड़ दिया, उससे 60 हजार बाल खिल्द ऋषि जन्मे और जो कूड़े के साथ भागीरथी गंगा में जा गिरा था, वह कुशा के झुंडों में अटक गया, जिससे चरपटीनाथ नाम से प्रसिद्ध नाथ प्रकट होंगे। कैलिक ऋषि ने अपना भिक्षापात्र आंगन में रखा था, जिसमें अचानक सूर्य का वीर्य टपक गया, ऋषि ने उस पात्र को ढक दिया, जिससे राजा भृतहरि का जन्म हुआ। हिमालय पर्वत पर अपनी पुत्री सरस्वती को देखकर ब्रह्माजी का वीर्य जब पृथ्वी पर गिरा, उस पर बाघ के पैर पड़ने से वह बाघ के पैरों पर चिपक गया, कुछ छिटककर हाथी के कान में जा गिरा, जिससे कनाफीनाथ ने अवतार लिया। गोरख गुरु ने मिट्टी का गाड़ीवान बनाया और करभंजननाथ का जन्म होगा। प्रभु ने यह रहस्य भली प्रकार समझाया कि किस नाथ को कहां और किस प्रकार जन्म धारण करना है। इतना सुन सब ऋषिगण, मंदिराचल पर्वत पर पहुंचे और शुक्राचार्य की समाधी के निकट समाधी लगाई, तब शुक्राचार्य जन्मे।"

मछेन्द्रनाथ के जन्म के समय शिव और पार्वती कैलाश पर्वत पर विचरण कर रहे थे, तभी पार्वती ने महादेव से कहा—"आप किस मंत्र का जाप करते हैं, वह मुझे भी बताने की कृपा करें।"

इतना सुन शिव बोले—"हे देवी! इस मंत्र के लिए एकांत होना आवश्यक है। उठो, अब चलकर एकांत स्थल ढूंढ़ें।"

फिर दोनों विचरते हुए समुद्र तट पर जा पहुंचे और वहां विराजमान हो गए। तब शंकरजी ने महामाया पार्वती को ब्रह्मज्ञान का उपदेश सुनाना आरंभ किया, परंतु जिस मछली ने ब्रह्म वीर्य निगलकर गर्भ धारण किया था, वह मछली पास के पानी में थी। कथा संपूर्ण होने के पश्चात महादेव ने गौरा से पूछा—"कुछ कथा समझीं?"

अंत में गर्भ के भीतर से मछेन्द्रनाथ बोले—"सब ब्रह्मरूप है।"

दूसरी वाणी सुन शिव ने उस ओर देखा, तब जाना कि मछली के गर्भ से कवि नारायण जन्म लेने वाले हैं।

ऐसा समझ शिवजी बोले—"तुम्हें मेरे उपदेश से महान ज्ञान हुआ है, लेकिन पूर्ण उपदेश लाभ दत्तात्रेय के दर्शनों द्वारा होगा। तुम समर्थ होने पर बद्रिकाश्रम आना, वहीं तुम्हारी इच्छा पूर्ण होगी।" इतना कह शिवजी पार्वती को साथ लेकर कैलाश चले गए और मछेन्द्रनाथ मछली के उदर में शिवजी से सुने मंत्र का जाप करने लगे।

दिन पूरे होने पर मछली समुद्र से बाहर अंडा देकर पुनः जल में चली गई, कुछ समय उपरांत एक बगुला मछली पकड़ने समुद्र तट पर आया और वहां अंडा पड़ा देखकर अपनी चोंच से अंडा फोड़ने लगा। अंडे के भीतर से 'हुआं हुआं...' की आवाज सुनकर बगुला उड़ गया। कुछ देर पश्चात कामिक नामक एक मछुआरा वहां आया और सूर्य के समान तेज मुख वाला रोता हुआ शिशु देख, उसका हृदय भर आया और वह सोचने लगा ये तो प्रभु का प्रसाद मुझको मिला दिखाई देता है। इतने में ही आकाशवाणी हुई—"हे कामिक! यह शिशु यहां तो मर जाएगा, यह अवतार है, इसे अब अपने घर ले जाकर, पुत्र समान इसका पालन-पोषण कर और इसका नाम मछेन्द्रनाथ रखना, तेरा नाम अमर हो जाएगा।"

आकाशवाणी सुन कामिक शिशु को अपने घर ले जाकर, अपनी पत्नी से बोला—"यह बालक हमें भगवान ने दिया है।" पत्नी ने बालक को गोद में लेकर उसे दूध पिलाया, सार दत्ता को बालक मिलने से बड़ा ही आनंद हुआ। धीरे-धीरे मछेन्द्र पांच वर्ष का हो गया, तब उसका पिता उसे एक दिन मछली पकड़ने के लिए अपने साथ ले गया। जब उसने अपना जाल फैलाया, तब बहुत-सी मछलियां उसमें आ फंसी, तो पिता ने उन्हें टोकरे में भरकर पुत्र के पास ही लाकर रख दिया।

अपने पिता का यह कार्य देख, बालक ने सोचा—'मेरी माता के वंश का हनन मेरा बाप करे, यह मैं कैसे सहन कर सकता हूं? मुझे अपने पिता को समझाकर यह कार्य बंद करवाना चाहिए।' ऐसा विचार कर मछेन्द्र ने एक-एक मछली पानी में डालकर सारा टोकरा खाली कर दिया।

कामिक जब दुबारा पकड़ी हुई मछलियां मछेन्द्र के पास लेकर आया, तो टोकरे को खाली देख, धमकाकर बोला—"मैं कितने परिश्रम से मछलियां पकड़कर ला रहा हूं और तू उन्हें पानी में छोड़ रहा है, अब खाएगा क्या? भीख मांगनी पड़ेगी। अब मछलियां पानी में मत छोड़ना।" इतना कह वह फिर मछली पकड़ने चला गया।

मछलियों के कारण बाप की डांट से मछेन्द्रनाथ को काफी दुख हुआ। उसने सोचा—'मेरा बाप मानने वाला नहीं है। इससे तो भिक्षा मांगकर खाना ही अच्छा है। इसलिए अब जब भी खाना खाऊंगा, भिक्षा मांगकर खाऊंगा।' बाप को मछलियों के पकड़ने में मगन देख, उसकी दृष्टि बचाकर वह चल पड़ा और घूमता-घामता बद्रिकाश्रम जा पहुंचा और वहां बारह वर्ष उसने तपस्या की, जिससे उसका शरीर ढांचा बन गया।

इधर भगवान दत्तात्रेय ने शिव की साधना कर महादेव को भुजा भेंट कर आलिंगन किया और अपने पास बैठाकर एक दूसरे का कुशल समाचार पूछा, फिर दोनों बद्रिकाश्रम की रमणीकता देखने चल पड़े और धर्म-चर्चा करते हुए उसी वन के निकट जा पहुंचे, जहां मछेन्द्रनाथ तप कर रहे थे।

भगवान शिव और दत्तात्रेयजी वन विहार करते हुए भागीरथी के तट पर घूम रहे थे। तभी एकाएक उनकी दृष्टि मछेन्द्रनाथ पर पड़ी। कलियुग में ऐसी कठिन तपस्या देख दत्तात्रेय को आश्चर्य हुआ। फिर एक स्थान पर रुककर शिवजी ने दत्तात्रेय को मछेन्द्रनाथ के पास पूछताछ के लिए भेजा।

दत्तात्रेय मछेन्द्रनाथ के पास गए और पूछा—"तुम यहां किस उद्देश्य से तप कर रहे हो?"

इस पर मछेन्द्रनाथ ने दोनों हाथ जोड़कर पहले प्रणाम किया और फिर बोले—"प्रभु! मुझे बारह वर्ष तप करते हुए बीत गए हैं। पहले आप ही बतलाएं, आप कौन हैं?"

इतना सुन दत्तात्रेय बोले—"मैं अत्रि ऋषि का पुत्र हूं और सब मुझे दत्तात्रेय कहकर संबोधित करते हैं। अब अपनी इच्छा कहो।"

इतना सुन मछेन्द्रनाथ ने प्रसन्न हो अपना मस्तक उनके चरणों पर झुका दिया और अपने नेत्रों से आंसू बहाकर दत्तात्रेय के चरण धो डाले। फिर दोनों हाथ जोड़कर बोले—"प्रभु! आप तो अंतर्यामी हो, फिर इस दास को आप क्यों भूल गए। अब आप मेरे सारे पापों को दूर करने की कृपा करें।" ऐसा कह मछेन्द्रनाथ अपना मस्तक उनके चरणों पर रखने लगे। तब दत्तात्रेय ने कहा—"अब चिंता मत करो, तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होने का समय आ पहुंचा है।" इतना कह दत्तात्रेय ने अपना हाथ मछेन्द्रनाथ के सिर पर रखकर कान में मंत्र फूंका। जिससे मछेन्द्रनाथ के अज्ञान का नाश हो गया और चारों ओर उन्हें ब्रह्म-ही-ब्रह्म नजर आने लगा। तब दत्तात्रेय ने पूछा—"महादेव कहां हैं?"

तब मछेन्द्रनाथ बोले—"मुझे ब्रह्म के अतिरिक्त कुछ नजर नहीं आता है। मेरे आगे-पीछे चारों ओर ईश्वर ही है।" बालक का यह वचन और आत्मिक भावना देख दत्तात्रेय उसका हाथ पकड़कर अपने साथ वहां ले गए, जहां भगवान शंकर विराजमान थे। भगवान शंकर ने बालक को शरण दी और उसे सर्व सिद्धि का स्वामी बनाने का कार्य दत्तात्रेय को सौंपा। तब दत्तात्रेय ने प्रसन्न हो, सब विद्याओं का मंत्र उपदेश दिया और नाथ संप्रदाय का निर्माण कर, दत्तात्रेय व भगवान शिव अपने स्थान को गए और मछेन्द्रनाथ रवाना हुए।

उधर पति को अकेले उदास मुख से मछलियों को लादे आता देख और बेटे को संग में न देखकर सारदत्ता का माथा ठनका और वह अपने पति से पूछने लगी—"मछेन्द्र कहां है?" अपनी पत्नी की वाणी सुन कामिक ने अपनी पत्नी को सारी घटना बता दी। बेटे के खो जाने की बात सुनकर सारदत्ता काफी रोई और जब कोई बस न चला तो पति को बुरा-भला कह अपनी छाती पर पत्थर रख लिया।

मछेन्द्रनाथ तीर्थयात्रा करते हुए सप्त शृंगी जा पहुंचे और वहां की देवी के दर्शन किए तथा हाथ जोड़कर विनती की—"हे माता! शाबर मंत्र विद्या पूरी तरह मेरी बुद्धि में बैठ गई है, अब उसी को कविता में रचने का मेरा विचार है, इससे जनता को समझने में सुविधा होगी, परंतु जब तक आपकी कृपा न होगी, तब तक सिद्धि होनी कठिन है।" फिर उन्होंने वहां अनुष्ठान किया।

सात दिन बीतने पर देवी प्रसन्न हुई और पूछा—"तूने किस इच्छा से मेरा अनुष्ठान किया है?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"हे माते! शाबरी मंत्र विद्या को कविता में रचने का मेरा विचार है, स्रो आप मेरी सहायता करें, मेरी मंत्र विद्या को सफल करें।"

इतना सुन देवी ने प्रसन्न हो योगी का हाथ पकड़ा और उन्हें अपने साथ मार्तण्ड पर्वत पर ले गई। जहां वह वृक्ष था, जो मंत्रोक्त यज्ञ रचना करने से, सोने के समान चमककर अति सुंदर दिखाई देने लगता था। तब देवी ने योगी को वृक्ष की टहनियों पर बैठे अनेक देवताओं के दर्शन कराए। फिर देवी बोली—"यहां से थोड़ी दूर ब्रह्मगिरी पर्वत के समीप ही अंजनी पर्वत है, वहीं श्री महाकाली का मंदिर है। पहले वहां जाकर देवी को प्रणाम करो। फिर दक्षिण दिशा में गंगा के तट पर पहुंचो, वहां तुम्हें जल से भरे 100 सरोवर दिखाई देंगे, उनमें तुम नागरबेल डालना, जिस सरोवर में बेल मुर्झा जाए, उसमें स्नान न करना और जिसमें बेल मुर्झाए नहीं, उसमें स्नान कर, जल-पान करना और मूर्छा आने पर सूर्य सहस्त्र नाम का पाठ करना, इससे आगे का मार्गदर्शन होगा। इसके पश्चात कांच के सरोवर में से जल लेकर सूर्य को अर्ध्य देना और नमस्कार करके शेष जल उस वृक्ष में डालना, तब सारे देवता प्रसन्न होकर तुम्हें वरदान देंगे। अगर यह कार्य एक बार में सिद्ध न हुआ तो छः माह तक इसी प्रकार करने से देवता अवश्य प्रसन्न होकर तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करेंगे।"

माता के बताए अनुसार योगी मछेन्द्रनाथ ने सारा कार्य श्रद्धापूर्वक किया, जिससे सात दिन के भीतर सभी देवता प्रसन्न हो गए। सर्वप्रथम भगवान सूर्यदेव ने प्रसन्न होकर उन्हें मनोकामना सिद्धि का वरदान दिया। तत्पश्चात शेष देवताओं ने भी दर्शन देकर वरदान दिए। मछेन्द्रनाथ ने सात महीने तेरह दिन में सभी देवता सिद्ध कर लिए। भवानी के आदेशानुसार वे अंजनी पर्वत पर भी गए और वहां श्री महाकाली के भी दर्शन किए और नागरबेल साथ लेकर सरोवर देखने के लिए गए। वहां उन्हें देवी के बताए 100 सरोवर दिखाई दिए, जिनमें उन्होंने बेलपत्रों को डाल दिया। घूमकर आने पर उन्होंने देखा आदित्य नामक सरोवर में डाली गई बेल में पत्ते निकल आए हैं। जब उसने स्नान कर उन्होंने आचमन लिया, तभी वे मूर्च्छित हो गए। मूर्छा दूर होने पर उन्होंने देवी के कहे अनुसार जाप किया, तभी सूर्य देव उनके समीप आ गए और शीश पर हाथ रखकर मनोकामना पूर्ण होने का वरदान दिया। सूर्य देव से वरदान पाकर और कांच के पात्र में जल भरकर महेंद्र पर्वत पर पहुंचे और वहां आशतत्त्व के वृक्ष को प्रणाम किया और सूर्य देव को स्मरण कर जल

छोड़ दिया। जल छोड़ने के साथ ही देवता प्रकट हो गए और उन्होंने पूछा—"मुझे कैसे स्मरण किया?"

तब योगी ने हाथ जोड़, प्रणाम करके कहा—"प्रभु! मेरी इच्छा शाबरी मंत्र की कविता करने की है, इसलिए आप कृपा कर मेरी विद्या को सफल करें।"

इतना सुन सूर्य देव प्रसन्न हो योगी की इच्छा पूर्ति के लिए सहायक हुए, इस तरह शाबरी मंत्र सरल कविता रूप में तैयार हो गए।

मछेन्द्रनाथ तीर्थ यात्रा करते हुए बंगाल प्रांत की धारा नगरी जा पहुंचे, वहां सूर्य दयाल नामक पंडित रहता था। उसकी पत्नी का नाम सरस्वती था, जो अपने नाम के अनुसार सुशील, सुंदर, पतिव्रता, किंतु संतानहीन थी। एक दिन योगी मछेन्द्रनाथ भिक्षा-पात्र उठाए चिमटा बजाते 'अलख निरंजन' का उच्चारण करते हुए, सरस्वती के दरवाजे पर जा पहुंचे। सरस्वती ने जब योगी का बोल सुना तो भीतर से भिक्षा लाकर उनके पात्र में डाल मछेन्द्रनाथ का सूर्य के समान चमकता मुख निहारने लगी। सरस्वती की इच्छा समझते योगी को देर न लगी कि यह नारी दुखियारी है। मछेन्द्रनाथ पूछने लगे—"हे माते! आप किस दुख से दुखी हो, क्या मुझे बताने का कष्ट करोगी?"

इतना सुनकर सरस्वती बोली—"वैसे तो सब प्रकार से प्रभु की कृपा है, दुख केवल संतान का है। अगर आपके आशीर्वाद से मुझे एक बेटा हो जाए तो मैं सुखी हो जाऊंगी।"

योगी से इतना कहते ही उसकी आंखों से आंसू टपकने लगे। योगी ने अपनी झोली में हाथ डाल भस्मी निकाली और बोले—"इस भस्मी को ऋतु स्नान करने के पश्चात खीर में मिलाकर खा लेना। तुम्हारे यहां भगवान हरिनारायण का अंश अवतार लेगा, जो सब रिद्धि-सिद्धि का स्वामी होगा। बारह वर्ष पश्चात नगर भ्रमण करता हुआ, मैं पुनः तुम्हारे घर आऊंगा और तुम्हारे पुत्र को अपना शिष्य बनाऊंगा।"

सरस्वती ने भस्मी लाकर घर में रख दी और मन में विचारा कि ऋतुवंती होने के पश्चात इसे खा लूंगी। जब वह घर के कामों से निबटकर पड़ोस में अपनी सखी-सहेलियों के पास मनोरंजन करने गई, तो योगी की भस्मी की चर्चा करना न भूली, तभी उनमें से एक सखी बोली—"तुम क्या पागल हो गई हो, उस भस्मी को भूलकर भी न खाना, ये जोगी पाखंडी होते हैं। जहरीला विष दे जाते हैं, जिसके खाने से मृत्यु तक हो जाती है, अगर इनकी भस्मी से

संतान होने लगे, तो पृथ्वी पर एक बांझ भी ढूंढ़ने से न मिले। कलियुग में ढोंगियों का ही बोलबाला है। सच्चे जोगी तो वन में तपस्या करते हैं। उन्हें दुनिया वालों से क्या लेना-देना।"

जितने मुंह उतनी बातें, सरस्वती को भस्मी खाने का परामर्श एक ने भी नहीं दिया। फिर उसने भी सोचा, बात तो ठीक ही मालूम पड़ती है, न बाबा न, मैं उस भस्मी को घर जाकर अभी कूड़े में फेंक दूंगी। ऐसा विचार बना उसने अपने घर आकर पास ही में कीचड़ भरे गड्ढ़े में उस भस्मी को फेंक दिया, परंतु योगी की भस्मी ने अपना प्रभाव कम न होने दिया। खेत के बीज की तरह उस गड्ढे में भी जीवन के अंकुर फूट पड़े।

बारह वर्ष पूरे हो गए और बेचारी सरस्वती बांझ ही बनी रही। बारह वर्ष पूरे होने पर योगी 'अलख निरंजन' करता हुआ आ पहुंचा। सरस्वती के दरवाजे पर आते ही योगी ने सोचा इसका बालक ग्यारह वर्ष कुछ महीने का हो गया होगा। उधर नियमानुसार सरस्वती भिक्षा लेकर आई, तो उसे बारह वर्ष पहले के योगी को पहचानते देर न लगी और भस्मी फेंक देने के कारण कहीं योगी श्राप न दे डाले, यह सोचकर वह कांपती हुई आगे बढी। भिक्षापात्र में भिक्षा डालने के लिए उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया, परंतु योगी ने भिक्षापात्र पीछे हटाते हुए कहा—"माता! अब तो आपका पुत्र युवा हो गया होगा, क्या मुझे उसके दर्शन नहीं कराओगी?"

सरस्वती के मुख से बोल नहीं निकला। वह धर्म संकट में फंस गई। उसको मौन देख योगी बोले—"माते! क्या संतान उत्पन्न नहीं हुई या होकर नष्ट हो गई, आप कुछ तो मुख से बोलें?"

योगी का मुख देख वह और भयभीत हो गई, उसको सब सच-सच कहना पड़ा—"आपकी दी हुई भस्मी मैंने खाने की बजाय कीचड़ भरे गड्ढे में फेंक दी।"

योगी ने कहा—"चलकर वह जगह मुझे दिखाओ।"

सरस्वती ने उस गड्ढे को दिखाया। योगी ने गड्ढे को देखकर आवाज दी—"हे हरिनारायण! अगर तुम्हारी उत्पत्ति हो चुकी हो तो गड्ढे से बाहर निकल आओ।"

योगी की आवाज के उत्तर में गड्ढे में से आवाज आई—"गुरुजी! उत्पन्न तो मैं हो चुका हूं, परंतु गोबर के ढेर में दबा होने से बाहर निकलने में विवश हूं, आप मुझे यहां से निकालने की कृपा करें।"

गड्ढे में से बालक की आवाज सुनकर सरस्वती को बड़ा कौतूहल हुआ और उसने कीचड़ हटाना प्रारंभ कर दिया। कुछ देर पश्चात गोबर के ढेर में से एक सुंदर बालक निकला। बालक को देखकर मछेन्द्रनाथ मुस्कराकर बोले—"तुम्हारी उत्पत्ति गोबर से हुई है, इसलिए तुम्हारा नाम मैं गोरखनाथ रखता हूं। तुम सूर्य पुत्र हो और तुम्हारा यश सूर्य के समान ही सारे संसार में फैलेगा।"

बालक को देख सरस्वती की आंखों से आंसू बहने लगे। उसने योगी की ओर याचना-भरी दृष्टि से देखा।

योगीराज बोले—"माता! तुम्हारे भाग्य में विधाता ने पुत्र लिखा ही नहीं, तभी तो मेरा किया आपके लिए व्यर्थ हो गया। अब आप संतोष करो और ईश्वर इच्छा समझ मन को समझाओ कि आपके भाग्य में संतान सुख लिखा ही नहीं।" इस प्रकार योगी ने उसको सांत्वना दी और गोरखनाथ को अपने साथ ले जाकर नाथ संप्रदाय में सम्मलित कर लिया।

जगन्नाथ की यात्रा कर मछेन्द्रनाथ रामेश्वरम जा पहुंचे। हनुमानजी स्नान कर वहां बैठने ही वाले थे कि तभी वर्षा होने लगी। तेज वर्षा होने के कारण वे अपने ठहरने के लिए पहाड़ खोदकर स्थान बनाने लगे, यह अद्भुत कार्य देख, मछेन्द्रनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ।

योगी ने हनुमान से कहा—"जो पहाड़ खोदकर इतनी वर्षा में भी जगह बनाने का प्रयत्न कर रहा है। यह तेरा घर कब तक तैयार होगा?"

मछेन्द्रनाथ के ऐसे वचन सुनकर, हनुमान बोले—"तू इतना चतुर कब पैदा हुआ और तू है कौन?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"मैं यती हूं और मेरा नाम मछेन्द्रनाथ है।"

यह सुनकर हनुमान बोले—"यती का अर्थ क्या है, यह भी तू जानता है?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"मेरे प्रताप के कारण लोग मुझे यती कहते हैं।"

मछेन्द्रनाथ का उत्तर सुन हनुमान बोले—"आज तक एक हनुमान ही यती कहलाता था, तू दूसरा यति कब पैदा हुआ?"

हनुमान के ऐसे वचन सुनकर मछेन्द्रनाथ बोले—"आप मुझे कौन-सी कला दिखाओगे, दिखाओ उसकी काट मेरे गुरु करेंगे।"

मछेन्द्रनाथ के शब्द सुन, हनुमान को बड़ा क्रोध आया और उन्होंने विकट रूप धारण किया, जिससे मछेन्द्रनाथ को कोई भेद ही न अनुभव हो। उन्होंने

मछेन्द्रनाथ के ऊपर सात पर्वत फेंके, जिन्हें बादलों के समान गरजते हुए जोर से आते देख योगी ने अपनी मंत्र शक्ति द्वारा उन्हें अधर में ही रोक दिया। तब हनुमान का क्रोध भड़क उठा और उन्होंने एक बहुत ही बड़ा पर्वत उखाड़कर योगी के सिर पर फेंका, तब मछेन्द्रनाथ ने सागर का जल ले और शाबर मंत्र पढ़ हनुमान के ऊपर छिड़का, जिससे हनुमान वहीं-के-वहीं अटक गए और उनकी शक्ति रुक गई। यह करिश्मा देख हनुमान के पिता वायुदेव ने योगी से प्रार्थना की, उनकी प्रार्थना स्वीकार कर चुल्लू में जल ले मंत्र पढ़कर योगी ने हनुमानजी पर दोबारा छिड़का, तो पर्वत अपने स्थान पर आ जमे और हनुमानजी पहले जैसे हो गए। फिर मछेन्द्रनाथ के निकट आकर बोले—"मछेन्द्रनाथ! तुम्हारी विद्या धन्य है।"

हनुमानजी के पिता वायुदेव ने कहा—"हनुमान! मेरा तेरा बल इनके संमुख न चलेगा, योगी की शक्ति महान है।" अंत में मछेन्द्रनाथ ने वायुदेव और हनुमानजी दोनों के आगे नतमस्तक हो अपने ऊपर कृपा करने की विनती की। तब दोनों ही प्रसन्न होकर बोले—"हम दोनों तुम्हारी सहायता को सदैव तत्पर रहेंगे और हम तुम्हें यती होने का वरदान देते हैं।"

इसके बाद रामेश्वर से मछेन्द्रनाथ हनुमान को नमस्कार कर हिंग्लाज देवी के दर्शनों के लिए गए। वह ज्वाला देवी भगवती जहां हैं, मछेन्द्रनाथ वहां जा पहुंचे। जब मछेन्द्रनाथ देवी के द्वार पर दर्शनों को पहुंचे तो दरवाजे पर अष्ट भैरव को खड़े पाया, उन्होंने मछेन्द्रनाथ को देखते ही पहचान लिया कि इन्होंने शाबरी मंत्र के प्रभाव से नागपक्ष अवस्था में पेड़ के नीचे सब देवताओं को वशीभूत कर उनसे वरदान प्राप्त किए हैं। इनका कार्य कहां तक सिद्ध हुआ है, देखना चाहिए। ऐसा विचार कर भैरव अपना वेश बदलकर संन्यासी बन दरवाजे पर अड़कर खड़ा हो गया और मछेन्द्रनाथ से बोला—"कहां जा रहे हो?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"मेरी इच्छा देवी के दर्शन करने की है, इसलिए मैं आया हूं। आप भी तो सन्यासी हैं। क्या आपको भी दर्शनों की अभिलाषा है?"

तब वह बोले—"हम यहां पर द्वारपाल हैं और भीतर जाने वालों के पाप-पुण्य की परीक्षा करने के बाद ही भीतर जाने देते हैं, इसलिए आप अपने पाप-पुण्य की परीक्षा देकर ही भीतर जाना और जो दुष्ट कर्म छिपाकर रखता है, वह दरवाजे में ही अटक जाता है, फिर झूठे को झटका देकर हम पीछे खींच

लेते हैं और सजा देते हैं। आपने जितने भी पाप-पुण्य किए हों, उन्हें बताकर दर्शन करने जा सकते हो।"

मछेन्द्रनाथ भैरव की बात सुनकर बोले—"पाप-पुण्य मुझे कुछ नहीं मालूम और जो पाप-पुण्य मुझसे हुए भी, वह सब ईश्वर के लिए हुए।"

इतनी बात सुन भैरव बोले—"आपने कैसा भी दुष्कर्म किया या नहीं, तब भी बताकर भीतर जाओ, तभी देवी कृपा करके दर्शन देगी।

इस तरह दोनों में काफी देर तक बहस हुई, फिर मछेन्द्रनाथ बोले—"मैंने संसार के प्राणियों पर शासन करने के लिए ही जन्म लिया है। मेरे आगे तुम जैसे का प्रताप गया बीता है।"

मछेन्द्रनाथ की ऐसी बात सुनकर भैरव क्रोध में आपे से बाहर हो युद्ध के लिए तैयार हो गया। मछेन्द्रनाथ ने गुरु दत्तात्रेय की जय बोलकर हाथ में भस्मी लेकर मंत्र पढ़ा और बोले—"मेरे मित्र वारुणी देव मेरी कार्यसिद्धि को तैयार हो जाओ।"

इस प्रकार सबको आमंत्रित कर चारों दिशाओं में भस्मी फेंक दी, फिर वज्रपंजर का प्रयोग कर विभूति को अपने शरीर पर मल लिया, जिससे योगी का शरीर वज्र के समान हो गया, तब उन्होंने भैरव से कहा—"अब युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।"

इतना सुन भैरव ने क्रोध में भरकर मछेन्द्रनाथ पर अपने शस्त्र चलाए, परंतु योगी के कोई जख्म नहीं लगा। वे शस्त्र उन्हें तिनके के समान अनुभव हुए, फिर उन्होंने वासव शक्ति का प्रयोग किया, जिससे त्रिलोक कांप उठा, तब देवी ने पता करने के लिए अपनी दासियां भेजी, लेकिन मछेन्द्रनाथ के संमुख सब असफल हो गए, फिर उन्होंने मोहनी अस्त्र का प्रयोग किया, जिसने गुप्त रूप से दासियों के शरीर में संचार कर सभी को भ्रम में डाल दिया। फिर दूसरे चमत्कार द्वारा गौरव अस्त्र का प्रयोग किया, तब सब दासियों ने वस्त्र उतारकर फेंक दिए और सभी नग्न अवस्था में हो गईं। फिर माया अस्त्र का प्रयोग कर, हजारों की संख्या में पुरुषों का निर्माण कर उनके सामने खड़े कर दिए और स्मरण अस्त्र के प्रयोग से सब दासियों को जाग्रत किया, जब उन्होंने देखा कि हजारों पुरुष हमारे सामने खड़े हैं और हम सब वस्त्रहीन हैं। इतना समझते ही सब नारियां लज्जित हो छिपने लगीं, कुछ ने भागते हुए भैरव को मार्ग में बेहोश पड़ा देखा और पुनः वापस लौटकर देवी के पास पहुंचीं,

उनकी नग्न अवस्था देख देवी को काफी आश्चर्य हुआ, फिर उन्होंने उनसे पूछा—"तुम्हारी यह दशा कैसे हुई?"

"यहां एक योगी आया हुआ है, उसने ही हम सबकी यह दशा बनाई है। उसी ने भैरव को भी मूर्च्छित किया है और आप भी शीघ्र भागो वरना आपकी भी ऐसी ही गत बनेगी।" दासियां देवी को बता ही रही थीं कि तभी सामने से आता हुआ योगी दिखाई दिया। इस प्रकार दासियों की दशा देख, देवी को अत्यधिक कौतूहल हुआ, फिर उसने अंतरदृष्टि से देखा, तब उसे ज्ञान हुआ कि कवि नारायण ने ही मछेन्द्रनाथ के नाम से अवतार लिया है। तब देवी ने अपनी दासियों को पहनने के लिए नए वस्त्र दिए और उनको साथ लेकर मछेन्द्रनाथ के निकट गईं और वत्स कहकर उनके सिर पर अपना हाथ रख, प्रेमपूर्वक अपनी गोद में बिठाकर कहा—"धन्य है तुम्हारे प्रताप को, अब तुम क्षमा प्रदान कर भैरव को होश में लाओ।"

तब उन्होंने वाताकर्षण अस्त्र निकाल लिया, फिर वहां भैरव आकर देखने लगा कि देवी मछेन्द्रनाथ को अपनी गोद में लिए बैठी हैं। तब भैरव और देवी ने मछेन्द्रनाथ की प्रशंसा की और कहा—"नाग अश्वत्थ के वट के नीचे सब देवताओं ने प्रसन्न हो, इन्हें आशीर्वाद दे रखा है।"

भैरव की वार्ता सुन देवी ने मछेन्द्रनाथ से कहा—"पुत्र, मेरी तुम्हारा पराक्रम देखने की इच्छा है। मैंने सुना है कि तुम पहाड़ उड़ाकर फिर उसी स्थान पर रख सकते हो, क्या मुझे अपनी शक्ति दिखाओगे?"

देवी की इस प्रकार की इच्छा सुनकर वातास्त्र की योजना कर मंत्र पढ़कर भस्मी पहाड़ पर फेंकी, भस्मी गिरते ही पहाड़ आकाश में उड़ने लगा, तब देवी ने प्रसन्न होकर मछेन्द्रनाथ की पीठ थपथपाई और पहाड़ को नीचे उतारने के लिए कहा, तब योगी ने वायु अस्त्र का प्रयोग किया और पहाड़ नीचे उतरकर अपने स्थान पर आकर जम गया। योगी की करामात देखकर देवी को संतोष हुआ। फिर देवी योगी को अपने स्थान पर ले गईं। जहां वे तीन दिन रहे और जाते समय देवी ने प्रसन्न हो स्पर्शास्त्र और भिन्नास्त्र दो शस्त्र प्रसाद स्वरूप मछेन्द्रनाथ योगी को दिए, तब योगीराज ने प्रसन्न हो उन्हें स्वीकार किया और देवी को नमस्कार कर वहां से चल पड़े।

मछेन्द्रनाथ ने बारामल्हार स्थान पर भैरवों को विश्वास दिलाकर देवी से वरदान प्राप्त किया और कुमार देवता की तीर्थयात्रा कर कोंकण के कुडाल

प्रांत के अंडूल ग्राम गए, जहां श्री महाकाली का मंदिर है, जब वे महापात्र के दर्शनों के लिए गए तो देवी का रूप बड़ा कठोर पाया। वहीं शंकर भगवान के हाथ में कालिकास्त्र की स्थापना हो रही थी और उसी अस्त्र से असंख्य दैत्यों का संहार किया गया, तभी शिवजी ने प्रसन्न होकर उस अस्त्र का वरदान देवी को दिया और तभी देवी ने वरदान मांगा—"हे देव! अब आप मुझे विश्राम करने की आज्ञा दें।"

तब भगवान शंकर ने वहीं देवी की स्थापना करवा दी, इसी देवी के दर्शनों को मछेन्द्रनाथ गए। तब उन्होंने देवी से प्रार्थना की—"हे माता! मैंने शाबर मंत्रों को तैयार किया है। उसमें आपकी सहायता की आवश्यकता है। अब आप दया करें और मुझे वरदान देकर मेरे शाबर मंत्र के गौरव को बढ़ाएं।"

योगी की प्रार्थना सुन, देवी क्रोध में भर, लाल-पीली होकर बोलीं—"अरे दुष्ट! तेरे यहां आने से मुझे कष्ट पहुंचा है। मैं यहां एकांत में रहती हूं और तू शाबर विद्या का निर्माण कर वरदान मांगकर मुझे कष्ट पहुंचाना चाहता है, लेकिन तू यहां से चला जा, नहीं तो मैं तुझे सजा दूंगी। मैं शंकर के हाथ का अस्त्र हूं, मुझे जगाने की तेरी हिम्मत कैसे पड़ी? अब तू चला जा, नहीं तो तेरी कुशल नहीं है।"

देवी की बात सुन योगी बोले—"मेरी कुशल नहीं है! ऐसा विचार मन में भी मत लाना।"

इतना सुन देवी क्रोधित होकर बोलीं—"अरे मूर्ख! तू अपने हाथ में कंकण बांध और माथे पर सिंदूर लगाकर मुझे धमकाने आया है। तेरी उत्पत्ति तक का मुझे पता है कि तेरा पिता मछुआरा था। तू केवल भूतों और बेतालों को वश में करके गर्व से पागल हो रहा है, परंतु मैं तेरे वश में आने वाली नहीं। मैं विष भरा अस्त्र हूं।"

देवी की इतनी बात सुन योगी बोले—"आप शिव के साथ रहकर बड़े-बड़े पराक्रम दिखाने का दावा कर रही हैं, पहले आप ही मुझे अपना पराक्रम दिखाओ।"

योगी के इतना कहते ही महाकाली शेर पर सवार हो गर्जती हुई आकाश में प्रकट हुईं और उसी गर्जना से आकाश में शब्द गूंजे—"हे योगी! अब तू अपने प्राण बचा, जिस तरह बज्रास्त्र से पर्वत टूटता है, उसी तरह अब ये पृथ्वी टूटेगी, अब मुझे देखना है, तू मेरा क्या करेगा?"

इस प्रकार की धमकी सुन योगी ने वासव शक्ति भस्मी आकाश में उड़ा दी, जिससे एक वाश्वास्त्र शक्ति प्रकट हुई। सूर्य का वास्वास्त्र और शिव का भद्र कालिकास्त्र दोनों का आकाश में घोर युद्ध शुरू हुआ और अपनी-अपनी शक्ति अनुसार दोनों एक दूसरे पर प्रहार कर रहे थे। तब काली ने वासव शक्ति को गिरा दिया और मछेन्द्रनाथ की ओर दौड़ीं, योगी ने देवी की माया समझ और भस्म हाथ में लेकर एकादशरुद्र मंत्र सिद्ध करके फेंका, उसको फेंकते ही ग्यारह रुद्र प्रकट हुए, जो प्रलय प्रकट करने वाले महा भयंकर थे, उन्हें देखते ही काली का तेज क्षीण पड़ गया और तुरंत ही देवी ने सब रुद्रों को प्रणाम कर उनकी स्तुति की, तब वे शांत हो गए।

योगी ने बज्रास्त्र व धूमास्त्र छोड़े, परंतु उनका कालिका पर कोई प्रभाव नहीं हुआ, उसने धूमास्त्र को निगल लिया और बज्रास्त्र को शैलान्द्री नामक पर्वत पर पटक दिया, जिससे पर्वत के टुकड़े-टुकड़े हो गए, अपने दोनों शस्त्रों की ऐसी दशा देख योगी ने वाताकर्षण अस्त्र जपकर छोड़ा, जो दत्तात्रेय ने मछेन्द्रनाथ को दिया था। उसको सिद्ध कर फेंकने से उसने कालिका देवी पर प्रकोप किया। उसी समय उसके प्रभाव से देवी मूर्च्छित हो पृथ्वी पर गिर पड़ी। ऐसी स्थिति देख देव, देवी, दानव, असुर, किन्नर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ। इधर जब देवी के प्राणों पर बन आई और वह निकलने को हुए, तब उसने शिव का स्मरण किया। जब शंकर को कैलाश पर्वत पर पता चला कि यह सब कार्य मछेन्द्रनाथ द्वारा हुआ है, तभी वे नंदी पर सवार हो वहां आए। भोलेनाथ को देखते ही मछेन्द्रनाथ हाथ जोड़कर उनके चरणों पर गिर पड़े। तब शिव ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

मछेन्द्रनाथ अपना मस्तक झुकाकर बोले—"ये सब आपकी ही कृपा है। बद्रिकाश्रम में आपने प्रसन्न हो दत्तात्रेय को मेरा गुरु बनाकर मुझे मंत्रों के साथ-साथ आशीर्वाद भी दिया था।"

तब शिव बोले—"वत्स! पहले तुम देवी की मूर्छा दूर करो।"

इस पर योगी बोले—"पहले आप मेरे सिर पर अपना वरद्हस्थ रखो।"

तब प्रसन्न हो शिवजी बोले—"वत्स! अब तुम्हें किस वस्तु की इच्छा शेष है?"

उनके इस प्रकार कहने पर योगी ने कहा—"जिस प्रकार शुक्राचार्य ने संजीवनी की विद्या कच को दी थी, उसी तरह शाबरी विद्या आपने मुझे स्मरण

कराई, उसी को मैंने कवित्त में रचा, अब वरदान देकर कालिकास्त्र प्रदान करें। आपके साए में रहकर जैसे काली ने असंख्य कार्य किए, उसी तरह अब वह मेरे वश में रहकर, मेरे कार्य करें और मंत्र कार्य सफल होने का आशीर्वाद दें। अगर आप मुझे ऐसा वरदान दें तो मैं सदैव आपका स्मरण करता रहूंगा।"

इतना सुन भगवान शंकर बोले—"पुत्र, उसे मैं आज से तेरे सुपुर्द करता हूं।"

फिर मछेन्द्रनाथ ने कलास्त्र मंत्र जपकर भस्मी फेंकी और वाताकर्षण अस्त्र निकाल लिया। तब देवी होश में आईं और उठकर इधर-उधर देखने लगीं और जब उन्हें शिव दिखाई दिए, तब वह शंकर के चरणों पर अपना मस्तक रखकर बोलीं—"आज आपने मेरे प्राण बचाए हैं।"

ऐसा कहकर वह विनती करने लगीं।

तब भगवान शंकर देवी से बोले—"मेरा कहना मानकर और जो मैं कहूं वह इसी समय मुझको दो।"

तब देवी ने कहा—"आपकी क्या इच्छा है, प्रभु बताएं?"

तब शिवजी ने कहा—"जिस प्रकार अब तक तुम मेरे वश में रही हो, उसी प्रकार जन-कल्याण के लिए आज से मछेन्द्रनाथ की सहयोगी बनो।"

इतना सुन देवी मुस्कराकर बोलीं—"मैं तो सदैव से इनकी हूं।"

मछेन्द्रनाथ और भगवान शिव को देवी ने तीन दिन अपने यहां रोके रखा, चौथे दिन शिव तो कैलाश को रवाना हो गए और मछेन्द्रनाथ गदासी तीर्थ के लिए रवाना हुए।

मछेन्द्रनाथ हरेश्वर दर्शन को रवाना हुए। वहां उन्होंने गदासी में स्नान किया, तब वहां डमरू, धनुष और त्रिशूल लेकर वीरभद्र आए और मछेन्द्रनाथ से उनकी भेंट हुई और दोनों ने एक-दूसरे को नमस्कार किया।

फिर वीरभद्र ने योगी से पूछा—"आप कौन हैं और कौन से पंथ के हैं?"

योगी बोले—"मुझे मछेन्द्रनाथ कहते हैं। झोली, खप्पर, मुद्रा, चिमटा यही हमारे आभूषण हैं।"

इतना सुनने के पश्चात वीरभद्र बोले—"झूठ बोलकर और काला मुंह करके संसार में घूमते हो, ये ठीक नहीं है, इसलिए अपने ये ढोंग छोड़ दो, नहीं तो कष्ट भोगना पड़ेगा। वेद के विरुद्ध एक अलग पंथ चलाने वाला कौन मूर्ख गुरु है?"

गुरु के लिए अपशब्द सुनकर मछेन्द्रनाथ क्रोधित हो गए और बोले—"अरे अधम! तेरे दर्शन कर मुझे स्नान करना पड़ेगा। अब तू चुपचाप यहां से चला जा। नहीं तो तेरी मृत्यु निश्चित है।"

इतना सुन वीरभद्र को भी क्रोध आ गया, वह बोला—"अरे पाखंडी! अब मैं तेरे प्राण लेता हूं।"

इतना कहकर उसने धनुष पर बाण चढ़ाया।

तब योगी बोले—"अरे मूर्ख! तू मुझे धमकी देकर अपना सम्मान खो रहा है।"

इतना सुन वीरभद्र ने धनुष आगे कर योगी से भगवान का नाम जपने के लिए कहा। यह सुनकर योगी ने भस्मी हाथ में लेकर बज्रास्त्र को शुद्ध कर फेंका, तब वह चारों दिशाओं में घूमने लगा। तब वीरभद्र को अपना बाण तिनके के समान दिखाई देने लगा, जो बाण योगी के प्राण लेने के लिए था, वही भस्मी के जोर से आकाश में घूमता हुआ दिखाई देने लगा, तभी मछेन्द्रनाथ की बज्राशक्ति से वह बाण टूट गया। तब वीरभद्र ने नागा अस्त्र छोड़ा, तभी मछेन्द्रनाथ ने अपनी रक्षा हेतु रुद्राक्ष व खगेद्रास्त्र फेंका। जिसने वीरभद्र को जर्जर कर डाला। फिर वीरभद्र ने वातास्त्र छोड़ा और मछेन्द्रनाथ ने पर्वतास्त्र छोड़ा। इस तरह दोनों वीर एक दूसरे को नीचा दिखाने का प्रयत्न करते रहे। अंत में ब्रह्मा, विष्णु, महेश युद्ध स्थल पर आ पधारे और मछेन्द्रनाथ का शंका-समाधान किया और बताया यह कवि नारायण के अवतार हैं। तब वीरभद्र भी उन्हें वरदान देने को तैयार हो गए और कहने लगे—"मैंने अनेक वीर देखे, लेकिन मछेन्द्रनाथ के समान नहीं देखा।"

फिर वीरभद्र ने मछेन्द्रनाथ का आलिंगन कर पूछा—"आपकी क्या इच्छा है?"

तब मछेन्द्रनाथ ने कहा—"मैंने जो शाबर मंत्र सिद्ध किए हैं। उनको आपकी सहायता की आवश्यकता है।"

तब वीरभद्र ने वरदान दिया, इसके पश्चात मछेन्द्रनाथ ने तीनों देवों को प्रणाम किया।

कुछ दिन पश्चात वे तीर्थयात्रा के लिए रवाना हुए। योगी पहले केकड़ा देश के बज्रवन में गए, जहां देवी भगवती का स्थान है। वहां उन्होंने 360 गर्म जल से भरे कुंड देखे। जिन्हें देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर वे सब कुंडों

में बारी-बारी स्नान कर देवी के दर्शन के लिए मंदिर में गए। वहां पुजारी ने उन्हें बताया—"यहां पहले वशिष्ठ मुनि ने यज्ञ किया था, तभी देवताओं ने स्नान करने के लिए इन गर्म जल के कुंडों का निर्माण किया और इनके नाम भी अपने-अपने नामों के अनुसार रखे थे। वशिष्ठ मुनि यहां बारह वर्ष और बारह दिन रहे और यज्ञ समाप्त होने के पश्चात स्वर्गलोक चले गए, परंतु कुंड अभी तक यहीं हैं।"

इतना सुन मछेन्द्रनाथ की भी इच्छा जाग्रत हुई कि मैं भी एक कुंड का निर्माण करूं, तब उन्होंने अपने त्रिशूल की सहायता से कुंड तैयार किया और जल मंत्र का जाप कर, भोगावती के जल का निर्माण किया। फिर अग्नि मंत्र का जाप कर, उसमें अग्नि का प्रवेश कराकर जल को गर्म किया। फिर अपने भोगावती कुंड में स्नान किया। तब वे देवी दर्शन के लिए गए और देवी को अपने द्वारा रचे गर्म जल से स्नान कराया, तब देवी ने प्रसन्न हो योगी की पीठ थपथपाई और एक महीने मछेन्द्रनाथ को अपने पास रखा। एक दिन मछेन्द्रनाथ ने देवी से पूछा—"हे माता! आपका नाम बज्राबाई क्यों पड़ा?"

तब देवी ने उत्तर दिया—"यहां वशिष्ठ मुनि के यज्ञ में इंद्र देवता आए थे, पर यहां आए मुनियों ने इंद्र का सम्मान नहीं किया, तब उन्होंने अपना बज्रास्त्र छोड़ा, तब भगवान राम ने शक्ति मंत्र का कुश फेंका, जिससे मैं प्रकट हुई और इंद्र का वज्रास्त्र निगल गई, मैंने यज्ञ में विघ्न नहीं पड़ने दिया।"

फिर योगी एक मास व्यतीत होने के उपरांत देवी से आज्ञा लेकर आगे की यात्रा पर चल दिए।

कुछ दिन पश्चात गोरखनाथ को साथ ले, मछेन्द्रनाथ तीर्थ यात्रा के लिए चल पड़े। ये दोनों दिन-भर तो सफर करते और रात्रि में किसी आश्रम में आसन बिछाकर विश्राम करते थे, ये एक रात्रि से अधिक कहीं नहीं ठहरते थे। इस प्रकार यात्रा करते हुए ये उत्कल राज्य में जा पहुंचे। उनकी अभिलाषा जगन्नाथ के दर्शनों की थी।

ये दोनों राज्य के बाहर ही एक मंदिर में ठहर गए। वह स्थान कनकगिरी कहलाता था। गुरु मछेन्द्रनाथ गोरखनाथ की भक्ति की परीक्षा लेना चाहते थे। यहां उचित अवसर देख गोरखनाथ से बोले—"पुत्र! बड़ी भूख लगी है।"

अपने गुरु की बात सुनकर गोरखनाथ बोले—"आप आज्ञा दें गुरुदेव, मुझे क्या करना है?"

इस पर योगी बोले—"बेटा! नगर से भिक्षा मांगकर लाना ही सबसे सरल मार्ग है।"

गोरखनाथ गुरु की आज्ञा पाकर भिक्षा मांगने चल पड़े और नगर में घर-घर अलख जगाने पर भी निराशा के अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। थोड़ा आगे बढ़ने पर क्या देखते हैं कि एक ब्राह्मण के घर धूमधाम से श्राद्ध हो रहा है। जिसे देख गोरखनाथ ने खुश होकर अलख नाम का उच्चारण किया।

अपने द्वार पर साधु को भिक्षापात्र लिए देख गृहस्वामिनी अपने यहां बने पूरी-पकवान वगैरह सामग्री लेकर द्वार पर आ पहुंची और गोरखनाथ के पात्र को ऊपर तक भर दिया गोरखनाथ ने स्वादिष्ट व्यंजनों से अपना कमंडल भरा देखा तो वे प्रसन्न हो अलख नाम का उच्चारण कर चल पड़े और वह भरा हुआ पात्र अपने गुरु के सामने लाकर रख दिया।

अपने शिष्य को स्वादिष्ट पदार्थ लाया देख, मछेन्द्रनाथ बड़े प्रसन्न हुए। वे भोजन करते जाते थे और एक-एक पदार्थ की प्रशंसा करते जाते थे। उन्हें उड़द की दाल के दही-बड़े अधिक अच्छे लगे। भोजन समाप्ति के पश्चात वे बोले—"वत्स! वैसे तो सभी सामग्री स्वादिष्ट थी, पर दही-बड़े बड़े ही स्वादिष्ट थे, मेरा मन उन्हें और खाने के लिए कर रहा है। तुम जाकर दही-बड़े और मांग लाओ।"

गोरखनाथ ने गुरु की आज्ञा का उल्लंघन करना अनुचित समझा और दोबारा दही-बड़े मांगने चल पड़े। वे मन में विचार करते जाते थे, अगर गृहस्वामिनी ने दही-बड़े देने से मना कर दिया, तब क्या होगा? इस प्रकार सोचते-विचारते वे गृहस्वामिनी के द्वार तक जा पहुंचे और 'अलख निरंजन' का उच्चारण किया। गृहस्वामिनी क्रोध-भरे स्वर में बोली—"मैंने तुझे पहले ही काफी सामग्री दी थी, क्या उससे तेरी भूख नहीं मिटी?"

गोरखनाथ नरम भाषा में बोले—"माते, मेरे साथ मेरे गुरुदेव भी हैं। मैंने आपसे मिली भोजन सामग्री उनके संमुख रख दी थी और उन्होंने उसे प्रेमपूर्वक खाया, अभी उनकी कुछ दही-बड़े और खाने की इच्छा है। जिस कारण मुझे पुनः आना पड़ा। आप एक-दो दही-बड़े और देने की कृपा करें।"

गोरखनाथ की बात सुन गृहस्वामिनी बोली—"मुझे तो तू निरा पेटू दिखाई दे रहा है। तेरी ही जीभ दही-बड़ा खाने को लपलपा रही है। गुरु बेचारे को व्यर्थ बदनाम कर रहा है।"

गोरखनाथ बोले—"माता, मैं कभी झूठ नहीं बोलता, आप विश्वास करें।"

गृहस्वामिनी बोली—"तुम जैसे ठगों से मैं भली-भांति परिचित हूं, तुम किसी का भला नहीं कर सकते, गृहस्थियों को लूटकर खाना ही तुम्हारा एकमात्र धर्म है।"

गृहस्वामिनी के ऐसे कठोर वचन सुनकर गोरखनाथ बोले—"माता, आप मेरे गुरु की इच्छापूर्ति कर दें। मैं आपका हर कष्ट दूर करने के लिए उपस्थित हूं।"

इस पर गृहस्वामिनी कुछ नर्म पड़कर बोली—"तेरे पास रखा ही क्या है, जो मेरी इच्छा पूरी करेगा।"

गोरखनाथ बोले—"माता, आप एक बार कहकर तो देखें।"

गृहस्वामिनी तत्काल बोली—"मुझे दही-बड़े के बदले तेरी एक आंख चाहिए, बोल देगा?"

गोरखनाथ बोले—"माते, नेत्र कौन-सी बड़ी वस्तु है, मैं गुरु इच्छा पर प्राण भी दे सकता हूं।"

गृहस्वामिनी बोली—"मैं दही-बड़ा लेकर आती हूं, तू तब तक आंख निकालकर रख।"

इतना कह जब गृहस्वामिनी ने दही-बड़ा लाने के लिए मुख मोड़ा, तभी गोरखनाथ ने आंख में उंगली डालकर अपनी पुतली बाहर निकाल ली, जिसके कारण खून बहने लगा। गृहस्वामिनी जब दही-बड़ा लेकर लौटी तो गोरखनाथ की करतूत देख बेचारी के होश उड़ गए। वह मन-ही-मन दुखी हो दही-बड़ा देकर जाने लगी तो गोरखनाथ बोले—"माते! आंख तो लेती जाओ।"

गृहस्वामिनी पश्चाताप के स्वर में बोली—"पुत्र, मैं तेरी आंख लेकर क्या करूंगी? मैं तो अपनी बात सोचकर स्वयं लज्जित हो रही हूं। पुत्र मुझे क्षमा कर दे।"

इतना सुन गोरखनाथ ने अपनी आंख वापस पुतली में रखकर ऊपर से पानी का गीला कपड़ा बांध लिया। उनकी इच्छा थी कि इस घटना का पता गुरुदेव को न लगे। एक हाथ आंख पर रख दूसरे हाथ में दही-बड़ा लेकर वे चल पड़े और योगी के संमुख दही-बड़ा रखकर बोले—"गुरुजी! एक ही दही-बड़ा मिला।"

गुरु मछेन्द्रनाथ ने अपने शिष्य की आंख पर बंधी पट्टी देखकर पूछा—"बेटा, ये आंख पर पट्टी क्यों बांधी है?"

गोरखनाथ ने बात छिपाते हुए कहा—"कोई बात नहीं, केवल आंख में दर्द है।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"मैं भी तो देखूं, दर्द का कारण क्या है?"

गोरखनाथ बोले—"गृह-स्वामिनी से एक दही-बड़े के बदले में एक आंख देने की शर्त मानी थी। अंत में उसने आंख भी नहीं ली और दही-बड़ा भी दे दिया।"

अपने शिष्य से यह घटना सुनकर मछेन्द्रनाथ बड़े क्रोधित हुए।

अपने गुरु को रुष्ट हुआ देख गोरखनाथ बोले—"गुरुदेव! ये सब भ्रांतिवश हुआ है, इसमें गृहस्वामिनी का कोई दोष नहीं है, इसलिए आप उसे क्षमा कर दें।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"पुत्र, जब तुम्हीं उसे क्षमा कर आए तो मैं क्यों रुष्ट होऊंगा?"

गोरखनाथ बोले—"यह सब आपने ही सिखाया है गुरुदेव।"

योगी बोले—"पुत्र, अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि मुझे गुरु-भक्त शिष्य मिला है, जो मेरा नाम रोशन करेगा। मैं तुझे हर प्रकार की गुप्त शाबर विद्याएं सिखाकर पूर्ण कर दूंगा।"

गोरखनाथ ने अपना सिर झुका दिया। योगी ने चेले को उठाकर आंख से पट्टी खोली और पुतली को स्वच्छ जल से धोकर पवित्र किया और भली प्रकार पुतली को आंख में जमाकर मंत्र का जाप किया, जिससे आंख पहले जैसी हो गई और दर्द नाममात्र को भी शेष नहीं रहा। योगी को योग्य शिष्य मिल गया और गोरखनाथ को सिद्ध गुरु। उन्होंने अपने शिष्य को सर्व विद्या संपन्न बना दिया।

गोरखनाथ और मछेन्द्रनाथ भ्रमण करते हुए बद्रीनाथ जा पहुंचे। गोरखनाथ सब विद्याओं के ज्ञाता हो गए थे, पर विधि-विधान जानना भी परम आवश्यक होता है, इसलिए भगवान शंकर को तपस्या द्वारा प्रसन्न करना चाहिए, ऐसा विचार कर योगी बोले—"वत्स गोरख, अभी तुम्हें शिव-कृपा की आवश्यकता और शेष है। उनकी कृपा बिना सब तंत्र विद्याएं अधूरी हैं। अगर तुम पर शिव-कृपा हो जाए तो तुम किसी भी संकट का सामना कर लोगे।"

कनकगिरी ग्राम से चलकर दोनों चंद्रगिरी ग्राम में जा पहुंचे, जहां गुरुदेव ने अपने चेले को चारों वेद और छः शास्त्र तथा अट्ठारह पुराण कंठस्थ करा दिए और शाबर विद्या को सिखाकर भूत, प्रेत, बेताल आदि को वश में करने वाले मंत्रों को सिखाया। इसके अलावा देवी-देवताओं के दर्शनों की विधि सिखाकर तथा उनके दर्शन कराकर मछेन्द्रनाथ ने अपने शिष्य को रिद्धि-सिद्धि का स्वामी बना दिया। इस प्रकार देवी-देवताओं की कृपा गोरखनाथ को सहज ही मिल गई। कभी-कभी गोरखनाथ अपने गुरु के आदेशानुसार पृथक यात्रा भी करते थे।

एक दिन की बात है—मछेन्द्रनाथ हाथ में भिक्षापात्र लिये एक नगरी में भिक्षा मांगने गए और अपने शिष्य गोरखनाथ को आदेश दे गए कि बेटा संजीवनी विद्या का पाठ अवश्य स्मरण करना। गोरखनाथ गुरु के आदेशानुसार संजीवनी विद्या का पाठ स्मरण करने में तन-मन से लगे रहे, तभी ग्राम निवासी कुछ बालक, तालाब के किनारे गीली मिट्टी से खेल रहे थे। सबके हाथों में गीली मिट्टी थी, जो एक दूसरे पर फेंक रहे थे और खेलने का आनंद लूट रहे थे। कुछ बालक आपस में मार-पीट भी करते थे। जिससे कोई जोर-जोर से रोता और कोई तालियां बजाकर हंसता था। बच्चों के शोर मचाने से गोरखनाथ काफी परेशान थे। बच्चों की शैतानी के कारण उनके पाठ स्मरण करने में विघ्न पड़ रहा था। तब भी वे पाठ स्मरण करने में लगे थे। उसी समय उन बालकों ने आपस में निश्चय किया कि मिट्टी की एक गाड़ी बनानी चाहिए, जिस पर मिट्टी का ही एक गाड़ी हांकने वाला गाड़ीवान भी बैठा होना चाहिए, पर सबसे कठिन प्रश्न इस बात का था कि गाड़ी बने किस प्रकार। उन्होंने तालाब से मिट्टी लेकर और आटे के समान गूंधकर, गोरखनाथ के पास आकर बोले—"साधुजी, इस मिट्टी की हम लोगों के लिए एक गाड़ी बना दीजिए, जिस पर गाड़ीवान भी बैठा होना चाहिए।"

गोरखनाथ बोले—"भाई, मैं गाड़ी बनाना नहीं जानता।"

ये कहकर उन्होंने बच्चों को टाल दिया, परंतु हट के पक्के बालकों ने बार-बार गाड़ी बनाकर बार-बार बिगाड़कर अंत में गाड़ी बना ही ली, पर गाड़ी पर बैठने वाला गाड़ीवान वे न बना सके। गाड़ी पर गाड़ीवान के बैठने की कमी, सभी बालकों को बुरी तरह खटकी। गाड़ीवान किस तरह बनाया जाए, यह उनकी बुद्धि में बैठता ही न था, जब किसी तरह भी गाड़ीवान बनने

की आशा दिखाई न दी तब निराश हो और भोली शक्ल बनाकर सब बच्चे फिर गोरखनाथ के निकट आकर बोले—"बाबा! गाड़ी तो हमने बना ली, पर गाड़ीवान हमसे नहीं बन रहा है। आप हमारे लिए एक गाड़ीवान अवश्य बना दें।"

गोरखनाथ ने उनसे कहा—"बच्चो, ऐसे काम मुझे नहीं आते।"

मगर बालक तो बालक ही होते हैं, वे क्यों मानने लगे। उनमें से एक बालक बोला—"बड़ी अजीब बात है। आप एक गाड़ीवान नहीं बना सकते। हमने तो सुना है। साधु लोग सब वस्तुएं बना लेते हैं।"

फिर उसने अपने साथियों से कहा—"साधु बाबा झूठ बोलते हैं। साधु बाबा झूठ बोलते हैं... । गाड़ीवान बनाना इन्हें नहीं आता है, यह झूठ बोलते हैं।"

गोरखनाथ ने बच्चों के शोर से तंग आकर, माथा-पच्ची करने में भलाई नहीं समझी, उनके पाठ में लगातार विघ्न पड़ रहा था, इसलिए उन्होंने हारकर कहा—"गाड़ीवान बन जाने पर तुम लोग यहां से दूर जाकर खेलोगे?"

सब बच्चों ने एक स्वर से कहा—"गाड़ीवान बन जाने पर हम यहां से दूर चले जाएंगे।"

गोरखनाथ बालकों की बातें सुनकर हंस पड़े और गीली मिट्टी अपने हाथ में लेकर गाड़ीवान बनाने लगे। गोरखनाथ हाथ से गाड़ीवान बनाते जाते थे और मुख से संजीवनी विद्या का पाठ पढ़ते जाते थे, अभी गाड़ीवान पूरा बन भी नहीं पाया था कि संजीवनी विद्या के मंत्रों के प्रभाव से मिट्टी से बन रहे बालक के हाथ-पैर हिलने लगे, परंतु गोरखनाथ ने उनके हिलने पर ध्यान नहीं दिया। जब गाड़ीवान पूरा बन चुका और संजीवनी का जाप बराबर चलता रहा, जिसके कारण मिट्टी से बने गाड़ीवान में आत्मा का प्रवेश हो गया और खिलौना गाड़ीवान जीता-जागता बालक बन गया। उसके शरीर में हड्डी, मांस, रुधिर, प्राण सभी आ गए थे। ज्ञान-इंद्रियों का समावेश होने के कारण वह रोता-रोता बोला—"जय गोरखनाथ की।"

मिट्टी के पुतले को बोलता देख, गोरखनाथ को काफी आश्चर्य हुआ कि इसमें प्राण किस प्रकार पड़ गए? ग्राम के बालक भी मिट्टी के बने अपने गाड़ीवान को रोता देख, भूत-भूत चिल्लाते हुए भयभीत होकर ग्राम की तरफ भागे और अपने घरों में पहुंचकर अपने-अपने माता-पिता को सारी घटना

बता दी। ऐसी घटना सुनकर ग्रामवासियों को काफी आश्चर्य हुआ और उस बालक के दर्शन करने के चाव में सारे ग्रामवासियों के मध्य हंगामा-सा मच गया।

इसी ग्राम में योगी मछेन्द्रनाथ भी अपना भिक्षा-पात्र लिए भिक्षा मांग रहे थे। उन्होंने जब इस घटना को सुना, तो वह तुरंत समझ गए कि यह सब संजीवनी विद्या के प्रभाव से हुआ है। इधर ग्रामवासियों की भीड़ मिट्टी का बोलता बालक देखने के लिए अपने-अपने घरों से चल पड़ी और कुछ ही देर में गोरखनाथ के पास बड़ा भारी मेला-सा लग गया। स्त्री-पुरुषों ने गोरखनाथ से तरह-तरह के प्रश्न पूछने शुरू कर दिए। वे उत्तर देते-देते दुखी हो गए।

कुछ नारियां मिट्टी के सजीव गाड़ीवान से अपना मनोरंजन करने लगीं। कोई प्यार से उसका सिर सहला रही थी तो कोई नाक पकड़कर कह रही थी कि बेचारे की छोटी-सी नाक कितनी अच्छी लग रही है। बालक ग्रामवासियों के झुंड को देखकर रोने लगा। तब एक सुंदरी ने उसे गोद में उठाकर प्यार से पहले पुचकारा और फिर मस्तक चूमा, उसी समय भिक्षापात्र लिए चिमटा बजाते हुए मछेन्द्रनाथ भी आ पहुंचे और काफी भीड़ देखकर गोरखनाथ से बोले—"अब तुम सिद्ध बन गए।"

गोरखनाथ बोले—"गुरुदेव! यह सब किस प्रकार हो गया?"

योगी बोले—"पुत्र! यह सब संजीवनी विद्या का प्रभाव है। जिस प्रकार तुम मन लगाकर पाठ कर रहे थे, उसी प्रकार संजीवनी के मंत्रों ने अपना प्रभाव दिखाया और मिट्टी के पुतले में प्राणों का संचार हो गया। तुमने पाठ करते समय इस पुतले को अपने हाथों से बनाया, इसलिए इसमें करभंजननाथ योगी की आत्मा का प्रवेश हो गया है। अब यहां से चलना चाहिए, नहीं तो इन नर-नारियों के झमेले से नाक में दम हो जाएगा और हम यहां साधना नहीं कर पाएंगे।"

गोरखनाथ बोले—"ठीक है गुरुदेव! अब यहां से चलना ही श्रेष्ठ है।" इस प्रकार वार्तालाप कर गुरु-शिष्य ने अपना झोली-खप्पर, चिमटा और कंबल संभाला और फिर बालक के सिर पर हाथ फेर उसे आशीर्वाद दिया और उसका नाम गहनीनाथ रख दिया। तब गोरखनाथ ने गहनीनाथ को भी उठाकर अपनी गोद में ले लिया और चलने को तैयार हुए। तब ग्रामवासियों को संतों की इच्छा समझने में देर न लगी कि ये दोनों संन्यासी यहां से जा रहे

हैं, परंतु वे इन सिद्ध संन्यासियों को अपने यहां से नहीं जाने देना चाहते थे।

जब से ये महात्मा गांव के निकट आए थे, तभी से सभी परिवारों में आनंद-वर्षा हो रही थी। ग्राम से दरिद्रता लापता हो गई थी। ग्रामवासियों के काफी हाथ जोड़ने पर भी जब दोनों संतों में से एक भी वहां रहने को तैयार नहीं हुआ तो कुछ वृद्ध ग्रामवासी बोले—"जब आप दोनों में से एक भी यहां रहने को तैयार नहीं है, तब हम लोगों का उद्धार कैसे होगा?"

जब उन्होंने ग्रामवासियों को असंतुष्ट देखा तो मछेन्द्रनाथ बोले—"हे भक्तो! साधु-संतों के एक स्थान पर ठहरने से ऐसा गंदलापन आ जाता है, जैसे पानी के एक स्थान पर रुकने से उसमें कीड़े पड़ जाते हैं। बहता पानी और रमता जोगी ही सिद्ध है, इसलिए हमें जाने दो। फिर कभी अवसर मिलेगा तो आपके यहां पुनः आएंगे।"

ग्रामवासियों ने उनसे प्रार्थना की—"अच्छा, तो अब आप हमारे बच्चों के मनोरंजन के लिए इस गाड़ीवान के पुतले को ही यहां छोड़ जाओ। हम इसे देखकर ही आपको स्मरण कर लिया करेंगे।"

इस पर मछेन्द्रनाथ बोले—"इसे आप गाड़ीवान मत समझो, यह बालक योगी करभंजननाथ का अवतार है। जिसे पुत्र की चाहना होगी, वही इनका लालन-पालन कर सकता है।"

तब ग्रामवासियों का मुखिया बोला—"योगी! हमारे ग्राम में मधुनामा नामक विद्यावान सदाचारी पंडित रहते हैं, जो हर तरह से संपन्न हैं और हमारे अलावा आस-पास के ग्रामों की भी पूजा की दक्षिणा अकेले पंडित होने के कारण इन्हीं को देनी पड़ती है, इनकी हमारे ग्राम के संपन्न व्यक्तियों में गणना होती है। आर्थिक रूप से संपन्न होने पर भी प्रभु ने इन्हें संतान सुख नहीं दिया। इनकी पत्नी का नाम गंगा है। हम लोग इन दोनों पति-पत्नी का काफी सम्मान करते हैं। इन्हें काफी चिकित्सा करवाने पर भी संतान का सुख देखना नसीब न हुआ और अब अधिक आयु हो जाने के कारण उन्हें अपना भविष्य अंधकारपूर्ण नजर आता है। हम ग्रामवासियों ने पंचायत करके यह निर्णय किया है कि पंडितजी को यह बालक दिलवा दिया जाए। वे इसका पालन करेंगे और उनका बुढ़ापा भी हंसी-खुशी से कट जाएगा।"

आपस में इस प्रकार निर्णय कर, ग्राम के मुखिया और कुछ जन पंडितजी के घर जा पहुंचे और दोनों चमत्कारी संतों और मिट्टी के सजीव बालक की

कथा सुनाई। तब पंडित और पंडतानी की खुशी का ठिकाना न रहा और शीघ्र ही वे दोनों प्राणी योगियों के सामने आ गए, जहां मिट्टी के बालक को लिए गोरखनाथ खड़े थे। दोनों पति-पत्नी ने हाथ जोड़कर योगियों को प्रणाम किया और प्रार्थना की—"हम दोनों पति-पत्नी ब्राह्मण जाति के हैं और बिना संतान हमारी वृद्धावस्था खराब है, इसलिए आप इस मिट्टी के पुतले को पालने के लिए हमें दे दो।"

ग्रामवासियों और मुखिया की बातों को सुनकर मछेन्द्रनाथ बोले—"पंडित और पंडतानी के दुख में मेरी सहानुभूति है, परंतु यह इसे मिट्टी का बालक समझकर इसका पालन-पोषण ठीक ढंग से नहीं कर सकेंगे।"

इस पर दोनों पति-पत्नी एक साथ बोले—"प्यार से क्यों लालन-पालन नहीं करेंगे। हमें इस बालक से प्यार है, हम इसका लालन-पालन हृदय से करेंगे।"

योगी मछेन्द्रनाथ बोले—"परंतु इसे मिट्टी का साधारण शिशु मत मानो, यह बालक करभंजननाथ योगी का अवतार है। यह देवताओं का अंशी है। अब हमने इस बालक का नाम गहनीनाथ रखा है। इस बालक को भगवान का अवतार समझकर पालना, इससे आपका घर पवित्र हो जाएगा। यह बालक बड़ा होने पर विख्यात योगी होगा और इस बालक के गुरु निवृत्तिनाथ होंगे। जाओ, इसे ले जाओ और प्रेमपूर्वक पालो।"

इतना कहकर मछेन्द्रनाथ ने गंगादेवी के ऊपर, अभिमंत्रित भस्म छिड़की, जिसके कारण गंगादेवी के हृदय में ममत्व जाग उठा।

मछेन्द्रनाथ बोले—"चिंता तो हमें रत्ती-भर भी नहीं है। अब अपने इस बालक को ले जाओ, संभव हुआ तो बारह वर्ष पश्चात हम लौटेंगे और तुम्हारे पुत्र को उपदेश देंगे।"

इस प्रकार कह दोनों गुरु-शिष्य वहां से चल पड़े, ग्रामवासियों ने सम्मान के साथ उन्हें विदा किया। गोरखनाथ अपने गुरु की आज्ञा मान बद्रीनाथ धाम को चल पड़े और मछेन्द्रनाथ तीर्थयात्रा के लिए चल पड़े। भगवान शंकर से वरदान प्राप्त करने पर गोरखनाथ ने अपनी तपस्या को सफल समझा और वे बद्रीनाथ से कूच कर तीर्थयात्रा को चल पड़े। उनकी इच्छा यह थी कि किसी प्रकार अपने गुरु के दर्शन कर उन्हें अपनी तपस्या का ब्यौरा सुनाऊं, पर उन्हें काफी खोजने पर भी अपने गुरु के दर्शन नहीं हुए, न मालूम गुरुदेव किधर चले गए थे।

गोरखनाथ घूमते-घूमते राजा गोपीचंद की राजधानी हैलापट्टन में जा पहुंचे और वहां उन्हें ज्ञात हुआ कि यहां एक महान योगी जालंधरनाथ को यहां के राजा ने कारागार में डाल रखा है और दुर्गति कर रखी है। गोरखनाथ राजा की माता मैनावंती से भी मिले, जो महागुणवान और साधु सेविका थी। गोरखनाथ के ज्ञान के बल पर मैनावंती मोहित हो गई और उनकी विद्या देखकर, उनकी शिष्या बन गई। जब जालंधरनाथ को मुक्त कराने की बात चली तो वह बोली—"मुझे कुछ पता नहीं है, मैं तो अपने पुत्र को अमरतत्व दिलवाने की चिंता में हूं।"

गोरखनाथ अपनी पहली शिष्या के विचार सुन काफी प्रसन्न हुए और वे उसकी ज्ञान चर्चा को सुन रानी को आशीर्वाद दे तीर्थ यात्रा को चल पड़े।

जब वे एक नगरी के बगीचे में से होकर गुजरे तो वहां उन्होंने एक सुंदर नौजवान नाथ पंथी योगी को देखा, जो कान में स्वर्ण मुद्रा और रेशमी कुर्ता पहने बाग में विराजमान था। गोरखनाथ के 'आदेश' शब्द का उच्चारण करते ही उसने भी उठकर आदेश कहा, नाथ पंथ में आदेश शब्द कहने की प्राचीन प्रथा है।

कणीफानाथ ने उठकर गोरखनाथ का स्वागत किया और अपने समीप शिला पर ही स्थान दे बिठा लिया और पूछा—"भाई आपका परिचय?"

गोरखनाथ बोले—"मैं योगी मछेन्द्रनाथ का शिष्य हूं और मेरा नाम गोरखनाथ है।"

इतना सुन कणीफानाथ प्रसन्न होकर बोले—"इस बाग के आम बहुत मीठे हैं, अगर खाने की इच्छा है तो तुड़वाकर मंगवाऊं?"

गोरखनाथ बोले—"क्यों व्यर्थ परेशान होते हो। मुझे भूख नहीं है।

कणीफानाथ बोले—"परेशान होने की आपने खूब कही। मैं शिष्यों को भेज अभी तुड़वाकर मंगाए देता हूं।"

गोरखनाथ बोले—"साधारण बात के लिए उन्हें क्यों कष्ट दिया जाए।"

इस पर कणीफानाथ बोले—"चलो जाने दो मैं विद्या-बल से यहीं बैठे-बैठे मंगाए देता हूं।"

अपनी विद्या का चमत्कार दिखाने के लिए कणीफानाथ ने मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित भस्म आम के वृक्षों की तरफ फेंकी, जिसके प्रभाव से पके आम टूट-टूटकर धरती पर गिर गए।

उसके पश्चात अभिमंत्रित भस्म फेंकने पर वह सब फल खिंचकर वहीं आ पहुंचे, जहां ये दोनों विराजमान थे। दोनों ने पेट भरकर आम खाए, लेकिन फिर भी आम काफी संख्या में बच गए। तब गोरखनाथ बोले—"भाई, इन बचे हुए फलों को बासी करने से क्या लाभ, इन्हें इनकी जगह पर वापस भेज दो, जिससे ये फल ताजे ही बने रहें। बासी फल खाना हानिकारक है।"

गोरखनाथ की बातें सुनकर कणीफानाथ बोले—"भाई, क्यों अनहोनी बात कहते हो? टूटे फल वृक्ष पर किस प्रकार लग सकते हैं?"

गोरखनाथ बोले—"जिस प्रकार टूटने से पहले लगे हुए थे।"

कणीफानाथ बोले—"आप अपूर्ण गुरु के शिष्य हो, परिपूर्ण किस प्रकार हो सकते हो?"

गोरखनाथ बोले—"मेरे गुरु ने मुझे इतना सामर्थ्यवान बना दिया है कि मैं कहीं हार खाने वाला नहीं।"

कणीफानाथ व्यंगपूर्वक बोले—"वही आपके गुरु है ना, जो त्रिया राज्य में भोग विलास में लिप्त हैं। उनकी परिपूर्णता की बात किससे छिपी है।"

अपने गुरु की बुराई सुनकर, गोरखनाथ ने क्रोध में भरकर कहा—"अपने गुरु की दुर्दशा का भी कुछ पता है, वे बेचारे गौड़ बंगाले में गोपीचंद राजा के यहां गड्ढे में पाट दिए गए हैं, अगर तुम कुछ चमत्कार जानते होते तो, क्या उन्हें बाहर नहीं निकाल सकते थे? तुम्हें यकीन न हो तो हैलापट्टन जाकर अपनी आंखों से अपने गुरु की दुर्दशा देखो।"

कणीफानाथ शर्मिंदा हो गए और उनसे कोई उत्तर देते नहीं बना।

तब गोरखनाथ बोले—"मेरे गुरु की सिखाई विद्या का चमत्कार देखना चाहते थे तो लो देखो, अभी ये टूटे हुए आम अपनी जगह पेड़ों पर जाकर लटकते हैं, तभी तुम मेरे गुरु को मानोगे।"

कणीफानाथ बोले—"कुछ करके भी दिखाओ तभी तो तुम्हें मानेंगे, केवल गाल बजाने से कोई लाभ नहीं।" गोरखनाथ को कणीफानाथ की बात बुरी लगी, फिर भी शांति धारण कर उन्होंने प्रेषशास्त्र और संजीवनी मंत्रों से अभिमंत्रित भस्म आमों पर डाली, देखते-ही-देखते आम पक्षियों की भांति उड़कर डालियों पर अपनी-अपनी जगह जा लटके। गोरखनाथ का चमत्कार देखकर कणीफानाथ बहुत आश्चर्यचकित हुए।

कणीफानाथ राजा गोपीचंद की नगरी में अपने गुरु का उद्धार करने के लिए

चल पड़े और गोरखनाथ त्रिया राज्य की ओर। गोरखनाथ सोच-विचार करते हुए मंजिल-दर-मंजिल तय करते हुए त्रिया राज्य की सीमा पर जा पहुंचे, जहां पुरुष प्रवेश वर्जित था। गोरखनाथ वहां एक पत्थर की शिला पर गुणगान करते हुए विचार मग्न हो गए। जब काफी समय बीतने पर भी कोई उपाय नहीं सूझा और वे इस आशा-निराशा से मुक्ति पाने की सोच रहे थे, तब क्या देखते हैं कि जिधर से वह आया था, उधर से ही एक रथ आ रहा है, जिसमें एक नारी यौवन संपन्न अप्सरा के समान अति सुंदर वस्त्र धारण किए अपनी सखियों के साथ तबले-सारंगी लिये रथ से उतरकर विश्राम करने के लिए गोरखनाथ के ही निकट रुक गई, तभी गोरखनाथ ने उस अप्सरा समान सुंदरी से पूछा—"आप कहां से आ रही हैं और कहां जाएंगी?"

उसने उत्तर दिया—"हम पास में ही जो महेंद्रगढ़ है, वहां की रहने वाली हैं और त्रिया राज्य में जाने के विचार से यहां आई हैं।"

गोरखनाथ ने प्रश्न किया—"किस कार्यवश?" तो उत्तर मिला—"संगीत कला का प्रदर्शन करने के लिए।"

गोरखनाथ बोले—"तो यहां कोई संगीत-कला विशारद नहीं है?"

वह सुंदरी बोली—"है क्यों नही बहुत हैं? परंतु सबकी कला अलग-अलग होती है। यहां की महारानी मैनाकिनी नवीनता प्रिय हैं।"

गोरखनाथ बोले—"आप कौन-सा पाठ करेंगी और आपका नाम क्या है?"

सुंदरी ने उत्तर दिया—"आप ध्यान से सुनें! मैं एक विधवा नारी हूं और नाच-गाना मेरा व्यवसाय है। कालिंगा रानी मेरा नाम है और कुछ पूछना चाहते हैं, तो पूछिए।"

गोरखनाथ बोले—"माते! हम साधु हैं। हमें व्यर्थ की बातों से क्या लेना? मेरा अभिप्राय तो केवल इतना ही है कि आप मुझे भी अपने साथ ले चलें।"

गोरखनाथ की बात सुनकर कालिंगा सुंदरी खिलखिलाकर हंस पड़ी और बोली—"त्रिया राज्य में चलने का अपना उद्देश्य ब्यान करो।"

कालिंगा की बात सुन गोरखनाथ बोले—"माता! यह बात नहीं है। मैं तो बालब्रह्मचारी हूं और पेट भरने के लिए केवल दो रोटी चाहिए। मेरी तो केवल वह राज्य देखने की इच्छा है।"

गोरखनाथ की बात सुनकर कालिंगा रानी ने सोचा—'इतना सच्चा

आदमी मिलना असंभव है, जिसे पेट भरने के लिए केवल दो रोटियां चाहिए, पर समस्या तो यह है कि यह हमारे साथ जाएगा किस प्रकार?' फिर बोली—"हम आपको किसी भी प्रकार अपने साथ नहीं ले जा सकतीं। इस राज्य में पुरुष प्रवेश एकदम वर्जित है।"

गोरखनाथ ने पूछा—"पुरुषों की मनाई का कारण क्या है माते?"

कालिंगा सुंदरी बोली—"सुना है यहां पवन-पुत्र हनुमान आकर प्राण लेवा गर्जना करते हैं, जिसे सुनकर कोई भी पुरुष जीवित नहीं रहता और स्त्रियां गर्भवती हो जाती हैं और उनके कन्याएं ही उत्पन्न होती हैं।"

गोरखनाथ बोले—"बड़ी विचित्र बात है।"

यह सुन कालिंगा रानी बोली—"मुझे तो यहां के वातावरण का ही गुण दिखाई देता है, जिसके करण पुरुष मर जाते हैं और स्त्रियां गर्भवती हो जाती हैं।

गोरखनाथ बोले—"योगी का पवन पुत्र कुछ नहीं बिगाड़ सकते। अगर उन्होंने मुझे सताने का प्रयत्न किया तब मुझे भी कुछ उपाय करना पड़ेगा।"

कालिंगा सुंदरी बोली—"ऐसा आपके पास क्या उपाय है?"

गोरखनाथ बोले—"मैं अपने तपोबल से स्त्री का बाना बदल सकता हूं। जब मैं स्त्री का वेष बदल लूंगा तो हनुमान भी मुझे पुरुष नहीं कह सकते।"

कालिंगा सुंदरी को गोरखनाथ की वार्ता में बड़ा आनंद आ रहा था। वह बोली—"तब तो तुम्हें भी गर्भवती होना पड़ेगा।"

गोरखनाथ बोले—"योगियों पर हनुमान की गर्जना का कोई प्रभाव नहीं होगा।"

तब कालिंगा रानी बोली—"वहां आपको किस बहाने से ले चलें?"

गोरखनाथ बोले—"आप मुझे आपना साजिंदा बनाकर ले चलो।"

कालिंगा ने कहा—"साजिंदा उसे कहते हैं, जो वाद्य बजाने में निपुण हो। आप तो साधु हैं, आपका सुर-ज्ञान से क्या वास्ता?"

गोरखनाथ बोले—"वाद्य की तो बात ही क्या है, मैं गायन-विद्या में भी निपुण हूं। आप मेरी परीक्षा ले सकती हैं।"

कालिंगा सुंदरी बोली—"तो आप परीक्षा दीजिए?" इतना कहकर एक वाद्य गोरखनाथ के सामने रख दिया।

गोरखनाथ ने गंधर्व विद्या की भस्म अभिमंत्रित कर अपने मस्तक पर

लगाई, जिसके प्रभाव से साजों को भांति-भांति से बजा-बजाकर दिखा दिया। फिर साज महिलाओं को पकड़ाकर उनके स्वरों के साथ गाना आरंभ किया, जिसके प्रभाव से उड़ते पक्षी भी रुककर गाना सुनने लगे।

कालिंगा सुंदरी गोरख लीला देख बड़ी प्रसन्न हुई और बोली—"त्रिया राज्य की मैनाकिनी रानी आपका संगीत सुनकर बहुत प्रसन्न होगी और हमें इनाम देगी, परंतु आप अपना नाम तो बता दें क्या है?"

गोरखनाथ नाम छिपाना चाहते थे, इसलिए बोले—"माता! आश्रम में तो संत कहने से ही काम चल जाता था और पुराना नाम मेरा पूर्वड्राम है।"

कालिंगा सुंदरी ने मन में विचारा—'बाबा को साथ ले चलने में लाभ अधिक है और हानि होने की संभावना नहीं है।' वह प्रसन्न होकर अपनी सहेलियों के साथ रथ में जा बैठी और गोरखनाथ सारथी के स्थान पर बैठकर रथ हांकने लगे।

रथ त्रिया राज्य के चिन्नापट्टन नगर में जा पहुंचा और फिर कालिंगा के आदेशानुसार रथ रोक दिया गया। सायंकाल का समय था, सूर्य देवता अस्त हो रहे थे। कालिंगा सुंदरी ने सहेलियों के साथ रथ से उतरकर पहले भोजन किया, फिर बिस्तर बिछाकर सोने की तैयारी की और गोरखनाथ को दो रोटी देकर बोली—"अब आप भी विश्राम की तैयारी करें।"

गोरखनाथ बोले—"माता! नींद तो अभी आ नहीं रही है। फिर हम संतों का क्या सोना, क्या जागना, हम तो बैठे-बैठे ही जागरण भी कर लेते हैं और सो भी लेते हैं।"

इतना सुन कालिंगा सुंदरी अपनी सहेलियों के साथ लेटकर खर्राटे भरने लगी।

इधर गोरखनाथ विचारने लगे—'अब अपने गुरु को यहां के मायाजाल से निकालने का क्या प्रयत्न करूं।' तभी उनकी समझ में उपाय आया, अगर हनुमान को राज्य की सीमा में ही न आने दूं तो संभव है समस्या सुलझ जाए।' उन्होंने इस प्रकार निर्णय करके ऐसी व्यवस्था कर दी कि त्रिया राज्य की सीमा के भीतर हनुमान घुस ही न सकें।

इस समय हनुमान रामेश्वरम में थे। त्रिया राज्य में उनके आगमन का समय अर्धरात्रि बीतने के पश्चात का था। जब तक गोरखनाथ के मंत्रों की व्यवस्था पूरी हो चुकी थी। जब हनुमान त्रिया राज्य की सीमा में आए और

ज्योंही अपना पग सीमा के भीतर रखना चाहा, तभी उनके हृदय पर बज्रास्त्र का प्रहार हुआ। जिसकी वजह से वे मूर्च्छित होकर गिर पड़े। उसके पश्चात स्पास्त्र ने अपना प्रभाव दिखाया, जिससे वे आकर्षण में बंध गए और उनकी सभी गतिविधियां स्थिर हो गईं। फिर मोहनास्त्र की बारी आई, इससे वे ऐसे सम्मोहित हो गए कि किसी भी क्रिया-कलाप का विरोध न कर पाए। ऐसी स्थिति में नागास्त्र ने उन्हें बांध लिया और त्रिया राज्य की सीमा से दूर फेंक दिया। काफी समय पश्चात उनकी चेतना लौटी, परंतु उनकी समझ में यह नहीं आया कि यह सब किस प्रकार हो गया? हारकर उन्होंने श्रीराम को स्मरण किया। हनुमान के स्मरण करते ही प्रभु श्रीराम तुरंत आ गए और हनुमान की दयनीय अवस्था देखकर बोले—"पवनसुत! क्या बात है?"

हनुमान ने अपने ऊपर आए हुए संकट को सुनाया और बोले—"प्रभु! आपके दास की दुर्दशा का क्या कारण है?"

जब श्रीराम ने ध्यानपूर्वक देखा तो हनुमान की दुर्दशा का कारण समझते देर न लगी। उन्होंने तुरंत ही गरुड़ास्त्र, इंद्रास्त्र, थिमकास्त्र, ज्ञानास्त्र के प्रयोग से हनुमान के बंधन खोले और उन्हें विपत्ति से मुक्त किया, विपत्ति से छुटकारा तो मिल गया, परंतु उन्होंने स्वयं को बड़ा अपमानित अनुभव किया और श्रीराम से बोले—"प्रभु! मेरी ऐसी दुर्दशा करने वाला यह कौन है? क्या कोई दानव है, मनुष्य में तो ऐसा बल देखने में नहीं आता।"

भगवान श्रीराम बोले—"प्रिय पवनसुत, कोई देव-दानव इस प्रकार आपको अपमानित करने की सामर्थ्य नहीं रखता। देवताओं और मनुष्यों में आपके समान कोई बलशाली नहीं है। ऐसा साहस करने वाला एक ही मनुष्य इस धरती पर है।"

हनुमान बोले—"प्रभु, शीघ्र बताओ मैं उस दुष्ट को सजा देना चाहता हूं।"

श्रीराम मुस्कराकर बोले—"हनुमान, शांत हो जाओ, जो भी कार्य किया जाए, विचारपूर्वक करना चाहिए। विरोधी का बल जाने बिना उलझना नादानी है।"

हनुमान बोले—"प्रभु! जब तक पता न चले, बल की जांच किस प्रकार हो सकती है?"

प्रभु श्रीराम बोले—"पवनसुत इस धरती पर इस समय नाथ संप्रदाय के योगीजन ही ऐसे कार्य करने की सामर्थ्य रखते हैं। योगी मछेन्द्रनाथ प्रदत्त

भस्मी द्वारा भगवान हरिहर ने अवतार लिया है, जिनका नाम गोरखनाथ है।"

हनुमान बोले—"प्रभु, मछेन्द्रनाथ का शिष्य गोरखनाथ इतना शक्तिशाली हो गया, जिसका गुरु त्रिया राज्य के भोग-विलास के दलदल में आकंठ लिप्त है।"

श्रीराम बोले—"पवनपुत्र, आश्चर्य क्यों करते हो, तपस्वी में सब सामर्थ्य होती है। उससे जीतना सरल मत समझो।"

हनुमान बोले—"क्या तपस्वी की श्रेणी सबसे ऊंची है?"

प्रभु श्रीराम बोले—"पवनपुत्र, बात कुछ ऐसी ही है, परंतु गोरखनाथ का अभिप्राय तुम्हारा अपमान करने का नहीं है। वह तो इस त्रिया राज्य की कीचड़ से अपने गुरु का उद्धार करना चाहता है, इसीलिए आपको अपना चमत्कार दिखाकर सूचित किया है कि आप उनके कार्यों में बाधक न बनें।"

प्रभु श्रीराम की बात सुनकर हनुमान बोले—"मछेन्द्रनाथ तो मेरी आज्ञा से ही इस त्रिया राज्य में रह रहा है। मैंने ही मैनाकिनी रानी को उसकी सेवा करने का निर्देश दिया है। अगर गोरखनाथ त्रिया राज्य से अपने गुरु को निकालने में सफल हो गया तो समस्या उत्पन्न हो जाएगी।"

श्रीराम बोले—"उपाय भी तो कुछ नजर नहीं आता, वे अपने गुरु को निकाल ले जाने के लिए ही यहां आए हैं।"

पवनपुत्र बोले—"प्रभु आप उन्हें समझा तो सकते हैं। संभवतः आपकी बात वे मान जाएं। कृपया आप मेरे साथ चलकर उन्हें समझाकर तो देखें। अगर वे मान गए तो मेरी बात खराब नहीं होगी।"

श्रीरामजी ने अपने भक्त की बात मान ली और दोनों ने ब्राह्मण का भेष बनाकर चिन्नापट्टन की तरफ प्रस्थान किया। जहां कालिंगा सुंदरी अपनी सखियों के साथ गहरी निद्रा का आनंद ले रही थी। रात आधी से अधिक बीत चुकी थी, तभी गोरखनाथ ने दो ब्राह्मणों को अपने निकट आते देखा। गोरखनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इन्हें सीमा में घुसने से किसी ने क्यों नहीं रोका।

गोरखनाथ विचार कर ही रहे थे कि तब तक दोनों उनके सामने आ पहुंचे। गोरखनाथ ने उठकर उन दोनों का अभिवादन किया और अपने पास बिठाकर पूछा—"आप कौन हैं और कहां से पधारे हैं तथा आधी रात में किस उद्देश्य से मेरे पास आए हैं? बताने का कष्ट करें।"

श्रीराम बोले—"हम दोनों विशेष उद्देश्य से आपके पास आए हैं। अगर आप हमारा उद्देश्य पूरा करने का वचन दें तो सभी वृतांत आपको बताया जाए।"

गोरखनाथ सोचने लगे—'इनका रहस्य जाने बिना वचन देने में लाभ तो कुछ होना नहीं, हानि अवश्य हो सकती है।' इस प्रकार विचारकर गोरखनाथ बोले—"बिना परिचय किए वचन देने की नीति मेरी समझ में नहीं आती, इसलिए आप लोग पहले अपना परिचय दें।"

श्रीराम बोले—"योगी, मेरा नाम राम है और इनका नाम हनुमान, अपने भक्त के कारण मुझे आपके पास आना पड़ा।"

इतना सुन गोरखनाथ ने दोनों को प्रणाम कर उनके चरण छुए।

श्रीराम बोले—"अब तो परिचय मिल गया। अब वचन देने में कोई हानि नहीं है।"

गोरखनाथ बोले—"वचन देने से पहले मैं आपके आने का कारण भी जानना चाहता हूं।"

श्रीराम बोले—"पवनपुत्र, योगी को अपना उद्देश्य बताओ।"

हनुमान बोले—"योगी मुझे पता चला है कि मछेन्द्रनाथ आपके गुरु हैं और आप उन्हें त्रिया राज्य से निकाल ले जाना चाहते हैं, परंतु मछेन्द्रनाथ मेरी आज्ञा मानकर यहां आए थे, इसलिए उन्हें यहीं रहने दें।"

गोरखनाथ बोले—"पवनसुत, मुझे आपकी आज्ञा न मानने का दुख है, पर तनिक विचारें, क्या अपने गुरु को इस नरक कुंड से निकालना मेरा पहला कर्तव्य नहीं है? यहां रहने से क्या उनकी योग-साधना में विघ्न नहीं पड़ा है? क्या उनके यहां रहने से नाथ पंथ की नाक नहीं कटी है? आपको तो इस कार्य में मेरी सहायता करनी चाहिए।"

गोरखनाथ की बातों को सुनकर हनुमान सोच-विचार में पड़ गए और फिर बोले—"योगी, जब ये मेरी इच्छा से ही यहां रह रहे हैं तो मैं आपकी सहायता किस प्रकार कर सकता हूं?"

गोरखनाथ बोले—"अगर आप सहायता नहीं भी करेंगे, तब भी मैं अपने गुरु को यहां नहीं रहने दूंगा।"

हनुमान कुछ रुष्ट होकर बोले—"योगी! तुम मेरे रहते उन्हें यहां से कदापि नहीं ले जा सकते।"

गोरखनाथ ने भी उसी प्रकार उत्तर दिया—"कपिराज, संसार की कोई भी शक्ति मेरे इस कार्य में बाधा नहीं बन सकती।"

इतना सुन हनुमान गरजकर बोले—"तब तो आपको मुझसे युद्ध करना पड़ेगा।"

इस पर गोरखनाथ बोले—"युद्ध के लिए विवश होना पड़ा तो यह भी करूंगा।"

हनुमान ने क्रोधित होकर अपनी गदा उठाई, तो प्रभु राम ने आगे बढ़कर उन्हें समझाया—"हनुमान प्रत्येक कार्य क्रोध से हल नहीं होता है। अपना काम करने के लिए नीति की आवश्यकता होती है। पहले तो आप यह बताएं क्या आपने रानी मैनाकिनी को जीवन-भर पुरुष सुख भोगने का वरदान दिया है?"

पवनपुत्र शांति से बोले—"ऐसा तो नहीं है प्रभु!"

तब श्रीराम बोले—"क्या आपने मछेन्द्रनाथ से जीवन-भर सुख भोगने का वचन लिया है?"

इस पर हनुमान बोले—"नहीं प्रभु!"

तब प्रभु श्रीराम बोले—"तब आपका क्रोध करना वृथा है। आप उन्हें उन्हीं की इच्छा पर छोड़ दो, वे अपने शिष्य के साथ जाएं या नहीं। अगर गोरखनाथ अपने कार्य में सफल होकर मछेन्द्रनाथ को निकाल भी ले जाते हैं, तब भी तुम्हारे दिए वचनों को कोई हानि नहीं पहुंचती है।"

हनुमान बोले—"तो प्रभु मेरा सब कर्तव्य समाप्त हो गया?"

प्रभु श्रीराम मुस्कराकर बोले—"समाप्त कैसे हो गया, अब आपका कर्तव्य मछेन्द्रनाथ और रानी मैनाकिनी को सचेत करना है कि गोरखनाथ यहां अपने गुरु को ले जाने के लिए आ पहुंचा है। आप लोग सचेत रहें।"

प्रभु श्रीराम ने हनुमान को संकेत किया, तभी हनुमान त्रिया राज्य की महारानी के महल में जा पहुंचे। उस समय रात्रि अधिक बीत चुकी थी। राज्य भवन में शांति थी। प्रकाश के लिए घी के दीपक जल रहे थे। सेविकाएं नींद में डूबी हुई थीं। द्वार बंद था। उस समय हनुमान रानी के पलंग के पास पहुंचे। हनुमान ने रानी को जगाने का प्रयत्न किया, परंतु उसकी निद्रा नहीं टूटी। हारकर हनुमानजी ने रानी को झकझोरकर जगाया। अपने सामने हनुमान को देख वह हड़बड़ाकर उठ बैठी और हनुमान को बैठने के लिए आसन दिया, फिर बोली—"प्रभु, इस समय कष्ट उठाने का कारण?"

हनुमान बोले—"जिसका भक्त संकट में हो, उसे कैसे चैन पड़ सकता है।"

हनुमान की बातें सुन रानी मैनाकिनी अधीर होकर बोली—"प्रभु! मुझ पर ऐसा कौन-सा संकट आने वाला है?"

हनुमान बोले—"रानी तुम्हारे कहने से मैंने मछेन्द्रनाथ को तुम्हारी मनोकामना पूर्ण करने के लिए यहां भेजा था, जो बारह वर्ष से तुम्हारी इच्छापूर्ति कर रहे हैं, जिसकी वजह से तुम्हें एक पुत्र रत्न भी प्राप्त हुआ है, परंतु मछेन्द्रनाथ का शिष्य गोरखनाथ बड़ा ही शक्ति संपन्न है। वह अपने गुरु को यहां से निकालने के लिए आ पहुंचा है और अपने गुरु को यहां से साथ लेकर ही लौटेगा।"

मैनाकिनी बोली—"क्या कोई मार्ग नहीं है?"

हनुमान ने उत्तर दिया—"रानी! मेरी समझ में तो एक ही उपाय आ रहा है कि अपने मोहनी रूप के त्रिया जाल में मछेन्द्रनाथ को फंसाए रखो, जिससे गोरखनाथ का कोई उपाय सफल न हो सके। अगर तुम्हारे रूप जाल का बंधन ढीला पड़ गया तो गोरखनाथ अपने गुरु को निकाल ले जाने में सफल हो जाएगा।"

रानी मैनाकिनी कुछ और कहती, परंतु दिन निकलने से पहले ही हनुमान अंतर्धान हो गए।

दिन निकलते ही रानी की सखियों की निद्रा भंग हो गई। उधर कालिंगा सुंदरी और उसकी सहेलियों ने उठकर देखा कि गोरखनाथ आसन लगाए बैठे हैं। गोरखनाथ तैयार थे ही। सबके रथ में सवार हो जाने पर सारथी के स्थान पर बैठ वे रथ हांकने लगे। चिन्नापट्टन से चला रथ त्रिया राज्य की राजधानी शृंगमुंड के प्रथम द्वार पर आ पहुंचा। जिसे कालिंगा सुंदरी ने तुरंत रुकवा दिया और गोरखनाथ से कहा—"अब आप भी अपना स्त्री रूप धारण कर लें।"

इतने में ही सब सुंदरियां रथ से उतर पड़ीं और उधर गोरखनाथ ने अपनी योग साधना द्वारा स्वयं को नारी रूप में परिवर्तित कर डाला। उनका नारी रूप देखकर सभी सुंदरियों को आश्चर्य हुआ और कालिंगा सुंदरी प्रसन्न हो मुस्कराकर बोली—"आपने तो हम सबको भी मात दे दी।"

कालिंगा सुंदरी की बात सुनकर गोरखनाथ केवल मुस्करा दिए। तब कालिंगा सुंदरी ने नियानुसार अपनी एक सेविका को रानी मैनाकिनी के दरबार

में भेजा। उस सेविका ने दरबार में पहुंचने पर महारानी को हाथ जोड़कर नमस्कार किया और बोली—"महारानीजी, मेरी स्वामिनी कालिंगा आपको संगीत कला का प्रदर्शन दिखाना चाहती हैं। आज्ञा हो तो हम लोग यहां कला दिखाकर आप सबका मनोरंजन करें।"

मैनाकिनी रानी इस समय बहुत परेशान थी, परंतु मन-बहलाव का साधन समझ स्वीकृति दे दी। स्वीकृति मिलते ही सेविका ने आकर बताया—"स्वामिनी, स्वीकृति तो मिल गई है, परंतु महारानी अनमनी-सी बैठी हैं, फिर भी मनोरंजन करने पर काफी पुरस्कार मिलने की संभावना है।"

कालिंगा सुंदरी शीघ्र ही अपनी सहेलियों को व स्त्री वेशधारी गोरखनाथ को संग लेकर दरबार में पहुंची और महारानी का अभिवादन किया। रानी मछेन्द्रनाथ के साथ रत्नजड़ित सिंहासन की शोभा बढ़ा रही थी। कालिंगा की सभी सखियों ने अपने-अपने वाद्य सही किए। तब गोरखनाथ ने अपना मृदंग बजाना प्रारंभ किया। स्वर आदि ठीक कर, कालिंगा सुंदरी ने अपने मधुर कंठ से गाना शुरू किया। जिससे सभा मोहित हो गई। फिर अपना गाना बंद करके उसने नाचना शुरू किया, जिसकी सभी महिलाओं ने भूरि-भूरि प्रशंसा की, तभी कुछ महिलाओं का मृदंग की थाप की तरफ ध्यान गया, जो बड़ी अद्‌भुत थी। मृदंग कह रहा था—**"जाग मछेन्द्र गोरख आया।"**

मृदंग की धुन सुनकर महारानी भी पागल-सी हो गई। मछेन्द्रनाथ भी बेचैन हुए। मृदंग की ध्वनि से उन्हें विशेष बोध मिल रहा था कि 'जाग मछेन्द्र गोरख आया'। धीरे-धीरे यह शब्द अधिक स्पष्ट हो गए। जिससे योगी की व्याकुलता और बढ़ गई और उनका सिंहासन पर बैठना कठिन हो गया। उन्हें अधिक बेचैन देखकर महारानी ने पूछा—"मुझे ऐसा लगता है, आपको नृत्य पसन्द नहीं है। आप कहें तो बंद करवा दिया जाए?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"रुचा या नहीं रुचा, पर सचेत अवश्य कर दिया गया हूं।"

रानी ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—"मैं आपका अभिप्राय समझ नहीं पाई।"

योगी बोले—"नहीं समझीं तो अब समझने का प्रयत्न करो। इस मृदंग से क्या आवाज आ रही है?"

रानी बोली—"आप ही बताएं, मुझे तो इसकी समझ नहीं है।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"मृदंग की धुन कह रही है, जाग मछेन्द्र गोरख आया।"

गोरखनाथ ने धुन को और स्पष्ट करके बजाया, तब रानी बोली—"शब्द तो कुछ इसी प्रकार हैं, परंतु अभिप्राय क्या है? जो आप बेचैन हो गए?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"अभिप्राय तो स्पष्ट है कि मेरा शिष्य गोरखनाथ आ पहुंचा है और मुझे उसके साथ जाना पड़ेगा।"

महारानी मैनाकिनी हनुमान द्वारा पहले ही सचेत थी, अब उसकी समझ में भी आ गया, स्त्री भेषधारी मृदंग वादिका गोरखनाथ के अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। अंत में अब रानी को विश्वास हो गया कि यह गोरखनाथ ही है। तब उसने तुरंत कालिंगा सुंदरी को पुरस्कार देकर विदा किया और मृदंग वादिका के लिए कहा कि ये छद्‌म भेषी यहां से नहीं जा सकता। ये यहीं बैठेगा। महारानी की गंभीर बातें सुनकर कालिंगा सुंदरी कान दबा और अपनी खैर मना सखियों के साथ चुपचाप चल पड़ी, परंतु उसे गोरखनाथ के पकड़े जाने का अपार दुख हुआ। कारण, इतना सस्ता आदमी जो केवल दो रोटियां ही दिन-भर में खाए और परिश्रमपूर्वक काम करे, इस संसार में मिलना दुर्लभ है, पर ईश्वर की इच्छा के सामने मनुष्य विवश है। इस प्रकार विचार करके अपने सीने पर पत्थर रख, मन को नियंत्रण में किया। 'जान बची और लाखों पाए, लौटकर बुद्धू घर को आए' इस प्रकार परमात्मा को धन्यवाद दिया।

गोरखनाथ पकड़े गए, कितने उपाय करके वे इस त्रिया राज्य में आए थे कि अपनी माता मैनाकिनी से जान पहचान कर अपने गुरु से वार्तालाप करेंगे, परंतु महारानी मैनाकिनी अपनी सेविकाओं को यह आज्ञा देकर अपने निजी कक्ष में चली गई कि इस स्त्री भेष-धारी पुरुष को मेरे सामने लाकर उपस्थित करो। गोरखनाथ सेविकाओं के साथ राजी-खुशी चले गए। वहां उन्हें श्रेष्ठ स्थान बैठने को दिया, फिर रानी बोली—"मैं आपका परिचय जानना चाहती हूं।"

गोरखनाथ को हनुमान द्वारा रानी को सचेत करने की उस बात का पता था, जो श्रीराम और हनुमान में हुई थी, इसलिए योग-विद्या द्वारा काया पलटकर अपना असली रूप प्रकट कर बोले—"माता अब मैं अपने यथार्थ रूप में हूं। आपके राज्य में पुरुष प्रवेश वर्जित था, इसलिए योग-विद्या द्वारा मुझे स्त्री-रूप धारण करना पड़ा। मेरा नाम गोरखनाथ है और योगी मछेन्द्रनाथ मेरे गुरु हैं।"

इस पर रानी बोली—"पुत्र मैं तुम्हें तुम्हारे गुरु से मिलाए देती हूं, फिर

गुरु-शिष्य आपस में निर्णय कर लेना।" इतना कह वह गोरखनाथ को साथ लेकर मछेन्द्रनाथ के पास आ पहुंची और बोली—"आपके शिष्य आप से वार्तालाप करने आए हैं।"

गोरखनाथ ने अपने गुरु को रत्नजड़ित सिंहासन पर तकिए के सहारे बैठे पाया तो वे तुरंत ही चरणों का स्पर्श करके बोले—"गुरुदेव! आपका शिष्य गोरख आपको प्रणाम करता है।"

मछेन्द्रनाथ ने अपने शिष्य को सीने से लगा लिया और आशीर्वाद देकर आसन पर बिठाया। उसके पश्चात कुशल-क्षेम पूछा। तब उन्होंने अपने बारह वर्ष की विद्या प्राप्ति का गुरु को विवरण दिया कि किस प्रकार भगवान भोलेनाथ प्रसन्न हुए और राजा गोपीचंद के राज्य में पहुंचकर जालंधरनाथ की कैद का हाल जानना और कणाफीनाथ से आपके यहां मिलने का समाचार सुनना, हनुमान और श्रीराम की भेंट का विवरण और कालिंगा सुंदरी के त्रिया राज्य में आने और स्त्री-रूप धारण करने वगैरा का सारा वृतांत और कहां किस प्रकार विद्याएं सीखीं, तब हाल सुना डाला।

मछेन्द्रनाथ ने गोरखनाथ की प्रशंसा की। अपने गुरु के मुख से अपनी प्रशंसा सुनकर गोरखनाथ बोले—"गुरुदेव! मुझे जो भी विद्याएं प्राप्त हुई हैं, वह अब आपके ही आशीर्वाद का फल है। मेरे क्रिया-कलापों में आपका ही आशीर्वाद समाया हुआ है। इसी से मुझे कहीं भी असफलता का मुख नहीं देखना पड़ता। मछेन्द्रनाथ मौन होकर अपने शिष्य की बात सुनते रहे। अपने गुरु को मौन साधे हुए देख, गोरखनाथ बोले—"गुरुजी, आप स्वयं भी तो ऊर्ध्वरती योगी हैं। आपको इस त्रिया राज्य की रानी के भोग-विलास में लिप्त देखकर हमारे नाथ पंथ की कितनी निंदा हो रही है।"

गोरखनाथ की बात सुनकर मछेन्द्रनाथ बोले—"पुत्र गोरखनाथ तुम्हारा कहना मिथ्या नहीं है, परंतु मैं विवशता वश ही यहां ठहरा हुआ हूं।"

गोरखनाथ बोले—"क्या आप मुझे समझाने की कृपा करेंगे कि वह कौन-सी विवशता है?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"जब मैं तुम्हें बद्रीनाथ जाने का आदेश देकर स्वयं तीर्थ-यात्रा को चल पड़ा तो रामेश्वरम में मेरी हनुमान से भेंट हुई। उन्होंने मुझे यहां आने के लिए विवश किया, उन्हीं की आज्ञा अनुसार मुझे यहां रहते हुए बारह वर्ष व्यतीत हो गए।"

इस पर गोरखनाथ बोले—"अब आप मेरे साथ चलने की कृपा कीजिए। हनुमान को दिए वचनों का पालन भली प्रकार पूरा हो चुका है। अब आपकी प्रतिज्ञा भंग होने का भी समय बीत गया है।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"तो मुझे कब इनकार है पुत्र! तुम अपनी माता मैनाकिनी को समझाओ, उनके राजी होते ही मुझे तुम्हारे साथ चलने में बाधा नहीं है।"

गोरखनाथ मन में सोचने लगे—'गुरु तो यहां से निकलना तो चाहते हैं, पर रानी को क्रुद्ध करके नहीं, इसलिए उन्हें राजी करने का भार मेरे ही कंधों पर डाल रहे हैं।'

उधर महारानी मैनाकिनी सोचती है—'अगर गोरखनाथ अपने गुरु को यहां से ले जाने में सफल हो गया तो बड़ी परेशानी होगी, इसलिए इसे भी मैं क्यों न सुंदर नारियों के जाल में फंसा दूं। अगर वह यहां के त्रिया-जाल में फंस गया तो अपने गुरु को साथ ले जाने का कारण ही समाप्त हो जाएगा।'

इस प्रकार मन में विचार कर अपनी श्रेष्ठ सुन्दर सहेलियों को गोरखनाथ को रिझाने के लिए भेजा और इनाम भी देने का लालच दिया। महारानी मैनाकिनी की आज्ञा मानकर वे सुंदरियां गोरखनाथ के समीप जा पहुंचीं और उनकी सेवा-सुश्रुषा में लग गईं।

गोरखनाथ उनको अपने समीप देखकर बोले—"मैं अपना काम नारियों से नहीं करवाता।"

पर वे सुंदरियां अड़ी ही रहीं और मुस्कराकर बोलीं—"जब यहां कोई पुरुष है ही नहीं तो आपकी सेवा नारियों को ही करनी पड़ेगी।"

गोरखनाथ बोले—"मुझे अपने कार्यों के लिए किसी की आवश्यकता नहीं है, मैं अपने कार्य स्वयं ही कर लेता हूं।"

उन सुंदरियों ने गोरखनाथ को रिझाने के लिए काफी प्रपंच रचे, परंतु गोरखनाथ ने आंख उठाकर भी नहीं देखा। वे हारकर महारानी के निकट जाकर बोलीं—"महारानी, गोरखनाथ को वश में करना असंभव है। हम सभी असफल हो गई हैं।"

रानी मैनाकिनी अपनी सखियों की बात सुनकर निराश हो गई।

मछेन्द्रनाथ से मैनाकिनी रानी को एक पुत्र की प्राप्ति भी हुई थी, जिसका नाम मौनीनाथ था, जो रानी को अधिक प्यारा था। उसके आंख से ओझल होते

ही रानी व्याकुल हो जाती थी। एक दिन मछेन्द्रनाथ के पास रानी मैनाकिनी, मौनीनाथ और गोरखनाथ बैठे थे कि तभी गोरखनाथ से मछेन्द्रनाथ बोले—"वत्स, मौनीनाथ ने कई दिन से स्नान नहीं किया है, क्योंकि यह रोगी था। अब ठीक हो जाने पर स्नान करना आवश्यक है, इसलिए अच्छी प्रकार नदी पर इसे स्नान करा लाओ।"

गोरखनाथ समझ गए अब जो चमत्कार होगा, उसका श्रेय भी मुझे ही मिलेगा। ऐसा विचार कर मौनीनाथ को वे नदी तट पर ले गए और उसकी दोनों टांगें पकड़कर उठाया तो वह रोने लगा, पर रोने की कोई परवाह न कर उसे शिलाखंड पर पछाड़ना शुरू कर दिया, जिस प्रकार पटड़े पर धोबी कपड़े पछाड़ता है, तीन-चार पटकियों में ही मौनीनाथ के प्राण-पखेरू उड़ गए।

उसके पश्चात भी उसकी त्वचा को धोया, जिससे भीतर की सारी गंदगी निकल गई। फिर उसे राजमहल में ले जाकर रानी के सामने ही छत पर सूखने के लिए डाल दिया। जब गुरु मछेन्द्रनाथ को मौनीनाथ दिखाई नहीं पड़ा, तो वह बोले—"पुत्र गोरख! मौनी कहां रह गया?"

गोरखनाथ बोले—"आपने ही तो उसे ठीक प्रकार स्नान कराने की आज्ञा दी थी। इससे मैंने उसे ठीक प्रकार स्नान कराकर छत पर सूखने के लिए डाल दिया है। छत पर धूप में उसकी चमड़ी भली प्रकार सूख जाएगी।"

मछेन्द्रनाथ को ध्यान लगाकर देखने से ज्ञात हुआ, मौनीनाथ मर चुका है।

महारानी मैनाकिनी भी गोरखनाथ की बात सुनकर चौंकी और मछेन्द्रनाथ को साथ लेकर छत पर जा पहुंची, जो कुछ गोरखनाथ ने कहा था, सचमुच वही दृश्य अपनी आंखों से देखा कि मौनीनाथ मर चुका है और उसकी खाल धूप में सूख रही है। अपने बेटे की यह दुर्दशा देख, रानी रोते-रोते बेहोश हो गई, जब रानी को होश आया, तब मछेन्द्रनाथ कह रहे थे—"अरे निर्दयी गोरख! तूने तो इस अबोध बालक के प्राण ही हर लिए।"

रानी मैनाकिंनी रोते-रोते बोली—"प्राण ही नहीं अंजर-पंजर तक नष्ट कर डाले। अस्थि वगैरह कुछ भी नहीं रही।"

इस पर गोरखनाथ बोले—"गुरुजी, आपने ही तो आदेश दिया था कि इसे ठीक प्रकार स्नान कराना, आपकी आज्ञा-पालन करने में मेरी क्या गलती है।"

मछेन्द्रनाथ क्रोध दर्शाते हुए बोले—"अरे मूर्ख स्नान का अर्थ मार डालना कौन-से ग्रंथ में लिखा है? तूने यह कार्य ईर्ष्या वश किया है।"

रानी मैनाकिनी बोली—"आप तो कहते थे गोरखनाथ विद्वान है। इसी कारण आपके शिष्य ने शत्रु समझकर मेरे पुत्र को मार डाला है।"

गोरखनाथ बड़ी धीरता के साथ बोले—"माता न कोई किसी को मारता है, न किसी के मारने से कोई मरता है, इसलिए इस नाशवान वस्तु का शोक करना ही वृथा है।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"हत्यारे हत्या करके, ज्ञानीपने का ढोंग करता है।"

गोरखनाथ बोले—"गुरुदेव! आप तो परम ज्ञानी हो। यह आत्मा अमर है, ऐसा आपने ही तो पढ़ाया था। यह संसार नाशवान है। इसमें जन्म लेने वाले सभी प्राणी एक-न-एक दिन अवश्य मरेंगे, इसलिए मरने का शोक करना वृथा है।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"यह उपदेश मैंने किसी निर्दोष बालक की हत्या के लिए दिया था, तू ही बता? मौनीनाथ के बिना हम दोनों की जिंदगी में अब रह ही क्या गया है।"

रानी बोली—"मैं क्या अब जीवित रह सकूंगी?"

गोरखनाथ धीरतापूर्वक बोले—"माते! अब किया भी क्या जा सकता है। जिसकी आई थी वह मर गया मुझे जो सजा देना चाहो, दे लो।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"मैं तुझे आज्ञा देता हूं, तू अपनी शक्ति से मौनीनाथ को जीवनदान दे।"

अपने गुरु की आज्ञा मानकर गोरखनाथ ने संजीवनी मंत्र की भस्मी को अभिमंत्रित कर मौनीनाथ की खाल पर छिड़क दिया। फिर क्या था एक ही सूरत वाले 108 मौनीनाथ उत्पन्न हो गए। सबका कद और रंग-रूप एक-सा ही था। एक साथ इतने सारे मौनीनाथ देख मैनाकिनी रानी बड़ी विस्मित हुई। उसकी समझ में ही नहीं आया कि इनमें से मेरा मौनीनाथ कौन-सा है।

गोरखनाथ बोले—"माता, अब इतने मौनीनाथ आपके संमुख हैं। इनमें से अपना मौनीनाथ चुन लो, अगर सबको ही लेना चाहो तो सब ले सकती हो।"

मैनाकिनी रानी बोली—"गोरख तुम बड़े मायावी हो। अब अपनी माया समेटकर मुझे मेरा वास्तविक मौनीनाथ दे दो। मैं इतने मौनीनाथों में अपना मौनीनाथ नहीं पहचान सकती।"

गोरखनाथ बोले—"माते, जब आप अपनी वस्तु को पहचान नहीं सकतीं तो उसे अपना कहने का अधिकार ही क्या है?"

रानी बोली—"सत्य है पुत्र, यह मायामोह छोड़े से भी नहीं छूटता।"

गोरखनाथ बोले—"तो अब मैं और क्या कर सकता हूं?"

मैनाकिनी बोली—"तुम चमत्कारी हो पुत्र, सब कुछ कर सकते हो। मुझे तो अपना ही मौनीनाथ चाहिए।" तब गोरखनाथ ने माया समेट ली और वास्तविक मौनीनाथ, रानी को दे दिया। इस घटना से मैनाकिनी अति प्रसन्न हुई और गोरखनाथ को सम्मान की दृष्टि से देखने लगी।

तभी गोरखनाथ दोनों हाथ जोड़कर बोले—"माते, अब इतनी कृपा करो कि मैं अपने गुरु को साथ ले जाऊं, उनको ले जाना उचित ही है। उनके यहां रहने से धर्म प्रचार में बाधा पड़ी है।"

मैनाकिनी भी मन में समझ गई, अब गोरखनाथ, अपने गुरु को ले जाए बिना मानने वाला नहीं। ऐसे योगी के कार्य में बाधा डालना भी तो असंभव है। ऐसा विचार कर मैनाकिनी बोली—"पुत्र, तुम अपने गुरु को ले जाए बिना नहीं मानोगे, इसलिए एक वर्ष तक यहीं रुको, फिर तुम्हारे गुरु को हंसी-खुशी तुम्हारे साथ भेज दूंगी।"

गोरखनाथ बोले—"एक वर्ष तो बहुत है माता, इतने समय में तो हमारी सारी योजनाएं बिगड़ जाएंगी, परंतु आपको भी नाराज नहीं करना है, इसलिए छः महीने यहां ठहर जाएंगे।" गोरखनाथ की बात से संतुष्ट हो रानी अपने कक्ष में चली गई। तब गुरु शिष्य ने एकांत देख वार्तालाप प्रारंभ किया।

मछेन्द्रनाथ बोले—"वत्स गोरख! मैनाकिनी का मोह भंग करने का इससे सरल उपाय नहीं था, अब यहां से चलने में कोई विघ्न-बाधा नहीं रही।"

गोरखनाथ बोले—"गुरुदेव! आपने मौनीनाथ को घाट पर क्यों भेजा था और फिर उसके मरने पर इतना शोक क्यों किया?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"रानी का मोह भंग करने के लिए, यह सब करना पड़ा। तुमने जो भी किया मेरी इच्छानुसार ही किया, इसलिए तुम प्रशंसा के पात्र हो।"

छः महीने बीतते कितनी देर लगती है। एक-एक दिन घटते-घटते वह समय भी आ पहुंचा, जिससे रानी की व्याकुलता बढ़ गई, वह रोती जाती थी और विदाई का आयोजन करती जाती थी, उसने थोड़ा धैर्य रखकर मछेन्द्रनाथ से पूछा—"मौनीनाथ आपके साथ जाएगा या यहीं रहेगा?"

मछेन्द्रनाथ बोले—"ये सब तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।"

रानी मैनाकिनी बोली—"मेरे पिता उपरिक्ष बसु द्वारा आपकी अवधि में छः महीने का विलंब है, उसके पश्चात तो मुझे स्वर्गलोक जाना ही पड़ेगा, इसलिए गोरखनाथ से एक वर्ष ठहरने के लिए कहा था, उन्होंने छः महीने की ही अवधि दी। ऐसी स्थिति में मौनीनाथ यहां अकेला ही रह जाएगा। आपकी उपस्थिति में तो हनुमान की गर्जना का प्रभाव इस पर नहीं पड़ता था। अकेले इसके लिए उस प्रभाव को रोकना असंभव है। ऐसी स्थिति में मौनीनाथ किसी भी प्रकार जीवित नहीं बच सकता, इसलिए आप इसे भी साथ ही ले जाएं।"

मछेन्द्रनाथ बोले—"ठीक है। मौनी तुम हमारे साथ ही चलो।"

रानी ने चलते समय मछेन्द्रनाथ की झोली में सोने की एक ईंट रख दी। ईंट के अलावा उनके वस्त्र आदि रखकर उन्हें समझा दिया, जब तीनों चलने को तैयार हुए तब माता ने गोद में लेकर पुत्र को प्यार किया और नैनों से नीर बहा, पिता-पुत्र को विदाई दी। जब तीनों नाथ महल से बाहर निकले तब रानी मैनाकिनी और उनकी सखियों ने उन्हें विदा किया। जब तीनों आंखों से ओझल हो गए तब सब आंसू पोंछ अपने-अपने घरों को चली गईं। मैनाकिनी रानी के रात-दिन तो रोते हुए ही बीतते थे। यह तीनों घूमते-घूमते यज्ञ भंडारे करते हुए, महेन्द्र गिरी पर्वत पर रहकर, तपस्या करने लगे। गोरखनाथ मछेन्द्रनाथ से आज्ञा लेकर गिरनार पर्वत पर जा पहुंचे, जहां परमयोगी दत्तात्रेय का स्थान है।

इस तरह छः माह बीतने पर उपरिक्ष बसु मैनाकिनी रानी को अपने साथ स्वर्ग में ले जाने के लिए आए और उसे बोध कराया—"इस संसार में सब नाशवान है, इसलिए दुख करने का कोई लाभ नहीं। अब स्वर्ग में चलकर सुख भोगो। मैं तुम्हें बारह वर्ष पश्चात मछेन्द्रनाथ से मिलाऊंगा। जिसके साथ मौनीनाथ व गोरखनाथ भी होंगे। तुम सोचती होगी, यह सब कैसे होगा, सो तुम्हारी शंका का निवारण करता हूं। स्वर्ग का महाराजा इंद्र संगलद्वीप के पास एक बड़ा भारी यज्ञ करेगा। उस यज्ञ में ब्रह्मा, विष्णु, महादेव आदि सर्वश्रेष्ठ देवगण नौ नाथों सहित पधारेंगे।"

रानी मैनाकिनी बोली—"इंद्र का यज्ञ हो चाहे न हो, परंतु एक बार आप मुझे मछेन्द्रनाथ से मिलवाने का प्रण करें। जिससे मेरे मन को शांति मिले।" तब मैनाकिनी रानी के सिर पर हाथ रखकर उपरिक्ष वसु ने वचन दिया, तब

संतोष कर दर्भामा दासी को राजभार सौंप उसे गद्दी पर बिठाया और स्वयं विमान में बैठ स्वर्ग जाने के लिए तैयार हुई।

इधर कुरू वंश में जन्मेजय राज्य के सातवें राजा बृहद्रव ने हस्तिनापुर का राज्य करते समय सोम यज्ञ करना प्रारंभ किया। उसने पहले शिव की प्रलय अग्नि में मदन को जलवाया, फिर अग्नि के पेट में स्वयं बैठ गया। तब अंतरिक्ष नारायण ने संचार कर अग्नि-कुंड में डाला। पूर्णाहुति के पश्चात यज्ञ कुंड की रक्षा हेतु ब्राह्मणों ने हाथ डाला, तभी उनके हाथ वह शिशु लगा। जब रोने का स्वर सुनाई दिया तो पुरोहितजी ने राजा से बच्चे के विषय में कहा। तब बच्चे को देख बृहश्रवा राजा को संतोष हुआ और अपनी गोद में उठाकर बालक का मुख चूमकर प्यार किया और अपने मन में कहा—'यह प्रत्यक्ष मदन का अवतार है।' फिर राजा बालक को लेकर अंतःपुर में रानी के पास गए, जिसका रूप देवांगना के समान था।

रानी ने राजा से पूछा—"यह किसका बालक है?"

राजा ने उत्तर दिया—"यह अग्नि-देवता का प्रसाद है।" इतना सुन रानी ने बालक को अपना स्तन पान कराया। उसके पश्चात बड़ा भारी उत्सव मनाया गया। फिर बारहवें दिन नामकरण संस्कार किया गया और जालंधर नाम निकला। कुछ दिन पश्चात जनेऊ हुआ। इसी प्रकार सोलह संस्कार हुए और राजा-रानी ने परामर्श करके प्रधान और पुरोहित को नाई के साथ अच्छे कुल की सुंदर कन्या हमारे पुत्र के समान देखकर सगाई पक्की कर आने का आदेश दिया। जालंधर ने प्रधान के जाने के पश्चात अपनी माता से पूछा—"आजकल प्रधान दिखाई नहीं देते।"

तब रानी ने बताया—"तुम्हारे पिता ने तुम्हारे लिए पत्नी देखने को प्रधान, पुरोहित और नाई को भेजा है।"

तब जालंधर ने पूछा—"पत्नी क्या होती है?"

माता ने उत्तर दिया—"मेरे जैसी छोटी लड़की।"

तब यह सब बातें ध्यान में रखकर जालंधर अपने साथियों के साथ खेलने गए और अपने मित्रों से पूछा—"मेरे माता-पिता मेरे लिए पत्नी मंगवा रहे हैं, वह किसलिए होती है? अगर आप लोगों को पता हो तो मुझे बताओ।"

मित्रों को जालंधरनाथ के अज्ञान पर आश्चर्य हुआ। फिर उन्होंने उसे सारी बातें समझाईं। तब वे विचारने लगे, यह जग कितना गया-गुजरा है, जो उत्पन्न

होने का स्थान है, उसी को भोगने के अनुचित कार्य में मुझे प्रवृत्त नहीं होना चाहिए। इस प्रकार मन में धारणा बना वह वन में चले गए। जब गांव के सीमा रक्षकों ने उन्हें देखा कि यह तो राजकुमार है, तब वह भयभीत हो उनसे कुछ नहीं बोले और राजा को जाकर सूचना दी। इस प्रकार की सूचना सुनकर राजा घबरा गया और बेटे को ढूंढ़ने जंगल में गया। बहुत खोजने के पश्चात भी जब कोई पता न चला तो वापस चले आए और पुत्र वियोग में राजा-रानी बड़े बेचैन हुए। जालंधर जब जंगल में जाकर सोए, तभी घास में अग्नि लगकर जालंधर के निकट आई और अग्नि ने अपने बेटे को पहचाना। तब सुरक्षित स्थान में उसे रखा और विचारा कि यह किस स्थिति में यहां आया? इस चिंता में अग्नि ने प्रकट होकर बेटे को सोते से जगाया और गोद में बिठाकर पूछा—"पुत्र यहां आने का कारण कहो?"

तब जालंधर ने कहा—"तुम मेरा भेद जानने वाली कौन हो?"

तब अग्नि ने कहा—"बेटा, मैं तुम्हारी मां हूं और मुझे अग्नि कहते हैं।"

फिर अग्नि ने पूछा—"अब तेरा क्या विचार है?"

अग्नि की बात सुनकर जालंधर बोले—"आपको तो सब कुछ पता ही है। मेरे कहने से ही क्या होगा? फिर भी मैं बताए देता हूं, मुझे यह दुर्लभ मानव शरीर मिला है। कुछ ऐसा उपाय होना चाहिए, जिससे इसका कल्याण हो, नहीं तो जन्म धारण करने का कोई लाभ नहीं। मैं चाहता हूं कि मेरा यश त्रिभुवन में फैले और मैं अमर हो जाऊं। आप ऐसा कुछ उपाय करें।" अपने बेटे की अपूर्व इच्छा देख, अग्नि को अपार आनंद हुआ। उसने उनकी खूब प्रशंसा की। जालंधर सबसे अधिक प्रबल हो, इसलिए अग्नि उन्हें भगवान दत्तात्रेय के पास ले गई।

दत्तात्रेय ने अग्नि से पूछा—"आपका यहां किस इच्छा से आगमन हुआ है और साथ में यह बालक कौन है?"

तब अग्नि ने सारी कथा कह सुनाई।

इस पर दत्तात्रेय ने कहा—"आपकी मनोकामना मैं अवश्य पूर्ण करूंगा, परंतु इन्हें बारह वर्ष यहां रहना पड़ेगा।"

जब अग्नि ने बालक को वहां छोड़ा, तब दत्तात्रेय ने बालक को गोद में बिठाकर उसके सिर पर हाथ रखा और उसकी अज्ञानता दूर की। तब उस बालक को ज्ञान की प्राप्ति हुई। दत्तात्रेय जालंधर को अपने साथ लेकर नित्य

घूमने के लिए भागीरथी के तट की ओर जाने लगे और वहां स्नान ध्यान के पश्चात विश्वनाथ दर्शन और कोल्हापुर में भिक्षा और पांचालेश्वर में भोजन किया करते थे। इस तरह जालंधरनाथ बारह वर्ष तक दत्तात्रेय के साथ रहकर शास्त्र विद्या में पारंगत हो गए। उसी तरह वेद, पुराण, शास्त्र, व्याकरण आदि में भी प्रवीणता पाई। प्रवीण होने के पश्चात दत्तात्रेय ने देवताओं की आराधना कराई। तब सब देवता जालंधरनाथ को वरदान देने के हेतु पृथ्वी पर उतरे और अग्नि देव भी आए और जालंधरनाथ को सर्व-विद्याओं में निपुण देख उनका हृदय आनंदित हुआ।

तब दत्तात्रेय ने कहा—"अब यह सब विद्याओं में निपुण हो गया है। अब सभी देवताओं को प्रसन्न कर और भुजा भेंट कराकर प्रार्थना की कि अब इसे वरदान देकर कृतार्थ करो।" इस प्रकार की वाणी सुन अग्नि देव ने बेटे को कंधे पर बिठाकर सब देवताओं के बारी-बारी दर्शन कराए। पहले जिन देवताओं से मछेन्द्रनाथ मे वरदान प्राप्त किए थे। उन्हीं देवताओं ने जालंधरनाथ को भी वरदान दिए, फिर जालंधरनाथ ने बद्रिकाश्रम जाकर बारह वर्ष तक घोर तपस्या की, जब वे कसौटी पर खरे उतरे, तब सभी देवताओं ने उनकी प्रशंसा की और आशीर्वाद दे ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अपने-अपने स्थान को आनंदपूर्वक लौट गए। बद्रिकाश्रम में बद्रीनाथ ने अग्नि व जालंधरनाथ को, तीन रात अपने पास रखा।

भगवान विष्णु और शिव ने जालंधरनाथ की शक्ति की सराहना की। फिर शिव ने जालंधरनाथ से कहा—"अब तुम नागपुत्र अश्वथामा की जगह जाकर यज्ञ करो, वहीं पर तुम्हें देवताओं से शाबर मंत्र का वरदान मिलेगा। कलियुग में उनमें से बहुतों का तो प्रयोग वर्जित है, इसलिए कविता सिद्ध करवा लो और सारी विद्या कानिफानाथ को सिखा दो। यह आपका शिष्य अहंकारी होते हुए भी उदार वृत्ति का है। यह अपने हजारों शिष्य बनाएगा और आपकी सिखाई विद्याएं इसके काम आएंगी, इसलिए इसका नाम अमर रहेगा। पहले ऋषि-मुनियों ने शाबरी विद्या के मंत्र ढूंढ़ निकाले, लेकिन वह मंत्र प्राचीन होने के कारण समझने में बड़ी कठिनाई है, जिससे जनता को कोई लाभ नहीं पहुंचता। अब नौ नाथों को मिलकर करोड़ों मंत्रों को कविता में रचना चाहिए, जिससे सबको सद्उपयोग करने का अवसर मिले। आप सर्वज्ञ हो आपको समझाना आवश्यक नहीं। जीवन-मरण उच्चाटनादि पर भी कविता रचें और

कानिफानाथ के विषय में भी बताया कि इसे भी तप करने भेजें और सामर्थ्यवान बनाएं।" शिवजी का उपदेश योगी ने शीश चढ़ाकर स्वीकार किया।

जालंधरनाथ और कानिफानाथ दोनों ने मिलकर बीस लाख श्लोकों को तैयार किया, जिसे सुन शिव बड़े प्रसन्न हुए और उन्हें भाग्यश्वत्थ पेड़ के नीचे प्रयोग सिद्ध करने के लिए कहा। तब वह दोनों वहां गए और यज्ञों द्वारा प्रयोग सिद्ध किया। फिर सूर्य कुंड से जल लाकर बावन वीरों पर छिड़ककर उन्हें अपने अनुकूल किया और फिर बद्रिकाश्रम को वापस आए और जालंधरनाथ ने कानिफानाथ को तप करने की आज्ञा दी और स्वयं भी अन्यत्र तप करने के लिए चले गए। वहीं गोरखनाथ भी तप कर रहे थे, परंतु एक का दूसरे को कोई पता नहीं था।

जालंधरनाथ यात्रा करते समय अपने सिर पर घास का गट्ठर रखकर घूमा करते थे, जो उनके सिर से एक-दो बालिस्त ऊंचा रहता था, जिससे गट्ठर का उनके सिर से कोई मेल नहीं था। इसी प्रकार वह घूमते-घूमते गौड़ बंगाले की हेलापट्टन नगरी में जा पहुंचे। उस समय वह घास का गट्ठर सिर से ऊंचा अधर में चल रहा था। लोगों को कौतूहल हुआ, संभवतः यहां कोई सिद्ध महात्मा आ पहुंचा है। ज्यों-ज्यों लोगों को पता चलता गया, त्यों-त्यों लोग दर्शनों के लिए आने लगे। यहां गोपीचंद राज्य करता था, जिसकी माता मैनावंती बड़ी चतुर व सदाचारणी नारी थी। वह एक दिन अपने चौबारे पर खड़ी थी और अपनी नगरी का दृश्य देख रही थी। तब उसकी नजर जालंधरनाथ के सिर पर अधर में लटके गट्ठर की ओर गई। मैनावंती को बड़ा ही आश्चर्य हुआ, एकदम उसकी धारणा बन गई कि यह कोई सिद्ध है। इसे अपना गुरु बनाकर जीवन सफल करना चाहिए।

इस प्रकार निश्चय करते ही रानी ने अपनी दासी को बुलाकर आज्ञा दी—"तू तुरंत मेरा एक कार्य कर किसी को कानों-कान पता नहीं लगाना चाहिए। वह साधु घास का गट्ठर अधर में उड़ाए जा रहा है। उसके ठहरने के स्थान का चुपचाप पता लगाकर लौट आ।" वह दासी पहले ही से जालंधर योगी को देखकर चकित थी, वह उनका पता लगाने के लिए उनके पीछे-पीछे, सबकी नजर बचाती हुई चल पड़ी और जहां उनके ठहरने का स्थान था, वहां जा पहुंची और वापस आकर सब पता ठिकाना राजमाता मैनावंती को बता दिया।

उसी दिन अर्द्ध रात्रि के समय राजा गोपीचंद की माता मैनावंती अपनी दासी को साथ लेकर योगी के स्थान पर जा पहुंची। योगीराज उस समय आंखें मूंदे समाधि लगाए बैठे थे। मैनावंती भी अपने दोनों हाथ जोड़े योगी के सामने बिछे आसन पर विराजमान हो गई। काफी समय पश्चात जब योगी की समाधि टूटी, तब अपने सामने दो नारियों को बैठे पाया तो पूछने लगे—"माताओ, आप कौन हो और आधी रात के समय मेरी धूनी पर किस उद्‌देश्य से आई हो?"

मैनावंती दोनों हाथ जोड़कर बोली—"योगीराज, मैं यहां के राजा गोपीचंद की माता हूं। मेरा नाम मैनावंती है और यह मेरे साथ मेरी प्रिय दासी है। इस समय मैं यहां आपके दर्शनार्थ ही आई हूं। मैं विधवा होने के नाते सबके सामने नहीं निकलती हूं, इसलिए रात्रि में यहां आना पड़ा।"

मैनावंती की बात सुनकर योगीराज बोले—"हे माता, रात्रि के समय किसी के साथ भेंट करना कलंक है।"

मैनावंती बोली—"योगीराज, आप तो ब्रह्म-ज्ञानी हैं। आपकी दृष्टि में नारी-नर का भेद क्यों? आप इस नाशवान संसार से व्यर्थ भयभीत होते हो। मैं तो इन दुनिया वालों से बिल्कुल नहीं डरती, जो अधर्म करे, वही भय माने। मैं जिस गूढ़ ज्ञान के लिए यहां आई हूं, अपना उद्‌देश्य पूर्ण किए बिना नहीं जाऊंगी।"

योगी ने क्रोधित होकर कहा—"अगर आप लोग राजी से नहीं जाएंगी तो मैं ईंट-पत्थर मारकर तुम दोनों के सिर फोड़ दूंगा। आप लोगों का भला इसी में है कि इस स्थान से उठकर चुपचाप चली जाओ।"

जालंधर योगी की बात सुनकर मैनावंती बोली—"महाराज अगर आपके कर-कमलों द्वारा हमारी मृत्यु हो जाए तो हमसे अधिक भाग्यशाली और कौन होगा। साधु के हाथ से किसी भाग्यशाली को ही मुक्ति मिलती है।"

रानी मैनावंती को अपनी धुन की पक्की समझकर योगीराज बोले—"आखिर आप यहां किस उद्‌देश्य से आई हो?"

मैनावंती बोली—"योगीराज, भक्त को अमृत की प्यास होती है। अब आप मुझे अमृत-पान कराकर मेरी अज्ञानता दूर करें।"

माता मैनावंती तीसरे-चौथे दिन अर्द्ध रात्रि पर्यन्त दासी को साथ लेकर योगी की कुटिया पर पहुंच जाती और धर्म-चर्चा सुनकर लौट आती। एक

दिन आंखें मूंदे योगी तपस्या कर रहे थे। मैनावंती हाथ जोड़े आसन पर विराजमान थी कि तभी एक भयंकर काला सांप तेज गति से रानी की तरफ आ पहुंचा और रानी के ऊपर चढ़ गया। तब दासी भयभीत हो शोर मचाने लगी, परंतु रानी ने कोई घबराहट नहीं दिखाई और न दासी के शोर का उस पर कोई प्रभाव हुआ। वह निडर होकर अपने आसन पर बैठी रही, सर्प बिना काटे ही आलोप हो गया। इस प्रकार रानी की कई परीक्षाएं हुईं, परंतु रानी सब में पास हो गई। तब जालंधर योगी ने धर्म-उपदेश देकर मैनावंती को अपनी शिष्यां बना लिया और स्वयं गुरु बन गए।

मछेन्द्रनाथ और गोरखनाथ, सौराष्ट्र होते हुए तेलगुण पहुंचे और गोदावरी में स्नान कर, शिवजी के दर्शन करके पूजा की। फिर अवढ्यानाथपुर, वैजनाथ धाम, तीर्थकर गर्भागिरि आदि पर्वत पर जहां ऋषि बाल्मीकि का आश्रम है वहां पहुंचे, वहां बहुत भयानक वन है और मार्ग दिखाई नहीं देता। ऐसे भयानक जंगल में जाते हुए रानी मैनाकिनी की रखी सोने की ईंट के कारण मछेन्द्रनाथ भी भयभीत हो गए थे। जो किसी को पता न चले, इस प्रकार छिपाकर रख दी थी। कहीं ईंट को चोर चुराकर न ले जाए, इस कारण वह भयभीत थे। चलते हुए वे पूछते थे कि यहां चोरों का भय तो नहीं है? सारा भय गोरखनाथ की परीक्षा लेने के कारण था। इस प्रकार गुरुजी को भय क्यों है, गोरखनाथ ने कल्पना की कि गुरुजी के पास अवश्य माया है। इसी कारण इन्हें चोरों का भय सता रहा है। इस प्रकार अनुमान लगा गोरखनाथ ने निश्चय किया कि गुरुजी का भय दूर करना चाहिए। इस प्रकार मन में निश्चय कर वे चुपचाप चलते रहे।

कुछ समय पश्चात उन्हें पानी दिखाई दिया, तब मछेन्द्रनाथ गोरखनाथ के पास अपना सामान रख नित्य कर्म से निबटने के लिए गए। तब चेले ने गुरु की झोली में से सोने की ईंट फेंककर उतने ही भार का एक पत्थर रख दिया, इधर मछेन्द्रनाथ भी आ गए और झोली उठाकर चलने लगे। थोड़ी दूर आगे चलने पर उन्हें एक कुंआ दिखाई दिया। वहां उन्होंने स्नान किया और मीनीनाथ को भी कराया, नित्य कर्म से निवृत हो फिर मछेन्द्रनाथ पहले की तरह बोले—"अब भय तो नहीं है।"

तब गोरखनाथ बोले—"गुरुजी वह तो पीछे ही रह गया।"

इस पर मछेन्द्रनाथ चकित होकर बोले—"पुत्र मुझे तो बड़ा भय लग रहा था, कहीं सोने की ईंट डाकू न छीनकर ले जाएं।"

गोरखनाथ बोले—"जब धन अपने पास है ही नहीं तो चोरों का भय क्यों करें।" ये शब्द सुनकर मछेन्द्रनाथ के मन में चिंता हो गई, तब गोरखनाथ मछेन्द्रनाथ का हाथ पकड़कर पर्वत पर चढ़ने लगे और चढ़ने से पहले मछेन्द्रनाथ ने झोली की ईंट टटोली और झोली में ईंट न देखकर गोरखनाथ को बुरा-भला कहने लगे और दुःखित होकर रोना शुरू कर दिया।

गोरखनाथ को अपने गुरु के शब्द तीर की भांति चुभे, परंतु वे मौन रहे।

मछेन्द्रनाथ बोले—"मैंने बड़ा भंडारा करने की सोची थी।" तब भी गोरखनाथ ने कुछ उत्तर नहीं दिया और मछेन्द्रनाथ का हाथ पकड़कर चलने लगे। चलते-चलते गोरखनाथ ने सिद्ध योग मंत्र का जाप कर पेशाब किया, जिससे सारा पर्वत स्वर्ण का हो गया। तब वे स्वर्ण लेने के लिए गुरु से प्रार्थना करने लगे। अपने शिष्य की यह शक्ति देखकर योगीराज वाद-विवाद करने लगे।

तब गोरखनाथ बोले—"गुरुजी, जितना सोना चाहिए ले लें और अगर उसी ईंट से प्यार हो तो वह भी आ सकती है।"

इस पर योगीराज बोले—"जिसका शिष्य स्वयं पारस है, उसके गुरु को स्वर्ण का क्या करना है?"

अपने गुरु को प्यार-भरी बात बोलते देख गोरखनाथ बोले—"गुरुजी, सोने की ईंट के लिए इतनी हाय-तोबा किसलिए की थी?"

योगीराज बोले—"बेटा, तेरी विद्या की परीक्षा लेने के लिए।"

इतना सुन गोरखनाथ बोले—"गुरुजी, अब मैं आपकी भंडारे वाली इच्छा पूर्ण करूगा।"

अपने गुरु से ऐसा कह, गोरखनाथ ने मंत्र पढ़कर गांधर्वास्त्र छोड़ा और थोड़ी भस्मी लेकर स्वर्ग की ओर फेंकी। उसी समय चित्रसेन नामक गंधर्व ने आकर गोरखनाथ को नमस्कार किया और हाथ जोड़कर बोला—"क्या आज्ञा है?"

तब गोरखनाथ बोले—"अपने और साथियों को भी बुलवाओ और चारों तरफ रवाना कर दो। वे साधु-संत, जपी-तपी व सभी संत-महंतों को न्यौता दे आएं। मुझे एक विशाल भंडारा करना है। सबको उत्तम भोजन कराना है।"

तब चित्रसेन गंधर्व ने आज्ञा के अनुसार सब व्यवस्था की और शेष गंधर्व चारों तरफ निमंत्रण देकर लौट आए। वह नौ नाथों के नाथ दत्तात्रेय, शुक्राचार्य,

याज्ञवल्कय, वशिष्ट, नामदेव, कपिल, पारस, व्यास, बाल्मीकि आदि ऋषि-मुनि वहां आ पधारे।

गोरखनाथ ने अपने गुरु मछेन्द्रनाथ से कहा—"आपके भोजन सारंभ में सभी संत पधारेंगे। मैं आपकी ईट मंगवाए देता हूं, उससे सारंभ का कार्य करें।"

तब मछेन्द्रनाथ बोले—"अरे बेटा, जिस भाग्यशाली को तेरे जैसा शिष्य मिला हो उसके पास रहते हुए मुझे स्वर्ण का क्या करना है?"

इस पर गोरखनाथ बोले—"फिर ठीक है, लेकिन है यह सब गुरुदेव की कृपा का ही प्रसाद। मेरे पास क्या रखा है?"

इस प्रकार कहकर उसने गुरु चरणों पर मस्तक झुका दिया और कहा—"अब सब व्यवस्था सुचारू रूप से हो जाएगी। आप प्रसन्न रहें, चिंता न करें।" ऐसा मछेन्द्रनाथ से कहकर अष्ट सिद्धियों को बुलाकर उन्हें भोजन की व्यवस्था और बढ़िया पकवान बनाने की आज्ञा दी कि सब कामों की व्यवस्था सुचारू रूप से हो और उत्सव में कोई कमी न पड़ने पाए। इस उत्सव में गहनीनाथ नहीं आए थे, इसलिए गोरखनाथ ने मछेन्द्रनाथ से कहकर मधुनामा ब्राह्मण के घर एक गंधर्व को एक पत्र देकर भेजा। पुरोचन गंधर्व के साथ तब मधुनामा पंडित अपने बेटे सहित हंसी-खुशी कठिन मार्ग तय कर गर्भादि पर्वत पर आए और गहनीनाथ को मछेन्द्रनाथ के चरणों में डाला। उस समय उसकी उम्र तेरह वर्ष के आसपास थी। मछेन्द्रनाथ प्यार से गहनीनाथ को चूमकर कहने लगे—"तुम करभंजन नारायण के अवतार हो।" ऐसा उन्होंने दूसरे लोगों को भी समझाया।

उस समय शिव ने मछेन्द्रनाथ को समझाया कि हमें आगे चलकर भी अवतार लेना है। तब मैं निर्वितीनाथ के नाम से प्रसिद्ध होऊंगा और गहनीनाथ को उपदेश देकर अपना शिष्य बनाऊंगा, इसलिए अभी से इसे सर्व विद्याओं में प्रवीण बनाओ। इतना सुन उन्होंने गोरखनाथ द्वारा, गहनीनाथ को उपदेश दिलवाया और सब देवताओं के संमुख उसके मस्तक पर अपना वरद्हस्थ रखा। यह समारोह बीस दिन तक चला।

तब गोरखनाथ ने कुबेर से कहा—"आप यह सोने का पर्वत ले जाओ। बदले में वस्त्र और अलंकार भिजवा दो, उन्हें मैं सबको बांटकर विदा करूंगा।"

इतना सुन कुबेर ने कहा—"यह धन यहीं रहने दो। मुझे आपकी आज्ञा पालन करने में विलंब नहीं होगा।"

इतना कहने के पश्चात कुबेर ने तुरंत ही बहुत-से वस्त्र और अलंकार गुरु सेवा में ला रखे, जिन्हें गोरखनाथ ने सब संतों को बांटकर उन्हें संतुष्ट किया।

समारोह संपूर्ण होने के पश्चात, उपरिक्ष बसु के साथ मौनीनाथ को भी संगल द्वीप में मैनाकिनी के पास भेज दिया। मैनाकिनी ने उसे क्यों स्वाधीन किया था, उसे उसके पिता योगीराज का सारा निर्वाण समझाया और मछेन्द्रनाथ से स्वयं भेंट करने की इच्छा प्रकट की, तब उपरिक्ष बसु बोले—"एक बार मछेन्द्रनाथ से भेंट अवश्य होगी।" इस प्रकार कह वह अपने स्थान को गए और वह मौनीनाथ को प्यार कर बेटे के साथ हंसी-खुशी रहने लगे।

इधर गहनीनाथ को शिक्षा देने के लिए गोरखनाथ व मछेन्द्रनाथ गर्भादि पर्वत पर ही ठहर गए। शिवजी भी वहीं थे। उस सोने के पर्वत की अद्रष्यास्त्र की व्यवस्था कर कुबेर भी अपने स्थान को रवाना हुए। शिवजी उसी सोने के पर्वत पर अपना आसन बिछाकर वहीं रहने लगे। उस पर्वत का नाम म्हावर देव है और महादेव अब भी वहीं विराजमान हैं। वहीं पश्चिम की तरफ कानिफानाथ रहते हैं। वह ग्राम मड़ी के नाम से प्रसिद्ध है और दक्षिण में मछेन्द्रनाथ विराजमान हैं, पूर्व में जालंधरनाथ। इसी पर्वत के दाईं तरफ बडवानल ग्राम में नागनाथ का आसन है और विटे ग्राम में सिद्ध रेबणनाथ का। गर्भादि पर्वत के बाईं तरफ गोरखनाथ ने गहनीनाथ को विद्यावान बनाया। एक वर्ष में उसे निपुण करके मधुनामा पंडित के पास वापस भेज दिया। उसने काफी समय अपने माता-पिता की सेवा की।

एक वर्ष यज्ञ चला, तब तक मछेन्द्रनाथ विद्या पढ़ाते रहे। यज्ञ संपूर्ण होने पर मछेन्द्रनाथ अग्र पूजा के लिए बैठे। यथायोग्य पूजन होने पर इंद्र ने दूसरे नाथों की भी पूजा की और वस्त्र तथा आभूषण देकर उनका सम्मान किया। उसके पश्चात नव नाथों को सिंहासन पर बिठाने के पश्चात इंद्र प्रार्थना करके बोला—"मुझसे जो अपराध हुआ है, उसके लिए मुझे क्षमा करें। वह अपराध यह है कि जब मछेन्द्रनाथ मौनीनाथ को वाताकर्षण विद्या सिखा रहे थे, वह विद्या मैंने चोरी से सीख ली। कृपा करके अब मुझे वरदान देकर कृतार्थ करें।"

इंद्र की चोरी का अपराध सुनकर नव नाथों ने क्रोध में भरकर इंद्र को शाप दिया—"तूने कपट करने के लिए हमें यहां बुलाकर जो चोरी से विद्या सीखी है, सो हमारे शाप से वह निष्फल हो जाएगी।" इस प्रकार शाप सुनकर उपरिक्ष बसु और बृहस्पति ने उन्हें बहुत समझाकर संतुष्ट किया।

राजा इंद्र ने इतना प्रयत्न कर, छल करके विद्या सीख ली। अब उसका कल्याण होने का कोई उपाय करना ही चाहिए, इसलिए सब देवताओं ने मिलकर नव नाथों से प्रार्थना की। तब सब नाथों ने कहा—"इंद्र दत्तात्रेय गिरनार पर्वत के आश्रम में गोरखनाथ और गोपीचंद तथा धर्मनाथ, मैनावंती विष्णुजी के विमान में बैठ सदेह बैकुंठ सिधारे।" चौरासी सिद्धों के कारण नव-नाथों ने बड़ी उन्नति की थी।

एक समय गुरु दत्तात्रेय गिरनार पर्वत पर विराजमान थे, तब मछेन्द्रनाथ उनसे हाथ जोड़कर बोले, गुरुदेव कुछ तंत्र विद्या के लिए भी बताएं, जिससे इस जग के प्राणियों का भी कुछ भला हो, तब दत्तात्रेय बोले—"मछेन्द्रनाथ आप और गोरखनाथ सदा जग के कल्याण में ही लगे रहते हो। सो मैं आपके कथनानुसार हिन्दी भाषा में कुछ अपने प्रयोग बताता हूं, जो एकदम विश्वसनीय हैं और कम-से-कम पढ़ा व्यक्ति भी इन मंत्रों का उपयोग सरलतापूर्वक कर सकता है। सो सब बंधु इससे लाभ उठाएं। कलियुग में तंत्र विद्या का विधान, सर्व सिद्धि देने वाला है, इसलिए दत्तात्रेय इसका सार कहते हैं। वैसे तो जब से कलियुग आया है, ब्राह्मण वेद विहीन क्रोधी, लालची व अधर्मी हो गए हैं, इसलिए तब से शुद्ध मंत्रों का प्रभाव जाता रहा है, इसलिए बिना कीलक के मंत्रों-तंत्रों को गुरुदेव कहें, जिससे जनता को कोई कठिनाई न हो और सरलतापूर्वक कार्य सिद्ध हो जाए।

"हे महायोगी मछेन्द्रनाथ! जो विद्या देवताओं को भी दुर्लभ है, सो यह अति दुर्लभ तंत्र विद्या मैं तुमसे कहता हूं, इसलिए इसे किसी अधर्मी व्यक्ति को मत बताना। इसे प्रभु भक्त को ही बताना श्रेष्ठ है, हर किसी को मत बताना, चाहे अपना सिर ही क्यों न कटाना पड़े। कुकर्मी सदा कुकर्म करके ही नाश को प्राप्त होता है। कलियुग में जो बिना कीलक के मंत्र सिद्ध हो सकते हैं, उन्हें ध्यानपूर्वक कान लगाकर सुनो। इसमें तिथि, बार, नक्षत्र का कोई बंधन नहीं है, सिर्फ तंत्रसार में कही हुई जड़ी-बूटियों द्वारा ही सरलता से सिद्धि मिल जाती है। जैसे निराहार रहकर काफी दिनों तक जीना, अधिक भोजन को पचा जाना, बांझ के पुत्र होना, मृतावस्था के पुत्र का जीना, युद्ध में विजयी होना, भूत-प्रेत बाधाओं को नष्ट करना, सर्प-बिच्छू आदि का विष निर्वाण करना, मेरा कहा कदापि झूठा नहीं हो सकता, इसलिए तंत्र कल्प अत्यंत गोपनीय है। इसे अधर्मियों से गोप्य रखना परम आवश्यक है।"
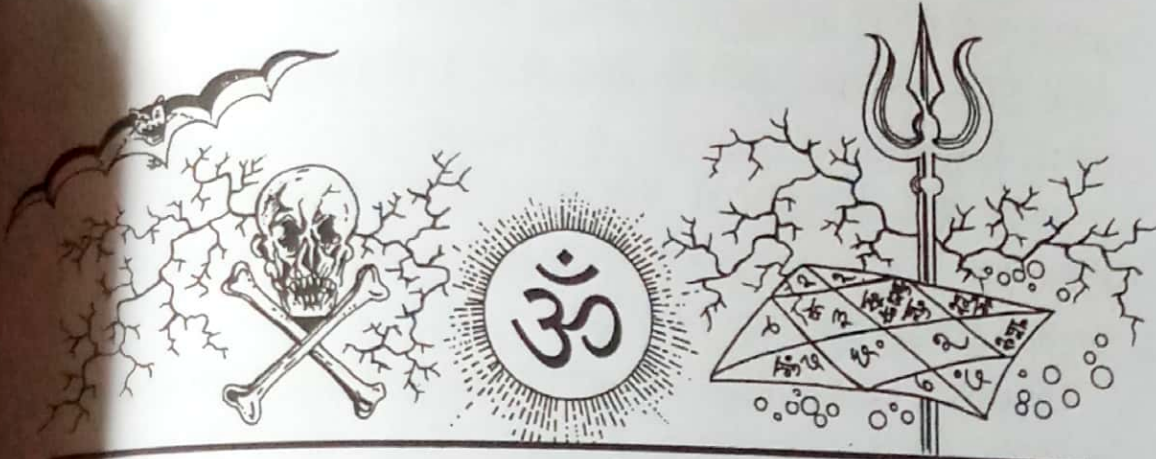
शाबर मंत्र और टोटके

शास्त्रों में कहा गया है 'मंत्राधीनास्तु देवता' अर्थात देवता मंत्र के वश या अधीन होते हैं। मंत्र की शक्ति से मानव समाज परिचित है तथा उसके कल्याणकारी पक्ष से संपूर्ण विश्व लाभान्वित हो रहा है। मृत्यु जीवन का एक कटु एवं अनिवार्य सत्य है, किंतु अपमृत्यु, अकाल मृत्यु एवं मृत्यु तुल्य कष्ट सदैव त्याज्य माने गए हैं। इनके निवारण के लिए ऋषियों ने अनेक विधियां बताई हैं। उनमें सर्वाधिक प्रचलित, उपयुक्त, अकाट्य एवं सरल शाबरी तांत्रिक प्रयोग हैं।

जन-सामान्य में प्रायः यह मान्यता है कि तांत्रिक प्रयोग श्रम साध्य एवं घृणित होते हैं और इन्हें अंतिम चरण में पहुंचते व्यक्ति के लिए किया जाता है, किंतु यह भ्रांत धारणा है। तंत्र साधना अथवा प्रयोगों को निम्नलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है—

1. आरोग्यता प्राप्ति
2. असाध्य रोगों से मुक्ति
3. ग्रह दोष निवारण
4. प्रतिकूल समय के फलों की न्यूनता
5. दरिद्रता से मुक्ति
6. पुत्र प्राप्ति
7. महामारी से मुक्ति
8. प्राकृतिक आपदा का निवारण
9. दुर्भिक्ष से मुक्ति
10. सांसारिक आपदाओं से बचाव आदि

मंत्र शास्त्र में वर्णित जिन प्रयोगों तथा कर्मों को करने से रोग शोक, महामारी, भय, शारीरिक व्याधियां तथा अन्य उपद्रव शांत हो जाएं, उन्हें शांति कर्म कहा जाता है। शांति कर्मों का उल्लेख प्रायः सभी धर्मों, मतों, संप्रदायों तथा साधना पद्धतियों में किया गया है। भारतीय जीवन में आज भी जीवन

प्रणाली मंत्रों पर ही आश्रित अनुभव होती है। ऐसे ही साधारण भाषा के मंत्र, जिन्हें शाबर मंत्र कहा जाता है, ग्राम्य क्षेत्रों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी गुरु-शिष्य परंपरा में सुरक्षित हैं।

शाबर मंत्रों के विषय में कहा जाता है कि भगवान शिव ने गुरु गोरखनाथ के द्वारा सरलीकरण कराकर प्रस्तुत किए हैं, इनका उद्देश्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' है।

ऐसे ही कुछ शांति प्रयोगों में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रभावशाली शाबर मंत्र जन सेवार्थ प्रकाशित किए जा रहे हैं। इन मंत्रों में भाषागत परिवर्तन नहीं करना चाहिए, इन्हें यथारूप में ही स्वीकार करना चाहिए।

आधासीसी रोग निवारण मंत्र

निम्न मंत्र दीपावली, ग्रहण या होली की रात्रि को दस माला जपकर 108 बार लोबान की आहुति देने से सिद्ध होता है। आधासीसी दर्द निवारण के लिए 31 मंत्रों से फूंक देने से पीड़ा का शमन होता है।

शंकर शंकर खोजा जाई
शंकर बैठे जंगल माई
भूत बैताल जोगिनि नचाय
सब देवन की जय जय मनाय
गोरखनाथ के पूजे पाय,
अधकपारी दर्द छुड़ाय।

नेत्र पीड़ा निवारण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को
श्रीराम की धुणी लछमण का बाण
आंख वरद करे तो गुरु गोरखनाथ की आण
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति,
सत्यनाम आदेश गुरु को।

उपरोक्त मंत्र दीपावली की रात्रि में 1109 बार जप कर, इतनी ही संख्या में मंत्रों की आहुति देने से सिद्ध होता है। प्रयोग करते समय लोहे के तीर से 31 मंत्रों द्वारा झाड़ने से नेत्र पीड़ा दूर होती है।

देह रक्षा का प्रयोग

केवल ग्रहण काल में 1109 मंत्रों से आहुति देने पर यह मंत्र प्रयोग के लिए सिद्ध हो जाता है। दुर्गम, निर्जन अथवा भयकारी स्थान पर केवल 21 बार जाप करने से सुरक्षा होती है।

ॐ नमो आदेश गुरु को पग राखे पद्मिनी पीण्डी राखे परमेश्वरी जांघ राखे जंघेश्वरी पेट राखे परमेश्वरी सीस राखे सरदन्ती, रोम रोम की रक्षा इसी घड़ी इसी ताल नहीं करे तो योगी गोरखनाथ की कार शब्द सांचा, पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

इस यंत्र को लिखकर अपनी बांह में बांधें और कार्तिक मास में अमावस्या को 14 बार जप कर शिव का पूजन करें तो कार्य सिद्ध हो जाए। **'ॐ नमोः हस्थ मुखाय लम्बोदराय, उच्छिष्ट महानते क्रेः क्रोः ही वे वे उच्छिष्ट स्वाहाः'** यह मंत्र प्रतिदिन 15 बार पढ़ें।

यंत्रम्

ह्रीं 8	ह्रीं 1	ह्रीं 6	श्रीं
ह्रीं 3	ह्रीं 5	ह्रीं 7	श्रीं
ह्रीं 4	ह्रीं 9	ह्रीं 2	श्रीं

।। ॐ क्रीं तालिके दरिद्र विनाशन्ये हुं फट्।।

- पद्म केसर सहित चिता की भस्मी में काले धतूरे का चूर्ण मिलाकर मंगलवार के दिन जिस पर डालें, वह मृत्यु को प्राप्त होता है।
- भिलावे का तेल, काले सांप का दांत, पद्म केसर और धतूरे का चूर्ण सबको एक जगह मिलाकर जिसके बदन पर डालें, उसकी मृत्यु हो जाती है।

- मनुष्य की हड्डी का चूर्ण, जो देशी पान में रविवार को खाता है, वह मृत्यु को प्राप्त होता है।
- भरणी नक्षत्र मंगलवार के दिन जलती चिता की लकड़ी जिसके द्वार पर गाड़ दी जाए उसकी मृत्यु हो जाती है।
- काले सांप की चर्बी की बत्ती को धतूरे के बीज के साथ तेल में जलाएं और मनुष्य की खोपड़ी में काजल पारें। उसमें चिता की भस्मी और पांचों नमक मिलाकर, जिसके शरीर पर डालें, उसे यमराज ले जाते हैं।
- बिच्छू के मांस का चूर्ण, उल्लू के मांस में मिलाकर जिसके शरीर पर डालें उसकी मृत्यु हो जाती है।
- पद्‌म केसर के चूर्ण में, उल्लू की विष्ठा मिलाकर जिसके शरीर पर डालें, वह यमलोक पहुंच जाता है।
- गधे की विष्ठा पद्‌म केसर में मिलाकर, जिसके बदन पर डालें व मृत्यु को प्राप्त होता है।
- शत्रु की विष्ठा, नरकपाल में रखकर और कपाल पर शत्रु का नाम लिखकर उसके द्वार में गाढ़ दें, विष्ठा सूखने से पहले ही वह मृत्युलोक को चला जाएगा।
- गिरगिट की चर्बी का तेल, जिसके शरीर पर डाल दें तो वह यमलोक चला जाएगा।
- सहदेवी के रस में तुलसी के बीजों का चूर्ण घोटकर, रविवार के दिन तिलक लगाने से साधक जगत को मोहित करता है।
- कदली के रस में बरकी हरताल और असगंध को गोरोचन के साथ पीसकर तिलक करने से लोग मोहित हो जाते हैं।
- काकड़ा, सिंधी, चंदन, वच, कूट इन पांचों को पीसकर अपने मुख और वस्त्रों को धूप देने से सभी मोहित हो जाते हैं।
- आम की जड़ को घिसकर उसका तिलक करने से जग मोहित हो जाता है।
- सिंदूर, सफेद बच को पान के रस में पीसकर तिलक लगाने से सब लोग मोहित हो जाते हैं।
- अपामार्ग, भृंगराज, लाजवंती, सहदेवी सबको पीसकर तिलक करने से सभी मोहित हो जाते हैं।

- सफेद दूब और बरकी हरताल को पीसकर तिलक करने से जग मोहित हो जाता है।
- मैंसिल, देशी कपूर को कदली के रस में पीसकर तिलक लगाने से जग मोहित हो जाता है।
- गूलर के फूल की बत्ती बनाकर, रात्रि को सफेद मक्खन में जलाएं और उसका काजल पार कर तिलक करने से जग मोहित हो जाता है।
- सफेद धुंधची के रस में ब्रह्मदंडी की जड़ को पीसकर शरीर पर लेप करें तो सब मोहित हो जाते हैं।
- तुलसी के पत्तों को छाया में सुखाकर उसमें असगंध और भांग के बीज मिलाकर कपिला गाय के दूध के साथ चार-चार माशे की गोलियां बनाएं और उसका तिलक करें तो सारा विश्व मोहित हो जाता है।
- कड़वी तुंबी के तेल में कफन की बत्ती बनाकर जलाएं और उसका काजल ललाट पर लगाएं तो सारा जग मोहित हो जाता है।
- अनार के पंचांग को धुंधची के साथ पीसकर तिलक लगाएं तो जग मोहित हो जाए।
- मेंढक की चर्बी, घीग्वार के रस में मिलाकर अंगों पर लेप मात्र करने से अग्नि स्तंभन होता है।
- मदार के रस में घीग्वार का रस मिलाकर बदन पर लेप करने से अग्नि स्तंभन होता है।

नजर दूर करने का मंत्र

ग्रहण काल, होली अथवा दीपावली की रात्रि में 1008 आहुति देने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। निम्न मंत्र को पड़ते हुए झाड़ा देने से नजर दूर हो जाती है। मंत्र है—

ॐ नमो आदेश गुरु को, उलटंत गोरख पलटत काया भाग भाग जमदूत गोरखनाथ आया, लोहे की कोठरी वज्र ताली आगे मेरे हरि बसे पाछे देव अनंत, रक्षा हे गोरखनाथ जी की चौकी है हनुमन्त की।

दांत पीड़ा निवारण मंत्र

दीपावली अथवा होली की रात्रि अथवा ग्रहण काल में 2007 बार मंत्रोच्चार से आहुति देने पर मंत्र सिद्ध होता है। प्रयोगों में 31 बार मंत्र जप करते हुए नीम की टहनी से झाड़ें।

ॐ नमो आदेश गुरु को वन में
ब्याई अंजनी, जिन जाया हनुमन्त
कीड़ा-मकूड़ा-माकड़ा ये तीनों करे
भस्मन्त गोरख की शक्ति मेरी भक्ति
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सिर दर्द निवारक मंत्र

अमावस्या रविवार अथवा मंगलवार को पड़ने वाले शुभ योग से प्रारंभ कर 31 दिन तक प्रति दिन 108 की संख्या में जप करके 31 मंत्रों से लोबान की धूप देने पर यह मंत्र सिद्ध होता है। प्रयोगों में 51 बार मंत्रोच्चार के साथ सात बार सिर पर फूंक देने से सिर दर्द में आराम मिलता है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो आदेश गुरु का,
केश में कपाल, कपाल में भेजा
भेजा में कीड़ा, कीड़ा करे न पीड़ा
कंचन की छेनी, रूपे का हथौड़ा
पिता ईश्वर गाड़ इन श्रापे
को गोरखनाथ तोड़े
सबद सांचा पिण्ड कांचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

- ऊंटकटीरा की जड़ पानी में पीसें और उसका लेप नाभि से पेडू तक लगाने से पेट में फंसा हुआ गर्भ गिर जाता है।
- सूर्योदय से पूर्व अगर कोई स्त्री या पुरुष किसी चौराहे पर जाकर छोटा-सा गुड़ का टुकड़ा दांतों से काटकर वहीं फेंक दें, तो पीड़ा से मुक्त हो जाएगी/जाएगा। इस प्रयोग में दांत से गुड़ काटते समय रोगी का मुख दक्षिण दिशा की ओर रहना चाहिए।

- हरे बांस की जड़ जलाकर उसे कान पर धारण करने से शत्रु का भय मिट जाता है।
- निर्गुण्डी की जड़ अथवा मोर-पंख घर में रख देने से सर्प कभी भी घर में प्रवेश नहीं करता।
- रवि-पुष्य योग में प्राप्त सफेद मदार की जड़ लाकर दाहिनी भुजा में बांधने से वन्य पशुओं का भय नहीं रहता है, साथ ही अग्नि-भय से भी छुटकारा मिल जाता है।
- केवड़े की जड़ कान पर धारण करने से शत्रु का भय मिट जाता है।
  हीरा अथवा फिरोजा पहनने वाले को विषैले जंतुओं का कोई भय नहीं रहता है।
- आश्लेषा नक्षत्र में धामी की जड़ हाथ में धारण करने से व्यक्ति को सभी प्रकार के भय से मुक्ति मिल जाती है।
- आंवले की जड़ आश्लेषा नक्षत्र में दाहिनी भुजा पर धारण करने से व्यक्ति को राजकोप का कोई भय नहीं रहता।
- श्वेत ओंगा पौधे की जड़ का माथे पर तिलक कर लेने से किसी भी प्रकार का सम्मोहन हो, समाप्त हो जाता है।
- किसी भी प्रकार का ज्वर हो, श्वेत ओंगा की पत्तियों को पीसकर और गुड़ में मिलाकर खाने से वह दूर हो जाता है।
- गोरखमुंडी के पौधे को सुखाकर उसका चूर्ण बनाएं और प्रातः व सायं दूध के साथ उसका सेवन करने से बल प्राप्ति होती है। उपरोक्त चूर्ण को रात-भर पानी में भिगोए रखें। प्रातःकाल उसे छानकर, उसी पानी से सिर धो लें। यह उत्तम केश कल्प है।
- गोरखमुंडी के हरे पौधे के रस की मालिश करने से शरीर की सारी पीड़ा मिट जाती है।
- स्नायु तंत्र को सतेज करने के लिए आंवले और विजया का चूर्ण फाल्गुन के पूरे माह में सेवन करना चाहिए।
- विजया और शिवलिंगी को पूरे सावन माह में घोटकर पीने से शरीर पुष्ट होता है और शरीर में शक्ति का संचार होता है।
- नेत्र ज्योति बढ़ाने के लिए पौष माह में विजया की पत्ती और काले तिल का सेवन करना चाहिए।

- विजया और रूद्रदंती का सेवन मन, मस्तिष्क को शांति प्रदान करता है।
- नागरमोथा की जड़ के चूर्ण में विजया चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शरीर पुष्ट होता है।
- लाल ओंगा की जड़ को जलाकर भस्म बना लें। यह भस्म गाय के दूध के साथ सेवन करने से संतान की प्राप्ति होती है।
- जो लोग अतिसार-रोग से ग्रस्त हों, उन्हें सहदेवी पौधे की जड़ के सात टुकड़ों को लाल धागे के सहारे कमर में बांध लेना चाहिए।
- खच्चर का दांत जेब में रखने से कभी भी आर्थिक-संकट नहीं झेलना पड़ता है। वह धनवान न भी हो तो भी उसे कभी धन की कमी नहीं रहती है।
- हाथी की लीद को चांदी के तावीज में भरकर, वह तावीज जिस बच्चे के गले में पहनाया जाएगा, वह सदैव ऊपरी हवाओं से सुरक्षित रहेगा। कुत्ते का दांत यंत्र में रखकर, बच्चे के गले में पहनाने से वह दांत निकलते समय होने वाले उपद्रवों से सुरक्षित रहता है।
- कुत्ते के मूत्र में भीगी मिट्टी लाकर उसकी गोली बना लें। यह गोली सुखाकर रख दें। ज्वर-पीड़ित व्यक्ति के गले में कपड़े के सहारे उस गोली को बांधने से वह सभी प्रकार के रोगों से मुक्त हो जाता है।
- काली बिल्ली का दांत यंत्र में धारण करने वाला कभी भी संकटों का सामना नहीं करता है।
- बिल्ली की विष्ठा को धूनी देने से प्रेतबाधा दूर हो जाती है। भूत-पिशाच द्वारा पीड़ित व्यक्ति को ऐसी धूनी देने से वह कष्ट मुक्त हो जाता है।
- घने जंगलों में विचरण करने वाला व्यक्ति अगर अपने जूते में बिल्ली की जिह्वा जड़वा ले, तो उसे किसी भी जानवर का भय नहीं रहेगा।
- बड़ के पेड़ की जड़ को पानी में घिसकर तिलक लगाने से सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।
- कपिला गाय के दूध में अपामार्ग की जड़ पीसकर, मस्तक पर तिलक लगाने से सर्वलोक बस में हो जाता है।

- छाया में सहदेवी को सुखा लें, फिर उसके चूर्ण को पान में खिलाने से खाने वाला बस में हो जाता है।
- सहदेवी और गोरोचन को एक साथ घिसकर तिलक करने वाला सबको बस में कर लेता है।
- जो अपने मस्तक पर गूलर की जड़ को घिसकर तिलक लगाता है। वह सबको प्रिय लगता है।
- पान में औदुंबर की जड़ रखकर, जिसे खिला दें वही बस में हो जाता है।
- सरसों और देवदाल को एकत्रित कर गोली बनाएं और अपने मुख में रखकर वार्तालाप करें, तो दूसरा व्यक्ति वशीभूत हो जाता है।
- शुद्ध मधु में कटैली की जड़ पीसकर सूंघने से निद्रा नहीं आती है। कटैली की जड़ को शहद के साथ पीसकर आंख में अंजन करने से भी निद्रा का स्तंभन होता है।
- ऋतु स्नान स्त्री अगर रेड़ का बीज खा ले, तो गर्भ नहीं गिरता और कमर में धतूरे का बीज बांधे, तब भी गर्भ स्तंभन हो जाता है। चौलाई की जड़, पके चावल के पानी से पीसकर गर्भवती स्त्री को खिलाने से गर्भ नहीं गिरता। योनि में धतूरे का चूर्ण रखने से भी गर्भ स्तंभन हो जाता है।
- रजोधर्म निवृत्ति अर्थात चौथे दिन योनि में नीम की लकड़ी का धुआं देने से गर्भ संबंधी सभी विकार नष्ट हो जाते हैं।
- गधे का दांत अगर किसी के सिरहाने रख दिया जाए, तो अनिद्रा रोग दूर हो जाता है।
- संभोग-रत गधे की पूंछ के कुछ बाल प्राप्त करके, उन्हें अपनी जंघा में बांधने वाला व्यक्ति शीघ्रपतन की व्याधि से मुक्त हो जाता है।
- अगर किसी को मिर्गी आदि का कोई रोग हो, तो गधे के अगले दाहिने पैर का नाखून लेकर, अंगूठी के द्वारा उसे अपनी उंगली में धारण करना चाहिए।
- रात्रि में सोते समय, जो कोई सात बार मुनिराज आस्तिकं का जाप और नमस्कार करता है, उसे सांप का भय स्वप्न में भी नहीं सताता है।

- भटकटैया की जड़ और फल, पीपल, काली मिर्च, शुद्ध मधु, गोरोचन इन सबका लेप लिंग पर लगाकर संभोग करने से काफी स्तंभन होता है। गंधक को पत्थर पर पीसकर और मधु में मिलाकर, लिंग पर लगाकर संभोग करने से भी स्तंभन होता है। बिजोरा नीबू का रस लिंग पर लगाकर मैथुन करने से स्तंभन होता है।
- घीया को छाया में सुखाएं और सूख जाने के पश्चात उसमें असगंध, सफेद मूसली, गोखरू और भांग के बीजों को कूट-पीसकर चूर्ण बना लें और गाय के दूध के साथ एक-एक तोला सेवन करें, तो व्यक्ति बलवान होता है।
- मिश्री, खस, तगर, कुसुम और मधु इन पांचों का लेप लिंग पर करने से सहवास में आनंद आता है।
- चकोड़ा के पौधे की जड़ हस्त-नक्षत्र में लाकर, मंत्रोपचार के साथ उसे सिद्ध करके दाहिनी भुजा पर धारण की जाए तो साधक धूतक्रीड़ा में प्रायः विजयी होता है। रवि-पुष्य योग में चमेली की जड़ को यंत्र में रखकर भुजा पर बांध लिया जाए तो इसको धारण करने वाला साधक शत्रुओं को पराजित करने में सहज ही समर्थ हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो भगवते रुद्राय सर्ववदनी
त्रैलोक्य कास्तरणी हूं फट् स्वाहा।

- अशुभ ग्रहों से रक्षा हेतु अनार-वृक्ष का बांदा, ज्येष्ठा नक्षत्र में धारण करना चाहिए।
- खजूर के वृक्ष का बांदा अगर मूल नक्षत्र में मंत्रोच्चारण से सिद्ध कर लिया जाए और दाहिनी भुजा पर धारण किया जाए, तो साधक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। दाहिनी भुजा पर ही पुर्वा नामक वृक्ष का बांदा, पूर्वाषाड़ा नक्षत्र में सिद्ध करके बांधा जाए, तो प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त होती है।
- ऋतुवंती होने के पश्चात पवित्र होकर पलास वृक्ष के पत्ते एकत्रित कर, उन्हें किसी गर्भिणी स्त्री के दूध में पीसकर सारा दिन प्रसन्न रहकर, शोक-चिंता तजकर पीने से आठवें दिन पति के साथ संगम करे तो वह स्त्री पुत्रवती हो जाएगी।

- सुपारी के वृक्ष पर उत्पन्न बांदा को शतृभिषा नक्षत्र में मंत्र द्वारा सिद्ध किया जाए और फिर पीसकर उसे गाय के दूध के साथ खाया जाए, तो यौवन बना रहता है।
- रात्रि में सोते समय, जो कोई सात बार मुनिराज आस्तिकं का जाप और नमस्कार करता है, उसे सांप का भय स्वप्न में भी नहीं सताता है। महुए का बांदा अगर विशाखा नक्षत्र में सिद्ध कर लिया जाए, तो यह साधना में वृद्धि करता है।
- अगर कोई भी व्यक्ति अपनी दाहिनी भुजा पर कनेर का बांदा अनुराधा नक्षत्र में अभिमंत्रित कर बांध ले, तो उसके शत्रु शांत हो जाते हैं।
- विल्व के वृक्ष का बांदा अश्विनी नक्षत्र से पूर्व निमंत्रण के द्वारा विधिवत् लाकर और मंत्र से अभिमंत्रित कर बांह पर बांधा जाए, तो लुप्त विद्या भी सिद्ध हो जाती है।
- कपास का बांदा भरणी नक्षत्र में धारण करने से साधक को अदृश्य होने की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।
- मंत्र द्वारा अगर थूहर के बांदा को सिद्ध करके धारण किया जाए तो साधक को वाक्सिद्धि की प्राप्ति होती है। उसकी वाणी में प्रभाव आ जाता है।
- दुपहरिया के पेड़ के शुद्ध पत्ते पीसकर फूल, घी के साथ जो खाए, वह अधिक भोजन करता है।
- शंखपुष्पी की जड़ को शीतल जल में पीसकर सोलह माशा के प्रमाण में जो स्त्री सात दिन पीती है और आठवें दिन पति के साथ संगम करती है, वह गर्भवती हो जाती है।
- जो स्त्री ऋतु नहाने के पश्चात पुत्र जीवक नाम के वृक्ष के एक पत्र को दूध में मिलाकर सात दिन पीती है, वह पति के संगम से पुत्रवती होती है।
- सफेद मदार को छाया में सुखाकर, कपिला गाय के दूध में मिलाकर तिलक करने से सब लोग वशीभूत हो जाते हैं।
- सफेद दूब को कपिला गाय के दूध में पीसकर शरीर पर लेप करते समय जो लोग देखेंगे, वह सब वश में हो जाएंगे।

- बेल की पत्ती, बिजोरा नीबू को दूध में पीसकर तिलक लगाने से सर्व-साधारण वश में हो जाते हैं।
- घीग्वार की जड़ और भांग के बीज एक पात्र में पीस व मिलाकर जो कोई उसका तिलक करे तो सभी उसके वश में हो जाते हैं।
- केसर, सोंठ, कूट, हरताल और मेन्सिल का चूर्ण कर, अपनी उंगली का रक्त मिलाकर तिलक करने से संपूर्ण लोक मोहित हो जाता है।
- गोरोचन, कमल पत्र, कांगनी और लाल चंदन को पीसकर तिलक लगाने से सब वश में हो जाते हैं।
- सफेद धुंधची को छाया में सुखाकर, कपिला गाय के दूध में पीसकर तिलक लगाने से सब लोग वश में हो जाते हैं। अन्य कई मंत्र और प्रयोग भी शांति कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। इन मंत्रों को उचित अवसरों जैसे होली, दीपावली, ग्रहण वेला तथा विशिष्ट योग वाले रविवार, मंगलवार पर सिद्ध करने के उपरांत, समय-समय पर पुनः शक्ति संपन्न करना चाहिए। यह अनिवार्य है।
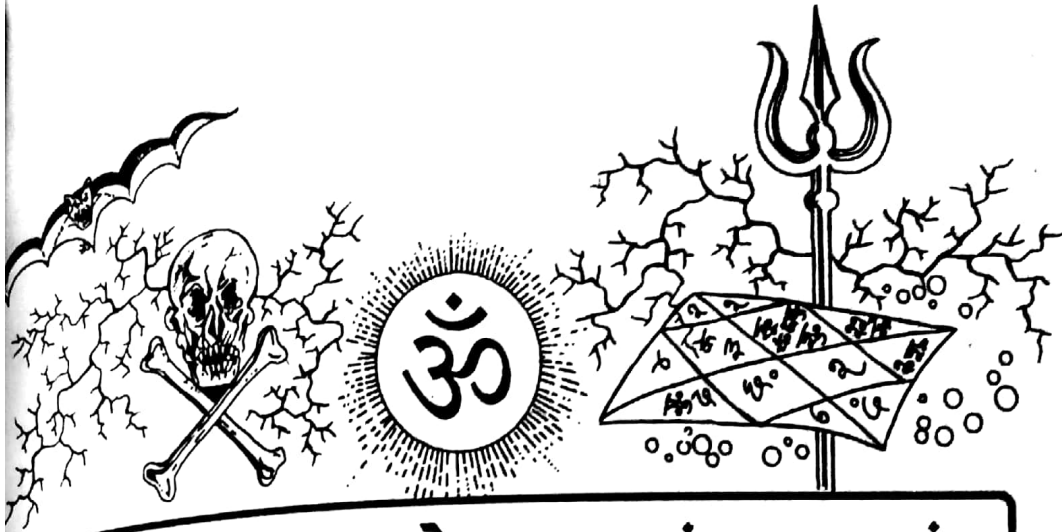
जीवन में सफलता हेतु शाबर मंत्र साधनाएं

यह सर्वथा सत्य है, कठिन कार्य और सूखी रोटी लोग विवशता में ही स्वीकार करते हैं। व्यक्ति सहजता चाहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सहजता की स्थिति को ही खोजता रहता है। यह संभव है कि भिन्न-भिन्न सामाजिक स्थितियों के साथ-साथ सहजता की स्थितियों को परिभाषित करने में अंतर हो, किंतु वस्तु स्थिति तो सहजता को प्राप्त करने की ही होती है। यहां तक मानव प्रायः जो जाने अनजाने में अपराध कर बैठता है, उसके मूल में जाकर अगर सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाए, तो वहां भी प्रायः किसी सहजता को प्राप्त करने की ही चेष्टा होती है। सहजता को प्राप्त करना मानव का स्वाभाविक गुण है, क्योंकि सहजता के द्वारा ही ऐश्वर्य और चिंतारहित जीवन की स्थिति उत्पन्न होती है। सम्मान, सुरक्षा, निश्चिंता, किसी भी आशंका से मुक्त होना, जैसी कुछ स्थितियां आदि वास्तव में सहजता की स्थिति के ही कुछ अन्य भेद हैं। मानव जो परिश्रम करके धनोपार्जन करता है, उसकी जड़ में केवल भरण-पोषण करना ही नहीं होता, वरन् व्यक्ति अपने भावी जीवन को सुरक्षित करने का प्रयास करता है। प्रयासरत रहना तो सूचक होता है कि मानव वास्तविक नहीं, अर्थों में कर्मयोगी है।

शाबर मंत्रों का संसार अभी तक अप्रकट और गुप्त है। शाबर मंत्र केवल ऐसे मंत्र नहीं हैं, जो कि कुछ सामान्य समस्याओं के निदान के लिए गोरखनाथ द्वारा रचे गए थे, अपितु शाबर मंत्र तो उचित साधना सामग्री की सहायता से एक पूरी साधनात्मक पद्धति है। इस शाबर मंत्र पद्धति की विशेषता यह है कि यह पूर्ण रूप से प्रकृति से जुड़ी है। बिल्ली की नाल, सियारसिंगी,

हत्थाजोड़ी, बघनरवा ऐसी ही पशु जगत से प्राप्त शाबर तंत्र की साधना सामग्रियां हैं।

आज शाबर मंत्रों को एक सनसनीखेज और गोपनीय मंत्र के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और अधिकांश साधक उसे किसी सरल साधना की भांति अंगीकार करते हैं। इसमें उन पुस्तकों का भी कम योगदान नहीं है, जो आज शाबर मंत्रों को एक शीघ्र बिकाऊ माल की भांति लेकर बाजार में आ गईं और व्यवसायी लेखकों में चटखारे के साथ प्रस्तुत करने में होड़ लग रही है। शाबर मंत्र इतने घटिया नहीं हैं। हालांकि शाबर तंत्र में कुछ व्यसनों के सेवन की स्वीकृति है, किंतु वह भी किसी योग्य गुरु के निर्देशन में। शाबर मंत्र तो इतना गहरा तंत्र है कि अगर उचित मार्गदर्शन मिल जाए तो कुछ हल्के व्यसनों के साथ शाबर मंत्रों से समाधि की अवस्था भी प्राप्त की जा सकती है। हालांकि शाबर मंत्रों से आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त करने की धारणा किसी भी सामान्य साधक को असंभव लगेगी, किंतु अगर तात्विक दृष्टि से ध्यान दें तो शाबर मंत्र ध्वनि के माध्यम से की गई एक अलौकिक क्रिया ही होती है। जिस प्रकार उच्च आवृत्ति की ध्वनि तरंगें, हालांकि दृष्टिगोचर नहीं होती, किंतु तीक्ष्ण प्रभाव डालने में समर्थ होती हैं, ठीक वही क्रिया शाबर मंत्रों के सृजन में भी होती है। फिर उसमें इस बात का कोई महत्त्व नहीं रह जाता है कि विभिन्न ध्वनियों के संयोजन से कौन-सा मंत्र बन रहा है।

आज का युग व्यस्तता और भौतिकवाद का युग है और जितनी अधिक दौड़ व्यक्ति को शरीर सें नहीं करनी पड़ती, उससे अधिक दौड़ मानसिक रूप से करनी पड़ती है। शीघ्र आवागमन के लिए व्यक्ति के पास वाहन तो उपलब्ध हो गया है, शीघ्र वार्तालाप के लिए दूरभाष उपकरण भी आ गए हैं, किंतु इसके उपरांत भी क्या व्यस्तता में कोई कमी आई है? ऐसी स्थिति में ऐसे साधक से यह कहना कि वह प्रतिदिन निर्जन स्थान में छह घंटे का समय साधना में दे तो उचित नहीं होगा। शाबर मंत्र सिद्धि इसी दिशा में एक सहायक विद्या है, जिसे साधक कहीं भी, कभी भी सरलतापूर्वक कर सकता है और उसे जब भी समय मिले, जितना भी अवकाश हो, अगर शाबर मंत्र का उच्चारण कर लेता है तो उसे दिन-प्रतिदिन के कार्यों में एक विचित्र-सी सरलता अनुभव होने लग जाती है और साथ ही समाज के तनाव से मुक्ति मिलने लग जाती है।

शाबर मंत्रों के माध्यम से समस्त साधनाएं, इष्ट साधनाएं संपन्न की जा सकती हैं। ध्यान की गहराइयों में उतरने के लिए एवं ध्यानातीत अवस्था तक जाने के लिए भी शाबर मंत्रों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया जा सकता है। जिन साधकों के पास साधना हेतु उनके दैनिक जीवन क्रम में कुछ समय रहता है, वे अगर शाबर मंत्रों का प्रतिदिन जप करें तो उन्हें विशेष सहायता प्राप्त होने लग जाती है और चित्त निर्मलता की ओर बढ़ने लगता है।

शाबर मंत्र साधना के लिए गुरु गोरखनाथ के आशीर्वाद के पश्चात दूसरी आवश्यकता गुरु की है। गुरु केवल एक शब्द नहीं...एक अक्षर नहीं...एक संपूर्णता है, जीवन का रस है, माधुर्य है, जीवन को ऊपर उठाने की क्रिया है, विष को अमृत बना देने का रहस्य है।

गुरु प्राप्ति के पश्चात शाबर मंत्रों में सबसे उल्लेखनीय बात है, इसमें न तो दिशा का बंधन है, न विशेष वस्त्रों का। न आसन का, न धूप-दीप का, न पुष्प का और न किसी निर्धारित संख्या में मंत्र जप करने का। शाबर की अनूठी भेंट यह है कि शाबर मंत्र सिद्धि जिसकी प्राप्ति, जिसकी उपस्थिति ही स्वयं में कभी-कभी अनेक गुत्थियों का समाधान बन जाती है। यह मेरा परामर्श है, आप इसे नसीहत भी कह सकते हैं। इस संदर्भ में एक दृष्टांत प्रस्तुत है।

एक शिकारी ने एक दिन बाज पकड़ा। बाज ने शिकारी से कहा—"मैं तुम्हें दो बातों का परामर्श देता हूं, ध्यान देकर सुनो—पहली सीख यह है कि बातों पर बिना सोचे समझे विश्वास नहीं करना चाहिए और दूसरी यह है कि जो वस्तु हाथ से चली जाए, उसके लिए शोक नहीं करना चाहिए।"

कुछ समय शांत रहने के पश्चात बाज ने शिकारी के प्रति आत्मीय भाव दर्शाकर कहा—"मेरे पेट में अनमोल हीरा है, अगर तुम मुझे मुक्त कर दोगे, तो मैं तुम्हारा अहसान मानकर हीरा उगलकर तुम्हें इनाम दे दूंगा।"

शिकारी हीरा पाने के लोभ में उसकी बात को भूल गया और उस पर विश्वास कर उसे छोड़ दिया। बाज उड़कर एक ऊंचे खंडहर की चोटी पर जा बैठा और शिकारी से बोला—"अरे मूर्ख! मेरी सीख को इतनी शीघ्र भूल गए, मैंने क्या कहा था कि शीघ्रता में बिना सोचे समझे किसी की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए।"

बाज की बात सुनकर शिकारी सिर पीट-पीटकर रोने लगा। उसे रोते

देखकर बाज ने पुनः कहा और लो तुम तो मेरी दूसरी बात को भी भूल गए और वह उड़कर दूसरी दिशा की ओर चला गया।

आप ऐसा न करें, आप मेरे परामर्श को सदैव स्मरण रखें और उन पर चलें। शाबर मंत्र की विशेषता यह है, न कोई लंबा-चौड़ा विधि-विधान, न कोई किलष्ट मंत्रोच्चारण, न व्यर्थ का आडंबर...क्योंकि शाबर साधनाएं रची ही गई हैं, गृहस्थ साधकों के जीवन की व्यस्तताओं को ध्यान में रखकर पूर्ण प्रामाणिकता के साथ। अब मैं आपके समक्ष कुछ शाबर मंत्रों के प्रयोग प्रस्तुत कर रहा हूं। इन्हें समय-समय पर प्रयोग कर लाभ उठाएं।

धन लाभ हेतु

अगर आप धन की कमी अनुभव करते हों तो इस प्रयोग को अवश्य करें। साधक चमकीले पीले आसन पर, बृहस्पतिवार के दिन बैठकर अभिमंत्रित पीले हकीक की माला से निम्न मंत्र का 1008 बार जाप करे। इस प्रयोग को 41 दिन करना है। मंत्र इस प्रकार है—

"छिन्नमस्तिका ने महल बनाया, धन के कारण करम कराया, तारा आयी बैठकर बोली, यह रही दुर्गा मां की टोली, गोरखनाथ कहत सुन छिन्नी, मैं मछेन्द्रनाथ की भाषा बोला।"

शत्रु शमन हेतु

जीवन में शत्रु तंग न करे, अब चाहे वह शरीरी हो या अशरीरी अर्थात अगर कोई पीड़ा देता है, तो वह शांत हो जाए, इसके लिए शाबर मंत्रों के क्षेत्र में एक विलक्षण प्रयोग है, जिसको संपन्न करते-करते शत्रु अपनी शत्रुता को भूल स्वयं ही संमुख उपस्थित होता है।

इस प्रयोग को संपन्न करने के इच्छुक साधक या साधिका को चाहिए कि वह एक नीबू प्राप्त कर प्रयोग के दिन अपने सामने रखे तथा काली धोती पहनकर उत्तर दिशा की ओर मुख कर तेल का एक बड़ा-सा मिट्टी का दीपक जलाकर निम्न मंत्र का 1008 जप करे।

यह रात्रिकालीन साधना है तथा इसमें किसी विशेष विधि-विधान की आवश्यकता नहीं है। यह केवल तीन दिवसीय साधना है। मंत्र इस प्रकार है—

।। असगंध का जोता गोरखनाथ का चेला, गुरु गोरख ने दांव है खेला, अछतर बछतर तीर कमंदर, तीन मछंदर तीन कमंदर, पांच गुरु का पांच ही चेला, एक गोरख का यह सब खेला, सबद सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईसवरो वाचा ।।

मंत्र जप के पश्चात दीपक को एक ही फूंक मारकर बुझा दें तथा वहीं सो जाएं।

वशीकरण हेतु

आप अपनी राशि के रत्न की अंगूठी लें, फिर पीले वस्त्र पहनकर दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके, पीले आसन पर बैठें तथा सामने मुद्रिका को रख उस पर दृष्टि को केंद्रित करते हुए तीन माला निम्न मंत्र का जप करें। इसमें जो आवश्यक है वह मात्र इतना ही है कि संपूर्ण मंत्र जप के काल में मुद्रिका पर ध्यान केंद्रित रहे।

यह भी केवल पांच दिवसीय प्रयोग है। प्रयोग के पश्चात मुद्रिका को बाएं हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर लें और इसके एक माह पश्चात किसी कागज पर काजल से उस स्त्री या पुरुष का नाम लिखकर उसके ऊपर पारद मुद्रिका को स्थापित कर मंत्र जप संपन्न करें। मंत्र इस प्रकार है—

।। मोह कम मोह कम कहां से आया, यह किसका संदेसा लाया, किसको रोली किसको चंदन किसको फूल बतासा अंजन, काल को भेरू जोगनि छोडूं, काल को मोडू मुख को जोडू, सत्य वचन आवेश गुरु गोरखनाथ का ।।

मान सम्मान हेतु

इस प्रयोग को संपन्न करने के इच्छुक साधक को चाहिए कि वह गुरुवार की प्रातः अपने सामने किसी पीले रंग के वस्त्र पर तुलसी दल के साथ चावलों की ढेरी स्थापित करे तथा स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र पहनकर, लाल रंग के आसन पर बैठकर मीठे तेल का एक दीपक जलाकर गुड़ का भोग 15 के यंत्र पर अर्पित करे, फिर निम्न मंत्र का जप करे, मंत्र इस प्रकार है—

।। राखी सनवन देखो साजन, सखी हुस्न मेहमान दीवान की चिलमन, पांच परद में यार की सूरत यार गोरखनाथ की सीरत ।।

आप निम्न यंत्र को पहन भी सकते हैं।
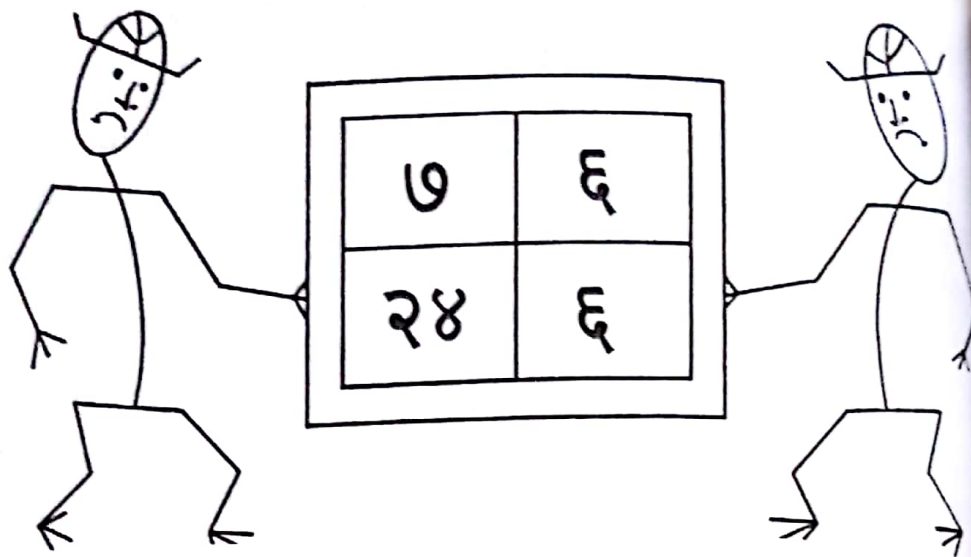
शाबर यंत्र

उन्नति हेतु

जीवन में सभी सुख उपलब्ध हों, किंतु स्वयं अशक्त हो तो किसी भी सुख का उपभोग नहीं किया जा सकता।

अतः जीवन में धन संपत्ति से भी प्रथम जो आवश्यकता होती है, वह यही होती है कि अगर व्यक्ति पुरुष है तो वह पौरुष से भरा हो और स्त्री है, तो स्त्रीत्व की आभा से परिपूर्ण हो। शाबर साधनाओं के क्षेत्र में इससे संबंधित एक लघु प्रयोग मिलता है, जिसे साधक किसी भी शुक्रवार की रात्रि में संपन्न कर सकता है। साधक पीले रंग की धोती पहन, पीले ही रंग के आसन पर, उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठे, तथा तेल का एक दीपक जला ले।

अपने सामने किसी पात्र में एक नीबू स्थापित कर उस पर सिंदूर से टीका लगाएं व कुछ अक्षत छिड़ककर निम्न मंत्र का जप करें।

मंत्र इस प्रकार है—

।। काल रूप भैरव सत रूपा, कंकड बना शंकर देवा, जहां जाऊं कामाख्या चौरा बावन वीर चौरसी पूरा, गुरु गोरख यह कहत सुन बूझा, नाम रूप के काम सौ सूझा।।

सुख शांति हेतु

किसी भी शुक्रवार की रात पीले वस्त्र पहनकर अभिमंत्रित पीली माला से पीले ही आसन पर बैठकर निम्न मंत्र का यथा शक्ति अधिक-से-अधिक जाप करें। मंत्र इस प्रकार है—

॥बलवान, बलवते बाबा हनुमान, वीर हनुमान वीर हनुमान, आन करो यह कारज मोरो, आन हरो सब पीरा मेरो, आन हरो तुम इन्द्र का कोठा, आन धरो तुम बज्र का कोठा, दुहाई मच्छिन्द्रनाथ की, दुहाई गोरखनाथ की॥

चैतन्यता हेतु

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ स्व गोरखनाथ ॐ मह मच्छेन्द्रनाथ ॐ चरपटीनाथ आदेश।

किसी भी शुक्ल पक्ष के सोमवार को शिव मंदिर में प्रातः सफेद वस्त्र पहनकर ललाट पर विभूति लगाकर उपरोक्त मंत्र का अधिक-से-अधिक जाप करें। अभिमंत्रित माला पांच मुखी रुद्राक्ष की होनी परम आवश्यक है।

क्रोध शमन हेतु

कार्य की जटिलता से मनुष्य का तनाव एवं क्रोधग्रस्त रहना एक साधारण बात है, जिससे उसके स्वभाव में क्रोध का समावेश हो जाता है। वह छोटी-छोटी बातों पर भी क्रोध करने लगता है और उसका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। छोटी-छोटी बात पर भी वह क्रोधित हो जाता है और क्रोध में क्या-क्या बोल देता है, इसका उसे स्वयं भी पता नहीं रहता। लोग उससे दूर भागने लगते हैं, जिससे उसका कोई अपना नहीं रह जाता, उसके आपसी संबंध बिगड़ जाते हैं। अगर आप भी अपने क्रोध को नियंत्रित नहीं कर पाते हैं, तो आप इस प्रयोग को कर सकते हैं। मंत्र जप के पश्चात ओनेक्स रत्न को गले में पहिना दें। इस प्रकार ग्यारह दिन तक करें। मंत्र इस प्रकार है—

॥ॐ क्लीं क्रीं क्रूं क्रोधनाशाय फट्॥

तांत्रिक प्रयोग होने पर

जब भी व्यक्ति आगे बढ़ता है, तो कुछ लोगों को उसकी उन्नति से ईर्ष्या

होने लगती है और वे उसको नीचा करने का उपाय सोचने लगते हैं। व्यापार के क्षेत्र में तो यह भावना आम बात है। अगर किसी का व्यापार फल-फूल रहा हो, तो उसके प्रतिद्वंद्वियों की नींद हराम हो जाती है और इसी कारण वे उसके व्यापार को बांध देते हैं, जिससे कि उसकी आय न हो और वह समस्याओं में उलझकर रह जाए। उसे यह समझ नहीं आता कि व्यापार में लगातार घाटा क्यों होता जा रहा है। जहां-जहां भी लाभ की अपेक्षा रहती है, वहीं उसे हानि प्राप्त होने लगती है। इसके विपरीत अन्य लोगों पर कोई प्रभाव नहीं होता। लंबे समय तक इसी प्रकार की स्थिति बनी रहती है, तो वह मायूस हो जाता है। इस प्रयोग के माध्यम से आप अपने व्यापार पर किए गए बंधन प्रयोग को काट सकते हैं।

किसी पात्र में श्रीयंत्र को स्थापित कर उसका कुकुंम, अक्षत से पूजन करें तथा दीपक जलाकर उसको देखते हुए निम्न मंत्र का जप 108 बार करें।

।। ॐ ह्रीं व्यापार बन्धं मोचय मोचय ॐ फट्।।

यह मंत्र जप 21 दिन तक करें।

स्मरण शक्ति कमजोर होने पर

हर व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो और वह आगे बढ़ता रहे, लेकिन काम में उसका मन नहीं लगता और वह थोड़ी देर में सब भूल जाता है। वह स्मरण रखने का प्रयत्न करता है, पर स्मरण शक्ति क्षीण होने के कारण उसे कुछ भी स्मरण नहीं रहता। नाम से संकल्प ओनेक्स रत्न अपने नाम से संकल्प लेते हुए निम्न मंत्र का 21 दिन तक नित्य 6 माला जप करें—

।। ॐ ऐं बुद्धि वर्द्धय चैतन्यता देहि ॐ नमः।।

हमारा तंत्र विज्ञान स्वयं में अद्भुत महाशक्तियों से संपन्न है। इसमें प्रकृति के वे सभी गूढ़ तत्त्व निहित हैं, जिनमें मानव जीवन की पूर्णता एवं तंत्र शक्ति का रहस्य छिपा हुआ है। महाशक्तियों में कई महाविद्याएं आती हैं, किंतु उनमें जो विश्व की श्रेष्ठ महाविद्या साधना है, वह यही शाबर मंत्र साधना है।

शाबर मंत्र प्रयोग

तंत्र-शास्त्र का मत है कि शब्द ब्रह्म है, उसी में सभी अक्षर प्रतिष्ठित हैं। मंत्र चित्शक्ति है, जो वर्ण और शब्दों के रूप में प्रकट होती है। वर्णमाला के अक्षर शाश्वत ब्रह्म के यंत्र हैं। अक्षरों की शक्ति जब मंत्र-शक्ति से मिल जाती है, तब साधक को साधना द्वारा उसका साक्षात्कार होता है। शक्ति का सूक्ष्म रूप अक्षर है। जब वह अक्षर रूप में प्रकट होती है तो विभिन्न देवी-देवताओं का आकार ग्रहण करती है। शब्दों का यह स्थूल रूप ही मंत्र का अधिष्ठात देवता कहा जाता है। मंत्र और देवता ब्रह्म के दो रूप हैं। तंत्र में इन्हें शिव और शक्ति कहते हैं। स्तुतियों, श्लोकों, प्रार्थनाओं में साधक अपनी इच्छा अपने इष्टदेव के समक्ष प्रस्तुत करता है। स्तुति और प्रार्थना को मंत्र नहीं कहा जा सकता, इसलिए कि मंत्र कामनारहित होते हैं। उनकी भाषा प्रार्थनाओं की भाषा की भांति साधक की निजी भाषा नहीं होती है। मंत्रों की भाषा स्थिर और शाश्वत होती है। स्तुति, प्रार्थना में दास्यभाव रहता है, उनमें दिव्यभाव नहीं रहता है।

तंत्र का कहना है कि "विधिपूर्वक मंत्रों का बार-बार उच्चारण करने से वही संस्कार बन जाता है और अन्य सब ध्वनियां लुप्त हो जाती हैं। अन्य ध्वनियों के संस्कार लुप्त हो जाने पर आत्मा से देवता का भेद करने वाले आवरण हट जाते हैं और मंत्र साधक स्वयं देवता रूप हो जाता है। मंत्र की सिद्धि का तात्पर्य है, मंत्र को जाग्रत बनाना। जाग्रत मंत्र साधक को अभीष्ट फल प्रदान करता है। तंत्र मार्ग में बताया गया है कि मंत्र साधक जो भी चाहता है, वह उसे अवश्य प्राप्त होता है।"

सिद्धि प्राप्त करने के लिए सिद्धासन तथा ऐसी मुद्राएं लगाई जाती हैं,

जिनमें एक पैर की ऐड़ी गुदाद्वार को दबाती है और दूसरे पैर की ऐड़ी लिंगेन्द्रिय को दबाती है। योनिमुद्रा द्वारा कान, नाक, आंख और मुख के छिद्र उंगलियों से ढक दिए जाते हैं। दाहिने पैर की ऐड़ी गुदाद्वार पर जमा दी जाती है और बाएं पैर की एड़ी लिंगेन्द्रिय पर जमा दी जाती है। लिंगेन्द्रिय को संकुचित करके दोनों के मध्य इस प्रकार दबाया जाता है कि वह दिखाई न पड़े। साथ ही खेचरी मुद्रा द्वारा जीभ को उलटकर कंठद्वार रोक दिया जाता है। यह मुद्रा कुंडलिनी जागरण के लिए भी लगाई जाती है।

मुंडासन, चितासन, शवासन क्षुद्र भौतिक इच्छाओं की पूर्ति में सहायक साधन में प्रयुक्त होते हैं। मुंडासन में नरमुंडों पर बैठकर अभ्यास किया जाता है। चितासन में चिताभूमि पर बैठकर और शवासन में मृत शरीर पर बैठकर साधना या अभ्यास किया जाता है। हालांकि मुंडासन, चितासन आदि आसनों का लक्ष्य सांसारिक कामनाओं की पूर्ति है, किंतु आध्यात्मिक क्षेत्र में भी इनका महत्त्व कुछ कम नहीं है। इन आसनों द्वारा की गई साधना के साधक भय और घृणा से मुक्त हो जाते हैं, उनमें समत्व ज्ञान का विकास होता है और वे शव को शिव बनाने की क्षमता प्राप्त करते हैं।

तांत्रिक साधना का मुख्य लक्ष्य सिद्धि प्राप्त करना है, इसलिए साधना के लिए एकांत गुफा, पर्वत, शिखर, सुनसान-वीरान स्थान, श्मशान, नदी तट आदि स्थान उपयुक्त माने गए हैं। तांत्रिक साधना में श्मशान दो प्रकार के हैं—बाह्य शमशान, अभ्यंतर श्मशान। बाहरी श्मशान वह है, जहां शव जलाए जाते हैं और अभ्यंतर श्मशान हृदय में है, जहां पर समस्त कामनाओं, वासनाओं, विषयों को जलाया जाता है।

जिस अवस्था में सुखपूर्वक बैठा जा सके, वह आसन है। विचारों को विशुद्ध बनाए रखने के लिए आसन की स्थिरता आवश्यक होती है। अगर किसी ऐसे आसन को लगाया जाए कि शरीर स्थिर न हो पाए, हिलना, डुलना लगातार बना रहे तो शारीरिक अस्थिरता और उसकी हलचल से मन डावांडोल, चंचल हो जाता है। ध्यान भंग हो जाता है, इसलिए साधक को यह स्वयं निर्णय करना चाहिए कि उसके लिए कौन-सा आसन स्थिरता लाने वाला होगा। अगर कोई साधक स्थूलकाय है तो उसके लिए वज्रासन में क्षण-भर बैठना तो दूर रहा, वह उस आसन को लगा ही नहीं सकता। इसी तरह पद्मासन भी उसके लिए विपत्ति का कारण बन जाता है, फिर भला उसे सिद्धि कहां से प्राप्त हो सकती है। आसनों का

अभ्यास करने पर कुछ दिनों पश्चात वे सहज बन जाते हैं, फिर प्रयास करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जब साधक का आसन स्थिर हो जाता है तो रजोगुण से उत्पन्न होने वाली मानसिक चंचलता दूर हो जाती है। मन, मस्तिष्क और शरीर सभी में संतुलन आ जाता है।

आसनों की सिद्धि में मुद्राएं और बंध अभेद संबंध रखते हैं। कुछ आसन ऐसे होते हैं, जिनका सीधा संबंध प्राण वायु से रहता है। आसन तो बहुत बनाए गए हैं। 84 लाख योनियों की संख्या के आधार पर आसनों की संख्या 84 लाख है, उनमें 1600 आसन उत्तम माने गए हैं, किंतु तांत्रिक साधना में पद्मासन, सिद्धासन, वज्रासन, शवासन, चितासन और मुंडासन मुख्य माने गए हैं। तंत्रशास्त्र में वर्णात्मक शरीर की वैज्ञानिक कल्पना की गई है। वर्णात्मक शरीर सदाशिव का शब्द ब्रह्मस्वरूप है, इसलिए जीव को 'शिव' कहा गया है। पाशबद्ध होने के कारण ही शिव में जीवत्व है। वह जीवत्व को छोड़ दे अथवा अपने शिवत्व का स्मरण रखे, इसलिए उसे अपने शब्द ब्रह्म रूप का सदैव स्मरण रखना चाहिए। पंचाशत वर्ण-मातृका ही उसका शरीर है। जीव को जीवत्व की सिद्धि के लिए 'वर्णमाला' का जप करना आवश्यक है। सदाशिव का शब्द ब्रह्म शरीर यही पंचाशत वर्ण-मातृका है। शिवपुराण में इस शरीर का वर्णन इस प्रकार है—

'लिंग' में हंसते हुए भगवान शंकर दिव्य शब्दमय शरीर को धारण किए हुए हैं। 'अ' उनका सिर है। 'आ' ललाट है। 'इ' दक्षिण नेत्र है, 'ई' वाम नेत्र है। 'उ' दक्षिण कर्ण है, 'ऊ' वाम कर्ण है। 'ऋ-ॠ' कोलद्वय है। लृ-ॡ नासिकाद्वय है। 'ए' ऐ ओष्ठाधर है। 'ओ' 'औ' दंत पंक्तिद्वय है। 'अं' 'अः' तालुद्वय है। 'क' वर्ग के पांच अक्षर दक्षिण भुजा, च वर्ग के पांच अक्षर वाम भुजा, ट वर्ग के पांच अक्षर दक्षिणपाद, त वर्ग के पांच अक्षर वामपाद, 'प' उदर है, 'क' दक्षिण पार्श्व है, 'ब' वाम पार्श्व है। 'भ' स्कंध है। म' हृदय है। य-र-ल-व-श-ष-स सात वर्ण त्वक् असृक, मांस, भेद, अस्थि, मज्जा, शुक्र—ये सात धातुएं हैं। 'ह' उनकी नाभि है और 'क्ष' उनका भेद है।

तंत्र में यही वर्णमाला श्रीमहाकाली की मुंडमाला है। इन तंत्रों में काली के ध्यान में नरमुंड माला का नहीं, बल्कि वर्णमुंड माला का प्रयोग मिलता है।

मैं यह मानता हूं, कि शाबर मंत्रों के आसन, माला, स्थान का कोई विशेष महत्त्व नहीं है, पर ज्ञानवर्धन के उद्देश्य से मैं यह सब बातें लिख रहा हूं। शाबर मंत्र के नाम पर साधना को इतना सरल कर दिया जाए कि वह उपहास का विषय बन

जाए और वैदिक तंत्र साधना के नाम पर इतना बांध दिया जाए कि वह असंभव लगने लगे। यह दोनों स्थितियां गलत हैं। साधना की जटिलता को इस स्तर तक सरल बनाने का प्रयत्न किया गया है कि कलयुग केवल नाममात्र का रह गया है। फिर तो कलयुग बड़ा सरल युग है, क्योंकि सतयुगी ऋषि तो बड़ी कठिन तपस्याएं करके भी असफल होते रहते थे। विडंबना तो यह है कि दूसरी ओर यही लोग कलयुग को पापी युग कहते नहीं अघाते और सतयुग को स्वर्गीय पवित्रता और वैभव वाला युग। धर्म के सरलीकरण हेतु जन सामान्य के प्रभाव वश धर्म के ठेकेदारों द्वारा साधना का सुगम मार्ग खोजा जाने लगा और साधना का सरलीकरण होता चला गया। पुरातन साधना की बात उस काल की है जब भारत की 'गंगा' केवल एक झील के रूप में सिमटी थी। अर्वाचीन काल की ओर बढ़ते 'गंगा' के चरणों ने भागीरथी के प्रयत्नों से एक नहर का रूप लेते-लेते एक विशद नदी का रूप ले लिया है। इस अंतराल में गंगा का कितना जल किधर पहुंच गया, कोई पता नहीं। हम उसी साधना को आज के विषय में लगाने बैठे हैं, जिसमें बहुत-सी बातें अतीत के गर्भ में पुरानी होकर एकदम समाप्त हो चुकी हैं।

विज्ञान की वैज्ञानिकता पर बहुत कुछ लिखा गया है और बहुत कुछ लिखा जा रहा है, परंतु प्रतीत होता है, हम अपनी पंडिताई में तंत्र के साथ अन्याय करते चले जा रहे हैं। जन-मानस के धर्म प्रवण हृदय पर पांडित्य का प्रदर्शन—अंतःदर्शन, भक्ति माधुर्य, पंचशील अथवा ज्ञान-साधना आदि किसी भी दृष्टि से भयावह है, परंतु परिणाम पर ध्यान दिए बिना आधुनिक तांत्रिक अपनी विद्वता के घाट सब कुछ उतारने पर कटिबद्ध है। 'मा फलेषु कदाचनः' परिणाम की परवाह न करना, हमें धर्म सिखाता है, परंतु अपने तंत्र विज्ञान के साथ अन्याय न होने पाए, इतना तो प्रत्येक विद्वान को सोचना ही पड़ेगा। तंत्र साधनाओं के सृष्टा जब अपने विद्वान समालोचकों को, धुरंधर पंडितों के क्रिया-कलापों को स्वर्ग से देखते होंगे तो वे कहते होंगे कि ये लोग तंत्र को कहां खींचे लिए जा रहे हैं? मैं यह मानता हूं कि सबकी अपनी-अपनी साधना की स्वतंत्र शैली है और जो कुछ भी अर्पित किया जा रहा है, सब साधना की सीमा के अंतर्गत ही है।

यहां हमारा विषय शाबर मंत्र है, मैं उसी तक सीमित रहूंगा। समय-समय पर तंत्र विज्ञान के गोपनीय रहस्य भी उजाकर करता जाऊंगा। अब कुछ विशिष्ट शाबर मंत्र प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनसे परहित हो, जो किसी को

हानि पहुंचाने, पीड़ा देने वाले न हों। शाबर मंत्र जैसे लिखे हों, उन्हें उसी प्रकार पढ़ना चाहिए। भाषा, व्याकरण की दृष्टि से अशुद्ध मानकर उन्हें शुद्ध करने की चेष्टा कभी भी नहीं करनी चाहिए। कोई भी शाबर मंत्र हो, उसे प्रथम बार रविवार या मंगलवार अथवा दीपावली, होली या चंद्रग्रहण, सूर्यग्रहण के दिन 1008 बार हवन करके सिद्ध कर लिया जाए, फिर सिद्धि करने की आवश्यकता नहीं रहती है। हां प्रतिवर्ष शाबर मंत्रों को जाप और हवन द्वारा जाग्रत अवश्य कर लेना चाहिए।

शीघ्र विवाह हेतु

निम्न शाबर मंत्र का जप करने से विवाह शीघ्र हो जाता है। चाहे विवाह के पूर्व उसके विवाह में कैसा ही विघ्न पड़ रहा हो।

मखनो हाथी जर्द अम्बारी
उस पर बैठी कमाल खां की सवारी
कमाल खां कमाल खां मुगल पठान
बैठे चबूतरे पढ़े कुरान
हजार काम दुनिया का करे
ए काम मेरा कर
न करे तो तीन लाख तैंतीस हजार वीर पैगम्बरों की दुहाई।

सुरक्षा हेतु

निम्न मंत्र को 1008 बार जपकर और 21 आहुति देकर सिद्ध कर लें। इसके पश्चात कभी भी, कहीं भी सुरक्षा हेतु प्रयोग करें। मंत्र हस प्रकार है—

महम्मदा वीर छाती टोर जुगुनियां वीर शिर फोर उगुनिया बीर मार मार भास्वन्त करे गोरखनाथ की आन फिरती रहे बजरंग बीर रक्षा करे जो हमारे ऊपर घाव छाले तो पलट हनुमान वीर उसी को मारे जल बांधे थल बांधे आर्या आसमान बांधे कुदवा और कलवा बांधे चक चक्की असमान बांधे वाचा साहिब साहिब के पूत धर्म के नाती आसरा तुम्हारा है।

भूत-प्रेत बाधा होने पर

हल्दी बाण-बाण को लिया हाथ उठाये
हल्दी बाण से नील गिरी पहाड़ थर्राये
यह सब देख बोलत गोरखनाथ
डाइनयोगिनी भूतप्रेत मुंड काटोतान।

अगर कोई व्यक्ति पिशाचादि बाधा से ग्रस्त हो, तो कच्ची हल्दी लेकर 21 बार रोगी के सिर से पांव तक फिराकर मंत्र के साथ अग्नि को समर्पित कर दें।

शांति हेतु

ॐ नमो आदेश गुरु का धरती में बैठया लोहे का पिंडराख लगाता गुरु गोरखनाथ आवन्ता जावन्ता धावन्ता हांक देत धार धार मार मार शब्द सांचा फुरोबाचा।

उपद्रव निवारण के लिए यह मंत्र बहुत प्रभावशाली है, कभी-कभी कुछ कारणों से किसी घर में अनेक प्रकार के उपद्रव, कलह, भय अघटित घटनाएं घटने लगती हैं। ऐसे उपद्रवों की शांति के लिए मृगचर्म पर बैठकर इस मंत्र से खीर की 108 आहुति देने से उपद्रवों का शमन होता है।

बवासीर हेतु

ॐ छाई छूई छलक छलाई आहुम आहुम, क्लं क्लां क्लीं हूं

खूनी या बादी किसी भी प्रकार की बवासीर को नष्ट करने के लिए इस मंत्र से जल को फूंक कर इतवार और मंगलवार को आबदस्त लिया जाए। 7 इतवार, 7 मंगल तक यह प्रयोग करना चाहिए।

रोग निवारण हेतु

ॐ घट घट बैठी गौराव फेरत आवे हाथ।
ॐ श्रीं श्रीं श्रीं शब्द सांचा फुरोवाच।

किसी को भयंकर रोग हो तो इस मंत्र को पढ़ते हुए रोगी के शरीर पर 7 बार हाथ फेरने से प्रकोप शांत होता है। यह प्रयोग सात दिन तक करना चाहिए।

ॐ आहूता मंदरश्म यजाज्वत्यं जम जम जम
ॐ गाहि गाहि गाहि।

तंत्र-शास्त्र में जिसे कृत्या या अभिचार का प्रयोग कहते हैं, उसी को शाबर तंत्र में जादू कहा जाता है। प्रायः देखा जाता है कि किसी को खाने-पीने की चीज में कुछ करके खिला दिया जाता है अथवा उसके वस्त्रों में या अन्य अनेक साधनों से कुछ करके बुद्धि भ्रष्ट कर दी जाती है। वह अपने सामान्य स्वभाव के विपरीत आचरण करने लगता है। ऐसी अवस्था में प्रभाव हटाने के लिए इस मंत्र को पढ़-पढ़कर धतूरे के बीजों से 9 दिन आहुति देनी चाहिए।

सूखे रोग हेतु

गुरु गोरखनाथ दुग्धं कुरु कुरु स्वाहा।

जिनकी गोद में दूध पीता बच्चा हो तो ऐसी स्त्रियों का दूध किसी कारणवश सूख जाए, तो दूध उतारने में यह मंत्र बहुत ही सफल है। दूध को इस मंत्र से 31 बार फूंककर पिला देने से दूध आ जाता है। अधिक-से-अधिक तीन दिन तक यह प्रयोग करना पड़ता है।

नेत्र विकार हेतु

ॐ अंगाली बंगाली अताल पताल गर्द मर्द
अदार कदार फट फट उत कट ॐ हुं हुं ठः ठः

इतवार या मंगल को इस मंत्र से 108 बार हवन कर इसे सिद्ध कर लिया जाए। इसके बाद जिसका नेत्र विकार दूर करना हो, उसे इतवार और मंगलवार को 31 बार मंत्र पढ़ने के बाद झाड़ देने से नेत्रविकार दूर हो जाते हैं।

भूत-प्रेतों के लिए

भूत आदि के लिए निम्न शाबर मंत्र का जप करते हुए उपलों की राख को अभिमंत्रित करते हुए भस्म से फूंक मारते हुए मार्जन करना चाहिए। आवेश तथा उपद्रव का शमन होने के बाद अभिमंत्रित भस्मी को किसी यंत्र में रखकर, स्त्री के गले में डाल देना चाहिए।

ॐ ह्रीं श्रीं फट् स्वाहा।
परबत हंस परबत स्वामी
आत्मरक्षा सदा भवेत
नो नाथ चौरासी सिद्धियों की दुहाई फिरे।

चूहे भगाने हेतु

रविवार के दिन स्नान करके हल्दी की पांच साबुत गांठ और साबुत चावल को लेकर इस मंत्र को पढ़ते हुए चूहों के स्थान में छोड़ दे। चूहे भाग जाएंगे।

पीत पीताम्बर मूशा गांधी ले जाइहु गोरख तु बांधी
ए गोरख लंका के राउ एहि कोणे पैसेहु एहि कोणे जाऊ।

बवासीर हेतु

निम्न मंत्र का अगर कोई सवा लाख बार जप कर ले, तो उसे बवासीर का रोग नहीं होता है। जिसे बवासीर हो, उसे चाहिए रात में रखे हुए पानी को प्रातःकाल शौच के समय इस मंत्र से अभिमंत्रित कर उसी पानी से आबदस्त ले। बवासीर दूर हो जाती है। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ काकाकता क्रोरी कर्ता ॐ करता से होय
यरसना दश हंस प्रकटे खूनी बादी बवासीर मूल न होय
मन्त्र जान के न बतावे द्वादश ब्रह्म हत्या का पाप होय
लाख जप करे तो उसके वश में न होय शब्द सांचा पिंड कांचा
तो गोरखनाथ का मन्त्र सांचा फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

आकर्षण का मंत्र

ॐ कं हां हूं

उपरोक्त मंत्र को 1100 बार दीपावली या ग्रहण में जप करके या हवन करके सिद्ध कर लेना चाहिए। किसी भी व्यक्ति के पास जाते समय इस

अघोर यंत्र

24	1	6	26	19	24
3	32	7	21	23	25
31	9	2	22	27	20
8	28	33	17	10	15
30	5	34	12	14	16
4	36	29	13	18	1

ॐ झां झां झां हां हां हां है है है

मंत्र का मन-ही-मन जप कर लेने से वह व्यक्ति जप करने वाले पर आकृष्ट होकर उसके मनोनुकूल कार्य करता है। अगर संभव हो तो निम्न यंत्र को भोजपत्र के अलग-अलग टुकड़ों पर 31 बार लिखकर गाड़ दें तो वशीकरण होता है।

नाथ संप्रदाय के नाथों, सिद्धों और योगियों के लिए सिद्ध गोरख चालीसा और शाबर यंत्र वशीकरण के लिए प्रस्तुत कर रहा हूं। शाबर यंत्र इस प्रकार है—

शाबर यंत्र

8	10	13	1
74	2	72	71
2	75	68	6
39	5	4	14

ॐ श्रीं श्रीं ॐ ॐ श्रीं श्रीं हूं फट् स्वाहा।

रक्षा हेतु

प्राणों का भय, संकट, बाधा, उपस्थित होने पर निम्न यंत्र का इक्कीस बार उच्चारण कर लेने से रक्षा होती है। मंत्र इस प्रकार है —

ॐ नमो वज्र का कोठा जिसमें पिंड हमारा पैठा।
ईश्वरी कुंजी ब्रह्म का ताला गेरे आठो याम का यती हनुमन्त रखवाला।

धनवृद्धि हेतु

यह यंत्र बड़ा प्रभावी है। पहले पवित्र होकर देशी पान के पत्ते पर कत्थे की स्याही से नीम की कलम से प्रति दिन 21 बार लिखें। फिर गंगाजल से पवित्र कर एक बाजू में व एक गले में बांधें। शेष अपनी तिजोरी में रखें तो धनलाभ होता है। यंत्र इस प्रकार है—

यंत्र 1

4	3	8
9	5	1
2	7	6

ॐ नमो लक्ष्मी वाहन काकारि उलूक पक्ष्यै मम मनाभिलाषा पूर्ण कुरु कुरु श्रीं श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं फट् स्वाहा।

यंत्र 2

6	1	8
7	5	3
2	9	4

ॐ नमः उलूकाय नमः लक्ष्मी वाहनाय ॐ नमः शिवाय ॐ जन जन मोहिनी शक्ति कामाक्ष्या देवी नमः श्री फट् स्वाहा।

शाबर मंत्र के तांत्रिक प्रयोग

कोई भी साधना हो, उसमें सफलता गुरु-कृपा से ही मिल पाती है। शाबर मंत्रों में तो 'गुरु' शब्द का उच्चारण अनेक बार करने का नियम है, अतः 'शाबर मंत्र' की साधना में गुरु को समझ लेना परमावश्यक है। इस विषय में गुरु तत्त्व का स्मरण रखना आवश्यक है। यह कोई और नहीं भगवान औघड़ दानी शिव शंकर ही हैं। आदि गुरु तो शिव शंकर ही हैं। उन्हीं के अवतारस्वरूप शाबर मंत्र विज्ञान के गुरु माने गए हैं।

प्राचीन तंत्र के चार प्रकार हैं—कौल, सिद्धांत, चीनाचार और शाबर। कौलाचार मुक्ति मार्ग है, सिद्धांताचार उसकी भूमिका, चीनाचार तंत्र और शाबर मंत्र प्रादेशिक विद्या है। शाबर का अर्थ अपरिष्कृत गोरखनाथ शाबर तंत्र के जनक हैं। उनके तप के प्रभाव से वे शंकर के समान पूज्य माने जाते हैं। अपनी साधना के कारण वे ऋषियों के समान श्रद्धा के पात्र हैं। नाथ संप्रदाय ने मंत्रों के मूल सिद्धांत में तत्त्व को लेकर बोलचाल की भाषा को मंत्रों का दर्जा दे दिया। हालांकि इन मंत्रों में श्रद्धा और धमकी आदि सभी का प्रयोग किया जाता है।

शाबर मंत्रों में मिश्रित विद्या भी है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि इन मंत्रों में भावना प्रमुख है। गुरु जिस प्रकार मारता है या गाली निकालता है, तो भी उसमें अहित भाव नहीं होता, न स्नेह में कोई कमी आती है। शाबर मंत्रों के समानांतर उर्दू मंत्र भी हैं, जो बिल्कुल इनकी पद्धति में लिखे गए हैं। उनमें इस्माइल जोगी और सुलेमान मंत्र प्रवर्तक माने गए हैं। मुसलमानी मंत्रों की साधना में जुम्मेरात और जुम्मा (गुरुवार और शुक्रवार)

को, पश्चिम की तरफ मुख कर मंत्र जप को, लोबान की धूप देने को और शीरनी चढ़ाने को महत्त्व दिया गया है। साधक चाहे किसी भी धर्म का हो, मुस्लिम मंत्रों की साधना करते समय इन व्यवस्थाओं को माने बिना सफलता नहीं मिलती।

शाबर मंत्रों की वैज्ञानिकता पर विचार करना व्यर्थ है। उनकी उपयोगिता पर ध्यान देने की बात है। कुछ शाबर मंत्रों में अर्थ होता है, तो कुछ में नहीं। शाबर मंत्र भाषा के व्याकरण के बंधनों से मुक्त रहते हैं। शाबर मंत्रों में सुधार करने की आज्ञा नहीं है। जिस रूप में शाबर मंत्र है, उसी रूप में 'जप' करने का नियम है, अतः शाबर मंत्र साधना सरल भी है, तभी देश के भिन्न-भिन्न भागों में, विविध भाषाओं में शाबर मंत्र आज भी सुरक्षित हैं।

शाबर-मंत्र की साधना में 'दीक्षा' की कोई आवश्यकता नहीं होती। ध्यान, न्यास और उपचार की भी आवश्यकता नहीं होती। हां, शाबर मंत्र के साथ-साथ शाबर मंत्र से अभिमंत्रित विभूति, यंत्र और डोरा का विधान दिया जाता है।

शाबर मंत्र स्वयं सिद्ध बताए जाते हैं, इनमें उत्कीलन आदि की भी कोई आवश्यकता नहीं रहती। वैदिक मंत्रों की तरह इनका 'जप' होता है। मंत्र का 'जप' समाप्त करने से छुटकारा भी हो जाता है। किसी प्रकार का उत्कीलन करने की आवश्यकता नहीं होती। कहने का तात्पर्य है कि शाबर मंत्र पूर्णतया निर्दोष हैं। शाबर मंत्र साधना में साधक को किसी भी प्रकार की हानि की संभावना नहीं है। हां, प्रयोग-सिद्धि द्वारा किसी को कष्ट देने से साधक का पतन हो जाता है, अतः भूलकर भी किसी को कष्ट देने के उद्देश्य से शाबर-मंत्र की सामान्य साधनाओं का प्रयोग न करें।

हमें गुरु गोरखनाथ का ऋणी होना चाहिए कि उन्होंने मंत्र की विद्या को सरल बनाने के लिए सार्थक प्रयास किया। दीक्षा, न्यास, मुद्रा, उपचार आदि की सारी पाबंदियां तोड़कर केवल मंत्र को स्थापित किया। भले ही ये मंत्र मोक्ष का साधन बनें, किंतु सामान्य आवश्यकताओं के लिए ये पर्याप्त थे। इतना अवश्य है कि शाबर मंत्र बहुत बड़े होते हैं, इसलिए इनका जप समय अधिक होता है।

काला जादू, ब्लैक मैजिक या बुडु के नाम से जो गोपनीय विद्या और जो तंत्र ज्ञान असम के आदिवासी लोगों के पास है, उसी का देश, काल, पात्र के

अनुसार परिवर्तित रूप अफ्रीका के कबीलों तक फैला है। खेद है कि हमारा अहंकार उनके क्षेत्र को अस्पृश्य मानता है।

चमत्कार को नमस्कार करना हमारी पुरानी आदत है। दुख की बात यह है कि चमत्कार की निश्चित परिभाषा भी उसके पास नहीं है। पचास ग्राम मिठाई खाने वाले के लिए एक किलो मिठाई खाने वाला चमत्कारी मान जाएगा। वास्तव में आज का चमत्कार रोमांच परक है, वह चमत्कार भय का कारण हुआ करता है। चमत्कार को नमस्कार करने वाले लोग अप्रकट रूप से रोमांच का आनंद लेना चाहते हैं। दूसरी बात यह है कि क्या चमत्कार से हम सुख प्राप्त कर सकते हैं, क्या हमारे दुख के बादल छट सकते हैं, क्या हम राम से मुक्ति पा सकते है? नहीं। हां हम रोमांचित अवश्य हो सकते हैं, पर रोमांच में सुख कहां है?

शाबर मंत्र-साधना के लिए नित्य कर्म करके स्वच्छ भगवा वस्त्र धारण करना चाहिए। 'आसन' हेतु भगवा रंग का कंबल लें। 'आसन' पर 'सुखासन' में बैठें और 'जप' की नियत संख्या पूर्ण करने के पश्चात ही स्थान से उठें।

शाबर मंत्र साधना अपने निवास स्थान के स्वच्छ, शांत, सुरम्य व एकांत कक्ष में करनी चाहिए अथवा निवास स्थान से दूर किसी वृक्ष, नदी-तट के समीप करनी चाहिए।

अपने सामने एक लकड़ी के पटरे पर नवीन वस्त्र रखकर तेल का दीपक रखें। सुगंधित धूप, गुलाब की अगरबत्ती प्रज्ज्वलित करें। पुष्प गंगाजल, नैवेद्य रखें। श्रद्धा धारण करें। अशुद्ध विचारों पर नियंत्रण रखें। स्त्री प्रसंग से दूर रहें। प्रसन्न-चित्त होकर जप करें।

जप हेतु अभिमंत्रित रुद्राक्ष की माला लें। इस्लामी शाबर मंत्र साधना में हकीक की माला का विधान है। जप 108 दानों की माला से करें। मंत्र छोटा हो, तो कम-से-कम 10,000 बार जपे। अधिक जप से अधिक लाभ होगा। मंत्र बड़ा हो, तो 1008 बार जप करें। जप मध्यम गति से करें। जप के समय कुछ दिखाई दे या आवाजें सुनाई दें तो घबराए नहीं, न ही आसन छोड़ें। देव-कृपा से शीघ्र शांति हो जाएगी। साधु-संतों, फकीरों को यथा शक्ति दक्षिणा देकर 'जप' करने बैठें।

कभी ऐसा भी होता है कि पूर्ण विधि-विधान से शाबर मंत्र का प्रयोग करने

के पश्चात भी साधना में सफलता नहीं मिलती। ऐसे समय शाबर मंत्र को जाग्रत करने की आवश्यकता होती है। शाबर मंत्र को जाग्रत करने की विधि इस प्रकार है—

एक अखंड भोज पत्र लें। अष्ट गंध में गंगा जल या गुलाब जल मिलाकर स्याही बनाएं। 'दाड़िम' की लेखनी से भोज-पत्र पर 108 बार उस मंत्र को लिखे, जिसे जाग्रत करना है। अगर मंत्र बड़ा हो, तो 7-9-11 बार लिखें। लेखन के साथ-साथ मंत्रोच्चारण करते रहें। फिर एक चौकी के ऊपर नया वस्त्र बिछाएं। वस्त्र के ऊपर मिट्टी का नया कलश रखें। साथ ही मंत्र लिखित भोज पत्र भी रखें। धूप-दीप, नैवेद्य से भोज पत्र का पूजन करें। पूजन के पश्चात 108 बार पुनः मंत्र का जप करें। दान-दक्षिणा दें। कलश पर नया वस्त्र रखकर उसके ऊपर मंत्र लिखा हुआ भोज पत्र रख दें। कलश का मुंह बंद कर दें और उसे बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दें। प्रवाहित करते समय मंत्र का उच्चारण करते रहें।

शाबर मंत्र का जप करने के पश्चात शाबर सुरक्षा मंत्र का भी 108 बार जप करना चाहिए। इससे सुरक्षा होती है। शाबर सुरक्षा का मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो होलका ठोल, जहां डाकी कण्डी हमारी पिण्ड बैठा। ईवर कुंजी, ब्रह्मा ताला। हमारा पिण्ड कांचा। श्री गोरखनाथ सिद्ध रखवाला।।

शाबर मंत्रों की बड़ी विशेषता यह है कि ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं, इसके साथ ही कठिनाई यह है कि अनेक बार इनको साधते समय भयानक दृश्य दिखाई देते हैं। शाबर मंत्रों के स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं, इसलिए गुरु की उतनी आवश्यकता नहीं है, फिर भी साधना करते समय कोई कष्ट हो जाए, तो उस समय सिद्ध तांत्रिक ठीक कर सकता है, अन्यथा इन साधनाओं में बिगड़े हुए आदमी की चिकित्सा संभव नहीं है। ये सीधे हृदय पर प्रभाव डालते हैं।

तंत्र मार्ग में त्याज्य गुरु के लक्षण भी बताए गए हैं। निम्नलिखित गुण, रूप वाले व्यक्ति गुरु पद के लिए अथवा मंत्रदान करने के लिए निषिद्ध हैं। अतः साधक को देख लेना चाहिए कि जिसे गुरु बनाने जा रहा है, उसमें ये दोष तो नहीं हैं। बिल्कुल सफेद रंग वाला, कोढ़ी, आंखों के रोग वाला, बौना, पीले और खराब नाखून वाला, काले दांत वाला, स्त्रियों को अधिक

भोगने वाला, अधिक अंग वाला, कम अंग वाला, छल करने वाला, अधिक खाने और बोलने वाला, जिस पर किसी का शाप हो, जिसके संतति न हो, शरीर और व्यवहार में जो निकृष्ट हो, नित्य साधना न करता हो, मूर्ख हो, वामन हो, गुरु निंदा करने वाला हो, रक्त-विकार का रोगी हो अथवा ईर्ष्यालु हो, ऐसे व्यक्ति को कभी गुरु नहीं बनाना चाहिए।

प्रिय पाठकों! हालांकि यह मेरा विषय नहीं है और न ही मैं इस विषय को स्पर्श करना उचित समझता हूं, पर पाठकों की समस्त जिज्ञासाएं शांत करना अपना कर्तव्य समझता हूं, सो क्या स्त्री गुरु बन सकती है? क्या वह दीक्षा दे सकती है? इन प्रश्नों का उत्तर अपनी बुद्धि और ज्ञान से दे रहा हूं। इस विषय में शास्त्र क्या कहता है? मैं नहीं जानता। मैं शास्त्रज्ञ नहीं हूं, अल्पज्ञ हूं। मैंने तंत्र ज्ञान श्रुति से पाया है। गुरु मुख से प्राप्त किया है। वही आज तक प्रस्तुत किया है और करता जा रहा हूं।

दीक्षा में विधवा स्त्री का निषेध है। पति द्वारा त्यागी गई अथवा उन्होंने स्वयं त्याग किया हो दीक्षा नहीं दे सकती है। यूं मंत्र दीक्षा में स्त्री से मंत्र ग्रहण करने में कोई आपत्ति नहीं है, बशर्ते कि वह स्त्री विधवा न हो और अपेक्षित गुणवती हो। स्त्री दीक्षक में क्या गुण होने पर उससे मंत्र की दीक्षा लेनी चाहिए—इस प्रश्न के उत्तर में पतिव्रता, अच्छे चरित्र और आचरण वाली, गुरु भक्त, जितेन्द्रिय, मंत्रों के रहस्य को जानने वाली, सुशीलवती, पूजारत स्त्री गुरु बन सकती है। ऐसी स्त्री से व्यक्ति मंत्रोपदेश ग्रहण कर सकता है, किंतु विधवा न हो। माता अगर उक्त गुण संपन्न हो तो उससे ग्रहण किया गया मंत्र कई गुणा फल देने वाला होता है।

बहुधा यह प्रश्न किया जाता है, तंत्र अंततः है क्या? इसकी विचार भूमि, इसका व्यावहारिक प्रश्न और इसकी सिद्धि का सीमांत क्या है? इस प्रश्न के उत्तर में यही कहा जा सकता है कि तंत्र क्या नहीं है? विश्व का जो दृश्य स्वरूप है, इसमें जितना कुछ हो रहा है, वह तंत्र ही है। तंत्र के रूप में विख्यात ज्ञानधारा के प्रति हमारा कोई भी आग्रह हो सकता है, किंतु इस शब्द के जितने अर्थ हो सकते हैं, वे सारे मिलकर जिस स्थिति की सिद्धि करते हैं, वही तंत्र है। अनेक बार मुझसे यह प्रश्न किया जाता है। आखिर शाबर मंत्र क्या हैं? मंत्र शब्दावली नहीं होता, उसके साथ मंत्र का प्रयोग और साधक का आचरण जुड़ा हुआ रहता है। मंत्र की लय, शब्दों पर किया जाने वाला स्वराघात मंत्र

के अर्थ के अनुसार उसका उच्चारण आदि कई बातें ऐसी होती हैं, जो गुरु के मुख से न सुनने से विपरीत फलदायक हो सकती हैं। अगर कोई साधक सुनकर अथवा पुस्तकादि की सहायता से ही प्राप्त मंत्र की साधना करता है तो उसे बहुत पाप लगता है, जो मंत्र साधक के लिए परम कल्याणकारी होता है, वह विधिवत दीक्षा लिए बिना अमंगलकारी बन जाता है। गुरु के पास विधिपूर्वक मंत्र ग्रहण करना मंत्र साधना के लिए प्रथम और अनिवार्य कर्तव्य है। आईए अब आपको शाबर मंत्र से संबंधित कुछ प्रयोग बताता हूं। आप इनसे लाभ अवश्य उठाएं, लेकिन दुरुपयोग कभी न करें।

वशीकरण हेतु

स्त्री वशीकरण के लिए नए खिले मालती के फूल, कड़वे सरसों के तेल में औटा लें। स्मरण रखें, आंच मध्यम होनी चाहिए। तेल, स्पिरिट, केरोसीन का तेल, कपूर आंच पर न पकाएं। जब तक तेल मध्यम आंच में औंटे आप निम्न मंत्र का जाप करती रहें। मंत्र इस प्रकार है—

पीर मैं नाथ पीर तू नाथ जिसकी लगाऊं तिसको वश करना फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित तेल को योनि पर लगाकर सहवास कराएं, प्रबल वशीकरण होगा।

देव दर्शन हेतु

यह सिद्ध प्रयोग जिन व्यक्तियों को बताया, उन्हें पर्याप्त लाभ मिला है। एक नई व एक पुरानी कब्र की थोड़ी मिट्टी दोनों हाथों में अलग-अलग लेकर बंद कर लो। मंत्र को 333 बार जप कर अलग-अलग दो थैलियों में दोनों मुट्ठियों की मिट्टी डाल दो। इन्हीं दोनों थैलियों में 333-333 साबूत काली उड़द के दाने भी डालो। उड़द के दानों से ही मंत्र जप करें। यह प्रयोग तब किया जाता है, जब व्यक्ति दुश्मन से त्रस्त होकर स्वयं कोई निर्णय न ले सके। प्रयोग रात्रि के समय करना होगा। प्रयोग-कर्ता सोते समय उन दोनों थैलियों को सिरहाने रखें। इस प्रयोग के प्रभाव से समस्या ग्रस्त व्यक्ति को सही मार्ग-दर्शन किसी प्रत्यक्ष शक्ति के द्वारा चामत्कारिक ढंग से होगा। कब्र की मिट्टी को अगले दिन वापस कब्रिस्तान में डाल देना चाहिए।

अगर यह प्रयोग एक बार में सफल न हो, तो चार बार करें। मंत्र इस प्रकार है—

तोते तयियाना।।

व्यक्ति को बांधना

अमावस्या की रात्रि में काली-मंदिर जाकर श्री महाकाली का पूजन करें। शुद्ध घी और कच्ची घानी के सरसों के तेल का दीपक जलाएं। काले कंबल पर बैठकर निम्न मंत्र को 1008 बार जपकर सिद्ध कर लें। जब कभी किसी व्यक्ति को बांधना हो, तो हाथ में थोड़ी-सी मिट्टी लेकर 31 बार मंत्र को पढ़ें और उस मिट्टी को एक ही फूंक में उड़ा दें, तो वह व्यक्ति बंध जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ काली काली महा-काली, ब्रह्मा की बेटी इंद्र की साली। खावे पान, बजावे ताली, जा बैठी पीपल की डाली। बांध बांध (अमुक) को बांध, परिवार समेत बांध। ना बांधे, तो तुझे गुरु गोरखनाथ की आन।।

विद्वेषण हेतु

किसी भी शुभ पर्व होली, दीपावली अथवा ग्रहण काल में इस मंत्र की 21 मालाएं जप लें, मंत्र सिद्ध हो जाएगा। जब प्रयोग करना हो, तो श्मशान में रात्रि में जाकर जलती हुई चिता पर राई में सरसों का तेल मिलाकर 108 आहुतियां दें। अमुका-अमुक के स्थान पर उन दो व्यक्तियों के नाम लें, जिनमें विद्वेषण कराना है। मंत्र इस प्रकार है—

राई राई तू है महा-माई, जारी है जखीरी छाई। (अमुका अमुक) में होय लड़ाई।

कार्य सिद्धि हेतु

किसी भी शुक्ल पक्ष के दिन सायं 6 बजे एक देशी पान, दो साबुत लौंग, सात बताशे लेकर नदी के किनारे जाकर मंत्र 108 बार पढ़ें। उसके पश्चात प्रसाद को जल में प्रवाहित कर दें। सात दिन तक ऐसा करें, तो रुके कार्य बनें। मंत्र इस प्रकार है—

पहिले नाम भगवान का। दूजे नाम औतार का। तिजे नाम सत्-गुरु,

जिनका नाम गोरखनाथ। उनकी कृपा और उनकी दया। इस ख्वाजा-खिदर पूजने के लिए परसाद लेकर आया। लोना चमारी दिरन्त की दुहाई। वैष्णों शाकुंबरी और औतार पीर और पैगम्बर इन सबकी दया के साथ दरिया के किनारे, जिससे हमारी आत्मा ठंडी। लोना चमारी, दुहाई। वस्तम पेरूल युसूफ की तरह, भूरे देव की तरह, सत्य-नारायण की तरह मैंने भी पैर बढ़ाया। लोना चमारी की दुहाई। हरी-हरी, शिव-शिव, जयंती भद्रकाली।

भूत पकड़ने का मंत्र

गुजरे कुकाली, हाथ मुरली, मर्दन केश काली। चलल देश-विदेश पैसल, जो खोखरले आसार, पेस माराकर फाड़ल पेड़, भूत पकड़। दोहाय ईश्वर महादेव गौरा पारवती के छी।

भूत-प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्ति के बाल पकड़कर उक्त शाबर मंत्र 31 बार जपें।

घर बांधने का शाबर मंत्र

बैर की लकड़ी की सवा हाथ की चार कीलें हाथ में लेकर सभी पर एक साथ 54 बार मंत्र पढ़ें। फिर एक कील हाथ में लेकर अग्नि-कोण के पास आकर 21 बार मंत्र पढ़कर उस कील को धरती में गाड़ दें। इससे घर का बंधन हो जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

घर बान्धो, द्वारा बान्धो, बान्धो घर के द्वारे, सोलहो डाकनी, बान्धो दो लोहे का हारे, थाक थाकगे बेटी योगनी, मेरे बान्धो परो, लरी सहचरी, जन भाव चौको बान्धो, दोहाय गोरखनाथ महादेव-गौरा-पारवती की।

भूत-प्रेत को बुलवाने का मंत्र

हिना का इत्र एवं चमेली के चार अधखिले पुष्पों को निम्न मंत्र से 31 बार अभिमंत्रित करके सात बार सुंघाएं। अभिमंत्रित करते समय उक्त मंत्र बोलकर 'फूल' या 'इत्र' को फेंक मारें या सामने अथवा हाथ में रखकर मुंह के सामने करते हुए मंत्र फूंकें।

ॐ नमो हनुमन्त वीर वज्र-धारी, डाकिनी, शाकिनी घेर मारी। गंगा, जमना हमारा बाण बोले। बकरे नहीं, तो राजा रामचन्द्र, लक्ष्मण कुमार, गोरखनाथ की आन। शब्द सांचा, पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरी वाचा।

प्रिय पाठकों! शाबर मंत्र प्रयोग की यह शृंखला आगे बढ़ाने से पहले एक प्रसिद्ध कथा लिख दूं।

यह 'महाभारत' की कथा है कि महर्षि व्यास ने अर्जुन को 'पाशुपतास्त्र' द्वारा विजय पाने का निर्देश दिया। अतः अर्जुन को घोर जंगल में तप करना पड़ा। किरात-वेश में भगवान शंकर ने उनकी परीक्षा ली। प्रसन्न होकर शंकर ने उन्हें कौरवों पर विजय पाने हेतु अपना अस्त्र प्रदान किया।

उसी समय माता पार्वती ने भी शबरी का रूप धारण किया था। दीर्घकाल तक शबर-सेवकों द्वारा सेवित होने पर मां ने प्रसन्न होकर उनसे वर मांगने को कहा। उन लोगों ने निवेदन किया—"मां! अगर आप प्रसन्न हो तो भोले को मनाकर हम सबको ऐसे मंत्रों का उपदेश दो, जिससे हम अपढ़, अनभिज्ञों के भी पाप सरलता से मिट जाएं।"

माता पार्वती ने भगवान भूतनाथ को प्रसन्न देखकर अपने भक्तों की आकांक्षा कह सुनाई। फलस्वरूप शबर-रूपी शंकर एवं शबरी रूपिणी माता पार्वती के मुखारविंद से जो अक्षर निकले, उनके उच्चारण मात्र से सभी सिद्धियां तत्काल मिलने लगीं। इन मंत्रों में वैदिक मंत्रों की तरह उच्चारण एवं स्वर-क्रम की न तो कठिनता होती है और न फल-सिद्धि में विलंब होता है।

इसका एक कारण यह भी है कि अन्य सभी मंत्रों को 'कीलित' किया गया है, अतः वे 'उत्कीलन' किए जाने पर ही अपना प्रभाव दिखाते हैं, परंतु शाबर मंत्रों को कीलित नहीं किया गया है, इसलिए अन्य मंत्रों की अपेक्षा कम समय में और अल्प साधना से ही वे सिद्ध हो जाते हैं। कुछ शाबर मंत्र तो ऐसे होते हैं, जिन्हें सिद्ध करने की भी आवश्यकता नहीं होती है। उनके उच्चारण से ही लाभ होता है।

भंडार भरा रहे

निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें। भंडार गृह में से अछूती सामग्री निकालकर श्री अन्नपूर्णा माता को भोग लगाकर ब्राह्मण को भोजन कराएं। फिर भोग का एक भाग कुएं में डालकर, एक हाथ से एक लोटा जल भर लाए। भंडार-घर में दीप जलाकर अन्नपूर्णा और वरुण का पूजन करें। उपर्युक्त मंत्र 108 बार जपकर भंडारा करें। इससे भंडारगृह में कमी नहीं होगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमः अन्नपूर्णा अन्न पूरे। घृत पूरे गणेश जी। पाती पूरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवतन। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई। फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

ऋद्धि सिद्धि देने वाला शाबर मंत्र

ऋद्धि सिद्धि ये दो बहने हैं। ये जहां भी जाती हैं, एक साथ जाती हैं। भोज-भंडारा सबको खिलाने से पहले, पांच बूंदी के लड्डू निकालकर, उन पर कामिया सिंदूर लगाएं। श्री गणपति का पूजन करें। एक कलश में एक लड्डू रखकर कुएं पर जाकर जल भरें और मंत्र पढ़कर चारों लड्डू कुएं में छोड़ दें। फिर 'कलश स्थापन' कर, उपर्युक्त मंत्र को एक हजार बार जपकर ब्राह्मणों को भोजन खिलाएं, तो भंडार में अन्न न घटे। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो आदेश श्री गुरु को। गजानन वीर बसे मसान। अब दो ऋद्धि का वरदान। जो जो मांगूं, सो-सो आन। पांच लड्डू, शिर सिन्दूर हाट बाट की। माटी मसान की। सेष ऋद्धि सिद्धि हमारे साथ। शब्द सांचा, फुरो मंत्र, ईश्वरो वाचा।

विपत्ति निवारक शाबर मंत्र

मंत्र इस प्रकार है—

हुकम शेख फरीद कमरिया, निशि-अन्धियरिया, आग-पानी-पथरिया तीनों से तोही बचाइया।

सुनसान मैदान में जब ओला गिरे, बुरी तरह आंधी-पानी बरसे तो यह मंत्र 21 बार पढ़कर जोर से ताली बजाएं।

श्मशान जगाने का प्रयोग

विद्वेषण, उच्चाटन, मारण सभी इस एक मंत्र से संभव हैं। श्मशान ले जाने वाले पुरुष के शव को मार्ग में ही कच्ची हल्दी से रंगे चावलों से न्यौता दें। फिर जब श्मशान से लोग लौट आएं, तब वहां जाकर एक देशी अंडा और कच्ची शराब 21 बार मंत्र पढ़कर अर्पित करें। अब एक सफेद कोरे कपड़े में कच्ची हल्दी, एक सुपारी और चिता के बुझे कोयले का एक टुकड़ा बांधकर मिट्टी के कोरे बर्तन में रखकर चिता के समीप ही दबा दें। उसी दिन रात

के अंतिम पहर में पुनः श्मशान में जाएं और पुनः अंडे तथा मदिरा को 7 बार मंत्र से अर्पित करें। फिर गाड़े हुए बर्तन को निकालें। कपड़े में बंधी सारी सामग्री वहीं फेंक दें और उस चिता की एक मुट्ठी राख उस कपड़े में बांधकर ले आए। श्मशान जाते समय यथा संभव किसी से बोले नहीं और लौटते समय पीछे मुड़कर कदापि न देखें, अन्यथा विपत्ति आ सकती है। श्मशान से लाई राख की पोटली को घर के भीतर कभी न रखें, अन्यत्र सुरक्षित स्थान पर रखें। एक चुटकी राख 31 बार अभिमंत्रित करके जहां डाली जाएगी, वहां उत्पात होने लगेंगे। इस अभिचार प्रयोग को अत्यंत आवश्यक होने पर ही किया जाए। मंत्र इस प्रकार है—

कारो करूवा कारी रात, तोय चलाऊं काली रात। कारो पहने चोलना कारी बांधे ढाल।। कारी ओढ़े कासनी, लए लुहांगी हाथ। हांकों देव सनीचरा, फेरत आवे सांग।। पेट फूले आंत सड़े, हुड़क लगावे नार। सवा हाथ धरती, खून में बोर के आवे, तो सच्चा वीर कलुआ, बहालिया अगवान कहावे।।

जुआ जीतने का मंत्र

जुआ खेलने से पहले 21 बार निम्न मंत्र का श्रद्धापूर्वक जाप करें। इसके बाद जुआ खेलें। हां जीतने के पश्चात जुए की आदत कभी न बनाएं।

समुद्र, समुद्र के बीच टापू, टापू में दीप, दीप पै पाठौ, पाठे पे बैठी चांद कुमारी। तिन या कही-सुनो हो राजा राम, जो कोई या मूठ जीते, हनुमंत करहै सहाई।। मेरी भगत गुरु की सकत। फुरै मंत्र, ईश्वरी वाचा। वाचा ते कुवाचा होई, तो कुंभी पाक नरक में पड़े। धोबी की सोंधनी, चमार की छोल्ड में पड़े।।

वशीकरण मंत्र

ॐ नमो रुद्राय, कपिलाय, भैरवाय, त्रिलोक नाथाय। ॐ ह्रीं फट् स्वाहा।

सर्वप्रथम किसी रविवार को गुग्गुल, धूप, दीपक सहित उपर्युक्त मंत्र का 21 बार जप कर उसे सिद्ध करें। फिर आवश्यकतानुसार इस मंत्र का 108 बार जप कर एक अंखडित लौंग को अभिमंत्रित करें। इस अभिमंत्रित लौंग को, जिसे वशीभूत करना हो, उसे खिलाएं।

मुवक्किल (हाजरात) प्रत्यक्ष हो

गुरुवार की अमावस्या को शुक्रवार को प्रतिपदा के दिन चंद्रोदय के पश्चात शहर से बाहर जाकर लोबान धूप जलाकर 108 बार मंत्र जप करें। ऐसा 5-6 दिन करने से मुवक्किल प्रत्यक्ष होता है। उससे 3 बार वचन लेकर अदृश्य करना। भविष्य में मंत्र जप द्वारा उसे बुलाकर मन चाहा उचित कार्य संपन्न करा सकते हैं।

मंत्र इस प्रकार है—

या यैययल अलअु ईन्नी कलकिया इलैलया किताबून करिम। ईन्न अुन्हु मिन सुलैमाना मिन्न हु बिसमिल्लाहि रहिमाने रहिम।

भय नाशक मंत्र

बृहस्पति के दिन सूर्यास्त को किसी मजार पर जाकर प्रसाद व हिना का इत्र चढ़ाएं। गुलाब की अगरबत्ती जलाकर निम्न मंत्र को अभिमंत्रित लाल हकीक की माला से 21 हजार बार जपें। मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र का 108 बार जप करने से किसी प्रकार का भय नहीं होगा।

मंत्र इस प्रकार है—

या अली मुलख वीर।

गोरखनाथ पंथी में मंत्र तीन प्रकार के होते हैं—शाबर, बर्भर और बराटी। जो कार्य शाबर मंत्र द्वारा होता है, वह इनसे भी हो सकता है। ये मंत्र स्वयं सिद्ध हैं, इन्हें किसी सिद्धि विधान की आवश्यकता नहीं पड़ती। मात्र उच्चारण से ही कार्य बन जाता है। ये देखने में सरल होते हैं, परंतु ये मंत्र बड़ी कठिनाई से परंपरा द्वारा ही प्राप्त हो सकते हैं। इनको प्राप्त करने के लिए नाथ संप्रदाय से जुड़ना होता है। 'बराटी' जो अभद्र अघोर-विद्या के समान है। इसके मंत्रों की भाषा ऐसी होती है, जिसे अभद्र भाषा कहते हैं। फिर भी ऐसे मंत्र बड़े प्रभावपूर्ण होते हैं। इनका गुरुमुखी होना अनिवार्य है, अन्यथा सिद्धि नहीं होती, या अधूरी रह जाती है।

'बराटी' मंत्रों के द्वारा विशेषतया 52 वीरों की सिद्धि की जाती है। प्रत्येक 'वीर' का कार्य अलग-अलग होता है। 'बराटी विद्या' दो प्रकार से सिद्ध की जा सकती है। दक्षिण मार्ग से और वाम-मार्ग से। दक्षिण-मार्ग से 31 'वीर' होते हैं, जो सभी प्रकार के कर्म करते हैं तथा वाम मार्ग से 21 वीर होते हैं, ये भी सभी

कार्य करते हैं। कोई भी व्यक्ति दोनों प्रकार के बीरों को सिद्ध नहीं करता। साधना हेतु तांबा, पीतल, सुवर्ण, रजत, कांस्य का एक 'बीर-कंगन' पूर्णिमा के दिन बनाना पड़ता है। प्रत्येक 'बीर' की प्राण-प्रतिष्ठा कंगन में अलग-अलग स्थान पर की जाती है।

इनका क्रम निश्चित है। प्रयोग के समय साधक इसी बीर कंगन को अपने हाथ में पकड़कर बीरों से काम लेता है। आवश्कता होने पर 'बीर' का संचार स्वयं साधक के शरीर में करवा लिया जाता है।

यह कंगन कानों में लगाने से साधक बीरों की बातें सुन सकता है। यहां केवल दक्षिण मार्ग से सिद्ध किए जाने वाले बीरों के मंत्र और उनकी विधि दे रहा हूं।

हनुमान बीर सिद्धि

गणा गणा कमरी गणा, पायामधीं सोन्या सुवर्णाच्या बहाणा। वहाण गेली अग्नि निघाली, ओटयावर होता कोल्हासर दैत। जागती ज्योत जागत रहो। खेत देव दैत चले रे हनुमान, बीर, सिध्यांशी गुरु छू।।

पहले दिवस एक डाली वाले 'आक' का पेड़ ढूंढें। फिर किसी भी शुभ दिन में उस पौधे के पास जाकर कच्ची हल्दी, कुंकुम, गुलाब की अगरबत्ती, नारियल, देशी कपूर आदि से उसका पूजन करें। फिर हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़कर पौधे की जड़ में छोड़ दें। इस प्रकार 31 बार करें। तदनंतर गुरु मंत्र का जप करें।

इसी प्रकार 31 दिनों तक करें। तीसरे ही दिन से हनुमान बीर जाग्रत होने लगता है। 31वें दिन वह साधक के सामने आकर खड़ा हो जाएगा। जब हनुमान बीर प्रत्यक्ष हो, तब मंत्र का उच्चारण करें। इससे वह बोलने लगेगा।

तब आशीर्वाद मांगकर आवश्यकता पड़ने पर आने का वचन उससे ले लेना चाहिए। 31वें दिन मीठा भोजन देकर आक का पौधा उखाड़ लें और उसकी जड़ का यंत्र बनाकर गले में धारण करें। फिर जब कभी आवश्यकता हो, तो मंत्र पढ़ें। हनुमान बीर आ जाएगा और काम करेगा। अगर साधक दिव्यात्माओं से संपर्क साधता है तो निरंतर प्रगति करता हुआ अपने जीवन की परम उपयोगिता को सिद्ध कर लेता है। यह अभ्यास हो जाने पर शनैः

शनैः ऊर्ध्व लोकों की यात्रा के लिए चेष्टा करनी चाहिए। संभव है, वहां हमें वे पुण्यवान तपस्वी मिल जाएं, जिनकी कथा हम सुना करते हैं। उस देह से हम उनकी दिव्य देह का दर्शन भी कर सकते हैं, उनकी बात भी सुन सकते हैं, किंतु इस क्रम को धीरे-धीरे बढ़ाना चाहिए। मेरा आग्रह है कि भाग्यवश अगर ऐसी अवस्था प्राप्त हो जाती है तो किसी समर्थ एवं मर्मज्ञ जन की देख-रेख में रहकर करना चाहिए।

शाबर मंत्र भारतीय मनोविज्ञान की उत्कृष्ट विद्या है। साधना के द्वारा मनुष्य क्या नहीं प्राप्त कर सकता है। अपना जीवन सार्थक बनाने के लिए इसको भी माध्यम बनाया जा सकता है।

नाथ संप्रदाय में स्वर विज्ञान के सिद्धांत

तंत्र विज्ञान का मत है, सत्य को जान लेना ही ज्ञान है और जो इसे समझ लेता है, उसे साधना का मार्ग प्राप्त हो जाता है। शाबर मंत्र वह सरल मार्ग है, जो साधक को साधना का मार्ग दिखाता है। ईर्ष्यारहित साधक ही तांत्रिक की श्रेणी में आते हैं। भगवान के प्रति अनुराग निष्काम प्रेम है। प्रेम वही सार्थक बनता है, जो प्रियपात्र को सुख पहुंचाता है। प्रेम तो एक अलौकिक भाव है, जो दूसरों के दुख में दुखी होकर उन्हें सुख पहुंचाने का प्रयास करता है।

तंत्र मत स्वयं को जानने और सिद्धि को पाने की विद्या है। शाबर मंत्र का मार्ग एक सरल रास्ता है, क्योंकि इसमें श्वास-साधना और कठिन योग-अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती। हमें केवल अपना ध्यान बाहर से हटाकर भीतर एकाग्र करना है। ध्यान की एकाग्रता का अभ्यास होने पर हम प्रभु का अनुभव करते हैं। तंत्र मत एक संपूर्ण विज्ञान है, जिसका अनुसरण करके हम अपने वास्तविक रूप को पहचान सकते हैं—हम शरीर नहीं, बल्कि आत्मा हैं।

यहां पर मुझे एक कथा स्मरण आ रही है। हालांकि तंत्र मार्ग में जात-पात का कोई स्थान नहीं है। तांत्रिक का कोई धर्म नहीं होता है, उसका तो केवल एक धर्म होता है—सेवा।

भगवान बुद्ध अपने शिष्यों सहित आसन पर विराजमान थे। शिष्यगण उनकी स्थिरता देखकर चिंतित हुए कि कहीं वे अस्वस्थ तो नहीं हैं?

एक शिष्य बोल उठा—"भगवन् आप इस प्रकार मौन क्यों हैं, क्या हमसे कोई अपराध हुआ है?"

इतने में एक दूसरे शिष्य ने पूछा—"प्रभु, क्या आप आज अस्वस्थ हैं?"
भगवान फिर भी मौन रहे।

तभी बाहर खड़ा कोई जिज्ञासु चीखकर बोला—"आज मुझे सभा में बैठने की अनुमति क्यों नहीं प्रदान की गई?"

बुद्ध नेत्र बंदकर ध्यानमग्न हो गए।

वह व्यक्ति पुनः चिल्ला उठा—"मुझे प्रवेश की अनुमति क्यों नहीं दी गई?"

एक उदार मना शिष्य ने उसका पक्ष लेते हुए कहा—"भगवन् उसे सभा में आने की अनुमति प्रदान करें।"

बुद्ध ने नेत्र खोले और बोले—"वह अस्पृश्य है।"

तब कई शिष्य एकदम बोले उठे—"वह अस्पृश्य क्यों है? आपके धर्म में तो जात-पात का कोई भेद नहीं, फिर वह अस्पृश्य कैसे?

तब भगवान बुद्ध ने स्पष्टीकरण किया—"आज वह क्रोधित होकर आया
है। क्रोध से जीवन की एकता भंग होती है। क्रोधी व्यक्ति मानसिक हिंसा
करता है। किसी भी कारण से क्रोध करने वाला अस्पृश्य होता है। उसे कुछ
समय तक पृथक एकांत में खड़े रहना चाहिए। पश्चाताप की अग्नि में
तपकर वह समझ लेगा कि अहिंसा ही महान कर्तव्य है—परम धर्म है।"

शिष्यगण समझ गए कि अस्पृश्यता क्या है, अस्पृश्य कौन है? उस व्यक्ति
को भी पश्चाताप हुआ और उसने फिर कभी क्रोधित न होने की सौंगध खाई।

आज के जीवन में मानव को यह स्मरण रखना चाहिए कि हमें हर किसी
से समान व्यवहार करना चाहिए। किसी को छोटा-बड़ा नहीं समझना चाहिए।

इस समस्त ब्रह्मांड की रचना पांच तत्त्वों द्वारा की गई है, इन तत्त्वों द्वारा
ही निरंतर परिवर्तन होते रहते हैं और अंत में इन्हीं पांच तत्त्वों में ही लीन
हो जाना पड़ता है। इसी तरह सदैव इसका निर्माण और क्षय होता रहता है।

गुरु गोरखनाथ की वाणी सुनकर अन्य नाथ बोले—"सत्य है गुरुदेव, जब
यह सारा ब्रह्मांड तत्त्वों से ही बना है और उसी में लीन भी हो जाता है। तब
वह तत्त्व कौन-सा पदार्थ है, जिसमें इतनी बड़ी सामर्थ्य है कि पहले तो ब्रह्मांड
की रचना करे और फिर परिवर्तन कर दे। मेरी बुद्धि में नहीं बैठा। इसका
वर्णन करें।"

गोरखनाथ बोले—बेटा औघड़, माया से रहित जो निराकार परमेश्वर है,

उसने पहले आकाश की रचना की। फिर आकाश से पवन, पवन से अग्नि, अग्नि से जल और जल से यह पृथ्वी बनी। इन्हीं पांचों चीजों को संत तत्त्व कहते हैं और इन्हीं के सूक्ष्म पांचों रूपों को पंच तत्त्व के नाम से भी पुकारा जाता है, परंतु इन पांचों में भी एक-एक के अनेक भेद हैं, जिनके समूह से यह ब्रह्मांड उत्पन्न हुआ है। इसमें परिवर्तन और नाश होता रहता है। प्रत्येक शरीर में यही पांचों तत्त्व रहते हैं। इस रहस्य को केवल संत ही जानते हैं। इन्हीं पांच तत्त्वों से शरीर की उत्पत्ति हुई है। मानव शरीर में नाभी के ऊपर मस्तक तक 72 हजार 108 नाड़ियां हैं, जो ऊपर-नीचे, दाएं-बाएं वृक्ष की
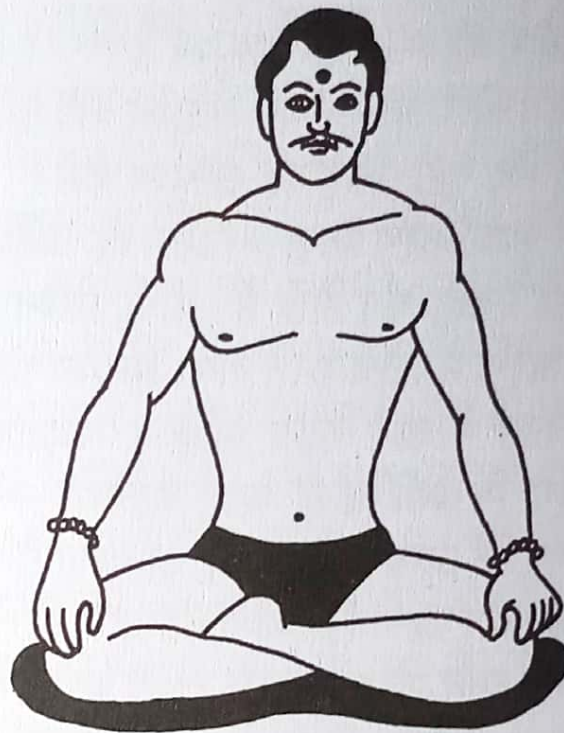
स्वर की चाल निरीक्षण करने का आसन

टहनियों की तरह सारे शरीर में फैली हुई हैं। इन्हीं नाड़ियों में सूर्य के समान शक्तिशाली कुंडली शक्ति भी है, जो ऊपर नीचे को जाने वाली दस-दस नाड़ियों से जुड़ी हुई है। इनके अतिरिक्त जो नीचे और ऊपर की दो-दो नाड़ियां तिरछी और दाएं-बाएं की ओर लगी हुई हैं। मनुष्य के शरीर में ये ही 24 नाड़ियां प्रधान मानी गई हैं और इनमें से दस नाड़ियों से वायु का संचालन होता है। ये सभी नाड़ियां प्राण-वायु के आधार पर बनी हैं। इन दसों नाड़ियों में भी तीन प्रधान मानी गई हैं। जिनके नाम इड़ा, पिंगला और सुषुम्णा हैं।

स्वरों की चाल—शुक्ल पक्ष में, पहले चंद्र स्वर चलता है, पीछे सूर्य स्वर। इसी प्रकार कृष्ण पक्ष में पहले सूर्य स्वर चलेगा, पीछे चंद्र स्वर चलता है। शुक्ल पक्ष की पड़वा से लेकर तीन-तीन दिन तक क्रम से सूर्य और चंद्र का स्वर चलता रहता है। सूर्योदय काल में पक्षानुसार प्रत्येक स्वर एक-एक घंटे पश्चात चलता रहता है अर्थात शुक्ल पक्ष की पड़वा के सूर्योदय काल में, पहले चंद्र स्वर चला तो वह एक घंटे पश्चात चलकर, पीछे सूर्य स्वर चलेगा और वह स्वर भी एक घंटे बराबर चलता रहेगा। फिर एक घंटे तक चंद्र स्वर चलेगा। इस प्रकार क्रमानुसार दिन-रात 24 घंटे में 24 बार चलते हैं।

जिस प्रकार शुक्ल पक्ष में चंद्र स्वर प्रधान रहता है, उसी प्रकार कृष्ण पक्ष में सूर्य स्वर, सूर्योदयकाल में मुख्य रहता है और उसी क्रमानुसार पहले सूर्य एक घंटे, फिर चंद्र एक घंटे, फिर सूर्य उसी क्रम में चलता रहेगा। उसी तरह 24 घंटे में 24 बार चंद्र स्वर की भांति चलेगा। जब सूर्य और चंद्र स्वर क्रमानुसार चलते हैं, तब उनके साथ-साथ क्रम से पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश तत्त्व भी चलते रहते हैं।

साधना विचार—यदि चंद्र स्वर के समय, सूर्य स्वर और सूर्य के स्वर के समय, चंद्र स्वर चले तो साधना करने वाले को चाहिए कि ऐसे समय में साधना न करें, क्योंकि इसका फल विपरीत होगा। जब तक स्वर निश्चित नियम पर न आए, साधना करना व्यर्थ है। साधना करने वाले का मन हर प्रकार से एकाग्र होना आवश्यक है। साधना करने वाले को चाहिए कि रात्रि के समय चंद्र स्वर का विचार न करे और दिन में सूर्य स्वर की कोई साधना न करे, क्योंकि सूर्य के स्वर में सूर्य का और चंद्रमा के स्वर में, चंद्रमा का स्वर बंद रहता है अर्थात जो स्वर सूर्यकाल में चला है, वही स्वर अस्तकाल में बंद हो जाता है। यह नियम कृष्णपक्ष में, सूर्य स्वर में सूर्य का और शुक्ल पक्ष में चंद्र स्वर से चंद्रमा का होना सिद्ध करता है। जानकारों का कथन है, अगर चंद्र स्वर में सूर्य का उदय हो, और सूर्य के स्वर में सूर्य अस्त हो तो साधना करने वाले में अनेक गुण उत्पन्न हो जाएंगे। अगर इसके विपरीत सूर्य स्वर में सूर्य उदय हो और चंद्र स्वर में सूर्य अस्त हो, तो उसका त्याग कर देना चाहिए।

वार-विचार तांत्रिकों ने जिस प्रकार स्वरों को, चंद्र और सूर्य दो रूपों में विभाजित किया है। उसी प्रकार प्रत्येक स्वर के दिनों को भी अलग-अलग बांट दिया है अर्थात चंद्र स्वर को गुरु, शुक्र और बुधवार सूर्य उदयकाल में,

चन्द्र स्वर शुक्लपक्ष में हो तो सिद्धियों से शुभ फल की प्राप्ति होगी तथा रविवार, सोमवार, मंगलवार को सूर्य स्वर फलदायक है। अगर मंगलवार और शनिवार को कृष्णपक्ष में पिंगला नाड़ी का विचार किया जाए, तो महान फल की प्राप्ति होगी। इसके विपरीत शुक्ल पक्ष में गुरु, शुक्र, बुधवार में इड़ा नाड़ी का विचार किया जाए तो अति उत्तम फल प्राप्त होता है। इसके विपरीत विचार करने से अशुभ फल की प्राप्ति होती है। प्रत्येक स्वर की चाल एक-एक घंटे होती है। इसी प्रकार प्रत्येक तत्त्व अपने क्रम से आधी-आधी घड़ी हर स्वर के साथ चलता है। जिसका क्रम इस प्रकार है।

सर्वप्रथम वायु तत्त्व आधी घड़ी रहेगा। फिर अग्नि तत्त्व आधी घड़ी चलेगा, इसके पश्चात पृथ्वी तत्त्व आधी घड़ी चलेगा, जल तत्त्व भी आधी घड़ी चलेगा, सबके पश्चात आकाश तत्त्व की बारी आती है। सो यह भी आधी ही घड़ी चलेगा। उसी प्रकार फिर लौटकर वायु तत्त्व इत्यादि चलते रहेंगे।

जिस तरह स्वरों के साथ तथ्य सम्मिलित रहते हैं। उसी प्रकार दिन-रात्रि में बारह संक्रातें, स्वरों के साथ-साथ चलती रहती हैं। इन संक्रातों में वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन चंद्र स्वर की हैं और मेष, सिंह, कुंभ, तुला, मिथुन, धनु यह छः संक्रांतें सूर्य स्वर की हैं।

पूर्व और उत्तर में चंद्रमा तथा पश्चिम और दक्षिण में सूर्य स्वर के साथ रहता है, इसलिए जब चंद्र स्वर चलता हो तो दक्षिण और पश्चिम को फल देगा, अगर सूर्य स्वर चलता हो, तो पूर्व और उत्तर की यात्रा नहीं करनी चाहिए, क्योंकि इस प्रकार के स्वरों में अगर यात्रा की जाए, तो भय रहता है। बाएं स्वर में यात्रा करने वाला अगर पूर्व और उत्तर की यात्रा करेगा, तो कदापि घर लौटकर नहीं आएगा। शुक्ल पक्ष की दौज को अगर सूर्य के स्वर में चंद्रमा के स्वर चलने लगें, तो वह पुरुष के लिए अति उत्तम होगा। इस समय में जो भी कार्य किया जाएगा, वह सुखों को देने वाला होगा। अगर सूर्य स्वर चलते समय किसी वस्तु का विचार किया जाए तो जो बात कभी देखी सुनी न हो, उसका भी ज्ञान हो जाता है। अगर चंद्र स्वर के साथ किसी वस्तु का विचार किया जाए तो दृष्टादृष्ट पदार्थ का भी ज्ञान हो जाता है।

जिस दिन प्रातःकाल से लेकर, पक्ष के विपरीत स्वर चले अर्थात चंद्र स्वर के उदयकाल में सूर्य स्वर और सूर्य के उदयकाल में चंद्र स्वर चलने लगे, तो उसका फल इस प्रकार होता है। पहले-ही-पहले अगर स्वर विपरीत चले तो

मन को क्लेश, दूसरी बार चले तो कष्ट, तीसरी बार मनोरथ सिद्ध न हो, चौथी बार विपरीत चलने से धन का नाश, पांचवी बार में शत्रु अधिक हो जाएं, छठी बार विपरीत चलने से हर कार्य में हानि, सातवीं बार विपरीत चलने से दुख मिलता है। अगर प्रातःकाल तथा मध्याह्न काल और सायंकाल आठ दिन बराबर, विपरीत स्वर चले तो उसका फल भी है। जब-जब प्रातःकाल और मध्याह्न काल के समय चंद्र स्वर और सायंकाल को सूर्य स्वर चले तो वह दिन अवश्य लाभदायक सिद्ध होगा। यात्रा पर जाते समय अगर बांया स्वर चल रहा हो तो पहले बाएं पैर को उठाकर आगे रखें और दाहिना स्वर चलता हो तो दाहिने पैर को उठाकर आगे रखें, तब यात्रा करना प्रारंभ करें। चंद्र स्वर में समपाद अर्थात दो, चार, छः, आठ, दस पूर्व पैर आगे रखकर यात्रा करें। अगर सूर्य स्वर चलता हो तो तीन, पांच, सात, नौ बायां पैर रखकर यात्रा करें, तो मनोरथ सिद्ध होता है।

प्रातःकाल सोकर उठें, तब जिस अंग का स्वर चल रहा हो, उसी अंग की हथेली को अपने मुख से चूमें तो वह दिन बड़ी प्रसन्नता से बीतता है।

अगर किसी से कुछ लेना हो अथवा कहीं बाहर जाना हो, तो जिस अंग का स्वर चलता हो, उसी अंग के हाथ को उठाकर लेना-देना करें अथवा उसी अंग के पैर को आगे उठाकर चलें तो सोचा हुआ मनोरथ सिद्ध होगा। गुरु, राजा, मंत्री अपने बंधु से मिलने के लिए जाए तो खाली हाथ कभी नहीं जाएं। अग्निदाह, अधर्म, उच्चाटन, बादी का निग्रह इन कार्यों के लिए भी खाली हाथ नहीं जाना चाहिए। अगर कहीं दूर देश जाना हो तो चंद्र स्वर के चलने पर जाना चाहिए और पास ही जाना हो तो सूर्य स्वर के चलने पर जाना चाहिए। अगर नाड़ी शून्य चलती हो तो व्यावहारिक विषय में उच्चाटनादि करने में, शत्रुओं को ठगने में, क्रुद्ध हुए स्वामी को मनाने में, चोरी आदि करने में पूर्ण नाड़ी अशुभ फल देती है। अगर रण-क्षेत्र में संग्राम करना हो तो संग्राम फलीभूत होगा, जबकि यात्रा करने वाली नाड़ी नियत समय पर चल रही हो और स्वरों के अनुसार युद्ध की तैयारी कर, युद्ध हेतु यात्रा की हो। दूर देश की यात्रा में चंद्र स्वर फल देता है और प्रवेश तथा अन्य कार्य करने में सूर्य स्वर ही प्रधान है। अधर्म के कार्य करने में अगर योग नाड़ी चल रही हो अथवा योग्य स्थान पर अयोग्य स्वर चलने लगे तो कोई कार्य सिद्ध नहीं होगा। जिस समय चंद्र स्वर चलता है, उस समय मनुष्य अनेक अपराध सह लेता

है और जब सूर्य स्वर चलता है तो वह बड़े-बड़े बलवानों को भी नियंत्रण में कर लेता है। संमुख नाड़ी में युक्ति चल जाती है। इस प्रकार स्वर त्रिगुण धरकर तीनों जनों को धारण किए रहते हैं। जैसे-जैसे स्वर ज्ञान मनुष्य को होता जाता है, वैसे-वैसे ही उसे शुभाशुभ फल का भी ज्ञान होता रहता है।

कार्य दो प्रकार के होते हैं—स्थिर और चर। इड़ा नाड़ी से सब स्थिर कार्य किए जाते हैं। जैसे आभूषण बनवाना फिर पहनकर, दूर देश की यात्रा करना या घर बनवाना, धर्मशाला बनवाना और अन्न आदि वस्तुओं का संग्रह करना, नींव रखना, दान देना, विवाह आदि करना, वस्त्र खरीदना, धार्मिक कार्य करना, दर्शन करना, व्यापार करना, शत्रु से संधि करना, मेल-मिलाप करना, आदि स्थिर कार्य चंद्र स्वर के चलते हुए करने शुभ हैं। विद्या प्राप्त करना, स्त्री संयोग, नाव या जहाज पर चढ़ना, भ्रष्ट कार्य करना, मदिरा पीकर सिद्धि करना, विध्वंस करना, हथियार बनाना और शिकार खेलना, चौपायों को बेचना, पत्थर घिसना अथवा काठ को चीरना या चिरवाना, मशीन बनाना, तंत्र-विद्या सीखना, पहाड़ों पर जाना, जुआ खेलना, चोरी करना, व्यायाम करना, मारण-उच्चाटन कर्मों का करना, यक्षणी, भूत-प्रेत, बेताल को वश में कर सिद्धि करना, मोहन, उच्चाटन, विद्वेषण, स्तंभन, वशीकरण, आकर्षित करना, प्रेताकर्षण करना और बस में करने के लिए भोजन करना, स्नान करना, यह सब कार्य सूर्य स्वर के चलते हुए करना श्रेष्ठ हैं। भोजन से मंदाग्नि करना, स्त्री को वशीभूत करना, सेनाओं के सब कार्य भी सूर्य स्वर चलते हुए करने से ही सिद्धि प्राप्त होती है। जितने भी चलने वाले कार्य हैं, सब सूर्य स्वर में ही श्रेष्ठ माने गए हैं। स्थिर कार्यों में चंद्र स्वर ही फलदायक है।

जब स्वर बार-बार बदलता दिखाई दे, यानी क्षण-भर में चंद्र स्वर और क्षण-भर में सूर्य, उस समय सुष्मुणा नाड़ी को बदला हुआ जानना चाहिए, यानी सुष्मुणा स्वर को चलता हुआ समझो, इस स्वर के चलते समय जो भी कार्य किया जाएगा, वह निष्फल हो जाएगा। यह स्वर सब कार्यों को नष्ट करने वाला है, इसलिए शुभ-अशुभ कार्य इस स्वर के चलते समय जो भी होगा, सब बिगड़ जाएगा। जिस पुरुष की इड़ा और पिंगला नाड़ी चलने का क्रम छोड़ दे, यानी इड़ा के पश्चात पिंगला और पिंगला के पश्चात इड़ा घंटे-घंटे भर बाद चले, तो जान लेना चाहिए कि अब कोई अवश्य अशुभ फल निकलेगा।

अगर सूर्य स्वर ऊपर की ओर अथवा आगे या पीछे की ओर या दायां और बायां स्वर तिरछी चाल चले तो वह निष्फल होगा।

बाएं स्वर से पहले या पीछे अथवा दाहिने स्वर के पहले या पीछे, क्रिया गुण स्वर चलते हों तो वह व्यक्ति सब सिद्धि की प्राप्ति करेगा। ऐसे समय में जो भी कार्य किए जाएंगे, उनका फल शुभदायक होगा। सुष्मुणा नाड़ी के चलते समय निराहार रहकर, जो मनुष्य ब्रह्म में लीन होता है, वह योग की प्राप्ति करता है। ईश्वर ने पांच तत्त्वों से सृष्टि की रचना की है। सो प्रलय के समय यह सारी सृष्टि इन्हीं पांच तत्त्वों में ही लीन हो जाती है। इससे परे जो निरंजन ब्रह्म है, उसी को तत्त्व कहते हैं। तत्त्वों के द्वारा मानव शुभ-अशुभ कार्य करता है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पांच तत्त्व हैं; इन्हीं पांचों के संग्रह से विश्व की रचना हुई और लोकों का निर्माण हुआ है। जो मनुष्य इस ज्ञान को जान लेता है, संसार में जितने भी मनुष्य हैं वे सब इन्हीं तत्त्वों से बने हैं, परंतु उनमें भी स्वर भेद प्रधान है। ये तत्त्व प्रत्येक प्राणी के दाएं और बाएं अंग में उदय होते हैं अथवा दाएं और बाएं अंग में स्वर चलते रहते हैं। प्रत्येक स्वर के साथ-साथ यह पांचों तत्त्व भी चलते रहते हैं। प्रत्येक तत्त्व आधी घड़ी तक रहता है, उसी प्रकार आधी-आधी घड़ी अर्थात चौबीस-चौबीस मिनट बाद, एक-एक तत्त्व क्रम में बदलता रहता है।

अगर श्वास नाक के नथुनों के मध्य से चले तो भूमि तत्त्व, नीचे की ओर चले तो जल तत्त्व और ऊपर की ओर श्वास चल रहा हो तो अग्नि तत्त्व समझो। इसी प्रकार अगर तिरछा श्वास चल रहा हो तो वायु तत्त्व और भिचकर चल रहा हो तो आकाश तत्त्व जानो।

जब भूमि तत्त्व चलता है तो मुख का स्वाद मीठा हो जाता है और जल तत्त्व के चलने पर मुख का स्वाद कसैला हो जाता है और अगर चटपटा जायका मालूम हो तो अग्नि तत्त्व और खट्टा स्वाद अनुभव हो तो वायु तत्त्व तथा कड़वा स्वाद आकाश तत्त्व का बोध कराता है।

जिस समय नाक श्वास आठ उंगल प्रतीत हो तो उस समय वायु तत्त्व चलता हुआ समझो और जब चार उंगल श्वास चल रहा हो तो अग्नि तत्त्व तथा बारह उंगल लंबाई हो तो पृथ्वी तत्त्व और सोलह उंगल लंबा होने पर, जल तत्त्व जानो। जिस समय दोनों स्वर पूर्ण हो जाएं और बाहर उनको प्रकाश दिखाई न दे, उस समय आकाश तत्त्व चलता हुआ जानो। अगर स्वर

ऊपर को चले तो मारण कर्म करें, अगर नीचे को चले, तो शांति कर्म करें, तिरछा चले तो उच्चाटन कर्म करें, मध्य में चले तो साधना कर्म करें और जब दोनों स्वर बराबर हो जाएं, तब मध्यम कर्म करने चाहिए।

भूमि तत्त्व के चलते समय तथा जल तत्त्व के चलते समय स्थिर कर्म किए जाते हैं। अग्नि तत्त्व के चलते समय मारणोच्चाटनादि क्रूर कर्म किए जाते हैं। आकाश तत्त्व में कुछ कर्म नहीं किया जाता, योगाभ्यास करना ही श्रेष्ठ है। इस तत्त्व में सब कर्मों का फल शून्य होता है। पृथ्वी और जल तत्त्व के चलते समय जो भी कार्य किया जाता है, वही सिद्धि को प्राप्त होता है। आकाश तत्त्व में सब कार्य निष्फल हो जाते हैं। भूमि तत्त्व के समय जो कार्य किया जाता है, वह विलंब से सिद्ध होता है। जल तत्त्व में किया हुआ कार्य तत्काल फल देता है। अग्नि तत्त्व में और पवन तत्त्व में जो कार्य किया जाएगा उससे हानि होती है। आकाश तत्त्व में किए कार्यों से निष्फलता प्राप्त होती है।

पृथ्वी तत्त्व का रंग पीला होता है और मध्यम गति से धीरे-धीरे चलता है, लंबाई इसकी ठोड़ी तक की होती है। इस तत्त्व से धर्म के सब स्थिर कार्य किए जाते हैं। पृथ्वी तत्त्व के सब कार्य सिद्ध होते हैं। वायु तत्त्व सदैव नीचे की तरफ चलता है। चाल इसकी शीघ्रगामी है, लंबाई इसकी सोलह उंगल है और रंग इसका श्वेत होता है और यह शीतल गति वाला होता है। यह तत्त्व शुभ कार्यों में अच्छा है। अग्नि तत्त्व ऊपर को चलता है। इसकी चाल भौंहों में रहती है। वर्ण इसका लाल है तथा अत्यंत गर्म होता है। चार उंगल प्रमाण से सदैव ऊंचा चलता है। यह तत्त्व क्रूर कर्म करने के लिए श्रेष्ठ है। वायु तत्त्व की प्रकृति गर्म और रंग काला होता है। कोई-कोई तत्त्ववेता इसको हरा भी बताते हैं। शीतल इसका वर्ण है, यह आठ उंगल प्रमाण वाला होता है, यह तत्त्व चार तंत्र कर्मों के लिए श्रेष्ठ है। आकाश तत्त्व एक ही चाल पर सीधा चलता है और सब तत्त्वों के गुणों को बढ़ाने वाला है, इस तत्त्व से योगाभ्यास किया जाता है।

पृथ्वी तत्त्व चतुर्थकोण पीले वर्ण और मधुर स्वाद वाला, मध्यम गति से चलने वाला, बारह उंगल प्रमाण में चलने वाला होता है। जल तत्त्व सफेद रंग वाला मध्यम चंद्राकार, कसेला स्वाद, काला नीला, सोलह उंगल के प्रमाण में चलने वाला, लाभदायक जल तत्त्व ही है। वायु तत्त्व गोलाकार, नीले वर्ण वाला कोई-कोई इसे हरे रंग का भी कहते हैं। चंचल और तिरछा चलने वाला है। आठ उंगल प्रमाण में इसकी लंबाई है और ये ही वायु तत्त्व भी कहलाता है।

आकाश तत्त्व नीला जिसका रंग है और खट्टा जिसका स्वाद है। कुछ लोगों का मत है, इस तत्त्व का वर्ण और स्वाद होता ही नहीं, परंतु यह सबको मोक्ष देने वाला है। इस तत्त्व के चलते समय जो कार्य किए जाएंगे, वे सब निष्फल होते हैं। अग्नि तत्त्व—त्रिकोण रूप में तिरछा बहने वाला, ऊपर को चलने वाला, दीप्ति रूप पायमान, उंगल के प्रमाण में बहने वाला, अग्नितत्त्व है, इसका स्वरूप महान तेज है।

पूर्व से पश्चिम तक, पृथ्वी तत्त्व रहता है—जिसके मध्य में आकाश तत्त्व का निवास है। चंद्रमा पृथ्वी तत्त्व और जल तत्त्व का देवता है, अग्नि तत्त्व में सूर्य देवता है। इनसे शुभ कर्मों की सिद्धि प्राप्त होती है, इसलिए ये दोनों तत्त्व हर वक्त लाभदायक हैं। पृथ्वी तत्त्व सदैव दिन में सिद्धि देता है। जल तत्त्व रात्रि में फल देता है। अग्नि तत्त्व से मृत योग बनता है। वायु तत्त्व से क्षय रोग होता है। आकाश तत्त्व कभी-कभी शुभ फलदायक भी होता है।

पृथ्वी तत्त्व में बुध का वास है और जल तत्त्व में चंद्रमा का। अग्नि तत्त्व में शुक्र, रविवार और मंगल का भी वास है। वायु तत्त्व में राहु, शनि का निवास है। आकाश तत्त्व में बृहस्पति का निवास है। पृथ्वी तत्त्व का निवास मनुष्य के हाड़-मांस, त्वचा, स्वर और रोम में रहता है। यही पांच गुण पृथ्वी तत्त्व में रहते हैं, इन्हीं से मनुष्य को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति होती है। मनुष्य के शरीर में शुक्र अर्थात वीर्य शोणित यानी रक्त या खून, मज्जा, मूत्र और लार यह पांच गुण जल तत्त्व माने गए हैं। अग्नि तत्त्व का भाग शरीर में भूख, प्यास, नींद, आलस्य, क्रांत यह पांचों गुण अग्नि तत्त्व के हैं।

वायु तत्त्व से ही मनुष्य चलता-फिरता, दौड़ता, पैरों को फैलाता तथा सिकोड़ता है। आकाश तत्त्व से ही मनुष्य में राग-द्वेष, लज्जा, भय और मोह उत्पन्न होता है।

जिस समय मनुष्य पूर्ण अवस्था को पहुंच जाता है, उस समय देह में सौ पल पृथ्वी तत्त्व का बोझ बढ़ जाता है। चालीस पल जल तत्त्व का, तीस पल अग्नि तत्त्व का, बीस पल वायु तत्त्व का और दस पल आकाश तत्त्व का बोझ हो जाता है। इस गणना में मनुष्य रोगी हो जाता है।

शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध यह पांच गुण पृथ्वी तत्त्व के हैं। स्पर्श, रूप, रस, शब्द यह चार गुण जल तत्त्व के हैं। शब्द, स्पर्श, रूप यह तीन गुण अग्नि तत्त्व के हैं। सिर्फ शब्द गुण आकाश तत्त्व का है।

पृथ्वी तत्त्वों के नक्षत्रों के नाम, धनिष्ठा, रोहिणी, ज्येष्ठा, अनुराधा, श्रवण, अभिजित, उत्तराषाढ़ा। जल तत्त्वों के नक्षत्रों के नाम पूर्वाषाढ़ा, श्लेषा, मूल, आर्द्रा, रेवती, उत्तराभाद्रपद, शतभिषा। अग्नि तत्त्व के नक्षत्रों के नाम, भरणी, कृतका, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, रेवती। वायु तत्त्व के नक्षत्रों के नाम—विषया, उत्तरा फाल्गुनी, हस्तचित्रा, पुर्नवसु अश्वयी, मृगशिरा।

पृथ्वी का स्वर लं बीज, जो चतुष्कोण रूप वाला है और सोने के स्वरूप जैसा पीला जिसका रंग है। पीली ही जिसकी क्रांति है, ऐसा सुगंध रूप, जो दुर्गा भवानी है। जो साधक जल तत्त्व स्वर में जल रूप 'व' बीज को अर्ध चंद्रमा के समान, क्रांति वाला जान ध्यान करेगा अथवा 'व' बीज को चंद्र देव का रूप समझकर, हृदय से ध्यान करेगा, वह भूख प्यास सबको सहन करने की शक्ति प्राप्त कर लेगा।

अग्नि तत्त्व स्वर में जो साधक त्रिकोण वाले अरुण, क्रांति वाले 'रं' बीज का ध्यान करता है। वह अग्नि को भी पान कर लेता है। उसे अग्नि का भय नहीं रहता। जो साधक वायु तत्त्व के स्वर में गोलाकार, श्याम वर्ण वाले, जिसकी काली क्रांति हो ऐसे 'पं' बीज का ध्यान करने से मनुष्य आकाश में चलने के समतुल्य, बड़ी तेज गमन अवस्था की प्राप्ति कर लेता है, यानी तेज चलने वाला हो सकता है। जो साधक आकाश तत्त्व के रूप में बीज है, जिसका कोई रूप नहीं है, यानी निराकार शून्य मात्र है, उसका ध्यान करने से उसको भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों का ज्ञान हो जाता है। यही प्राण वायु जिस समय शरीर में प्रवेश करती है, उस समय यह दस उंगल की होती है और जब बाहर निकलती है, तब लगभग बारह उंगल प्रमाण की बन जाती है। जब प्राणी चलता-फिरता है, तब इसका प्रमाण बीस उंगल का होता है और जब प्राणी दौड़ने-उछलने या कूदने लगता है, तब यह ब्यालीस उंगल की हो जाती है।

प्राकृतिक प्राण वायु के चलने का प्रमाण बारह उंगल का है। भोजन करते समय यह अट्ठारह उंगल का हो जाता है और जब मनुष्य बोलता-चालता है, तब भी प्राण वायु का प्रमाण अट्ठारह उंगल ही रहता है।

पुरुष अंग में दाहिनी और स्त्री अंग में बाईं नाड़ी की प्रधानता होती है। इसकी नौ प्रकार की तीन गति कही हैं, इसलिए कुंभक नाड़ी द्वारा युद्ध जीता जाता है।

जो साधक तत्त्व ज्ञानी होता है, उसे यश की प्राप्ति होती है। स्वरोदय शास्त्र पढ़ने वाले को सदाचारी होना परम आवश्यक है, जो मनुष्य स्वरोदय शास्त्र पढ़कर और स्वयं को लोभ करके बेचता है और प्रपंची बनकर उत्तर देता है, उसका उत्तर मिथ्या होता है। स्वरों से बढ़कर कोई ज्ञान इस विश्व में नहीं है। स्वर ज्ञान से मनुष्य ईश्वर की प्राप्ति कर लेता है। स्वरों का यह महान ज्ञान सब से पहले शिव ने पार्वती को सुनाया था, उसी को गोरखनाथ ने समझाया है। स्वर ज्ञान ही विश्व में सुख का दाता है। स्वरों से बढ़कर कोई भी बड़ी शक्ति नहीं है, जो मनुष्य को सारे सुखों का आनंद दे सके। स्वर जानने वाले साधक का वचन मिथ्या नहीं जाता। उसके कहे हुए वचन सदैव सत्य होते हैं। स्वरों का बोध करने से मनुष्य सदाचारी, सत्यवादी, निष्काम हो जाता है। अर्थ, काम, मोक्ष यह तीनों पदार्थ स्वर ज्ञान से ही प्राप्त होते हैं। जो साधक स्वर ज्ञान और तत्त्व ज्ञान का पूर्ण अभिलाषी होता है, वही इन दुर्लभ पदार्थों को पा सकता है। तब संसार उसके अनुकूल होकर रहता है।

नाथों के चमत्कार

नाथ संप्रदाय के पितामह भगवान दत्तात्रेय हैं। भगवान दत्तात्रेय से शाबर मंत्र मछेन्द्रनाथ और फिर गोरखनाथ को प्राप्त हुए। इसके पश्चात यह विद्या नवनाथों तक चली आई। आदि गुरु शंकराचार्य ने भी तपस्या करके 'शाबरी माता' का आशीर्वाद प्राप्त किया था। 'नव-नाथ-पंथ' में 'शाबर' मंत्रों को ही प्रमुखता प्राप्त थी, परंतु इसका दुरुपयोग न हो, इसलिए यह विद्या गुप्त ही रही।

'शाबर मंत्र साधना' का प्रारंभ किसी भी शुक्ल पक्ष के मंगलवार या शुक्रवार से करना चाहिए। सबसे पहले संकल्प करें—"हे माता! आज से मैं मंत्र का 'जप' आरंभ करता हूं। मेरी आधि-व्याधि, दुख-दारिद्रय से रक्षा करना और मुझे शीघ्र दर्शन देना।"

संकल्प के बाद 21 दिनों का अनुष्ठान अवश्य करें। नित्य 21 माला 'जप' करें। इसके पश्चात नित्य एक माला जप करते रहें। जप पूर्वाभिमुख होकर ही करना चाहिए।

'शाबर मंत्रों' के अनुष्ठान में सफलता के लिए 'शाबरी यंत्र' को सिद्ध करना चाहिए। इसके लिए अपने सामने लकड़ी की एक चौकी रखें। उस पर पीला रेशमी वस्त्र बिछाएं। रेशमी वस्त्र पर तीन या पांच मुट्ठी चावल रखें। चावल के सामने सर्व सिद्धिदायक 'शाबर यंत्र' रखे। 'यंत्र' को स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दें। फिर उस पर चंदन, रोली आदि लगाएं। यंत्र के संमुख दीप जलाएं और गुलाब की अगरबत्ती-धूपादि से सुगंधित करें। पुष्प और बिल्व-पत्रादि चढ़ाएं। तब यंत्र के संमुख हाथ जोड़कर निम्न मंत्र पढ़ें—

ॐ ह्रांक ह्रींक क्लींक ह्रोंक व्ह्यक हे।

उक्त मंत्र पढ़ने के पश्चात दो माला निम्न मंत्र जपें—

ॐ नमो शाबरी-शक्ति। मम अरिष्ट निवारय, मम सर्व-कार्य सिध्यं, सिद्धं कुरु कुरु स्वाहा।
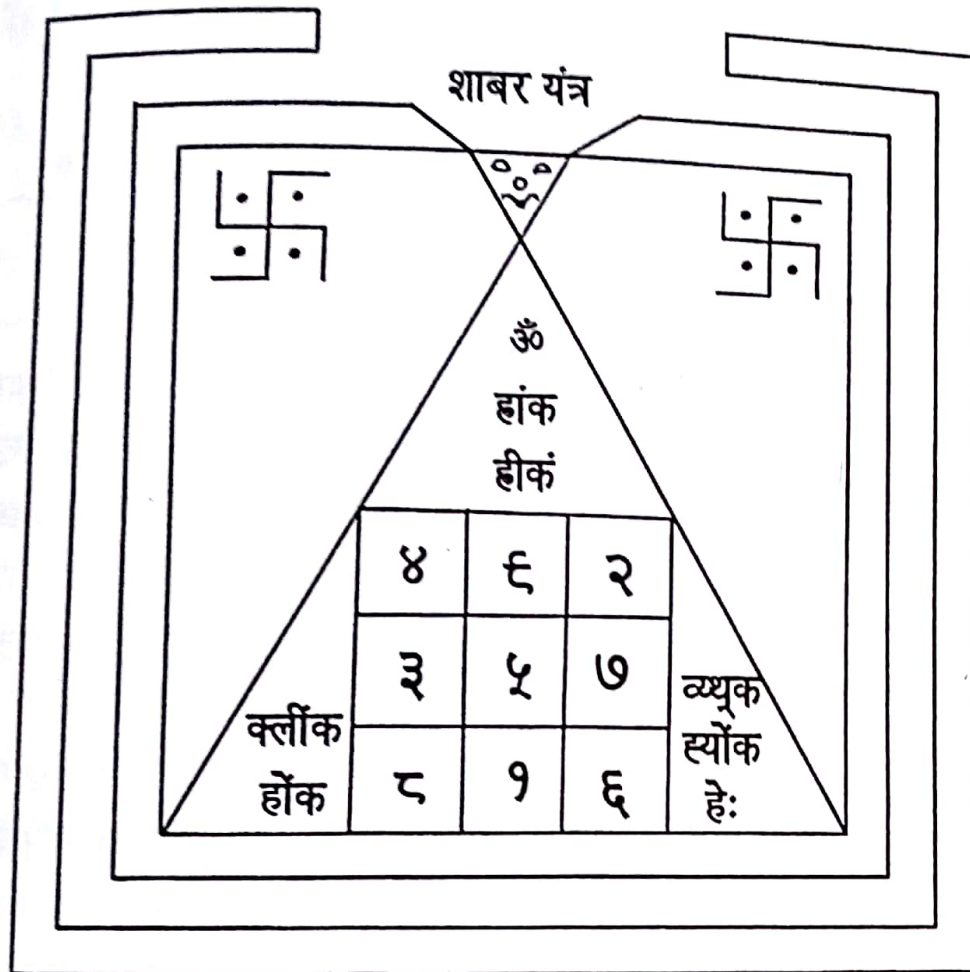
शाबर यंत्र

'जप' के पश्चात 'यंत्र' को प्रणाम कर चांदी के खोल (यंत्र) में अपने पास रखें। इससे सभी कार्य शीघ्र सिद्ध होंगे। संकटों का निवारण होगा। दुख-दारिद्र की निवृत्ति होगी और धन की प्राप्ति होगी। 'यंत्र' जहां भी होगा या स्थापित होगा, वहां की सभी प्रकार की अला-बला, उपद्रव स्वतः नष्ट हो जाते हैं।

प्रिय पाठकों! मैं अपने जीवन में सहज ही रहा हूं। आडंबर या गाल बजाने की मेरी आदत नहीं है। रंग-बिरंगे वस्त्र पहनकर लोगों को आकर्षित करना या चमत्कार दिखाकर आश्चर्यचकित करना मुझे कभी भी प्रिय नहीं रहा है। मेरे जीवन में अनेक बार ऐसे अघोरी, औघड़, तांत्रिक आए, जिनके चमत्कारों ने मुझे बहुत ज्यादा प्रभावित किया। इसी प्रकार की एक घटना प्रस्तुत है।

बीना के हाथ में बेहद खूबसूरत और चारों ओर गहरी मादक सुगंध छोड़ता छोटा-सा गुलाब का फूल देखकर कक्षा की तमाम लड़कियां आश्चर्य में डूब गईं। गुलाब की खुशबू से सारा कमरा महक उठा था। उसी खुशबू ने कक्षा की तमाम लड़कियों को बीना के पास इकट्टा कर दिया था। सब उसकी ओर देख रही थीं और नौ-दस साल की बीना मंद-मंद मुस्करा रही थी।

"फूल कहां से लाई बीना?"

बीना चुप।

"किसने दिया?"

प्रत्येक प्रश्न पर उसकी मुस्कराहट और चौड़ी हो जाती थी, पर वह किसी को जवाब न दे रही थी, उस छोटे-से गुलाब के फूल की खूबसूरती और महक ने उसे स्वयं मोह रखा था। भीनी-भीनी सुगंध से कमरा इस प्रकार सुवासित हो गया था, मानो एक साथ पच्चीसों अगरबत्तियां सुलगाकर लगा दी गई हो। सबका चित्त प्रसन्न हो रहा था। बीना थी कि उस खूबसूरत फूल को अपनी उंगलियों से नचा-नचाकर सबको दिखा रही थी।

"अरी! किसने दिया, बता न?"

बीना चुप।

"कहां से लाई है?" बीना मौन, केवल मुस्कान और चौड़ी।

"किस बगीचे से लाई है?" बीना कोई जवाब न दे रही थी, उस गुलाब के फूल की पंखुडियां बेहद खूबसूरत थीं। अष्टाचक्र रूप में पंखुड़ियों की खूबसूरती देखते ही बनती थी। रंग एकदम गहरा लाल और सुगंध का तो मानो फव्वारा ही फूट रहा था। फूल विशेष बड़ा न था। उसकी पंखुड़ियां उसी प्रकार सिकुड़ी-सिमटी थीं, जैसे कोई नववधू सुहागरात के समय अपने नव-विवाहित पति को अचानक कमरे में देखकर सिकुड़-सिमट जाती है।

तभी क्लास शुरू होने की घंटी बजी। बीना हड़बड़ाकर उस फूल को अपने बस्ते में रखने लगी।

"अरे! अरे!" एक सहेली बोल उठी—"खराब हो जाएगा, फ्राक में लगा ले।"

क्लास शुरू होने की घंटी खत्म होते ही टीचर आ गई, पर क्लास रूम में कदम रखते ही सुगंध से उनका संपूर्ण तन डोल गया। वह खुशबू थी तो गुलाब की, पर इतनी मुग्ध और प्रफुल्लित कर देने वाली...। उन्होंने पूरी क्लास पर

नजर डाली और जानने की कोशिश की कि खुशबू कहां से आ रही है, कौन-सी लड़की ऐसी खुशबू लेकर आई है?

तीव्र सांस ले टीचर प्रफुल्लित हो गई। तन-मन सुगंध सागर में डूब गया। मुस्कराकर पूछा—"अरे! इतनी अच्छी खुशबू कहां से आ रही है? कौन लाया है गुलाब?"

मैडम का इतना पूछना था कि तीन-चार लड़कियां एक साथ बोल उठीं—"टीचर, बीना गुलाब का फूल लाई है।"

मैडम बीना के पास आ गई।

"जी...।"

"कहां से लाई?" बीना चुप।

"तुम्हारे बगीचे का है क्या?" मैडम मुस्कराकर पूछ बैठी।

बीना खामोश। उसके नन्हें-नन्हें अधर कांपकर रह गए। निगाहें झुक गईं।

"किसने दिया बता न?"

"जी...जी...मना किया है।"

"पागल!" मैडम खिलखिलाकर हंस पड़ी। अच्छा बैठ जा, बैठ जा और वह अपने स्थान पर आकर क्लास लेने लगीं। बीना के उस विचित्र फूल से सारी क्लास महकती रही।

बीना पढ़ाई में लग गई।

स्कूल की छुट्टी होने पर सारी राह वह उस फूल की खुशबू बिखेरती हुई घर आ गई, तो मां भी हैरान रह गई। बीना से फूल लेकर वह निहारने लगी। उसके अछूते सौंदर्य के साथ-साथ उसकी खुशबू पर भी मुग्ध हो गई। दो बच्चों की मां होने के बावजूद उसका यौवन कसमसाने लगा। नासिका से एक लंबी सांस ले, उसकी भरपूर सुगंध ले वह झूमती-सी पूछ उठी—"बीना बेटी, कहां से लाई यह फूल?"

बीना चुप।

"किसने दिया?"

वह कुछ न बोली।

मां ने उसे बहुत झंझोड़ा—"बता न कहां से लाई?"

बीना कुछ घबरा गई—"मां, बता देने से इसकी खुशबू चली जाएगी।" उसका स्वर डरा सहमा-सा था।

मां नवयौवना के समान खिलखिलाकर हंस पड़ी—"पगली, भला तेरे बता देने से इसकी खुशबू चली जाएगी। जब यह मुरझा जाएगा, तब जाएगी। एक-दो रोज तो इसे पानी में डाल तरोताजा रखूंगी। आह! कितनी बढ़िया खुशबू है।" वह झूम उठी।

"न मां न।" उसने कहा—"जैसे ही बता दूंगी किसी को कि किसने फूल दिया है, तो इसकी खुशबू उसी समय खत्म हो जाएगी।"

"अच्छा! बता तो सही। देखूं, कैसे खत्म होती है इसकी खुशबू इसी वक्त...। तू बता तो...।"

बीना हिचकिचा गई। मां के बार-बार अनुरोध को टालने का साहस उसमें न था। मां मुस्कराकर उसे ही देख रही थी। बीना रहस्य छिपाए न रख सकी।

"राम-जानकी मंदिर की बगल में शंकरजी का जो मंदिर है न मां...।"

"हां बेटी, हां।"

"उसी के सामने एक बाबा पड़ा रहता है। वह कोई गंदी चीज खा रहा था। उसे देखकर सब छीःछीः कर भाग रहे थे, पर मैं मुस्कराकर देखती रह गई तो बाबा ने फूल मुझे दे दिया।" (अनजान होने के कारण बीना अघोरी को बाबा बता रही थी)।

मां की आंखें फटी रह गईं—"बाबा ने दिया! बाबा तो अवश्य ही चमत्कारी मालूम पड़ता है।" वह पथरा-सी गई और तभी पल-भर में ही सारी खुशबू गायब हो गई। मां के हाथ में थमा वह गुलाब का फूल मुरझा गया। खुशबू गायब।

बीना घबराकर बोली—"देखो मां! मैंने कहा था न खुशबू गायब हो गई और देखो फूल भी मुरझा गया।"

बीना की बात को एकदम सच पाया। मां के हाथ से फूल गिर गया।

वह पथरा गई।

पल-भर में ही सारी खुशबू गायब और फूल भी मुरझा गया।

बीना का कहना एकदम ठीक था। इसी कारण से वह बताने से डर रही थी। कुछ पल बाद मां की चेतना लौटी।

"चल! बाबा के पास। देखूं तो कौन बाबा हैं?"

मां ने उसका हाथ पकड़ लिया।

दोनों रिक्शा कर राम-जानकी मंदिर की ओर चल पड़ीं। राम-जानकी

मंदिर के पास अनेक छोटे-छोटे मंदिर हैं। उनके ही मध्य एक सरोवर है। बीना एक मंदिर के सामने रुकी। मंदिर सड़क पर ही था। बोली—"बाबा यहीं पड़ा था।"

वह चारों ओर देखने लगी। बाबा कहीं न दिखा। वहां चीथड़े हो गया एक कपड़ा अवश्य था। बीना बोली—"बाबा इसी जगह पर पड़ा था, मां।"

"किधर गया?"

"क्या मालूम।" बीना चारों ओर देख रही थी। बाबा कहीं नहीं दिख रहा था। बगल में पान की दुकान थी। बीना की मां ने दुकानदार से पूछा—"भैया! एक बाबा यहां पड़ा रहता था। कहां गया?"

"गन्दा बाबा।" दुकानदार घृणा से बोला—"चला गया होगा कहीं, उसने इतनी गन्दगी यहां फैला रखी है कि मेरी तो दुकानदारी ही चौपट हो गई है। रोज गालियां देता हूं। पानी फेंकता हूं, पर इतना बेशर्म है कि हटने का नाम ही नहीं लेता। अभी अपने मन से कहीं उठकर गया है।"

मां चुप रह गई।

"चल फिर आएंगे।" मां बीना के साथ घर लौट पड़ी।

दोनों घर आ गईं। बीना खेलने चली गई। मां घर के काम में लग गई। कुछ देर बाद ही उनके दरवाजे से बहुत जोरदार बदबू आने लगी। देखा, तो एक बूढ़ा काला कलूटा, डरावनी लाल आंखें, गला-सड़ा हुआ टाट लपेटे खड़ा था। बदबू उसके पास से ही आ रही थी।

"मां! कुछ खाने को दे। बहुत भूखा हूं। सामने वाले घर से तो लोगों ने मारकर भगा दिया।" सामने लखपति सेठ नंदकिशोर का आलीशान मकान था।

बीना की मां की आंखें चमक उठीं। "अरे! यह तो वही बाबा मालूम पड़ता है।" बड़े आदर से कहा—"आओ बाबा आओ।"

बाबा भीतर आ गया। बदबू इतनी तेज हो गई कि बर्दाश्त के बाहर, पर बीना की मां मुस्कराती रही—"क्या खाओगे बाबा, बोलो।"

"बेटी, मैं विष्ठा खाऊंगा। थोड़ी-सी मेरे पास है।" वह बाबा अपनी हथेली पर कहीं से लाई विष्ठा रखकर बड़े स्वाद से खाने लगा।

बीना की मां का जी मिचला गया। कै गले तक आ गई। आंखें डबडबा आईं। गला खुश्क पड़ गया। देह अत्यंत जोर से कांपने लगी। वह चपर-चपर कर विष्ठा खा रहा था। जैसे सूअर या कुत्ते खाते हैं।

"ब...ब...ब...बाबा...म...म...मैं...प...प...पानी लाती हूं।" वह तेजी से भीतर चली गई।

जब लोटे में पानी लेकर आई तो हैरान रह गई। सारा वातावरण गुलाब की मादक सुगंध से भर गया था और उसके सामने वह अघोरी खड़ा मुस्करा रहा था।

"सदा सुखी रहो मां!" उसने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया।

बीना की मां...हैरान...वह बाबा तेजी से बाहर चला गया।

चकित बीना की मां दौड़कर दरवाजे तक आई, देखा। उस बाबा का कोई पता न था। हां, वह कुछ बच्चों को पत्थर उछालते अवश्य देख रही थी।

बीना की मां देखती रही। कुछ देर बाद घर में से खुशबू गायब हो गई और सब कुछ सामान्य हो गया।

शाम को बीना के पिता अशोक माहेश्वरी आए। बोले—"आज सेठ ने पांच हजार रुपया इनाम का दिया। उसको मेरे परामर्श से बड़ा लाभ हुआ है।"

"पांच हजार।"

"हां पांच हजार, ये रखो।"

बीना के पिता ने नए नोटों की गड्डी निकालकर सामने रख दी। बीना की मां की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। बोली—"एक काम करो। ये रुपये हैं, इसके साथ-साथ तुम मेरे जेवर गिरवी रख दो। इस पैसे से एक दुकान कर लो।"

"क्या कहती हो?" पति चौंके।

"तुम एक बार कर तो लो।"

बीना की मां अड़ गई तो उन्होंने आढ़त की दुकान कर ली। मुनीमी का काम छोड़ दिया। आढ़त की दुकान करते ही रुपयों की बारिश होने लगी। बारदाना दुकान पर आने के साथ ही हाथों-हाथ बिक जाता था।

बीना की मां गंदे बाबा की तलाश में कई बार गई, पर गंदा बाबा कहीं नहीं दिखा, न मिला।

देखते-देखते बीना के माता-पिता संपन्न हो गए। रुपयों को संभालना मुश्किल होने लगा पर सब ठीक था। बीना की मां उस विसक्षरा अघोरी के नाम पर गरीबों को दान-पुण्य करने लगी।

सामने वाला संपन्न लखपति नंद किशोर कंगाल हो गया। पैसे-पैसे को

मोहताज और इसका रहस्य केवल बीना की मां को ज्ञात था। अपने पति से उसने सब बता दिया था। उसने भी गंदा बाबा की बड़ी तलाश की पर कहीं पता न चला। जिस दुकानदार के पास वाली पटरी पर वह बैठा करता था और जो उसे दुत्कारता था, उसकी दुकान इस तरह चौपट हुई कि वह दुकान छोड़कर चला गया। बीना की मां से पूछने पर वह विश्वासपूर्वक कहती है—"बाबा, एक बार बीना के विवाह पर अवश्य आएंगे।" उसका यह विश्वास टूटता है या रहता है, इसका निर्णय तो समय करेगा। इस सत्य घटना से अघोरियों, औघड़ों के घुमक्कड़ और अलमस्त स्वभाव को तो समझ गए होंगे।

गुरु गोरखनाथ से संबंधित एक प्रसिद्ध घटना प्रस्तुत है। एक बार पवनसुत हनुमानजी को सूचना मिली कि गुरु मछेन्द्रनाथ का शिष्य गोरखनाथ शक्तिशाली हो गया है, जबकि उसका गुरु त्रिया राज्य के भीतर, भोग-विलास की दलदल में फंसा है। हनुमानजी ने सारा वृतांत भगवान को जा सुनाया, तब भगवान बोले—"इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है? जप-तप में बड़ी शक्ति होती है, सिद्धि में ही समस्त गुण बसते हैं। तपस्वी क्या नहीं कर सकता? तपस्वी से भिड़ना कोई हंसी-खेल नहीं।"

हनुमानजी बोले—"प्रभु, एक-से-एक बड़े साधक, उपासक इस संसार में हैं। क्या वे तपस्वी के आगे सभी निर्बल हैं? क्या तपस्वी से सब ही का दरजा नीचा है?"

भगवान बोले—"बात ही कुछ इस प्रकार की है। गोरखनाथ का अभिप्राय आपका अपमान करना नहीं है, वे तो केवल अपने गुरु मछेन्द्रनाथ को इस राज्य की कीचड़ से बाहर निकालकर अपने साथ ले जाना चाहते हैं। इसी कारण से उनके नाथ संप्रदाय की चर्चा हो रही है। उन्होंने अपना चमत्कार दिखाकर सूचित किया है कि आप उनके कार्य में बाधा न डालें।"

भगवान राम की बात सुनकर हनुमानजी बोले—"प्रभु, मछेन्द्रनाथजी तो मेरी इच्छानुसार ही त्रिया राज्य की रानी मैनाकिनी के साथ रहते हैं। मैंने ही मैनाकिनी महारानी को उनकी सेवा करने का आदेश दिया है। अगर ये अपने गुरु मछेन्द्रनाथजी को त्रिया राज्य से निकाल ले जाएंगे तो भारी समस्या होगी।"

भगवान बोले—"परंतु कोई दूसरा उपाय भी तो नहीं है। वह अपने गुरु को अपने साथ ले जाने के लिए ही यहां तक आए हैं, उन्हें इस कार्य से कैसे रोका जा सकता है?"

हनुमानजी बोले—"प्रभु, अगर आप उन्हें समझाएं तो क्या आपकी बात भी नहीं मानेंगे, कोई किसी की अन्यायपूर्ण बात क्यों स्वीकार करेगा। कृपा कर आप उन्हें मेरे साथ चलकर एक बार समझाकर तो देखें। शायद आपकी बात मान जाएं?"

भगवान ने हनुमान की प्रार्थना स्वीकार कर ली। दोनों ब्राह्मण का भेष धारण कर, चिन्नापाटन की तरफ रवाना हुए और गोरखनाथ के सामने जा पहुंचे, जहां चिन्नापाटन में कालिंगा सुंदरी अपनी सखियों के साथ गहरी निद्रा में सो रही थी। वहीं गोरखनाथ अपने आसन पर विराजमान साधना कर रहे थे। रात्रि आधी से भी अधिक बीत चुकी थी। ऐसे समय में गोरखनाथ ने दो ब्राह्मणों को अपनी ओर आते देखा। गोरखनाथ को बड़ा आश्चर्य हुआ। एक तो रात्रि का समय, दूसरे पुरुष प्रवेश का वर्जित होना। इन दोनों को सीमा के भीतर आने से किसी ने क्यों नहीं रोका?

गोरखनाथ इसी प्रकार सोच रहे थे, तब तक वे दोनों उनके संमुख आ पहुंचे। उन्हें अपने सामने खड़ा देख, गोरखनाथ उठकर खड़े हो गए और आदरपूर्वक हाथ जोड़कर दोनों को प्रणाम किया और उन्हें अपने समीप बिठा लिया।

फिर गोरखनाथ बोले—"हे ब्राह्मण देवता! आप दोनों कौन हैं और किस उद्देश्य से यहां से पधारे हैं? अपना उद्देश्य बताने की कृपा करें।"

ब्राह्मण वेषधारी राम बोले—"हम दोनों एक विशेष कार्य के कारण आपके पास आए हैं। यदि आप उसे पूरा करने का वचन दें तो सभी कुछ बताया जाए।"

भगवान राम की वाणी सुनकर गोरखनाथ को संशय हुआ। वह सोचने लगे—'इन दोनों ब्राह्मणों का यहां आने का उद्देश्य जाने बिना वचन देने से कोई लाभ तो नहीं, परंतु हानि होने की संभावना अवश्य हो सकती है, न मालूम ये कौन हैं और मुझसे क्या चाहते हैं?' इस प्रकार अपने मन में सोच-विचारकर गोरखनाथ बोले—"हे विप्रवर! बिना आपका परिचय प्राप्त किए वचनबद्ध होना नीति के विरुद्ध है। वचन में पहले ही बंध जाने के कारण ब्राह्मण भेषधारी बटुक भगवान ने राजा बलि को पाताल लोक पहुंचा दिया था, इसलिए आप लोग पहले अपना परिचय दें?"

राम जानते थे कि उनका परिचय अवश्य पूछा जाएगा।

गोरखनाथ की बात सुनकर वे मुस्कराकर बोले—"गोरखनाथ, आपसे क्या छिपा है। मेरा नाम राम है और यह हनुमान है। मुझे आपके पास अपने इस भक्त के कारण आना पड़ा।"

गोरखनाथ ने दोनों के चरण छूकर उन्हें प्रणाम किया।

भगवान राम बोले—"अब तो परिचय मिल गया। अब आप हमारे कार्य को करने का वचन दें।"

गोरखनाथ बोले—"प्रभु, वचनबद्ध होने से पहले मैं आपकी इच्छा भी जानना चाहता हूं।"

रामजी बोले—"हनुमान अपनी इच्छा बताओ?"

भगवान राम की आज्ञा पाकर हनुमानजी बोले—"योगीराज, मुझे पता चला है कि मछेन्द्रनाथजी आपके गुरु हैं और आप उन्हें इस राज्य से बाहर निकालकर अपने साथ ले जाना चाहते हैं, परंतु मछेन्द्रनाथजी मेरी आज्ञानुसार यहां आए हैं, उन्हें यही रहने दें।"

इस पर गोरखनाथ बोले—"महाराज पवनसुत, मुझे आपकी आज्ञा न मानने का बड़ा दुख है, पर तनिक आप विचार करें, क्या अपने गुरु को इस नरक में गोते खाने के लिए यूं ही छोड़ देना उचित है? क्या उनकी साधना में विघ्न नहीं पड़ रहा है? उनके इस कर्म के कारण नाथ पंथ की कितनी निंदा हो रही है। आप तो त्रिकालदर्शी है, आप स्वयं ही देख लें।"

गोरखनाथ की बात सुनकर हनुमानजी गहरी सोच में पड़ गए। हनुमानजी को विचार करते देखकर गोरखनाथ बोले—"अंजनी सुत, मैं अपने गुरु को इस नरक कुंड से निकालकर ले जाना चाहता हूं, इस कार्य में आपको मेरा सहयोग करना चाहिए।"

हनुमानजी बोले—"जब मैंने उन्हें स्वयं यहां रखा है और मेरी इच्छा से वे यहां रह रहे हैं तो मैं आपकी सहायता किस प्रकार कर सकता हूं?"

गोरखनाथ बोले—"आपको सहायता करनी ही होगी, मैं इस कीचड़ से उन्हें अवश्य निकालूंगा।"

हनुमानजी थोड़ा क्रोधित होकर बोले—"मेरे होते हुए आप उन्हें यहां से निकालकर नहीं ले जा पाओगे।"

गोरखनाथ ने कहा—"आप भी सुन लो। संसार की कोई शक्ति मेरे इस कार्य में बाधा नहीं डाल सकती।"

इतना सुन हनुमानजी ने अपनी गदा उठाई तो रामचंद्रजी ने उन्हें रोककर समझाया—"पवनसुत, क्रोध में हर काम सरल नहीं हो पाता, आप शांत रहें। अगर गोरखनाथ अपना कार्य कुशलतापूर्वक करके अपने गुरु मछेन्द्रनाथ को अपने साथ ले भी जाएंगे तब भी तुम्हारे वचन की कोई निंदा नहीं कर सकता। कारण आप सदैव के लिए वचनबद्ध नहीं हुए थे।"

हनुमानजी नम्र पड़कर बोले—"प्रभु, अब मेरा कोई कार्य शेष नहीं रहा।"

तब श्रीराम बोले—"आप रानी मैनाकिनी और मछेन्द्रनाथ को सूचित कर दें कि आपके राज्य में, गोरखनाथ अपने गुरु को साथ ले जाने के लिए आ पहुंचा है। आप दोनों सावधान रहें।" इसके बाद भगवान राम ने गोरखनाथ को उपदेश देते हुए बताया—"हर मनुष्य के लिए अपने दिए हुए वचन का पालन करना आवश्यक है, जो लोग वचन देकर किसी के साथ धोखा करके, अपने वचन से फिर जाते हैं वे घोर नरक भोगते हैं। इस लोक में निंदा के पात्र होते हैं और परलोक में भी अनेक प्रकार के दुख भोगकर निकृष्ट योनियों में बार-बार जन्म लेकर जीते और मरते रहते हैं, जो प्रतिज्ञा का पालन करते हैं, उनकी देवताओं के समान शक्ति हो जाती है।"

भगवान राम की बात सुनकर गोरखनाथ बोले—"प्रभु, आपके इस उपदेश को मैं सदैव स्मरण रखूंगा और हमेशा वचन का पालन करूंगा।" इसके बाद भगवान राम ने आशीर्वाद दिया, गोरखनाथ जो भी साधक तुम्हारी दुहाई या आन रखेगा उसका कार्य सदैव सफल होगा। भगवान राम और हनुमानजी अंतर्धान हो गए। गोरखनाथ हाथ जोड़े खड़े रह गए। इसके बाद यत्नपूर्वक 'चेत मछेन्द्र गोरख आया।' कहते हुए चल पड़े।

प्रिया पाठकों! इस कथा से आप गुरु-शिष्य के संबंधों को भली-भांति समझ सकते हैं।
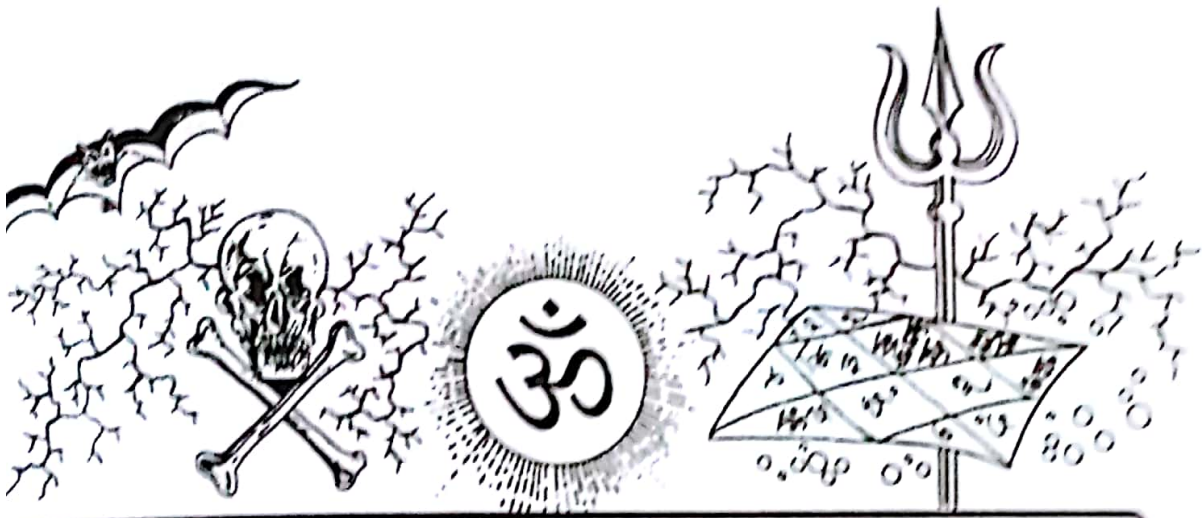
शाबर मंत्र में सफलता की कुंजी

तंत्र शास्त्रों में कहा गया है—मंत्र अचु निमित 'मंत्र' शब्द का अर्थ होता है किसी भी देवता को सम्बोधित किया गया वैदिक सूक्त या वेद मंत्र। प्रार्थना परक यजुस जोकि किसी देवता को उदिृष्ट करके बोला गया हो, मंत्रों की संख्या में आते हैं। कालान्तर में अनेक प्रकार के तांत्रिक श्लोक जोकि विशिष्ट देवता को उद्देश्य करके बोले गए तथा विशेष चामत्कारिक शक्ति से सम्पन्न होने से वह भी 'मंत्र' कहलाने लगे।

इसी प्रकार जो शब्द अलौकिक अर्थ प्रतीत कराता हो और जिसे 'गुरुमुख' से सुनने के पश्चात शिष्य उच्चारण करता हो वह भी मंत्र की श्रेणी में आते हैं। मंत्र की शक्ति की व्याख्या करने पर यह कहा जा सकता है कि मंत्र नाशरहित है, सर्वव्यापक है।

तांत्रिक सम्प्रदायों में प्रयुक्त अनेक सूक्ष्म रहस्यमय शब्द खण्डों और अक्षरों को भी 'मंत्र' कहते हैं तथा विश्वास किया जाता है कि इन बीज मंत्रों से महान सिद्धियां प्राप्त होती हैं। मंत्र शाश्वत है, अजर है, अमर है, इस बात को किसी और ढंग से प्रमाणित करने की आवश्यकता शेष नहीं रह जाती है।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि मंत्रों का प्रभाव नहीं होता, ये वे ही लोग हैं जोकि पुस्तकों में लिखे मंत्रों को पढ़कर प्रयोग में लाने का प्रयत्न करते हैं। खेद की बात है, आज तंत्र एक धनदायक व्यवसाय बन गया है। आज कोई भी यह नहीं जानना चाहता है कि लेखक के पास तंत्र-मंत्र का कितना ज्ञान है? उसने कितनी साधना की है? तंत्र के नाम की पुस्तक देखी और खरीद ली। अब वह कितनी खरी है अथवा खोटी है, खरीदार बाद में देखता है।

आज यही शिकायत है कि पुस्तक नाम के अनुसार नहीं होती है। लेखक

बंधु ने अच्छा-सा नाम सोचा और मुख्य पृष्ठ पर दे दिया। भीतर चाहे कुछ भी हो। आप स्वयं देखें, आज के तांत्रिक सरस्वती पुत्रों को अपने पास इसलिए रखते हैं कि वह उनका यशोगान कर सकें। आज व्यवसायी लेखक भाइयों की स्थिति तो विचित्र है। आप पुस्तक का विषय बतलाएं, वह एक सप्ताह के भीतर पुस्तक लेकर उपस्थित हो जाएंगे—दावे के साथ कहेंगे विषय अछूता है, सामग्री अनूठी है, परिश्रम अथक है। आप ऐसी पुस्तकों से बचें।

मंत्र की मूल चेतना शक्ति तो 'ध्वनि' में निहित है और यह ध्वनि पुस्तक के निर्जीव पृष्ठ कभी नहीं बतला सकते। इसके लिए गुरु की आवश्यकता रहती है। कुछ लोगों की मानसिक वृत्तियां इतनी निम्न हो चुकी हैं कि मंत्रों को सीखने के लिए गुरु के पास जाने में उन्हें शर्म आती है। इसमें वे अपना अपमान समझते हैं।

कोई तंत्र सगुण मानता है और कोई निर्गुण मानता है, तो यह सबका अपना दृष्टिकोण है। इस बात को समझने के लिए एक दृष्टान्त है—पांच अन्धे थे। उन्होंने एक आदमी से कहा कि भाई हमें हाथी दिखाओ। हम जानना चाहते हैं कि हाथी कैसा होता है? उस आदमी ने उनको एक हाथी के पास ले जाकर खड़ा कर दिया। एक अन्धे के हाथ में हाथी की सूंड आई। दूसरे के हाथ में हाथी का दांत आया। तीसरे के हाथ में हाथी का पैर आया। चौथे के हाथ में हाथी की पूंछ आई। पांचवें को हाथी के ऊपर बैठा दिया गया। उन्होंने अपने-अपने हाथ फेरकर हाथी को देख लिया कि ठीक है, यही हाथी है। अब वे पांचों आपस में झगड़ा करने लगे। एक ने कहा कि हाथी तो बांह की तरह होता है। दूसरे ने कहा कि नहीं, हाथी तो मूसल की तरह होता है। तीसरा बोला कि तुम दोनों झूठे हो, हाथी तो खम्भे की तरह होता है। चौथे ने कहा कि बिल्कुल मिथ्या कहते हो, हाथी तो रस्से की तरह होता है। पांचवां बोला कि हाथी तो छप्पर की तरह होता है, यह मेरा अनुभव है। इस तरह सबका वर्णन सही होते हुए भी गलत है, क्योंकि वह एक अंग का वर्णन है, सर्वांग का नहीं। सबने हाथी के एक-एक अंग को हाथी मान लिया, पर वास्तव में सब मिलकर एक हाथी है। ऐसे ही तंत्र का एक झगड़ा है। वास्तव में सब मिलकर एक ही शक्ति का वर्णन है। एक ही वस्तु अलग-अलग कोण से देखने पर अलग-अलग दिखाई देती है, ऐसे ही एक ही शक्ति अलग-अलग दृष्टिकोण से अलग-अलग दिखती है।

तात्पर्य है कि शक्ति का वर्णन नहीं किया जा सकता। वे सगुण भी हैं, निर्गुण

भी हैं, साकार भी हैं, निराकार भी हैं और इन सबसे विलक्षण भी हैं, जिसका अभी तक तंत्र शास्त्रों में वर्णन नहीं आया है। उसका पूरा वर्णन हो सकता भी नहीं। प्राकृत मन, बुद्धि, वाणी के द्वारा प्रकृति से अतीत तत्त्व का वर्णन हो ही कैसे सकता है?

द्वैत, अद्वैत, द्वैताद्वैत, विशिष्टाद्वैत आदि जितने भी मत-मतान्तर हैं, उन सबसे परिणाम में एक ही तत्त्व की प्राप्ति होती है।

विदेशियों की गुलामी, आधुनिक शिक्षा की चमक-दमक में पले भारतीय युवक ही अनधिकृत रूप से मंत्र विज्ञान के विषय में सबसे अधिक टीका-टिप्पणी करते हुए देखे गए हैं या देखे जाते हैं। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि यह विद्या तांत्रिकों के पास पीढ़ी-दर-पीढ़ी से चली आ रही है। अतः शक्ति का मूल स्रोत पकड़ने के लिए आपको तांत्रिकों की शरण में जाना ही पड़ेगा। तांत्रिक मंत्रों की साधना के लिए हमें काफी अध्ययन, परिश्रम व अभ्यास करना ही पड़ेगा। हम तांत्रिक मंत्रों की शक्ति को बैडरूम में सोते-सोते बिना प्रयास व परिश्रम के पुस्तकों के निर्जीव पृष्ठों में नहीं ढूंढ़ सकते हैं।

मंत्र साधना करने वालों के लिए मंत्र का स्वरूप क्या है? इस विषय में केवल दो ही बातें हो सकती हैं, एक तो मंत्र पहले अपनी शक्ति दिखा दे, फिर उसके अनुसार उपासना करें। और दूसरी, हम पहले मंत्र का कोई भी रूप मान लें, फिर साधना करें। इन दोनों में दूसरी बात ही ठीक बैठती है। कारण कि मंत्र पहले अपनी शक्ति दिखा दे, फिर हम साधना करें तो उस रूप का ध्यान, वर्णन आदि करने में हमारे से कहीं-न-कहीं गलती हो ही जाएगी, जिसका हमें दोष लगेगा। ईष्ट भी कह सकते हैं कि तुमने भूल क्यों की? इसलिए तांत्रिकों ने यह नियम बनाया है कि साधक मंत्र के जिस रूप का ध्यान करें, जिस नाम का जप करें, उसको वे अपना ही मान लेते हैं, क्योंकि मंत्र ही सब कुछ है।

तंत्र विज्ञान के साधक को अपने मत, सम्प्रदाय आदि का आग्रह नहीं रखना चाहिए, बल्कि उसका अनुसरण करना चाहिए। अपने मत का आग्रह रखने से दूसरे मत से द्वेष हो जाएगा, जिससे वह दूसरे की बातों को निष्पक्ष होकर नहीं सुन सकेगा। सभी मत, सम्प्रदाय आदि में अच्छे-अच्छे तांत्रिक हुए हैं। अपने मत का आग्रह रहने से साधक उन महापुरुषों की अच्छी-अच्छी बातों से वंचित रह जाएगा। अतः साधक को चाहिए कि वह प्रत्येक मत, सम्प्रदाय आदि की बातों को निष्पक्ष होकर सुने, उन पर गहराई से विचार करे और जो बातें

उपयोगी लगे, उनको ग्रहण करे। साधक को सारग्राही बनना चाहिए। अगर उसको अपने या दूसरे के मत में कोई शंका उत्पन्न हो जाए तो जिन पर उसकी श्रद्धा हो, उनसे पूछकर समाधान कर लेना चाहिए। न समझने के कारण अपने मत में कोई कमी या बाधा दिखे तो तुरन्त उसका त्याग कर देना चाहिए।

जिस प्रकार नदी निरन्तर बहती है, एक क्षण के लिए भी स्थिर नहीं रहती, परन्तु वह जिस आधार के ऊपर बहती है, वह स्थिर रहती है, एक इंच भी आगे बहकर नहीं जाती। नदी में कभी स्वच्छ जल आता है, कभी कूड़ा-कचरा आता है, कभी पुष्प बहते हुए आ जाते हैं, कभी कोई मुर्दा (शव) बहता हुआ आ जाता है, परन्तु शिला में कोई असर नहीं पड़ता। वह ज्यों-की-त्यों अपनी जगह स्थिर रहती है। तात्पर्य है कि जो निरन्तर बहता है, वह 'असत' है और जो निरन्तर रहता है, वह 'सत' है। यह सत्य नित्य रहने वाला, सबसे परिपूर्ण, अचल, स्थिर और अनादि है।

साधक स्नान के लिए जल ऋतु के अनुसार प्रयोग कर सकता है, किन्तु ठण्डा जल ताजगी देने वाला माना जाता है। जो लोग शीत ऋतु में ठण्डे पानी से स्नान करने में कष्ट का अनुभव करते हों, वे कुछ गर्म पानी का प्रयोग कर सकते हैं। स्नान का महत्त्व स्वास्थ्य की दृष्टि से ही नहीं है, आध्यात्मिक दृष्टि से और भी अधिक है। अगर कोई जप, पूजन, उपवास आदि करना चाहते हो, तब तो स्नान और भी अधिक अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि स्नान किए बिना यह सभी कर्म निष्फल ही माने जाते हैं।

अगर हम देखें तो जीवन में आहार और विहार का सर्वाधिक महत्त्व है। ज्योतिष के हिसाब से दूसरा भाव आहार का और सप्तम भाव विहार का होता है। सारे रोग, शोक आहार और विहार से ही उत्पन्न होते हैं। आहार और विहार से साधक का मानस बनता है।

मानसिक बुद्धि का अर्थ विचारों की शुद्धता से है। सांसारिक वासनाएं मनुष्य में काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि की उत्पत्ति करती हैं, जिनके कारण उसके विचार अशुद्ध हो जाते हैं। अगर काम-वासना रहती है तो साधक उसी में डूबा रहता है। उसे उसके अतिरिक्त अन्य कुछ भी अच्छा नहीं लगता। अगर काम में व्यवधान पड़ता है तो झुंझलाहट और क्रोध की उत्पत्ति हो जाती है। लोभ उससे भी अधिक साधक को अन्धा बना देता है। जब वह रहता है तो मनुष्य यह नहीं सोचता कि हम जिस धन के लिए लालायित हैं, अगर अधर्म

से उसका उपार्जन किया जाएगा तो पाप के अर्जित होने के कारण सदा ही अशान्ति का हेतु बना रहेगा।

शरीर शुद्धि और मानसिक शुद्धि पर ध्यान दिया जा सके तो जीवन में बहुत बड़ा परिवर्तन हो सकता है। इनके अतिरिक्त एक आहार-शुद्धि और है, यह भी बहुत आवश्यक है। प्रत्येक अनुष्ठान में मंत्र-जप के लिए माला की आवश्यकता होती है। बिना माला के किसी प्रकार का जप नहीं हो सकता। मालाएं अनेक प्रकार के मनकों से बनाई जाती हैं, जिनमें सौम्य कर्मों में मुख्य रूप से प्रयोग में लाई जाने वाली मालाएं तुलसी, चंदन, कमलगट्टा, स्फटिक, हकीक आदि की होती हैं। मालाएं तीन प्रकार मानी जाती हैं—

अष्टोतरशतं कार्या चतुष्पंचाश्देव वा।
सप्तविंशतिमाना वा ततो हीनाधमा स्मृता।।

माला एक सौ साठ मनकों की अथवा चौवन मनकों की बनाएं अथवा सत्ताईस मनकों की ही बना लें। इससे कम मनकों की अथवा उक्त तीन संख्या से भिन्न संख्या की माला अधम कही जाती है। माला के लिए जो मनके लिए जाएं वे टूटे-फूटे, धुंधले अथवा खंडित न हों। सभी देखने में समान, सुंदर और स्वच्छ होन चाहिए। धन की सिद्धि के उद्देश्य से पैंतीस मनकों की माला प्रयोग करें।

तंत्र माला की प्राण-प्रतिष्ठा

मनके अभिमंत्रित करने के मंत्र—

1. ओमंकार मृत्युंजय सर्वव्यापक प्रथमेअक्षे प्रतितिष्ठ।
2. ओमांकार कर्षणात्मक सर्वपगत द्वितीयेअक्षे प्रतितिष्ठ।
3. आमिंकार प्रष्टिदा क्षोमहर तृतीयेअक्षे प्रतितिष्ठ।
4. ओमींकर वाक्प्रसाद कर निर्मल चतुर्थअक्षे प्रतितिष्ठ।
5. ओमुंकार सर्वबल्प्रद सररतर पंचमेअक्षे प्रतितिष्ठ।
6. ओमूंकारोच्चाटनकर दुःसह षष्टेअक्षे प्रतितिष्ठ।
7. ओमंकार संक्षोमकर चंचल सप्तमेअक्षे प्रतितिष्ठ।
8. ओमंकार सम्मोहन कराज्ल्जवलाष्टमेअक्षे प्रतितिष्ठ।
9. ओलंकार विद्वेषणकर गुहाक नवमेअक्षे प्रतितिष्ठ।
10. ओलंकार मोहकर दशमेअक्षे प्रतितिष्ठ।
11. ओमेंकार सर्ववश्यकर शुद्ध सत्वैकादशेअक्षे प्रतितिष्ठ।

12. ओमैंकार शुद्ध सात्विक पुरुषवश्यकर द्वादशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
13. ओमोंकाराखिल वाङ्मय नित्यशुद्ध त्रयोदशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
14. ओमौंकार सर्व वाङ्मय वश्यकर शान्त चतुर्दशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
15. ओमंकार गजादि वश्यकर मोहन पंचदशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
16. ओमःकार मृत्युनाशनकर रौद्र षोडशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
17. ओं कंकार सर्वविषहर कल्याद सप्तदशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
18. ओं खंकार सर्व क्षोमकर व्यापकाष्टादशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
19. ओं गंकार सर्व विघ्नशमन महत्तरैकोनविंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
20. ओं घंकार सौभाग्यदस्तम्मनकर विंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
21. ओं ङ्कार सर्व विषनाशनकरोग्रैकविंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
22. ओं चंकाराभियारघ्न क्रर द्वाविंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
23. ओं छंकार भूतनाशकरण भीषण त्रयोविंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
24. ओं जंकार कृत्यादिनाशकर द्वर्घर्ष चर्तुविंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
25. ओं झंकार भूतनाशकर पंचविंशअक्षे प्रतितिष्ठ।
26. ओं त्रंकार मृत्यु प्रथमन षडविंशअक्षे प्रतितिष्ठ।
27. ओं टंकार सर्व व्याधिहर सुभग सप्तविंशअक्षे प्रतितिष्ठ।
28. ओं ठंकार चन्द्र रूपाष्टाविंशअक्षे प्रतितिष्ठ।
29. ओं डंकार गरूडात्मक विषघ्न शोभनैकोनविंशअक्षे प्रतितिष्ठ।
30. ओं ढंकार सर्व सम्पत्प्रद सुभग त्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
31. ओं णंकार सर्व सिद्धिप्रद मोहकरेक त्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
32. ओं तंकार धनधान्यादि समत्प्रद प्रसन्न दात्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
33. ओं थंकार धर्मप्राप्तिकर निर्मल त्रयस्त्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
34. ओं दंकार पुष्टिवृद्धिकर प्रियदर्शन चतुस्त्रिशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
35. ओं धंकार विषज्वघ्न विपुल पंचत्रिशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
36. ओं नंकार भक्तिमुक्तिप्रद शान्त षट्त्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
37. ओं पंकार विषविध्ननाशन भव्य सप्तत्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
38. ओं फंकाराणिमादि सिद्धिप्रद ज्योतिरूपाष्टत्रिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
39. ओं बंकार सर्वदोषहर शोमनैकोनचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
40. ओं भंकार भूत प्रशान्तिकर भयानकरचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
41. ओं मंकार विद्वेषिमोहनकरैकचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।

42. ओं यंकार सर्वव्यापक पावन द्विचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
43. ओं रंकार दाहकर विकृत त्रिचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
44. ओं लंकार विश्वंभर भसुर चतुश्चत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
45. ओं वंकार सर्वाप्योयनकर निर्मल पंचचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
46. ओं शंकर सर्वफलप्रद पवित्र षट्चत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
47. ओं षंकार धर्मार्थ कामद धवल सप्तचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
48. ओं संकार सर्वकारण सार्ववर्णिकाष्टचत्वारिंशेअक्षे प्रतितिष्ठ।
49. ओं हंकार सर्व वाङ्मय निर्मलेकोनपंचादशक्षे प्रतितिष्ठ।
50. ओं लंकार सर्वशक्तिप्रद प्रधान पंचादशक्षे प्रतितिष्ठ।
51. ओं क्षंकार परात्पर तत्वज्ञापक परंज्योतिरूप शिखामणौ प्रतितिष्ठ।

स्वार्थसिद्धि के लिए सत्ताईस दानों की और अभिचार कर्म के लिए पन्द्रह दानों की माला काम में लावें। सकाम में चौवन दानों की माला उपयुक्त रहती है, किन्तु तांत्रिकों का मत है कि एक सौ आठ मनकों की माला सभी प्रकार की सिद्धियों के उद्देश्य से उपयुक्त है।

किसी भी प्रकार की माला बनानी हो, उसके दानों का विधिपूर्वक पूजन करना चाहिए। सर्वप्रथम मनकों का चयन कर उन्हें गोमुख, गोमूत्र, दूध, दही, शुद्ध घी में डालकर दाएं हाथ से धीरे-धीरे मलें और फिर गन्ध-मिश्रित जल से स्नान कराएं और स्वच्छ स्थान पर धातु पत्र पर प्रतिष्ठित करें तथा गन्ध, अक्षत और पुष्प आदि से पूजन कर उन्हें निर्दिष्ट मंत्रों से भावित करें। 'अ' से 'क्ष' पर्यन्त जो इक्यावन अक्षर हैं, उनके मंत्रों द्वारा क्रमशः एक-एक मनका भावित करके पिरोते चलें। वस्तुतः 'अ' से 'ल' पर्यन्त मनकों को भावित कर पुनः उल्टा लौटना होता है। 'क्ष' सुमेरू है, इसलिए उसके उल्लंघन का निषेध है। इस प्रकार जब सौ मनके भावित हो जाएं तब शेष आठ मनकों को अंकार, कंकार, चंकार, टंकार, तंकार, पंचकार, यंकार और शंकार से भावित करके सुमेरू को क्षंकार से भावित किया जाता है। प्रत्येक मनका इस प्रकार पिरोते हुए, चाहें तो मध्य में गांठ भी लगाते चलें। गांठ ढाई या तीन फेरे की दें या ब्रह्मगांठ लगाएं। अन्त में तो ब्रह्मगांठ लगाकर ही सुमेरू को गूंथा जाता है।

माला तीन प्रकार की होती हैं—करमाला, मणिमाला और वर्णमाला। इनमें प्रथम—करमाला का तात्पर्य उंगलियों पर जप संख्या की गणना करते रहने से है। यह दो प्रकार की हैं—एक में उंगलियों से गणना होती है और दूसरी में

उंगलियों के पर्व से। अक्षमाला या मणिमाला का अभिप्राय उस माला से है, जो सूत, रेशम अथवा सोने-चांदी आदि के तारों में गूंथकर बनाई जाती है। तीसरे प्रकार की माला वर्णमाला का वर्णन सनत्कुमार तंत्र में इस प्रकार मिलता है जिससे 'अ' से 'क्ष' पर्यन्त सभी वर्णों में अनुस्वार लगाकर अनुलोम-विलोम क्रम से जप करें, वह माला श्रेष्ठ समझनी चाहिए।

यहां पर तंत्र-मंत्र साधना के समय यह प्राचीन परम्परा रही है कि शुद्ध घी का दीपक नेत्रों के सामने होना चाहिए। इसमें रहस्य यह है शब्द मूलतः वायु तत्त्व-प्रधान होते हैं, इनको तेजोमय बनाने के लिए अग्नितत्त्व-प्रधान दीपक की लौ के सामने शब्द उच्चारित किए जाते हैं। उसके ऊपर गुजरते हुए शब्द तेजोमय रूप को धारण कर समस्त वायुमण्डल में फैल जाते हैं।

साधना को भूतकाल में किए हुए कर्मों की याद आने से जो सुखः-दुःख होता है, चिन्ता होती है, यह वास्तव में अहंकार के कारण है। वर्तमान में अहंकार विमूढ़ात्मा होकर अर्थात् अहंकार के साथ अपना सम्बंध मानकर काल का अभाव है, ऐसे ही भूतकाल में किए गए कर्मों का अभी प्रत्यक्ष अभाव है। अतः भूतकाल के अभाव को भावरूप से देखना, भूतकाल की घटनाओं को सत्ता देकर राजी-नाराज होना बिल्कुल गलत बात है।

सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो जैसे भूतकाल में वर्तमान का अभाव था, ऐसे ही भूतकाल का भी अभाव था, इसी तरह वर्तमान में जैसे भूतकाल का अभाव है, ऐसे ही वर्तमान का भी अभाव है, परन्तु साधना नित्य-निरन्तर भाव है। साधक भूतकाल की स्मृति में ऐसा आरोप भर लेता है और सुखी-दुःखी होता है तो यह उसकी बड़ी भारी भूल है। कारण कि यह अहंकार विमूढ़ात्मा की स्मृति है, तत्त्व की नहीं।

यह एक सर्वमान्य सिद्धांत है, जो वस्तु हम देखते हैं अथवा पकड़ते हैं, वह छोटी होती है, अगर वह बड़ी होगी तो पकड़ में कैसे आएगी? कहने का तात्पर्य यह है पकड़ में आने वाली वस्तु सदैव छोटी होती है और पकड़ने वाला बड़ा होता है। नेत्रों से वही वस्तु दिखती है, जो नेत्रों की पकड़ में आती है। इन्द्रियों से उसी वस्तु का ज्ञान होता है, जो इन्द्रियों से छोटी होती है। कार्य में कारण तो रहता है, पर कार्य के अन्तर्गत कारण नहीं आ सकता; जैसे—घड़े में पृथ्वी नहीं आ सकती।

तंत्र-मार्ग में भी साधक बड़ा होता है, सिद्धि छोटी है। साधक, साधना और

सिद्धि तीन स्थिति अगल दिखते हुए भी एक है। साधक साधना के मार्ग से सिद्धि के क्षेत्र में प्रवेश करता है। जिस प्रकार कोई मनुष्य रॉकेट में बैठकर पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से बाहर निकल जाता है, तो वह चन्द्रमा की गुरुत्वाकर्षण शक्ति में प्रवेश कर जाता है अर्थात उसका आकर्षण चन्द्रमा की तरफ हो जाता है। संसार के आकर्षण से ही सफलता है। साधना में एकरस है और सिद्धि में आनन्द-ही-आनन्द है। साधक का कर्त्तव्य है—साधना विरुद्ध कार्य न करना अर्थात जो कार्य सिद्धि की प्राप्ति में बाधक हो, उसका त्याग करना। साधना विरुद्ध का त्याग करने पर साधन करना नहीं पड़ता, प्रत्युत स्वतः होता है। स्वतः होने वाले साधन करने से अभिमान नहीं आता। वास्तव में साधना सिद्ध है। साधक को जो देश, काल, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि मिली है, उनका सदुपयोग करना चाहिए। सदुपयोग करने का तात्पर्य है—प्राप्त वस्तु आदि को अपनी न मानकर, प्रत्युत अभावग्रस्तों की ही मानकर निःस्वार्थ भाव से उनकी सेवा में लगा देना।

साधक को इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि उसके द्वारा कोई साधना विरुद्ध कार्य न हो। साधना विरुद्ध कार्य न करने से साधक की स्वतः उन्नति होती है और साधन विरुद्ध काम करने से साधक का स्वतः पतन होता है। साधकों के सामने प्रायः यह समस्या आती है कि हम साधना करते हैं, ध्यान करते हैं फिर भी सिद्धि का अनुभव नहीं हो रहा है, वास्तविक स्थिति नहीं हो रही है, क्या कारण है? कहां और क्या बाधा लग रही है? इस समस्या का मूल कारण है—सुख की लोलुपता। विनाशी वस्तु के विषय के द्वारा होने वाला जो सुख है, उस सुख की जो लोलुपता है, भीतर से जो इच्छा है कि यह सुख मिले, यह सुख बना रहे, यह सुख बढ़ता रहे—यही बाधा है। इसी कारण वास्तविक स्थिति का अनुभव नहीं हो रहा है।

आप मेरी बात को परखकर देखें। सुख का आना बुरा नहीं है, प्रत्युत सुख का भोग और उसकी इच्छा बुरी है। यह सुख की इच्छा बहुत दूर तक साधक के लिये बाधक होती है। जहां उसने सुख भोगा, वहीं बाधा लग जाएगी।

जैसे पैर में कांटा गड़ जाए तो उसको कांटे से ही निकालते हैं। इसलिए कांटा निकालते समय बड़ी पीड़ा होती है, परन्तु कांटा निकल रहा है—इस बात को लेकर उस पीड़ा में भी सुख का अनुभव होता है। प्रसव के समय गर्भवती को बेतरह पीड़ा होती है, परन्तु उस समय जब वह यह सुनती है कि लड़का जन्मा

है, तब उसको उस पीड़ा में भी आनन्द का अनुभव होता है। हम ऋण चुकाते हैं तो घर में पैसे देने पड़ते हैं, पर ऋण उतर गया इस बात से बड़ी प्रसन्नता होती है। घर से सौ रुपए निकल जाएं तो दुःख होता है, पर सौ रुपए निकलने पर ऋण उतरता है तो आदमी को बड़ा सुख होता है कि बहुत अच्छा हुआ, ऋण से मुक्ति मिली।

अनेक साधक मुझसे प्रश्न करते हैं, साधना में सफलता कब तक मिलेगी? इस संदर्भ में मैं एक कथा बताता हूं। ध्यानपूर्वक सुनो!

एक साधक वृक्ष के नीचे बैठकर साधना कर रहा था। एक दिन वहां नारद जी आ गए। उसने नारदजी से कहा कि आप इतनी कृपा करें कि जब भगवान के पास जाएं, तो उनसे पूछ लें कि वे मुझे कब मिलेंगे? नारद भगवान के पास गए और पूछा कि अमुक स्थान पर एक भक्त साधना कर रहा है, उसको आप कब मिलेंगे? भगवान ने कहा कि उस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, इतने जन्मों के पश्चात मिलूंगा। ऐसा सुनकर नारद जी उदास हो गए। वे उस साधक के पास गए, पर उससे कुछ कहा नहीं। साधक ने प्रार्थना की कि भगवान ने क्या है बतला दो? नारद बोले कि तुम सुनोगे तो निराश हो जाओगे। जब उसने बहुत आग्रह किया, तब नारद बोले कि इस वृक्ष के जितने पत्ते हैं, उतने जन्मों के बाद भगवान की प्राप्ति होगी। साधक ने उत्सुकता से पूछा, क्या भगवान ने स्वयं ऐसा कहा है? नारद ने कहा कि हां, स्वयं भगवान ने कहा है। यह सुनकर वह प्रसन्नता से नाचने लगा कि भगवान मेरे को मिलेंगे, मिलेंगे, अवश्य मिलेंगे। क्योंकि भगवान के वचन कभी झूठे नहीं हो सकते। इतने में ही भगवान वहां प्रकट हो गए। नारद ने देखा तो उनको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे भगवान से बोले कि भगवन्! अगर यही बात थी तो मेरा अपमान क्यों कराया? आपको मिलना था तो मिल जाते। मेरे से तो कहा कि इतने जन्मों के पश्चात मिलूंगा और आप अभी आ गए। भगवान ने कहा कि नारद! जब तुमने इसके विषय में पूछा था, तब यह जिस चाल से साधना कर रहा था, उस चाल से तो इसको उतने ही जन्म लगते, परन्तु अब तो इसकी चाल ही बदल गई। यह तो 'भगवान मेरे को मिलेंगे' इतनी बात पर ही मस्ती से नाचने लग गया। इसलिए मुझे अभी आना पड़ा है। कारण कि उद्देश्य की सिद्धि में जो अटल विश्वास, अनन्यता, दृढ़ता, उत्साह होता है, उससे साधना की गति तीव्र हो जाती है।

प्रिय पाठको! ज्ञान अभ्यास से उत्पन्न नहीं होता, प्रत्युत जो वास्तव में है,

उसको वैसा ही जान लेने का नाम 'ज्ञान' है। यह तंत्र ज्ञान वास्तव में है ही ऐसा। यह कोई नया बनाया हुआ ज्ञान नहीं, प्रत्युत स्वतः सिद्ध है। अतः तांत्रिकों की वाणी से हमें इस बात का पता लग गया कि सब कुछ साधना ही है, यह कितने आनन्द की बात है। यह ऊंचे-से-ऊंचा ज्ञान है, इससे बढ़कर कोई ज्ञान है ही नहीं। कोई भले ही सब शास्त्र पढ़ ले, पर अन्त में यही बात रहेगी कि सब कुछ साधना ही है, क्योंकि वास्तव में बात है ही यही।

अंत में मैं शाबर मंत्रों की साधना का विधान बतलाकर अपने अगले अध्याय की ओर चलता हूं। शाबर मंत्रों की साधना के लिए बड़े विधि-विधान नहीं हैं। मंत्र तो सरल हैं ही, यह भी कह सकते हैं कि इनकी साधना का विधान भी सरल है, परन्तु कुछ बातें आवश्यक हैं। इनकी पूर्ति करके ही शाबर मंत्र सिद्ध किए जा सकते हैं और वे निश्चित ही फलदायक होंगे।

शाबर मंत्र की शक्ति को बनाए रखने के लिए वर्षभर में कम-से-कम एक बार उसे उसी दिन, पर्व या ग्रहण के दिन ही होना चाहिए। साधक इस बात का भी ध्यान रखें कि मंत्र, प्रचार, दुरुपयोग और प्रदर्शन से शक्तिहीन हो जाते हैं। इसलिए मंत्र की साधना, पद्धति की साधना करने के पश्चात साधक को चाहिए कि वह उसे सूर्यग्रहण के दिन पुनः सिद्ध कर ले। साधक जो दिन साधना के लिए चुने उस दिन स्नान करके, धुले वस्त्र पहनकर, एकान्त एवं पवित्र स्थान में कम्बल के आसन पर उत्तर दिशा में मुंह करके साधना करे। अभीष्ट मंत्र की 21 माला कम-से-कम जपे। जप के पश्चात लोहबान, गुग्गुल, गुलाब की धूपबत्ती या हवन सामग्री से मंत्र का उच्चारण करते हुए अग्नि में आहुति दे।

शाबर मंत्र विभिन्न प्रकार के संकटों से व्यक्ति की रक्षा तो कर ही सकता है, दूसरों का भी कल्याण कर सकता है। हां जो छुरी आपकी सुरक्षा कर सकती है वह दूसरे को मार भी सकती है। आशा है कि आप मेरी बात समझ गए होंगे।

डायन, चुड़ैल का जादू-टोना

झाड़ने का मंत्र

रोगी से पर्दा करवाकर जादू-टोनाग्रस्त स्त्री को नमक और गंगाजल से झाड़ा देते हुए निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें, तो टोना तुरंत उतर जाता है। यह प्रयोग किसी अनुभवी तांत्रिक की देख-रेख में ही सम्पन्न करना चाहिए।

ॐ पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण चारिका सर्ग पाताल-आंगन द्वार मंझार खाठ विचौना गडई सावनार सागलन ओ जवनार विरा सोधांवे फुनेल लक्वेग सोपारी जे मुंह तेल अवटन उवटन और अवहान पहिरणलहगा सारी जान डोरा चोलिया चादरि ज्ञानमोह रूई ओढ़न झींन शकर गोरा छेत्रपाला पहिले झारो बारम्बार काजर तिलक लिलार आंखि नाक कान कपार मुंह चोटा कंठ अबर्कष कांध बांहग्थि गोड अंगुरी नख धुकधुकी अस्थल नाभी नेटी नीचे जोनि चरणि कत भेटी पोटि करि दाव जांघ पेडरी घूटा पावतर ऊपर अंगुरा चाम रक्त मांस डांड गुदा धातुओं जो नहीं छाड़ु अंतरी कोठरी करेज पित ही पित जिय प्राण सब बित बात अंक मने जागु बड़े नरसिंह की आनु कबहुन लागु फांस पितर रांग कांच लोह रूप सोन साच पार पठ वशन रोज जोग कारण दशन डोठि मूट टीना थापक नवनाथ चौरासी सिद्ध के सराप डाइ न योगिनी चुरइलि भूत व्याधि परि अर जेजत भनै गोरख बैन साच प्रगट रे बिलउकाली औ भैरव की हांक फुरो ईश्वरो वाचा।

अग्नि स्तम्भन प्रयोग

यह अग्नि स्तम्भन मंत्र सूर्य ग्रहण अथवा होली की मध्य रात में दस हजार बार जप कर लें, तो अग्नि बंध जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो अग्निये ज्वालामुखी मनाय शंकर सहाय, अग्नि शीतल हो जाय पार्वती की दोहाई, नोना चमारिन की दोहाई, गुरु गोरखनाथ बाबा शब्द सांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

सर्वबाधानाशक प्रयोग

निम्नलिखित मंत्र को पहले ग्रहण अथवा होली पर 1,108 बार जपकर सिद्ध कर लें। फिर मंत्र द्वारा झाड़ा देने से समस्त बाधाएं दूर होती हैं—

।। कोडी लाघूं, आंगन लाघूं, कोठी ऊपर महल छवाऊं, गोरखनाथ सत्य यह भाखै, दुआरिया पै मैं अलख जगाऊं।। सतनाम आदेश गुरु का आदेश पवन पानी का नाद अनाहद दुनदुभी बाजै जहां बैठी जोगमाया साजे चौंसठ जोगनी बावन वीर बालक की हरै सब पीर आगे जात शीतला जानिये बंध बंध बारे जात मसान भूत बंध प्रेत बंध छल बंध छिद्र बंध सबको मारकर भसमन्त सतनाम आदेश गुरु का फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

श्मशान बाधा नाशक प्रयोग

निम्न मंत्र को ग्रहण अथवा होली पर जप करके सिद्ध कर लें। इसके बाद श्मशान बाधा से ग्रस्त रोगी को निम्न मंत्र पढ़कर झाड़ा लगाने से श्मशान बाधा शांत होती है—

सपेदा मसान गुरु गोरखनाथ की आन, यमदण्ड मसान काल भैरों की आन, सुकिया मसान नुनिया चमारी की आन, फुलियां मसान गारे भैरों की आन, हलदिया मसान ककोड़ा भैरों की आन, पीलिया मसान दिल्ली की जोगिनी की आन, कमेदिया मसान कालका की आन, कीकड़िया मसान रामचन्द्र की आन, मिचमिचिया मसान भोलेनाथ की आन, सिलसिलया मसान मोहम्मदा पीर की आन।

शस्त्र-स्तम्भन

बैरी जोते एक, मैं जोतों बारा। पड़ा के ताकत देना। भूरी भैंसासुर, काला मुंह कर देवेगा। मार दे, फेंक दे, गिरा दे, जब मैं जानों ठीक। गुरु की दुहाई।।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर गंगाजल, मिट्टी अथवा काले उड़द शत्रु की तरफ उछालने से शत्रु का मुख बन्द और शस्त्र स्तम्भित होता है।

ज्वर का झाड़ा

निम्न मंत्र को ग्रहण अथवा होली पर सिद्ध कर लें। इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर ज्वर से ग्रस्त रोगी को झाड़ा लगावें। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं ह्रां रीं रां विष्णु-शक्तये नमः। ॐ नमो भगवती विष्णुशक्तिमेनां ॐ हर हर, नय नय, पच पच, मथ मथ, उत्सादय, दूरे कुरु स्वाहा। हिमवन्तं गच्छ जीव, सः सः सः चन्द्र-मण्डलं गतोऽसि स्वाहा!

गर्भ स्थिर रहने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु। ॐ सतवर पुरुष पाया की रात्रि थम्बे गर्भ न छोड़े पाप उदवा मास गर्भ वास, पुरा साहि निकास गोरि मास मात माता गर्भ को पूरा माथा हनुमान तीन गर्भ को गंडी बांधो राखि दस मास वीर पाख फुरो मंत्र आदेश गुरु गोरखनाथ को।

कुंवारी कन्या को स्नान कराकर रविवार के दिन सूर्य के सामने बैठाकर सूत कतावें। उस सूत से सात तार का डोर बटें, फिर तीन-तीन गांठ के दो गण्डे बनावें फिर उपरोक्त मंत्र 31 बार अभिमंत्रित कर गुग्गुल की धूनी देकर कमर में बांधें, तो गर्भ स्थिर रहेगा।

स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो चौसठ योगिनी, बावन वीन, छप्पन भैरो, सत्तर पीर आय बैठो डाल के बीच हाली हलै न चाली चलै, बाड़ शत्रु सो मिले डाल हलै चलै तो गोरखनाथ की दुहाई फुरे।

उपरोक्त मंत्र को ग्रहण अथवा होली पर सिद्ध कर लें। इसके बाद मंत्र पढ़कर जिस पर भी गंगाजल के छींटे दोगे वह स्तम्भित होगा।

सुरक्षा मंत्र

ॐ नमो भगवते त्र्यम्बकायो पश-मयो पश-मय! चुलु-चुलु मिलि-मिलि, मिदि-मिदि, गोमानिनि चक्रिणी हूं फट्।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर प्रामाणित अनार की टहनी से वृत्त खींचने से सुरक्षा होती है।

कुश्ती जीतने का मंत्र

ॐ नमो गदाधारी हनुमन्त वीर, स्वामी बड़ा तेज बड़ा शरीर अदृष्टिचक्र मातु कालका का जन्म चड़े पैरी न कर थैर में करिहो तेरे जीव का भ्रात मैं करूं तेरे गुरु मोर से मारूं तुझे एक ही तो तीर से मेरा मारा ऐस घूमे जैसी मंजनी सर्प की लहर पर तोहि हिरत मारूं बाण फरे तो गुरु गोरखनाथ की आन।

उपरोक्त मंत्र को होली अथवा ग्रहण पर सिद्ध कर लें। इसके बाद साबुत काले उड़द पर 108 बार पढ़कर दे दें। कुश्ती के समय अखाड़े में उपस्थित उन्हें एक मित्र के पास रखवा दें, कुश्ती में जीत होगी।

मूठ लौटाने का मंत्र

"ॐ रुद्र भूत-नाथाय षट्र-भुत वशं कुरु-कुरु, आज्ञा पालय पालय, रुद्राय हुं हुं फट्र।"

उपरोक्त मंत्र को पहले किसी भी शुभ मुहूर्त में सिद्ध कर लें। इसके बाद जिस ओर से भी मूठ आवे उस ओर साबुत काले उड़द पढ़कर मारें। मूठ तुरन्त वापस लौट आएगी।

कीड़े झाड़ने का मंत्र-1

ॐ नमो कीड़ा रेकुंडूकु डालो लाल पूंछ तेरा मुंह काला। मैं तोहि पूछा कहां से आया, तूने सब मांस खाया। अब तू जाय भस्म हो जाय। गुरु गोरखनाथ करे सहाये!

नीम की डाली से 51 बार मंत्र पढ़ते हुए झाड़ें। घाव के सारे कीड़े मर जाएंगे। इस मंत्र को होली, दीपावली, ग्रहण पर सिद्ध करना परम आवश्यक है।

बिच्छू, सांप भगाने का मंत्र

ॐ नमो सवरि भूल मधु ममु खबना तेरा कमल का फल सरपा तेरी बांधूं दानी जिसने तू गोद खिलाया और बांधूं स्तन कटोरा जिसमें दूध पिलाया बीन

की तली ऐसी करे जो घास तेरी दाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरखनाथ की जाय जलाय। आदेश गुरु मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को पहले सिद्ध करें फिर उपले की राख पर 31 बार पढ़कर सांप के ऊपर डालें, तो वह बंध जावे।

वशीकरण मंत्र

जंगल की योगिनी पाताल में नाग उठ गए मेरे वीर लाओ मेरे पास जहां जहां जाए मेरे सहाई तहां तहां आव कजभरी कजभरी अन्तासों अगरी तक नफे तक एक फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाय वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

शुक्ल पक्ष के शनिवार पुष्य नक्षत्र में चौराहे की मिट्टी की पुतली बनाकर उसके वक्ष पर साध्य स्त्री का नाम लिखें, इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र की तीस माला जपें। इस प्रकार करने पर प्रबल वशीकरण होता है।

शस्त्र रोकने का मंत्र

निम्न मंत्र को पहले होली अथवा ग्रहण में सिद्ध कर लें। इसके बाद मंत्र को पढ़कर गंगाजल शत्रु की तरफ फेंकें, तो शस्त्र नहीं चला पायेगा। मंत्र इस प्रकार है—

'ॐ सिंहो दत्तो बिकोवा धड़ित धड़धड़ात ध्यायमान भवानी दैत्यानाम देह-नाशनम तोड़यान्ति। सिरांसी रक्तां पिबन्ति। घुटत घुट-घुटात घुटेयान्ति। पिशाचा त्रिहाप त्रिहाप हसन्ति। खदत खद-खदात त्रिरोष मम भद्रकाली नौ नाथ, चौरासी सिद्धन के बीच में बैठकर। काली मन्त्र स्वाहा।

गोरखनाथ का गणेश सिद्ध प्रयोग

जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश पाहि माम्। जय गणेश, जय गणेश, जय गणेश रक्ष् माम्।। जय सरस्वती, जय सरस्वती, जय सरस्वती पाहि माम्। जय अम्बे, जय अम्बे, जग जननी, जय जगदीश्वरी, माता सरस्वती, मोह-विनाशिनी।।

जय अम्बे, जय अम्बे, जय-जय-जननी, जय-जय अम्बे। जय जगदीश्वरी माता सरस्वती मोह-विनाशिनी जय अम्बे।। जय दुर्गे, जय दुर्गे,

जय-जय दुर्गति-नाशिनी, जय दुर्गे। आदि-शक्ति पर-ब्रह्म-स्वरूपिणि भव-भय-नाशिनी जय दुर्गे।।

अम्बा की जय-जय, दुर्गा की जय-जय, सीता की जय-जय, राधा की जय-जय। गायत्री की जय-जय, सावित्री की जय-जय, गीता की जय-जय, माता की जय-जय। जपु जगद्-अम्बा ग्रहि कर माला, बसो हृदय में बहु-चर बाला।।

प्रिय पाठको! उपरोक्त मंत्र मुझे गंगोत्री के मार्ग में एक अतिवृद्ध घुमक्कड़ तांत्रिक ने दिया था। उस साधु के अनुसार यह गुरु गोरखनाथ का भैरव सिद्ध प्रयोग है, जो अपनी भयानकता के लिए विख्यात है। प्रयोग इस प्रकार है—

इस मंत्र को केवल सूर्य ग्रहण में और केवल गंगा के तट पर ही सिद्ध करना चाहिए। तीन ओर से चौका लगाकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठ जाएं। इस मंत्र की 21 माला जपें। सामग्री और भोग में बूंदी के लड्डू, लाल कनेर के फूल, थोड़ा कामिया सिंदूर, फूलदार लवंग का जोड़ा और एक चारमुखा दीपक प्रज्वलित कर लें, जाप के पश्चात् दशांश का हवन करें। हवन सामान्य सामग्री से ही करें। जाप के मध्य अगर भैरव प्रकट हो जाए तो उसके गले में फूल की माला डाल दें और भोग भेंट करें।

एक व्यावहारिक तांत्रिक होने के नाते मैं आपको परामर्श देता हूं कि आप यह साधना किसी योग्य मार्ग-निर्देशक के सानिध्य में ही करें।

बिच्छू का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्माइल जोगी योगी ने पाली कुत्ती। दस काली दस कावरी दस पीली दस लाल। रंग-बिरंगी दस खड़ी दस टिकावे भाल। इसका विष हनुमत हरे रक्षा करे गुरु गोरखनाथ।

इस मंत्र को 1,001 बार जपें। तेल का दीपक जलाएं, मीठे का भोग करें। इस प्रकार जिसके कुत्ते ने काटा हो, उसके घाव के चारों ओर उपलों की राख 31 बार पढ़कर लगा दें, तो आराम हो जाएगा। आप निम्न मंत्र से भी झाड़ सकते हैं—

।। दुबरा रे दुबरा, दुबरा रे दुबरौला, तिनका रे तिनका, तिनका रे तिनकौरा, राम राव राज रंक राणा प्रजा वीर जोगी सबका सिधौला नाम गुरु का काम गुरु का ढिंढौला।।

आंख दुःखने का मंत्र

वनरा गांठि, बनरी तो डांट। हनुमान अकण्टा, विलारी वाघिनी थनैला। कण-शूल जाई, श्री रामचन्द्र बानी, जल पथ होई।

नीम की डाली से 31 बार झाड़ें, साथ ही मंत्र पढ़ते जाएं। यह झाड़ा तीन दिन लगाएं।

दाढ़ दर्द का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामनी देवी जहां बसे इस्माइल योगी न पाली गाय, नित उठ चरने वन में जाये चरे सूखी घास जाये जिसने गोबर किया जा मैं उपजा मुताला पूंछ पूछाला धड़ है पीला, मुंह है काला, दांत मसूड़ा पीड़ करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरे।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर लोहे की कील पर पढ़कर बबूल के पेड़ में ठोंक दें, तो दाढ़ की पीड़ा दूर हो।

पैर चलाने का मंत्र

"उलटा बीर बजरंग का पावकर, नींसम कवटाल खाय। बारा कोस आघाड-सम तेरा कोस। पिच्छाड-सम। आन पोहोंच रे उलटा, बीव बजरंग का पांव। जहां है, वहां से घाव। इस काया-पिण्ड के बालाकू नव-नाडी से, बहात्तर कोठडी से, रोम-रोम से, चाम-चाम से, गुद-गुद से, पकड़ के लाव। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।"

किसी भी शनिवार की रात को श्मशान की ग्यारह लकड़ियां लेकर 31 बार मंत्र पढ़कर जिसके ऊपर डालें उसी पर पैर चले।

पैर बांधने का मंत्र

"बावीस बीराचे लोह मारे। आम्या बेताल! सुनो मेरी बात। बीर हनुमान रखे मेरी पाठ। हनुमान की चले सवारी। श्री कड-कडीत मन्त्र चले। पकड़ ले चुडेलीन को। आसन बांधूं, मसान बांधूं, साती आसन बांधूं। चौसट जोगिनी बांधूं। चौंसष्ठ योगिनी बांधूं। सात आसरा बांधूं। आठवां म्हशासूर बांधूं। नववा भिक्सन बांधूं। सब भुतावाल पलित बांधूं। चिञ्चीवरील लावटीण बांधूं। झोटीन

आंख दुःखने का मंत्र

वनरा गांठि, बनरी तो डांट। हनुमान अकण्टा, विलारी वाधिनी थनैला। कण-शूल जाई, श्री रामचन्द्र बानी, जल पथ होई।

नीम की डाली से 31 बार झाड़ें, साथ ही मंत्र पढ़ते जाएं। यह झाड़ा तीन दिन लगाएं।

दाढ़ दर्द का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामनी देवी जहां बसे इस्माइल योगी न पाली गाय, नित उठ चरने वन में जाये चरे सूखी घास जाये जिसने गोबर किया जा मैं उपजा मुताला पूंछ पूछाला धड़ है पीला, मुंह है काला, दांत मसूड़ा पीड़ करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरे।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर लोहे की कील पर पढ़कर बबूल के पेड़ में ठोंक दें, तो दाढ़ की पीड़ा दूर हो।

पैर चलाने का मंत्र

"उलटा बीर बजरंग का पावकर, नींसम कवटाल खाय। बारा कोस आघाड-सम तेरा कोस। पिच्छाड-सम। आन पोहोंच रे उलटा, बीव बजरंग का पांव। जहां है, वहां से घाव। इस काया-पिण्ड के बालाकू नव-नाडी से, बहात्तर कोठडी से, रोम-रोम से, चाम-चाम से, गुद-गुद से, पकड़ के लाव। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति। स्फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।"

किसी भी शनिवार की रात को श्मशान की ग्यारह लकड़ियां लेकर 31 बार मंत्र पढ़कर जिसके ऊपर डालें उसी पर पैर चले।

पैर बांधने का मंत्र

"बावीस बीराचे लोह मारे। आम्या बेताल! सुनो मेरी बात। बीर हनुमान रखे मेरी पाठ। हनुमान की चले सवारी। श्री कड-कडीत मन्त्र चले। पकड़ ले चुडेलीन को। आसन बांधूं, मसान बांधूं, साती आसन बांधूं। चौसट जोगिनी बांधूं। चौंसष्ठ योगिनी बांधूं। सात आसरा बांधूं। आठवां म्हशासूर बांधूं। नववा भिक्सन बांधूं। सब भुतावाल पलित बांधूं। चिम्चीवरील लावटीण बांधूं। झोटीन

बांधूं। ना बांधूं, तो हनुमान गुरु की दुहाई। गुरु की शपथ, मेरी भगत। चलो मन्त्र ईश्वरो वाचा।"

उपरोक्त मंत्र को 51 बार 51 दिन तक जपें, तो सिद्ध होता है। इसके पश्चात ही प्रयोग करें।

धन-हानि से सुरक्षा हेतु

व्यापार अथवा दैनिक कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व निम्न मंत्र को 208 बार जप करें, तो धन-हानि से सुरक्षा होती है और व्यापार-वृद्धि का लाभ भी प्राप्त होता है। मंत्र इस प्रकार है—

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवसिन्यै महालक्ष्म्यै नमो नमः लक्ष्मी माई सत्य की सवाई आवो माई करो भलाई ना करो तो सात समुन्दर की दुहाई ऋद्धि-सिद्धि खावोगी तो नौनाथ चौरासी की दुहाई।

स्त्री वशीकरण

रविवार के दिन प्रातःकाल खस का शर्बत बनाकर पिएं। रात को गुग्गुल की धूनी दें। बरफी और देसी पान का भोग रखें। फिर इलायची, लौंग और सुपारी-इन चीजों का चूर्ण बनाकर उसके ऊपर 244 बार निम्न मंत्र को पढ़कर फूंकें। जब जिस स्त्री को वश में करना हो, उसके पांव के नीचे की धूलि लाकर उसमें थोड़ा-सा तैयार चूर्ण मिलाकर 51 बार अभिमंत्रित कर स्त्री के ऊपर डालें, तो वह वशीभूत हो जाती है। मंत्र इस प्रकार है—

"मोहिनी मोहिनी कहां चली बरा खुदाई मका कांचली ओर देखें, जले बलै मेरे देख मेरे पायन पड़े छूमत काया बाचा गोरख का सबक सब सांचा सत नाम आदेश गुरु का।"

विष बन्धन मंत्र

गोरखनाथ तुम गुरु हम तोहार चेला
"अमुक" अंग के विषय बांधूं तेरी आन।।
आंवो रे विष हमारे कपड़े में आय।
बांधूं विष बांधते घटि जाय।।
आदेश देवी मनसा माई। दुहाई विषहरि राई।।

उपरोक्त मंत्र को 31 बार पढ़कर अपनी चादर के खूंट में एक गांठ लगावें, तो विष कम हो जाता है। उपरोक्त मंत्र को प्रयोग में लाने से पहले सिद्ध करना आवश्यक है।

दांत किटकिटाना

सागौर और काकड़ासिंगी द्वारा गऊ के दूध में पकाकर उस दूध का **'गोरखनाथ नमः'** कहकर पांवों में लेप कर देने से रात को सोते समय बच्चों का दांत किटकिटाना बन्द हो जाता है।

फोते छिटकाना

पूर्व दिशा में उत्पन्न सम्हालू की जड़ बच्चों के गले में 'जय गुरु गोरखनाथ तू ही जान' कहकर पहना देने से फोते स्वयं अपनी जगह बैठ जाते हैं। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ धूतिधूरेश्वरी धूली माता परमेश्वरी जहां-जहां लगाऊं तहां-तहां लगे नहीं लगे तो राजा रामचन्द्र की आन।।

आरोग्यता के लिए

ॐ नमो आदेश गुरु की। गिरह-बाज नटनी का जाया, चलती बेर कबूतर खाता, पीवे दारू, खाय जो मांस, रोग-दोष को लावे फांस। कहां-कहां से लावेगा? गुदगुद में सद्रावेगा, बोटी-बोटी में से लावेगा, चाम-चाम में से लावेगा, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा में से लावेगा, मार-मार बन्दी कर-कर लावेगा। न लावेगा, तो अपनी माता की सेज पर पग रखेगा। मेरी भक्ति, गुरु की शक्ति, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

शिव का स्मरण करते हुए 31 बार इस मंत्र का उच्चारण करके फोड़े पर हाथ फेरकर फूंक मारनी चाहिए। इसके शीघ्र लाभ होगा।

पत्थरचूर की जड़ को तांबे के पात्र में भरवाकर चमकीले लाल डोरे से बांधकर बच्चे के गले में लटका देने से दांत निकालने में कष्ट नहीं होता और हरे-पीले रंग के पतले दस्त होना बन्द हो जाता है।

गले में बांधने से पहले 51 बार 'जय गुरु गोरखनाथ तेरी आन' अवश्य कहें।

मोहिनी मंत्र-1

सत नमो आदेश, गुरुजी को आदेश। ॐ गुरुजी, ॐ सोहं आकाश। डिब्बी पाताल काठी, धरती का चूल्हा करूं, आकाश को ठाया। नव-नाथ सिद्धों ने बैठकर भण्डार किया। चढ़े डिब्बी, उतरे रिद्धि-सिद्धि काली। पीली शिर जटा माई, पार्वती का उपदेश। शिव-मुख आवे, शक्ति-मुख जावे। शक्ति-मुख आवे, शिव-मुख जावे। हाथ खड़ग तूत की माला, जाप जपे श्री सुरियाबाला। ऋद्धि पुरे हर, धृत पूरे गणेश। अलील पूरे ब्रह्मा, माया पूरे महा-काली, हीरा पूरे हिंगलाज। नव-खण्ड में जोत जगाई। ऋद्धि लावो भण्डारी भाई। ऋद्धि खट्, सदा-शिव का जड़ाव टूटे। ऋद्धि खूटे, माता सीता सतवन्ती का सत्य छूटे। ऋद्धि खूटे, माता पार्वती का कंगन टूटे। ऋद्धि खूटे, मान-धान का मान टूटे। चन्द्र-सूर्य दो देव साखी, इतना कुबेर-भण्डार-गायत्री-जाप सम्पूर्ण भया। नाथजी गुरुजी आदेश, आदेश।

उपरोक्त मंत्र से फूल को 21 बार अभिमंत्रित कर स्त्री को दें, तो वह वश में हो जाती है।

वशीकरण मंत्र

कृष्ण पक्ष के शनिवार को मिट्टी की एक पुतली बनाकर उसके पेट पर साध्य स्त्री का नाम लिखें। 1,108 मंत्र पढ़ पुतली को उस स्त्री को दिखाएं और पुतली को अपनी छाती से लगाकर रखें, तो स्त्री बैचेन हो जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

जंगल की योगिनी पाताल के नाग, उठ गए मेरे वीर 'अमुक' को लाओ मेरे पास जहां-जहां जावे मेरे सलाई तहां-तहां लाज कजभरी अतासो अगरी एक-एक फूंक फिरो मंत्र ईश्वरो वाचा मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाय वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

अन्नपूर्णा मंत्र-1

दीपावली की रात को नग्न स्त्री की काली मिट्टी से मूर्ति बनाकर ऊपर कामिया सिंदूर चढ़ाकर धूप, दीप, पुष्प इत्यादि से पूजन करके निम्न मंत्र का 5,121 बार जप करने से भण्डार भरा रहता है—

ॐ नमो गुप्त वीर मंजन सबको ठा यही तेरी आन गंगा की लहर जमुना की प्रवाण या कुठार राजा भण्डार राजा प्रजा लागे हैं पांच राती ऋद्धि लाओ तो नव नाथ चौरासी आदि का पात्र भरो हमारा जो पात्र भरो हमारा जो पात्र ना भरो तो पार्वती का क्षीर चोखा हराम करो।

वशीकरण मंत्र

किसी भी ग्रहण में निम्न मंत्र का 10,000 बार जप करें, फिर सुपारी इक्कीस बार पढ़ें।

जिसे खिलावें वह वश में हो। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमः उर्वशी काम निगारी शुची राजा प्रजा सब रहे पियारी। 'अमुक' को मंत्र पढ़ हृदय लगाऊं उठती-बैठती निज दासी बनाऊं मेरे पर उसकी जान जाय मशान, बस न होवे तो गुरु गोरखनाथ की आन।

पागल कुत्ते के काटे का मंत्र

निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए कुत्ते ने जहां पर काटा हो वहां पर झाड़ें तो विष उतर जाता है।

ॐ नमो आदेश गुरु को। राजा मोहूं, प्रजा मोहूं, ब्राह्मण बनिया। हनुमन्त-रूप से जगत मोहूं, तो रामचन्द्र पर मनिया। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरो वाचा।

कार्यसिद्धि हेतु

किसी भी प्रकार के कार्य पर जाने से पहले निम्न मंत्र की तीन माला जप लेने से कार्य सिद्ध होने की प्रबल सम्भावना होती है।

इसके अतिरिक्त 51 बार सस्वर जप कर दोनों हथेलियों पर फूंक मारने और उन्हें मुख पर फेरकर कहीं जाने पर सम्मान प्राप्त होता है।

वशीकरण के लिए मंत्र के बाद लड़की अथवा लड़के का नाम लेने से वशीकरण होता है।

मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्लीं बगला-मुखी। जगद्-वंशकरि। मां वगले पीताम्बरे। प्रसीद प्रसीद, मम सर्व-मनोरथान् पूरय पूरय ह्लीं ॐ।

जादू-टोना झाड़ने के लिए

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी को आदेश नजर काटो बजर काटो मुहूर्त में देकर पाप रक्षा करें जय दुर्गा मायी नरसिंह ओना टोना बहाय। (अमुक) रोग सागर पार चला जाय आज्ञा हाड़िदासी चण्डी दुहाई। फुरो मंत्र गुरु गोरखनाथ वाचा।

सर्वप्रथम उपरोक्त मंत्र को ग्रहण, होली अथवा किसी अन्य शुभ नक्षत्र में सिद्ध कर लें। इसके पश्चात भूत-प्रेत बाधाग्रस्त व्यक्तियों को पढ़ते हुए नीम की टहनी से 31 बार झाड़ें। इस प्रयोग से वह ठीक हो जाएगा।

मासिक धर्म में कष्ट हेतु

रात्रि के 12 बजे मूल नक्षत्र में बरकी हरताल से अखण्डित भोजपत्र पर निम्न मंत्र लिखें और स्त्री को पहना देवें, मासिक धर्म के समय कष्ट होना बंद हो जाएगा। मंत्र इस प्रकार है—

जय कृत्वां-नी कृत्वा भी ह्रीं किए-ह्रीं किम-ह्रीं भीं किम ह्रीं किम गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

गर्भ स्तम्भन हेतु

उपरोक्त मंत्र को भोजपत्र पर किसी भी शनिवार, शुक्ल पक्ष का शनि हो-तब अधिक उत्तम है, 31 बार लिखकर गर्भवती स्त्री को पहना दें। गर्भपात नहीं होगा। इसके अतिरिक्त अगर किसी पशु को पहनाना है, तब निम्न यंत्र भैंस के चमड़े पर 31 बार लिखें और पहना दें। इसके प्रभाव से पशु को गर्भपात नहीं होगा। यंत्र इस प्रकार है—

रवि - इन्द्र
जय गुरु गोरखनाथ पुत्र हेतु

मेरी भक्ति। गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

निम्नलिखित यंत्र को केवल गुरु-पुष्य नक्षत्र में काली गाय के दूध से देशी पान के ऊपर अधिक-से-अधिक संख्या में लिखें, फिर वह देसी पान गर्भवती स्त्री को खिलाएं। पुत्र होने की सम्भावनाएं प्रबल होंगी। यंत्र इस प्रकार है—

ॐ गोरखनाथ नमः।

....वि....

स्त्री का नाम

मेरी भक्ति। गुरु की शक्ति। फुरो मन्त्र। ईश्वरो वाचा।

भण्डार-वृद्धि कारक मंत्र

ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्नपूरे, धृत पूरे गणेश, जो पाती पूरे ब्रह्मा विष्णु-महेश। तीनों देवतन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति श्री गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का चालीस दिन तक प्रतिदिन 108 जाप कर सिद्ध करें, फिर भोज समारोह का जो भी सामान बना हो, वे सब खाद्य वस्तुएं एक स्थान पर भण्डार-घर में थोड़ी-सी अछूती भोजन सामग्री निकालकर सुरक्षित रखें तथा माता अन्नपूर्णा व भगवान शंकर को भोग लगाकर उस सामग्री में से सभी थोड़ी-थोड़ी वस्तुएं लोटा, डोरी यह सब लेकर कुएं पर जाएं। मंत्र को बार-बार पढ़ते रहें, पूर्व दिशा की ओर मुंह करके थोड़ी सामग्री कुयें में अर्पित कर दें। फिर लोटे को डोरी के सहारे कुयें में पहुंचाकर एक हाथ से ही एक लोटा पानी भरकर बाहर निकालें, डोरी को खोलकर लोटे सहित सामग्री को लेकर घर लौट आएं। अब लोटे को भण्डारघर में रख दें व बची थोड़ी-सी सामग्री भोज रूप होने से पूर्व जाने वाली पूजा में चढ़ाकर अपना पारम्परिक कृत्य पूरा कर अखण्ड दीपक जलावें, फिर इस मंत्र का 108 बार जप करें।

इसके बाद लोगों को भोजन कराएं। इस प्रयोग से भण्डार-घर में कोई कमी नहीं होगी।

दांत, दाढ़ दर्द निवारक मंत्र

भैंसासुर के इमली, अलग-बिलग गए डार। ऊपर मोती कर है, नीचे कर भैंसा रखवार। वो भैंसा न जानिए, जो जोते तेली कलार। बारा भाटी मद पिए, सोलह बुकरा खाय। इतने में न माने, तो खेत के भूत खाय। खेत उढ़ना, खेतै दसना, खेतै करै अहार। जै दिन करुवा भूत न पावैं, तै दिन करै उपास। पकड़ भूत पछाड़ैं, तब गोड़े तले दाबै। तब करुवा वीर कहलावे। भाग भूत, मोरी हांक पड़ी, भैंसासुर की दुहाई।।

उपरोक्त मंत्र का जप करते हुए दांत-दाढ़ दर्द के रोगी को झाड़ें, तो दांत-दाढ़ दर्द में आराम मिलता है।

शीघ्र विवाह कारक मंत्र

शुभ मुहूर्त में एक कच्ची मिट्टी की हंडिया लेकर आवें और उसमें एक लाल वस्त्र, सात काली मिर्च तथा सात सेंधा नमक की साबुत डलियां रख दें और इसका मुंह अन्य कपड़े से बांधने के पश्चात हंडिया पर सात कुम्कुम की बिन्दियां लगावें तथा नीचे लिखे मंत्र की पांच माला जाप करें—

ॐ गोरी आवे शिवजी ब्यावे अमुक को विवाह तुरन्त सिद्ध करे, देवन करे जो देर होय तो शिव को त्रिशूल पड़े, गुरु गोरखनाथ की दुहाई फुरे।

पांच माला जप के बाद उस हंडिया को चौराहे पर रख दें। इससे विवाह में आने वाली बाधाएं दूर होकर विवाह की सम्भावना बन जाती है।

उपद्रव नाशक मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का, धरती में बैठया लोहे का पिण्ड राख लगाता गुरु गोरखनाथ जावन्ता धन्वता हांक देत धार-धार मार-मार शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मंगलवार या रविवार में प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर पूर्वाभिमुख होकर 108 जप करें, फिर आम की लकड़ी में इस मंत्र का 108 बार उच्चारण करते हुए खीर की आहुति देकर हवन करें। इसके प्रभाव से कलह, विद्वेष, दुर्घटनाएं आदि समाप्त होकर वातावरण शान्तिमय हो जाता है। यह प्रयोग केवल ग्यारह दिन तक करें।

अनाज में कीड़ा नहीं पड़ने का मंत्र

आगिन थामो, आगिनी थामो। सेतवान रामेश्वर थामो। कालि काल थामो। विरं कां थामो। वार हनुमान का थामो। दोहाई विष्णु का, दोहाई ब्रह्मा का।

21 दिन तक 108 जप कर सिद्ध करें। नदी के किनारे 21 कंकड़ों को अभिमंत्रित कर अनाज में रखें, तो कीड़े नहीं पड़ें।

गर्भ स्तम्भन मंत्र-1

ॐ नमो आदेश गुरु को, ॐ नमः आदेश अंग में बांधि राख नृसिंह यति

भोसते बांधि राख, गुरु गोरखनाथ कांखते बांधि राख, हशलिया राजा सुण्डो से बांधि राख दृढ़ासन देवी यह मन पवन काया को राख खंभे गर्भ ओ बांथे घाव थामे माता पार्वती यह गण्डो बांधूं ईश्वर यति, जब लग गण्डो कटि पर रहे तब लग गर्भ काया में रहे, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को ग्यारह दिन तक प्रतिदिन 108 जप कर सिद्ध करें। तदुपरान्त धागा बनाने के लिए पहले स्त्री की चोटी से एड़ी तक 7 बार सूत नापें और कुंआरी कन्या से इसे कतवाकर सात बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके सात बच्चों से गांठ लगवाएं, इस विधि से गण्डे को जो स्त्री धारण करती है, उसका गर्भ सुरक्षित रहता है। धागा कमर में धारण करें, जब सन्तान होने का समय हो उस समय धागे को खोलकर चौराहे पर फिंकवा दें।

रोग निवारक मंत्र

बन में बैठी बानरी, अंजनी जायो हनुमंत। बाला डमरू बाधिनी बिलारी। आंख की पीड़ा। मस्तक पीड़ा चौरासी बाय बलि-बलि भस्म हो जाए। पंके न फूटे पीड़ा करे तो जति गोरखनाथ रक्षा करे। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

झाड़ू से अथवा मोरपंख से मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए झाड़ा लगाएं, निश्चय ही लाभ होता है।

पीलिया का मंत्र

ॐ नमो वन में बियाई बन्दरी। खाय दुपहरिया कच्चा फल कन्दरी। आधो खाय के, आधो देती गिराय। हूंकत हनुमन्त के आधा शीशी चलि जाय।

इक्कीस दिन तक धूप-दीपादि से पूजन कर प्रतिदिन उपरोक्त मंत्र का 108 बार जप करें तो मंत्र सिद्ध हो। इसके पश्चात कांसे के पात्र में जल भरके नीम के पत्तों को कच्ची घानी के सरसों के तेल में भिगोकर रोगी को इस मंत्र को 31 बार जाप करते हुए झाड़ें। अथवा गन्ने की जड़ अभिमंत्रित कर बांधें, तो भी शीघ्र लाभ होता है।

व्यापारवर्द्धक शाबर मंत्र

ॐ अंग कल-पीह हरि-वर! आगिन बांधो, हनुमन्त वीर! नहि जरे हाथ, नहि जरे पाउं। अगिनी सो वाचा। हनुमन्त वी चले, तारा चलेय, जीरा नहि जरे,

क रख। दोहाई माहा भदलि पीर का, दोहाई फिदाय साहेब का, दोहाई पांच पीर औ लया का।

उपरोक्त मंत्र को आरम्भ कर कम-से-कम 11 हजार जाप अवश्य करें। महालक्ष्मी का धूप-दीप नैवेद्यादि से पूजन करें।

दुकान जब खोलें तब गद्दी पर बैठकर उपरोक्त मंत्र की एक माला जप कर लेवें।

झाड़े का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए मोरपंख के गुच्छे अथवा खुले चाकू से झाड़ा लगाएं। इस मंत्र के प्रभाव से अनेक प्रकार के रोगों एवं उपद्रवों की शांति होती है—

गंगा पार बबुर के गाछी।
झड़े कीड़ा झड़े रसोई।।
ईश्वर महादेव, पार्वती गुरु गोरखनाथ की दुहाई।
अद्वौदय बेला सात गोटि पड़ी मारे न रहे।

थन-थनैला झाड़ने का मंत्र

निम्न मंत्र को पढ़ते हुए स्त्री को स्तन झाड़ने से थनैला रोग समाप्त होता है। मंत्र पढ़ते समय धीरे-धीरे स्तनों पर हाथ भी फेरें—

कंप विलारी वध थनैला पांचवान माहि भैरों दैल कंप विलारी बध थनैला डावा पलट जा घर अपने राजा मनैरी की दुहाई जोड़ावार है गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

भूत-प्रेत झाड़ने का मंत्र

नयन नागरी पाय घाघरी नदी न काना च काना पहुंच रे नागरे मसाना जात नहीं जतन नहीं दैत्य मसान इसी वक्त उतरून जाय ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

किसी को भूत-प्रेत, डाकिन-शाकिन लगे हों, तो उपरोक्त मंत्र को पढ़कर 108 बार झाड़ा देने से आराम हो जाता है।

आई आंखें झाड़ने का मंत्र

काली कलकत्ते वाली जय हनुमान जय हनुमान जय चालीसा मेरे गुरु

गोरखनाथ की दुहाई। इसी वक्त आंख का रोग चला जाये मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से 31 बार फूंक मारें, दुखती आंखें ठीक हो जाएंगी।

पुतली का मंत्र

जंगली की योगिनी पाताल के नाग उठ गए मेरे वीर (उस स्त्री का नाम) लाओ मेरे पास जहां-जहां जाए मेरे सहाई तहां-तहां आब कजभरी नजभरी अंतासों अगरी तक नफे एक फूंक फिरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाए वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र का पुतली पर 1,108 बार जप करें और प्रत्येक बार मंत्र पर पुतली में एक फूंक मारें तो कार्य सिद्ध होगा। कार्य सिद्ध होने के पश्चात पुतली को श्मशान में ही गहरे दबा दें।

जादू-टोना हटाने का मंत्र

जय काली कलकत्ते वाली जय हनुमान जय चालीसा तेरा वचन न जाए खाली, अपनी चीज अपना मिल जाए, धरती खोल सुर पाय नखमा खो अपना सो पाई तेरे गुरु का वचन न सुहाई, इसी वक्त जादू-टोना यहां से भाग जाई, मारूं हांक गुरु गोरखनाथ की हांक ईश्वर गौरा-पार्वती महादेव की दुहाई।

बाधाग्रस्त के ऊपर से उपले की राख उतारकर बहते जल में प्रवाहित कर दें, 31 बार उतारकर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए।

मोहिनी मंत्र-2

जती हनुमंत कनेरी मेरे घट पिण्ड का कौन है वैरी छत्तीस पवन मोहि-मोहि जोहि-जोहि दह-दह मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा सत नाम आदेश गुरु का।

चौराहे से 21 कंकड़ी लाकर, पनघट के कुएं पर जाकर उन कंकड़ियों को मंत्र द्वारा 1,108 बार अभिमंत्रित करके उसी कुएं में डाल दें। उस कुएं का पानी जो भी पिएगा, वह वशीभूत होगा।

कष्ट देने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ को लाल पलंग नीरंगी छाया काढ़ि काढ़ कलेजा तू ही चख।

चौका लगाकर उस पर दीपक रखकर जलाएं तथा 21 बार 'आओ हनुमान जी' कहें। फिर 21 बार **'आओ कलुआ वीर रणधीर'** कहें। फिर गुग्गुल की धूनी देकर भोग रखें। इस क्रिया को नित्य करते हुए 22 दिनों तक प्रतिदिन 10,000 की संख्या में उक्त मंत्र का जप करें तथा जप के अंत में घृत में लौंग, सुपारी, जायफल, गुग्गुल तथा मिश्री का चूर्ण मिलाकर 1,126 बार मंत्र पढ़कर अग्नि में 1,126 आहुति दें। 21 दिनों के बाद यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इसके बाद 21 दिनों तक नित्य 3 माला मंत्र का जप करते रहने से कष्ट प्राप्त होता है।

तलवार बांधने का मंत्र-1

ॐ नमो धार अधर धार बांधूं सात बार कटे न रोम न भीजे चीर खड़े की धार लेकर हनुमान शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ उवाचा।

रास्ते की धूल पर मंत्र पढ़कर तलवार पर मारें, तो धार समाप्त होगी।

शरीर-रक्षा का मंत्र

डिव न डीहारि बान्हो, तीनों कोन प्रीथी बान्हो, चौठे कोण जलप्वा बान्हो। सर सह प्रमेश्वर सहस्र सर रक्ष्या करे। उदन्त काठी पुदन्त देस। कालि गेलि कमक्ष्या देश। गोहरि वासिखे गेलि। इंद्र के बेटी, ब्रह्मा के शालि, मसान चट्टी। बजावे तालि। थारि थूरी, सर्व खुरी उक्षिदैए, परा पराए, हम नहि बान्हेक्षी। हमरि भै गौरा पार्वती बान्हेक्षी। दोहाई महादेव का, दोहाई रोहिना का, चमार दोः अधोरि डोम जघ क्षोड़ी के जाई।

उपरोक्त मंत्र से साधक की रक्षा होती है। मंत्र को पढ़ते समय शरीर पर बार-बार फूंक मारें।

भूत-प्रेत पर झाड़ा

कंकाली-कंकाली कहां चल कजरी वन कजरी वन काहे का चंदन वृक्षा काटे का चंदन वृक्षा काहे का काला कोयला करेगा काला कोयला काहे का छपन्न छुरी गढ़ेगा। छप्पन छुरी काहे का नजर काट टोना काट टायर काट मटिया मसान जादू-टोना भूत-प्रेत अलाय बलाय और 'अमुक' रोग को काटकर कूटकर खारी समुद्र में न बहाए तो माता काली कंकाली न कहाए दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

इस मंत्र को पढ़ते हुए मोरपंख अथवा खुले चाकू से 108 बार झाड़ें।

गर्भ रक्षा मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का हनुमंत वीर गम्भीर धूजे धरती बंधावे थीरे बांध बांध हनुमंता वीर मास एक बांधूं, मास दोई बांधूं, मास तीन बांधूं, मास चार बांधूं, मास पांच बांधूं, मास छः बांधूं, मास सात बांधूं, मास आठ बांधूं, मास नौ बांधूं, अमुकी गर्भ गिरे नहीं ठांह रहे, ठांह का ठांह न रहे मेरा बांधा बंध छटे तो ईश्वर महोदव गोरखनाथ जती हनुमंत वीर लाजें मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मंत्र में जहां 'अमुकी' शब्द आया है, वहां गर्भवती स्त्री के नाम का उच्चारण करना चाहिए। एक डोरे में मंत्र को पढ़कर गर्भवती की कमर में बांधें। जहां 'अमुकी' शब्द आया है वहां गर्भवती स्त्री का नाम लें।

शत्रुता शमन मंत्र

ॐ नमो आदेश, कामरू देश कामख्या देवी। जले तेल-तेल, महातेल तारे। अमुक लहर पीर पल में टारे। मन्त्र पढ़े नरसिंह देव कुटिया में बैठ के, श्री रामचन्द्र जी रहि-रहि फूंक के। जाय अमूक जलन एक पलज में, जाय खाय सागर की नीर नोन में। आज्ञा हाडि दास। फुरो मन्त्र, चण्डी वाचा।

इस मंत्र को मंगलवार के दिन से आरम्भ करना चाहिए और 31 दिन तक प्रतिदिन 1,108 बार जप करें। प्रतिदिन मोतीचूर के लड्डुओं का भोग लगाकर बच्चों को बांटें। इस प्रकार करने से शत्रु स्वयं ही झुकेगा।

विष झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का क्यों रे बीछ तें को काट्यो गोद गिरी मुख चाख्यों में काठाने पानी प्याऊं का क्यों उतर जाए उतरे तो उतारूं चढ़े तो उतारूं चढ़े तो मारूं नातर गरूड़ मोर हंकारूं लंका सी कोट समुद्र-सी खाई उतर रे बीछ गोरखनाथ की दुहाई शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र द्वारा पानी को 31 बार अभिमंत्रित करके उसे पृथ्वी पर गिरा देने से किसी भी तरह के विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

बिच्छू का विष झाड़ने का मंत्र

सुरही कारी गाईं गाइ की चमरी पूछी ते करे गोबरे बिछी बिआइ बीछो तोरे कई जाति गोरवर्ण अठारह जातिछ कारीछ पीअरीछ भूमाधारीध रत्न पवारी

छ छ कुं है कुं हुं छारि उतरू बीछी हाइ हाइ पीर पीर ते कसमारे तीलकंठ गरमोर गोरखनाथ की दुहाई गौरा पार्वती की दुहाई अनीत टेहरी शडार बन छाई उतरहि बीछी हनुमंत की आज्ञा दुहाई हनुमंत की।

उक्त मंत्र को पढ़ते हुए झाड़ा देने से बिच्छू का विष उतर जाता है।

कण्ठ मंत्र

ॐ गुरुभ्यो नमः। देव-देव! पूरा दिशा भेरूनाथ-दल! क्षमा भरो, विशाहतो वैर, बिन आज्ञा। राजा बासुकी की आन, हाथ वेग चलाव।

इस मंत्र से अभिमंत्रित कोई भी वस्तु कण्ठ पर लगाएं।

भूत-प्रेत बोलने का मंत्र

ॐ थों थों ध्यान करता अलख यति हांक देते हां कार तथा लत बोल-बोल शब्द सांचा।

लहसुन के रस में हीरा हींग मिलाकर जिसको भूत-प्रेत लगा हो उसको लगाएं, तो वह बोले।

देहरक्षा का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को ओं अपर केस विकट भेस खंव पत प्रह्लाद राखे महादेव जी कोई इह पिंड प्राण को छड छेवे तो देवदाना भूत-प्रेत डाकिनी-शाकिनी गंडताप तिजारी जूडी एक पहरू द्वे पहरू शांक को सवारा को काजा को कराया, कराया को उलट वाही के पिंड पर पड़े इस पिंड की रक्षा श्री नृसिंह जी करे शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

इस मंत्र से गंगाजल को 31 बार अभिमंत्रित करके पिला दें, सब प्रकार के रोग-शोक आदि से रक्षा होती है। इसके अतिरिक्त निम्न मंत्र भी पढ़ सकते हैं—

आकाश बांधो, पाताल बांधो, बांधो तावा ताई।
धरती माता तोहे बांधो। दोहाई भैरो बाबा की।।
सामा तु आर बांध, सामा तु चारो कोना बांध।
सामा के संग, सामा को जला दिया।।
सामा तु भूत बांध, सामा तु पिशाच बांध।
सामा तु दानो बांध, सामा तु अकिन बांधा।।
सामा तु चुड़ैल बांध, सामा तु बैताल बांध।।

सामा तु संसार बांध, सामा तु आसमान बांध।
दोहाई कामरू कमक्ष्या, नैना योगिनि की।।

विषहरण मंत्र

थर पकड़ थसनि सार, ऊपर थसनि विष नीचे जाय, काहे विष तू इतना रिसाय, क्रोध तो तोर होय पानी हमारे थप्पर तोर नहीं टिकाना आज्ञा मनसा भाई की दुहाई मारूं हांक गुरु गोरखनाथ की हांक ईश्वर गोरा पार्वती महादेव की दुहाई।।

उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए एक थप्पड़ मारें, तो सर्प काटे व्यक्ति के विष की शांति हो जाती है। इसके पश्चात चिकित्सा हेतु अवश्य ले जाएं।

ततैया के काटने पर

आन ततैया मान ततैया कोदन की दुहाई ततैया हनुमान ने कही मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

लोहे की कील से 31 बार झाड़ा देवें, ठीक होवे।

चलने में थकान न हो

निम्न मंत्र का 11,000 जप करें, तो मंत्र सिद्ध होगा। फिर सरसों का तेल आंच में पकावें। उस तेल को सिर में, नाक में, कान में और पूरे शरीर में लगाने से चलने में कभी भी थकान न होगी। मंत्र इस प्रकार है—

तैल थामो तैलाई थाबों अग्नि वैसदर थांभो पांच पुत्र कुती के पांच चले केदार अग्नि चलेते हम चले गोरखनाथ के द्वार।

सर्पभय से रक्षा के लिए

गोरख जले परदेश कुतक मन में भावे बांध बांधू वधाइन बांधू बांध के सातों बच्चा बांधू सौंपा चोरा बांधू दांत बंधाऊ वाट बांधि दऊ दुहाई गुरु गोरखनाथ की।

प्रयोग से पूर्व इसकी सिद्धि आवश्यक है, जो 1,108 मंत्र के जप से मंगलवार को होती है। फिर मार्ग में जहां भी सर्प या व्याघ्र मिले, उपरोक्त मंत्र का 9 बार उच्चारण करके फूंक मारें। हिंसक पशु अपना मार्ग बदल देगा।

समस्त शरीर में पीड़ा होने पर

उस पार आती बुढ़िया छुतारी तिसके कंधे पै सरके पेटारी बह पेटारी कौन

कौन शर वाण सु-शर, कु-पोरा शर समान। 'अमुक' के अंग को व्यथा तन पीर। लवटि गिरे उसके कलेजे तीर आज्ञा पिता ईश्वर महादेव की दुहाई फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

अमुक के स्थान पर रोगी का नाम लेकर अनामिका अंगुली से सेंधा नमक से 31 बार अभिमंत्रित करके फूंक मारें और रोगी को खिलावें तो पीड़ा शांत हो जाएगी। इसके अतिरिक्त निम्न मंत्र भी पढ़ सकते हैं—

ॐ नमो, सत्तर सौ पीर, चौसठ सौ योगिनी, बावन सौ बहत्तर भैरव, तेरह सो तंत्र, चौदह सौ मंत्र, अठारह सौ पर्वत, नौ सौ नदी, निन्यानवें सौ नाला, हनुमान यति गोरखनाथ रखवाला, कांसे की कटोरी अंगुल साठ चौड़ी कहो वीर कहां ते चलाई गिरनार पर्वत से चलाई अठारह भार वनस्पति चले सोना चमारी को वाचा फुरो कानो कुम्हारी चाक ज्यों फिरे कहां कहां जाय चोर के जाय चांडाल के जाये गड़ी धन बताय चाल चालरे हनुमंत बीर जहां चले तहां रहे न चले तो गंगा-यमुना उल्टी बहें।

कण्ठबेल का मंत्र

ॐ नको कण्ठबेल तू दुम दुमारी। सिर पर जकड़ी वज्र की ताली। गोरखनाथ गाजता आया। बढ़ी बेलि को तुरन्त घटाया। जो कुछ बचो ताहि मुरझाया। घाटि गई बेल बढ़े नाहि पावे। बैठि तहां उठन नाहि पावे पके फटे पीड़ा करे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को इक्कीस दिन तक प्रतिदिन 1,108 मंत्र जप धूप-दीप नैवेद्य सहित एकाग्र मन व श्रद्धा भाव से करें। इस मंत्र का 31 बार उच्चारण करते हुए रोगी को मोरपंख के गुच्छे से झाड़ना चाहिए।

कुश्ती जीतें

अगर कभी अखाड़े में उतरना हो या कुश्ती करनी हो और इसमें जीत पाने की आशा कम हो अथवा आशा ही न हो, तब किसी कौवे को मार करके उसकी चर्बी निकाल लें और उसे अपनी दोनों हथेलियों तथा दोनों पांव के तलुओं में मल लें। इसके बाद अखाड़े में 'ॐ गुरु गोरखनाथ नमः' कहते-कहते जाएं, तब अवश्य जीत होती है।

ज्वर होने पर झाड़ा

दोऊ भाई ज्वर सुरा महावीर नाम।
दिन राति खटि भरे महादेव के ठाम।।
क्रूर क्षुदसे छत्तिस रूप मुहूर्तमों धराय।
नाराज नामूक के घर दुआर फिराय।।
ज्वाला ज्वरपाला ज्वरकाला ज्वरविशा की।
दोह ज्वर उधा ज्वर भूता ज्वर झूमकि।।
घोड़ा ज्वर भूता तिजारी ओ चौथाई।
सबन को भंग घोटान शिव ने बुझाई।।
यह ज्वर-ज्वर सुरा तू कौन और तकाव।
शीघ्र अमुक अंग छोड़ तुम जाय।।
यदि अंगन में तू भूलि भटकाय।
तो गुरु गोरखनाथ के लागा तू खाय।।
आदेश कामरू कामाक्षा माई,
आदेश हाड़ि दासी चंडी की दोहाई।

रोगी का मुख उत्तर की ओर करके 31 बार उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करके रोगी को झाड़ें। हर प्रकार के ज्वर की विकृति दूर होती है।

पीलिया पर झाड़ा

एक कांसे की धातु की कटोरी में तेल लेकर रोगी के सिर पर रखें और कुशा से उस तेल को चलाते हुए निम्न मंत्र को 31 बार पढ़ें। इस प्रकार पीलिया ठीक हो जाएगा—

ॐ नमो वीर वेताल इसराल, नार कहे तू देव खदी वादी।
पीलिया कूं भिदाती कारें, झाड़े पीलिया रहे न नेक।
जो कहीं रह जाये तो हनुमंत की आन।
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।।

गर्भ स्तम्भन मंत्र-2

गोरा काते ब्रह्मा बुने ईश्वर गांठी देय बिन पाके फूटे भुइयां गिरे तो राजा रामचन्द्र तुम्हारे मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र को पढ़कर सात गांठें लगाएं और स्त्री के गले में बांध दें, तो गर्भ स्तम्भन होगा।

ओले हांकने का प्रयोग

काली बिलइया लजबत पूंछ, उस पर बैठा हनुमंत वीर इसी वक्त पहाड़ ही पहाड़ नदी ही नदी चली जा मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गुरु गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

जब कभी ओले गिरने लगें तो सात ओले उठाकर और अपनी अनामिका उंगली का रक्त निकालकर उपरोक्त मंत्र से ओलों को बांधकर नदी की ओर फेंक दें, तो फिर ओले नहीं गिरेंगे।

रोग-शोक निवारण

निम्नलिखित मंत्र से रेत को अभिमंत्रित करें। उस मंत्र की कम-से-कम इक्कीस माला जपनी है। इसके बाद रेत से सारे शरीर का स्पर्श करावें। रोग-शोक का निवारण होगा। मंत्र इस प्रकार है—

महादेव कुक्कर लुटे-लुटे कान मोरे निकट आवहु सुनि आवे लोहनपह रक्षा करे गोरखनाथ गुरु।

घाव न होवे

साबुत काले उड़द निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करके शरीर पर मारें। घाव नहीं होगा—

काले तिल कवेला तिल गुजरी बैठी बीर पसारे सुई न बेधे माथाई पीर न आवे कतली करूइमती भारी दुष्य तिब्रकी लार अवनी बाकों सुई अषषाडें की धार आवे न लोहू न फूटे घाव रक्षा करें गुरु गोरखनाथ।

आंख झाड़ने का मंत्र

सोने की सिलौटी रूपे की जीरा सीता माता बाटे बैठी छर काटें छर बांटे, फूली काटे, भाड़ा काटें, लाली काटे, आंखी न काटे होरा काटे मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा-पार्वती गोरखनाथ की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए रोगी की आंखों में 31 बार फूंक मारें, आराम होगा।

गोरखमुण्डी, गोखरू और बिनौला को गाय के पेशाब में मिलाकर सुखाकर भूत-प्रेतग्रस्त रोगी को इसकी धूनी देने से भूत-प्रेत बाधाग्रस्त रोगी के भूत भाग जाते हैं।

आंचल झाड़ना

ऊंची-नीची टेकड़ी किसन चरावे गाय, आंचल झाड़े आपनो पीर पराई आये इसी वक्त "अमुक" बाईं का स्तर का कोड़ा सूख साख भस्म हो मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

जिस स्त्री के आंचल में फोड़ा हो गया हो उसका नाम पूछ लें। फिर अमुक के स्थान पर उस स्त्री का नाम लेकर अपने विपरीत आंचल से राख उतारकर 31 फूंक मार दें, आराम हो जाएगा।

स्तन में फोड़े का मंत्र

ऊँची पीपर जरजरों गैया चरै नौ सौ साठ आंचल का फोड़ा सूख साख इसी दम भस्म हो मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

जिस स्त्री के किसी स्तन में फोड़ा हो गया हो-और अगर उसका दायां स्तन है तो उसके दाए स्तन के ऊपर से उपले की राख उतरवाकर अपने विपरीत स्तन यानी बाएं स्तन से उतारकर उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए उस राख में 31 बार फूंक मार दें, सूख जाएगा।

कुसका झाड़ना

कारी छेरी करगेहीं करिया बैठी चोर, गोरा कहें महादेव से करिया को मार निकालो चोर। मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपले की ताजी राख से उपरोक्त मंत्र द्वारा 31 बार फूंक मारें, ऐसा दो समय करें।

सर्प-विष झाड़ने का मंत्र

परछले बदरिया अन्धेरी रतिया, सांप-सांपिन तू कौन-कौन जतियां। डड्नी खेले झाड़ू बाई और जितना बिष सब रहे पांव की ओर। आदेश विषहारी गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपले की राख से सर्प काटे व्यक्ति को 31 बार उपरोक्त मंत्र को पढ़कर झाड़ें। जहर उतर जाएगा।

टिड्डी बांधने का मंत्र

"अज्र बांधूं बज्र बांधूं बांधूं दशो द्वार लोहे का कोड़ा ठोके हनुमान, गिरे धरती लागे घाव सब टिड्डी भस्म हो जायें, बांधूं नाला ऊपर ठोकू बज्र का ताला नीचे भैरव किलकिलाय ऊपर हनुमन्त गाजें जो हमारे सीऊं में दाना-पानी खावे तो दुहाई राजा अजय पाल की फिर हांक गुरु की हांक ईश्वर गौरा गोरखनाथ महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से बासमती चावलों को अभिमंत्रित कर खेत और खलिहान में छींटे मारें और लोहे की कीली को अभिमंत्रित करें, चारों कोनों में गाड़ दें तो टिड्डी भाग जाती हैं।

सर्प खोलने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु का कीलन भई के कलनसा भये कुबाब जाओ सांप चुगन फिरने चौमासा दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खंड कामरू कामक्षा देवी की आन।

उपरोक्त मंत्र से अपने बाएं पैर की कंकरी को उठाकर उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर सर्प की तरफ फेंकने से सर्प खुल जाता है।

सर्प बन्धन

बज्र किकर बजरा कीलू आस-पास सर्पा मेरे होय छार मेरा बांधा पत्थर बंधे पत्थर फूटे न बाधा छूटे दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खंड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

उपरोक्त मंत्र को सात बार पढ़कर अपने बाएं पैर से कंकरी उठाकर सर्प की तरफ फेंकें, तो सर्प बंध जाता है और वह वार नहीं कर पाता है।

भूत-प्रेत बाधा में

निम्नलिखित मंत्र का जप करें और समय-समय पर इस मंत्र से झाड़ा देवें और अभिमंत्रित जल भी पिलावें। मंत्र इस प्रकार है—**हरि ॐ तत्सत् जय गुरुदत्त।**

दुःखती आंख ठीक हो

समुद्र में खाई उस मर्द की आंख आई, पाके न फूटे
करे न पीड़ा गुरु गोरखनाथ राखे पीड़ा मेरी आन मेरे
गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए दुःखती आंख पर झाड़ा देने से दुःखती आंख में शान्ति मिलती है।

घाव भरने का मंत्र

सार सार विजय सार-सार बांधूं सात बार फूटने बन्न
प उपजे घाव सीर राखे श्री गोरखनाथ शब्द सांचा
पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र पढ़ें, फिर घाव पर फूंक दें, तो घार भरेगा, पीड़ा न होगी।

बगल की गांठ को बैठाने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को ग्रहण के समय 101 माला जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए तथा जहां बैठकर झाड़ा दिया हो उस स्थान की मिट्टी बांध देना चाहिए। तीन दिन में कंखराई की गांठ बैठ जाएगी। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ नमो कंखराई भरी तलाई जहां बैठा हनुमन्ता आई पके न
फूटे न फूटे न पीड़ा रक्षा करे हनुमन्त वीर दुहाई गोरखनाथ की

शब्द सांचा पिण्ड कांचा। फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। सत्यनाम आदेश गुरु का।

ॐ नमो आदेश गुरु गोरखनाथ का ॐ ऊपर के सविकट भेष स्वभपति प्रह्लाद खावे पाताल राखे पांच देवी जंघा राखे कालिका मस्तक राखे महादेवी जी कोई ये पिंड प्रण को बेधे तो देव-दानों भूत-प्रेत डाकिनी-शाकिनी गंडमाला तिजारी एक पहरू सांझ को सवेरे के लिए कराये को वाहि के पेड़ इसकी रक्षा गोरखनाथ करेंगे, शब्द सांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को 31 बार पढ़कर रोगी को झाड़ दें, तो अच्छा हो जाएगा।

सर्प-बिच्छू बिष बन्धन मंत्र

दूकर बंध बांधूं तिकर बांधूं चौथा बांध बांधूं पांचवां बंध बांधूं छिटवा बंध बांधूं सौ बरस का बंध बांधूं मेरे बंध से बंध जा माता कूद की आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ की दुहाई।

अगर किसी व्यक्ति को सर्प काट ले और आपको यह खबर लगे कि फलां जगह पर "अमुक" व्यक्ति को सर्प या बिच्छू ने काटा है तो तुरन्त ही वहां पहुंचकर उस व्यक्ति के दंशित स्थान से ऊपर बंध बांध देना चाहिए। फिर उपरोक्त मंत्र को पढ़कर 108 बार झाड़ा देवें।

गर्भ की सुरक्षा हेतु

ॐ नमो गंगा डाकरे गोरख बलाय धीपर गोरख यती पूजा जाये। जयद्रथ पुत्र ईश्वर की माया।

उपरोक्त मंत्र द्वारा गण्डा बनाने के लिये कुमारी कन्या द्वारा काते हुए सूत को 31 बार इस मंत्र से अभिमंत्रित करें। अगर गर्भ के गिरने की आशंका हो या रक्त प्रवाहित हो रहा हो, तो भी इससे लाभ होते देखा गया है।

गर्भपात न हो

ॐ नमः आदेश गुरु को ॐ नमः आदेश अंग में बांधि राख, नृसिंह यती भोसते बांधी राख, श्री गोरखनाथ कांखते बांधि राख हूपलिका राजा सुण्डो से बांधि राख दृढ़ासन देवी यह

मन पवन काया को राख थमे गर्भ ॐ बांधे घाव थामे माता पार्वती यह गंडो बांधूं ईश्वर यती, जब लग डांडो कट पर रहे तब लग गर्भ काया में रहे, फुरो मंत्र मंत्र ईश्वरो वाचा।

गर्भिणी की कमर में काला डोरा बांधने का विधान यह है कि पहले स्त्री की पूरी लम्बाई तक 7 बार सूत नापें और 31 बार उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित करके 9 गांठ लगावें। इस विधि से बनाए गए गण्डे को जो स्त्री कमर में धारण करती है, उसका गर्भ सुरक्षित रहता है।

स्त्री के पैर थामने का मंत्र

गौरी गंडा दे गई ईश्वरी दे गया वाचा महादेव थापा घर गयी हुआ शब्द ये सांचा। दश त्रिया की चिन्ता भेंटी दशमासा बांधूं बीस पाख बांधे इसका पैर खिसे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिर ईश्वरी गौरा दियो तालवा घट पिण्ड का गुरु गोरखनाथ रखवाला शब्द सांचा पिण्ड कांचा गुरु गोरखनाथ रख शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्यनाम आदेश गुरु का।

31 बार जपकर सूत का गण्डा बनाकर बांधें, तो पैर थमे। इस मंत्र को ग्रहण के दिन जपकर सिद्ध कर लें।

पशुओं के कीड़े झाड़ने का मंत्र

ॐ नमो कीड़ारे तू कुण्ड कुण्डाला, लाल पूंछ तेरा मुंह काला। मैं तोय बूझा कहां से आया, लो ही मैंने सबका खाया, अब तू आप भस्म हो जाये, गुरु गोरखनाथ कर सहाय।

उपरोक्त मंत्र द्वारा नीम की टहनी से 31 बार झाड़ा लगाने से कीड़े मर जाएंगे।

नजर दूर करने का मंत्र

ॐ नमो सत्य नाम आदेश गुरु का। ॐ नमो नजर जहां पर पानी जानी बोले छलसों अमृत वानी कही नजर कहां से आई, यहां की ठोंर तोय कौन बताई कौन जाति तेरी कहा ठान, किसकी बेटी कहां तेरो नाम, कहां से उढ़ी कहीं की जाय अब ही वास कर ले तेरी माय मेरी जात सुनो चितलाय जैसे

होय सुनाऊं आय तेलिन तमोलिन चूहड़ी चमारी कायस्थी खतरानी कुम्हारी महत रानी राजा को रानी जाको दोष वाहे के सिर पड़े गोरखनाथ रक्षा करें, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए, मोरपंख के गुच्छे से रोगी को सिर से पैर तक 31 बार झाड़ा लगावें।

चोर का पता चले

ॐ नमो नरसिंह बीर ज्यू-ज्यूं तेरी चले पवन चले पानी चले चोर-चित्त चले थहराय चोर ही चाले कथ माया परू करे वीर या नाथ की पूजा मंत्र टेले या तो गुरु गोरखनाथ की आज्ञा न चले तो चौरासी सिद्ध का आदेश मिटे।

सन्धया के समय कटोरी में सेला चावल लें और उसे उपरोक्त मंत्र से 201 बार अभिमंत्रित करके किसी तुलसी के पौधे में सुरक्षित रूप से रख दें और उसकी सुरक्षा के लिए पूरी रात वहां रहकर जागते रहें, प्रातःकाल संदेहस्पद व्यक्तियों को चावल खिलाएं। चोर का पता चल जाएगा।

घाव के लिए

ॐ नमो सार सार विजय सार संसार बांधूं सात बार बैड़े अंग न उपजे घाव सिर राखे श्री गोरखनाथ।

किसी भी शस्त्र से घाव हो गया हो, तो उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण करके फूंकें, तो घाव भरने लगता है।

कष्ट की निवृत्ति के लिए

ॐ नमो खों खंगारन खंगारन कहां गइले नन्दन वन चन्दन वन काट के। किसके सत्ताइस दुअरिआ गढ़े किसके सत्ताइस दुआरिया गढ़ के हूंक काटो फोड़। काटो फुट की काटो काशा काटो बांसा काटो करो काट कुट के पिता ईश्वर महादेव की शक्ति गुरु की भक्ति से झारों बलाई जात नहीं तो गोरखनाथ की दोहाई फिरै।

उपरोक्त मंत्र का 31 बार उच्चारण करके चोट के स्थान पर फूंक मारते हुए धीरे-धीरे हाथ फेरें।

सरसों द्वारा वशीकरण

कामरू देश कामाक्षा देवी जहां बसे इस्मायल योगी चल रे सरसों कामरू जाइ जहां बैठी बुढ़िया छुतारी माई भेजूं सरसों उसके खप्पर कर रे सरसों अमुकी को वश कर न करे तो गुरु गोरखनाथ बंगाल खंड कामरू कामाक्षा देवी इस्मायल योगी लजाये।

उपरोक्त मंत्र से 31 बार सरसों को अभिमंत्रित कर जिस स्त्री पर मारें, वह वशीभूत हो जाती है।

धूल द्वारा वशीकरण

धूल-धूल तू धल की रानी जगमोहन सुन मोरी बानी जल से धुला आन पढ़ूं तब पार्वती के वरदान धूलि पढ़ दूं, अमुको अंग आकर रहें फलाने संग मेरी आन मेरे गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ की दुहाई।

जिसे वश में करना हो उस स्त्री के बाएं पैर की धूल और श्मशान की भस्म उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर किसी स्त्री के शरीर पर डाल देने से वह वशीभूत हो जाती है।

रतौंधी के लिए

ॐ भाट-भाटिनी निकली कहे चलि जायो उस पार जाइब जाइब हम जाऊ समुद्र पार। भाटिनी बोली हम बिआइब उसको छाली बिजाइव हम उपस माछी पर मुंडा-मुंडा अंडा सोहिला तारा तारा अजय पाल राजा उतर रहे पार, अजय पाल रानी भरत रहे मसकतार यह देख गोरखनाथ बोला बोढ़िया मेला उजाढ़ तैके हम अधोखी जाय रतौंधी ईश्वर महादेव के दुहायी उतरि जाय।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए रतौंधी के रोगी को झाड़ने से रतौंधी-रोगी को काफी आराम मिलता है।

कीड़ा झाड़ने का मंत्र-2

ॐ नमो कीड़ा रे तु कुण्ड-कुण्डाला, लाल पूंछ तेरा मुख काला, मैं तोहि पूछूं कहां ते आया, तोड़ मांस सबको क्यों खाया, अब तू जाय भस्म हो जाय, गोरखनाथ के लाग पाय शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए नीम की डाली के माध्यम से 31 बार झाड़ना चाहिए। इससे सभी कीड़े मर जाते हैं।

दांत का कीड़ा झाड़ने के लिए

ॐ नमो आदेश गुरु को वन में।
ब्याही अंजनी, जिन जाया हनुमन्त।।
कीड़ामकड़ा माकड़ा, से तीनों भरमस्त।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।।

इसका शुभारम्भ दीपावली से करना चाहिए। मंत्र सिद्ध होने पर नीम की डाली से झाड़ने पर कष्ट समाप्त हो जाते हैं। अगर इस मंत्र का उपयोग करते हुए कटाई के बीजों का धुआं दांतों में दें, तो कीड़े भी निकल जाते हैं।

टिड्डी को बैठाने का मंत्र

अगर उड़ती हुई टिड्डियों को बैठाना हो तो निम्नलिखित मंत्र का प्रयोग करना चाहिए—

ॐ नमो आदेश गुरु को अजर कीलनी वज्र का ताला, कीलू टीडी धरू मसान, धर मार धरती सों मार सवा अंगुल पांख धरती में गड़े, ऊपर मोहम्मद वीर की चढ़े, पथ धरता चाटे खाई, बायें हाथ में ल्हे हाथ में उठाव, मेरा गुरु उठावे तो उठावे और चक्रसों उठे तो दुहाई गोरखनाथ की फिरे आदेश गुरु को।

गले के रोग में तेल मंत्र

आकाश तेल पाताल तेल मुंह में बाप लगाये तेल सियाल सिन्दूर सिग्गी हीरे फिराये आशा देवी मन्सामाई, आशा विषहारी राई की दुहाई, इसी वक्त गल गण्ड रोग चला जाए मेरी आन गुरु गोरखनाथ की आन ईश्वर गौरा महादेव की दुहाई।

उपरोक्त मंत्र से 31 बार शुद्ध नारियल के तेल को अभिमंत्रित कर, गले में लगाएं, तो गले का रोग नष्ट हो जाता है।

अग्नि स्तम्भन मंत्र

ॐ नमो जल बांधूं जलवाई बांधूं बांधूं तूवा ताई, नोसे गांव का वीर बुआऊं रहो-रहो रे कड़ाही, गुरु गोरखनाथ।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए झाड़े की दुहाई दें। इस मंत्र से प्रचंड अग्नि का भी स्तम्भन होता है।

तेल द्वारा स्तम्भन

अग्रलिखित मंत्र को 21 बार पढ़ने से कोल्हू से तेल निकलना बन्द हो जाता है—

"तले थांभो तेलाई थांभो अग्नि बैसंबर थांभो पांच पुत्र कुन्ती के पांचों चले केदार अग्नि चलते हम चले अगिया परो तुषार।"

कड़ाही स्तम्भन

बन बांधो बन में दिनि बांधो बांधो कंठाधार तहां थां भी तेल तेलाई और थां भी बैसंदर छार। बन में प्लुवीतल ताते लावे जय पार ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनि अचलकेदार देवी-देवी कामाक्षा की दुहाई, पानी पंथ होई जाइ।

उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए कोई वस्तु कड़ाही पर धीरे-धीरे मारें। स्तम्भन होगा।

दांत-पीड़ा में

ॐ नमः आदेश गुरु गोरखनाथ की सवारी में
शीशी, शीशी में मीची, मीची में सूड़ा, मसूड़ा में
पीड़ा कीड़ा मरे पीड़ा टरे फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र का प्रयोग रविवार के दिन किया जाता है। पांच लोहे के कांटों के द्वारा 21 बार झाड़ें, उनमें से 9 कांटों को कुएं में डाल दें और दूसरों को खट्टे जल से भिगोकर नीम में गाड़ दें। शेष तीन प्रवाहित कर दें। इस प्रक्रिया से दांत-दर्द की निवृत्ति होती है और अगर दांतों में कीड़े हों, तो वे मर जाते हैं।

मुख-बंधन हेतु

निम्नलिखित मंत्र 31 बार पढ़कर शत्रु की ओर फूंक मारें। मुख-बंधन होगा—

"तागा तागा तागा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर-तिन देव लागा। एक तागा नडे-चडे। ईश्वरी करतार करे।"

चौकी देने का मंत्र

दिन की रक्षा करें सूर्य देव रात की धरती माई, लोहे का कोट तांबे की खाई, अब चौकी बजरंग की आई, दुहाई गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

जहां भी चौकी देनी हो, वहां राई को अभिमंत्रित कर जितनी जगह में चौकी देना हो उतनी जगह के चारों ओर डाल देवें, तो कोई भय नहीं रहेगा। इसके पश्चात् उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए चौकी देवें।

दूध सूखने पर दूध उतारने का मंत्र

अपटवीर झपटवीर हार-हार के मरघट के मसान के नटखट ईशान के हाई हाड़कर, रोम-रोम कर, नस-नस कर, कोठा-कोठा कर चार सोत का दूध छान छानकर चार सोत से व लायें तो माता काली का पूत काल भैरव न कहाये मेरी गुरु की आन ईश्वर गौरा पार्वती गोरखनाथ जी की दुहाई।

जिस औरत का या पशु का दूध सूख गया हो, उसके ऊपर से कण्डों की राख को उतारकर सात बार मंत्र पढ़ते हुए 31 फूंक मारें, तो पुनः दूध उतर आता है, दिन में तीन समय झाड़ा देने से प्रभाव दिखलाता है।

रक्त उतरने का मंत्र

सींक फाड़ धनुआ करौ सीचौं कारा नाग खून का दूध बुहारो सोये देव पटकाय अर्जुन जैसे बाणा मारी, झाड़े झूरा बाण दुहाई अर्जुन पण्डा की गुरु गोरखनाथ बंगाल खण्ड कामरू कामाक्षा देवी की आन।

उपले की राख को रोगी के ऊपर से उतारकर उपरोक्त मंत्र को पढ़कर 21 बार फूंक मारें, तो फिर से दूध आ जाएगा और खून का आना बन्द हो जाएगा। इसका तीन दिन दोनों समय झाड़ा देवें।

बच्चों की डोकी बांधने का मंत्र

"तागा तागा तागा। ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर-तिन देव लागा। श्मशानेर घाटेर श्रगाल का डेरा। आय विष तुई लागा, छिडे भस्म हयेजा।"

बच्चे के ऊपर से कण्डों की राख उतारकर मंत्र पढ़ते हुए सात बार उस राख को बच्चे की तरफ मंत्र पढ़ते हुए फूंक मारें, तुरन्त ही डोकी बन्द हो जाएगी।

हांडी बांधने का मंत्र

खनाह की माटी चरी का पानी गंध चढ़ि भीख चलानीकाची पाली ऊपर जड़ी वज्र की ताली तुले भरो किलकिले ऊपर नरसिंह गाजे मेरी बांधे हांडी उकल तो गुय गोरखनाथ की लाज। शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

मार्ग में से 7 कंकड़ी लेकर, एक-एक कंकड़ी पर 21-21 बार मंत्र पढ़कर हांडी में मारने से चाहे जितनी आग जलाई जाए, फिर भी हांडी गरम नहीं होगी।

नेत्रपीड़ा हेतु

"मर्द की आंख आई, पके न फूटे पीड़ा करे गुरु गोरखनाथ जी की आज्ञा करें गुरु शक्ति की मेरी पूजा करो मंत्र ईश्वरो वाचा।"

सेंधा नमक की 11 कंकड़ी से हर बार मंत्र पढ़कर चखें, तो आंख अच्छी हो।

आंख दुःखने का मंत्र

ॐ नमो झलमल जहर नली उलाई अस्ताबल पर्वत से आई जहां बैठा गोरखनाथ जाई, फूटे न पाके करें न पीड़ा यति हनुमंत्र ठाके पीड़ा।"

नीम की डाली से 21 बार झाड़ें, साथ ही मंत्र पढ़ते जाएं।

व्यापारवर्द्धक लक्ष्मी साधना

ॐ शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवास श्री महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सत की सवाई आवा चेतो करो भलाई, ना करो तो सात समुद्र की दुहाई, ऋद्धि-सिद्धि खग तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों की दुहाई।

इस मंत्र को पूर्वोक्त विधि द्वारा धूप-दीप नैवेद्यादि सहित 55 दिन में सवा लाख जप नियमों का पालन करके फिर एक माला प्रतिदिन जप करें, तो साधक को अक्षय सुख प्राप्त होता है।

बाघ भगाने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को 31 बार पढ़कर अपने से स्पर्श कराने से बाघ से रक्षा होती है। मंत्र इस प्रकार है—

महादेव की कुक्कर लटै लुटे कान मोरे निकट आबहु मुनि आवे लोहनपह पाठ रक्षा करें थी गोरखनाथ।

पीलिया रोग का मंत्र

ॐ नमो वीर बैताल विकराल नरसिंह देव, खादी पिमिया कूं मिदाती कारे भार पीलिया रह न नेक निशान। जो कही रह जायें तो गुरु गोरखनाथ की आन मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

एक कटोरे में तेल लेकर रोगी के मस्तक के ऊपर रखें और फिर उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए तेल को चलाते जाएं। जब वह तेल एकदम पीला हो जाए, तब उसे उतार लें। इस प्रकार तीन दिन तक करें।

आंख दुःखना दूर होय

ॐ नमो आदेश गुरु का समुद्र में खाई। इस मर्द के आंख आई।
पाके न फूटे पीड़ा न करे। गुरु गोरखनाथ जी अच्छा करें।
गुरु की शक्ति मेरी भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

लाहोरी नमक की सात कंकड़ियों को अभिमंत्रित करके आंकने से आंखें दुःखना ठीक हो जाती हैं।

बंधन का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ने से बंधन होता है—

गोरख चल विदेश कहे सातों दे है बांधि से पांचों चोरविग तथा गोरखनाथ की दुहाई जो काहु सतावें।

सूई छेदने का मंत्र

धार-धार महाधार वार बांधूं सात बार अणी बांधूं
तीन बार मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो
वाचा, दुहाई गुरु गोरखनाथ की छः।

इस मंत्र से सूई को 31 बार अभिमंत्रित करके गाल में छेदें तो पीड़ा न हो।

छेदने से पूर्व परीक्षा करनी आवश्यक है। परीक्षा न करने पर अहित सम्भव है।

गागर छेदने का मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को पढ़ने से गागर में कभी छेद नहीं होता है—

नीरा धार बांधो नक्षवार न बहै धाऊ न फूटे धार रक्षा करें श्री गोरखनाथ।

कुत्ते का विष उतारने का मंत्र

ॐ नमो कामरू देश कामाक्षा देवी जहां वसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी न पाली कुत्ता दस काली दस पीली दस लाल दस काबरी रंग-बिरंगी दस खड़ी दस माल ठिकाने रक्षाकर इसका विष हरेगुरु गोरखनाथ व शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को ग्रहण की रात्रि में 1,108 बार जपकर शुद्ध घी का दीपक जलाकर भोग रखें। इसके पश्चात् इक्कीस दिन तक 1,108 बार जप सिद्ध करें। इसके बाद कुत्ते के काटे रोगी के घाव के चारों ओर गोईठा की राख या विभूति लेकर 31 बार मंत्र पढ़ते हुए वह विभूति लगाते जाएं।

शस्त्रास्त्र-स्तम्भन मंत्र

निम्नलिखित मंत्र को 31 बार पढ़कर धूलि स्पर्श करने से शस्त्र का स्तम्भन होता है—

बांधो तूपक अवनि बार न धरै न परै घाउ करें श्री गोरखनाथ।

सूई बन्धन मंत्र

सूई हाथ में लेकर निम्नलिखित मंत्र को 312 बार पढ़ें, फिर जहां बांधेंगे वहां छेदेगी—

धार-धार बांधो सात बार न लागे न फूटे न आवे घाव रक्षा करें श्री गोरखनाथ मेरी भक्ति गुरु की शक्ति हनुमन्त वीर रक्षा कर फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

शस्त्र की धार बांधने का मंत्र

माता-पिता गुरु बांधो धार बांधो अस्त्रा वश्ये कटे मुने बांधा

हनुमन्तनसुर नवलाख शूद्रनपाके पाउ रक्षा कर श्री गोरखनाथ एता देइन वाचा नरसिंह के दुहाई हमारी सर्वात आ।
उपरोक्त मंत्र को 31 बार पढ़ने पर शस्त्र घाव नहीं करता है।

ढाल रोपने का मंत्र

ॐ काली देवी किलकिला भैरू चौसठ जोगनी बावन वीर, तांबा का पैसा वज्ज की लाठी मेरा कीला चले न साथ ऊपर हनुमंत वीर गाजे मेरा लीखा पैसा चले तो गुरु गोरखनाथ लाजे शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त मंत्र को जपने से ढाल रोपने का काम आसानी से हो जाता है।

तलवार बांधने का मंत्र-2

ॐ धार-धार अधर धार-धार, बांधूं सातवांकुटे न रोम ना भीजे चीप, खांडा की धार ले गयो गोरखनाथ शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उक्त मंत्र से 31 बार अभिमंत्रित मिट्टी को अपने शरीर पर लगा लेने से चोट न लगे।

सांप निकालने का मंत्र

ॐ नमो सर्वरि भूल मधु ममु खबना तेरा कमल का सरपा तेरी बांधूं दानी जिसने तू गोद खिलाया और बांधूं तन कटोरा जिसमें दूध पिलाया। बीन की तली ऐसी करें जो तेरी डाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरखनाथ भी जाग्र जलाय। आदेश गुरु मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

इस मंत्र को शिवरात्रि से प्रारम्भ करके वर्षभर तक जप करें, सिद्धि हो जाने के पश्चात उपले की राख लेकर सात बार सांप के ऊपर डालें, तो वह स्तम्भित हो जाएगा।

सपेरे की बीन बांधने का मंत्र

ॐ नमो वादी प्रभाव राढ़ बैरी का बैठा बड़ पीपल की छाया और बारी न कीजे बांधूं तेरा कण्ठ अरू काया बांधूं वेन अरू

योगी और मसान की बानी अब तो रह बीन सुजान वाले नरसिंह ऊपर गोरखनाथ तो बीन न बजेगी।

उपरोक्त मंत्र को सवा लाख बार जप कर सिद्ध कर लें, फिर जब बीन बांधनी हो तो 31 बार मंत्र पढ़कर दाढ़ को कीलें तथा उसको कुएं में डाल दें, तो कीड़े मर जाएंगे।

चोरी निकालने का मंत्र

ॐ नमो पतरसी पीर चौसठ योगिनी 52 सौ बीर बहत्तर सौ भैरो तेरह सौ तंत्र चौदह सौ मंत्र सत्तर सौ पहाड़ नौ सौ नदी-नाला गुरु गोरख वाला कांसी कटोरी अंगुल बार चौड़ी कहा वीर कहां से आई गिरी पर्वत से मंगवाई अठारह भार वनस्पति चलोना चमारी कानी कुम्हारी कहां जाये चोरे के जाय चांडाल के जाय क्या लावे चोर को पकड़ लावे गड़ा धन जाय बताय बास न जहां हनुमन्त वीर बसे।

कांसे की कटोरी अंगुलभर चौड़ी लेकर दीपावली की रात्रि को कटोरी की पूजा करें, फिर इस मंत्र से अभिमंत्रित करके गाड़ दें, चोरी गई वस्तु का पता शीघ्र चल जाएगा। इसमें सबसे पहले गोरखनाथ की दुहाई देवें।

चोरी का पता लगाने का मंत्र

ॐ नमो नाहर सिंह वीर, जन-जन तू चाले, पवन चाले, पानी चाले, चोर का चित्त चाले, चोर मुख लोही चाले, काया धम वे माया परा करे वीर का या गोरखनाथ की पूजा पाई टले, गोरखनाथ की आज्ञा मेरे नौ हाथ चौरासी सिद्ध की आज्ञा।

चावलों को उक्त मंत्र से 1,108 बार अभिमंत्रित करें। फिर कटोरी द्वारा चोर का पता लगावें।

चोर का पता लगाने का मंत्र

ॐ नाहर सिंह वीर हरे कपड़े ॐ नाहर सिंह वीर चावल चुपड़े सरसों के फक-फक करे शाह को छोड़े चोर को पकड़े आदेश गुरु गोरखनाथ को।

चोकोर सिक्का जिसमें छिद्र न हो, लें। मंगलवार को उसे गऊ के दूध से

धोएं तथा लोबान की धूनी दें। फिर सवा पाव चावल लाकर उन्हें पानी में धोकर गोमूत्र में भिगोकर सुखावें। फिर शनिवार की प्रातः धरती को लीपकर उस पर सफेद कपड़ा बिछावें और कपड़े के ऊपर चावलों को रखकर लोबान की धूप दें, फिर उन चावलों को 31 बार अभिमंत्रित कर सिक्के के बराबर चावल तौलकर उन लोगों को चबाने के लिए दें, जिन पर चोरी का सन्देह हो। इस विधि से चोर का पता चल जाएगा।

प्रेत निवारण मंत्र

ॐ नमो आठ खाट की लकड़ी भुजबनी का मुर्दामुरादा नहीं तो गोरखनाथ की आन।

चमेली के फूल, लोबान की छाल, छबीली लवंग, देशी कपूर, बच आदि लेकर मसान में जाएं और साधना करें, तो श्मशान सिद्ध होता है।

बिच्छू का विष उतारने का मंत्र

पाव कू राखे पायेला। पिठ कू राखे काल-भैरव। क्षेत्रपाल शिर को राखे। हनुमन्त रखवाल सिलकरे, राज करे, प्रधान करे, अकल करे, सही करे। टोना करे, बुध-घात करे, केस-घात करे, जो करे वही मरे। फुरो मन्त्र, गुरु महादेव का। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।। छू

दीपावली के दिन इस मंत्र को 1,108 बार जपकर सिद्ध कर लें फिर जिसको बिच्छू ने काटा हो इसको पढ़कर पानी पिलाएं, तो विष उतरे।

विद्वेषण मंत्र

हनुमन्ता-गुणवन्ता, कुडली कपाट से कमान। बैठे आगलट पालगट बांध। कनेरी का घाट। जल बांध, थल बांध। फिरती कैकण्ड बांध, आग्या बीर बांध, बावन कुय्या बांध, बावन मेसका बांध। कौन बांधी, हनुमान वीर बांधी। ना बांधी, तो गुरु वस्ताद हनुमन्ता की आन। गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति। चलो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।

सरसों, राई, मेथी और चिता की भस्म लावें और आम की लकड़ी का चूर्ण

बनाकर 1,108 बार मंत्र पढ़कर हवन करें। फिर जहां मित्र बैठते हों अथवा रहते हों वहां राख को डालें, तो दोनों का विद्वेषण हो जाएगा।

डाकिनी भगाने का मंत्र

ॐ नमो लोह सिहाय लोह लाऊ सिसनांद नश्तर मंडा रासवीर ने नस्तर गढ़ाया लक्ष्मण वीर ने सबसे बजिया मुंड तेरी डाकिनी भाई जिसने दिया। तुझे जनमा और मुंड तेरा गुरु पीर जिन दिया मास कर मुंड तेरा पिता गोरखनाथ से आवो जा लंका जारी मारी मुडिकातग्मिहावीर ध्वजा धीवती देख्या सिर मुंडिरे छप्पड़ भैरों गांव वापर संग लेहरू मुंडेर हनुमन्त वीर जाका जियो धरे न धरे घर बैठा में गींडा मुंह गात बन काहे को ढंडय मंत्र से मुंडप डाकिनी सिहार हनुमन्त यती आन तुम्हारी।

उपरोक्त मंत्र का निरन्तर जाप करते रहने से डाकिनी भाग जाती है।

कखलाई का मंत्र

काली काली, महा-काली। ज्यावे सीपी, वलके डाहोली। दोनों हात से बजावे टाली। बांएं याट ज्या बसे, काल-भैरव। उसका काट-काट। कौन रख कनकाला तोहू, म्हसासूर येऊ का उज्याला कर आला। मछिन्द्र का सोटा, काल-भैरव का पाव तुटा। दूरालाजी लूखा। किया हाला सती सके का बांधूं। काल राखे गोरखनाथ सिंहनाथ। फुरे अडबंगी। बोले, फुरो मन्त्र, ईश्वरी वाचा।।

31 बार मंत्र पढ़कर नीम की डाली से झाड़ा देने तथा कखलाई वाले स्थान पर मिट्टी लगा देने से वह शीघ्र बैठ जाती है।

धरन ठिकाने आने का मंत्र

ऊंची-नीची धरणी श्री महादेव की सरनी दली धरन आनू ठोर सत सत भाखै श्री गोरखनाथ।

उपरोक्त मंत्र से 21 बार झाड़ा देकर, चांदी की अंगूठी पांव के अंगूठे में पहना देने से धरन ठिकाने पर आ जाती है।

नारी के पैर बांधने का मंत्र

मोरी गादूदे ईश्वर दे गया वाचा महादेव आप घर गया हुआ शब्द या सांचा। दस स्त्रियों को चिन्ता भेदी दस मांस दहपाछ बीस पंख बाबू इनका पैर अगर खिसे तो गुरु गोरखनाथ की दुहाई फिरे ईश्वरो गौरा दिबाताला या गट पिंड का गुरु गोरखनाथ रखवाला शब्द सांचा पिंड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति सत्यनाम आदेश गुरु का।

इस मंत्र को 31 बार इक्कीस दिन तक जपें, तो औरत का पैर थम जाता है, यह मेरा परीक्षित मंत्र है।

कीड़े झाड़ना

वहां से मोहम्मदा विर कहां से आया? गडी-गड से आया। कौन का पूत, जो कौन का पूत बांध। चौरासी लाख भूत बांध। सात से बांध। हसन-हूसेन कपाली जायचे हज चले। मोहम्मदा वीर चले। हनुमान वीर चले। अठरा कोटी विद्या चले। नवसे चले। अर्जुन के वाण चले। भाव की गदा चले।

उपरोक्त मंत्र से झाड़ा देने पर कीड़े समाप्त हो जाते हैं।

नजर दूर करने का मंत्र

ॐ नमोः सत्यनाम आदेश गुरु को ढाम नजर कहां पर पीर न जानी। बोले छत से अमृत बानी, नजर कहां से आई। कहां के ठेरे की अवताई। कौन जाति तेरे कहां धाम किसकी बेटी कहां से उड़ी कहां जाए अब बास कर ले तेरी माया। मेरी बात सुनो चितलाय जैसे होय सुनाऊं आय। लेकिन तमोलिनी चमारी कायस्थान खमरानी कुम्हारी महतरानी राजा की रानी। जा को दोष वाही के सिर पड़े, पार नजर सो रक्षा करे। मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो गोरखनाथ वाचा दे।

उपरोक्त मंत्र पढ़ते हुए सिर से पैर तक झाड़ा दें।

सूई काटने का मंत्र

बीर हनुमान, बड़ा प्रतापी। वहां भेजूं बाजे चौघडा, चार घडा।
कहां-कहां का चार घड़ा, चार विरोकर पहिला वीर कौन-सा?
पहिला काल-भैरव, दुसरा विर महा-वीर। तिसरा मोहम्मदा वीर,
चौथा वीर आग्या वेताल। ज्या रे, कहा ज्या, जील घठानी ज्या।

अभिमंत्रित विभूति को चुटकी भर लेकर उस स्थान पर फेरें जहां सूई गड़ी हो, तो सूई निकल जाएगी।

घाव भरने का मंत्र

सार-सार विजैसार सार बांधूं सात बार, फूटे अन्न उपजे घाव, सार राखे श्री गोरखनाथ।

इस मंत्र को 31 बार पढ़कर घाव पर फूंक मारने से पीड़ा नहीं होती तथा घाव भी भरने लगता है।

नकसीर का मंत्र

ॐ नाम आदेश गुरु को सार-सार महासार सार बांधूं
सातवार अणी बांध तीन बार लोही की सीर बांधूं सीर बांधे
गोरखनाथ पाके न फूटे तुरत सूखे शब्द सांचा पिंड कांचा
फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

ग्रहण के दिन 11,000 की संख्या में जपने से मंत्र सिद्ध हो जाता है। उक्त मंत्र से विभूति (भस्म) को 31 बार अभिमंत्रित कर रोगी की नाक पर लगाने से खून बहना बन्द हो जाता है।

पसली का मंत्र

सत्य नाम आदेश गुरु को ॐ संखारी-संखारी कहां गया सब पर्वतों गजा सवा लाख पर्वतों जाए कहां करेगा सवा भा[illegible]ोयला कर रहा करेगा हनुमंत वीर नव चन्द्रहास खंड खड़ग नव चन्द्रहास खंडगढ करेगा जातया डरू पसली बाय काय कूट खारी नाखैया तगत गुरु शक्ति मेरी शक्ति फुरो मंत्र गोरखनाथ वाचा।

पहले 31 हजार जपकर सिद्ध करें, फिर तिल का तेल लेकर उससे झाड़ा लगावें।

योगिनी मंत्र

जंगल की योगिनी पाताल के नाम उठ गढ़ मेरे वीर उस स्त्री का नाम आओ मेरे पास जहां-जहां जाए मेरे सलाई तहां-तहां अब कजभरी नजभरी अगरी तक नफ एक फूंक मंत्र ईश्वरो वाचा। मेरे गुरु का वचन सांचा जो न जाए वीर गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

इस मंत्र का काली मिट्टी की पुतली पर 1,108 बार जप करें, हर मंत्र पर पुतली में एक फूंक मारें, तो वशीकरण अवश्य होगा।

कीड़ा झाड़ने का मंत्र

उद्दद मुद्दद जल्ल जलाल पकड़ चोरी धड़ पछाड़ भेज कुद्दा लाओ मुद्दा यकहु हारौ या कहु हारौ।।

चौराहे की 7 कंकड़ियों को इस मंत्र द्वारा 31 बार अभिमंत्रित करके मारें और कहें कि "कीड़ा गया" इस प्रयोग से कीड़े झड़ जाते हैं।

कुत्ता काटे का झाड़ा

ॐ नमो कामरू देश कामक्ष्या देवी जहां बसे इस्माइल जोगी इस्माइल जोगी ने पाली कुत्ती दश काली दश कावरी दश पीली दश लाल इसको विष हनुमान हरे रक्षा करे गुरु गोरखनाथ शब्द सांचा पिण्ड कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

ग्रहण के दिन 11,000 की संख्या में जपने से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। इस मंत्र से अभिमंत्रित भस्म रोगी को खिला देने और मल देने से वह ठीक हो जाता है।

महालक्ष्मी का मंत्र

श्री शुक्ले महाशुक्ले कमल दल निवासे भी महालक्ष्मी नमो नमः लक्ष्मी माई सत की सवाई आओ चेतो करो भलाई, भलाई ना करो तो सात समुद्रों की दुहाई, ऋद्धि उखगे तो नौ नाथ चौरासी सिद्धों गुरु गोरखनाथ की दुहाई।

जब भी व्यापारी अपनी दुकान को खोले तब दुकान की गद्दी पर बैठकर पहले उपरोक्त मंत्र की एक माला जप ले, तत्पश्चात् लेन-देन के काम करे, तो उसे पर्याप्त लाभ होगा तथा धन की भी वृद्धि होगी।

अन्नपूर्णा का मंत्र-2

ॐ नमो अन्नपूर्णा अन्नपूरे घृतपूरे गणेश देवता पाणी पूरे ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीन देवता मेरी भक्ति गुरु की शक्ति गुरु गोरखनाथ की वाचा फुरे।

पहले 1,25,000 की संख्या में मंत्र का जप करें। जो सामग्री हो, उसमें से अन्नपूर्णा का भोग रखें-फिर एक भाग कुएं में डालकर, वहां से पानी की लुटिया भरकर लाएं। फिर दीपक जलाकर भोजन रखने के स्थान में अन्नपूर्णा का ध्यान कर एक माला मंत्र की जपकर, ब्राह्मणों को भोजन कराएं, तो भण्डार में भोजन सामग्री की कभी कमी न पड़ेगी।

शत्रु वशीकरण

निम्न मंत्र को शुक्ल पक्ष के सोमवार के दिन उल्लू की चोंच पर 1,108 बार जप कर दुश्मन के मस्तक पर डाल दें। दुश्मन बड़ी-से-बड़ी शत्रुता भुलाकर वश में होता है।

ॐ नमो महापंखेश्वरी आगच्छ-आगच्छ अतुल बल पराक्रमाय सर्वकामना मम वश कुरु-कुरु मंत्रेश्वरी औता ठः फट् स्वादा।।

गड़ा धन प्राप्त करने का मंत्र

पृथ्वी में गड़ा धन प्राप्त करने का मंत्र अग्र प्रकार है—

ॐ नमो सत्तर सौ पीर, चौंसठ सौ योगिनी। बावन सौ वीर, बहत्त सौ भैरों। तेरह सौ तन्त्रा, चौदह सौ मन्त्रा। अठारह सौ परबत, सत्तर सौ पहार। नौ सौ नदी, निन्यानबे सौ नाला। यति हनुमन्त गोरखनाथ रखवाला। कांसे की कटोरी-चार अंगुल चौड़ी, कहौ वीर! कहां से चलाई? गिरनार परबत से चलाई। अठारह भार वनस्पता, चल लोना चमारिन-वाचा फूटे। काली कुम्हारी चाक ज्यों-ज्यों फिरे, कहां-कहां जाय? चण्डाल के घर जाय, चोर के घर जाय। तिहां लावे चोर को, चण्डाल को। गड़ा धन बताय। चल-चल रे हनुमन्त वीर! जहां चले, वहां रहे। न चले, तो गंगा-जमुना उल्टी बहे। न

चले, सो सीता माता की छाती, अञ्जनी मैया के सिर पर पैर रखे। सत् के हनुमान होवे, तो चोर के गाड़े धन के पास ठहरावे। दुहाई रामचन्द्र के।

सर्वप्रथम एक चांदी की कटोरी ले लें। कटोरी की विधिवत् प्राणप्रतिष्ठा करें। 250 ग्राम काले उड़द (साबुत) प्राण प्रतिष्ठित करें। इसके पश्चात अभिमंत्रित साबुत काले उड़द को कटोरी पर मारें। कटोरी धीरे-धीरे खिसकने लगेगी, उड़द मारते रहें, जहां कटोरी रुके वहीं पर गड़ा धन होगा। इस प्रयोग को करने से पहले मंत्र, उड़द और कटोरी तीनों को सिद्ध कर लें, प्रयोगकर्त्ता सुरक्षा कवच पहनकर रहे, सुरक्षा के लिए निम्न मंत्र का प्रयोग कर सकते हैं—

मोहम्मद चले दिसावरा, चारों रस्ते चाक-चौबन्द। बिच्छू-ततैया, सांप-कुत्ते, चोर-जार, ठग-लुटेरे, दुर्घटना वगैरा सबका रास्ता और मुंह बन्द-'अमुक' दिन के लिए। कहै 'कबीर' धर्म पास से संग जिनके सत्य पुरुष हों। दुहाई सांचे नाम की है।

प्रिय साधको! जन्म से कोई तांत्रिक होता ही नहीं, आज तक नहीं हुआ। वे सब आपके जैसे ही थे, अपने कार्यों से, संघर्ष से तांत्रिक बने। अगर आपमें संघर्ष करने की क्षमता है तो आप भी बन सकते हैं और सुखी भी रह सकते हैं। दो हजार, पांच हजार वर्ष तक भी अगर आप में साधना करने की क्षमता है, अगर आप निर्भीक हैं और चुनौतियों को सामने बुलाते हैं, हर समय चुनौतियों का सामना कर सकते हैं, तो मैं कहता हूं आप तांत्रिक बन सकते हैं। आप इच्छा तो करिए। जिसकी इच्छा है ही नहीं, वह तो मरा हुआ है, आपमें इच्छा ही नहीं है, साधना करने की भावना ही नहीं है और जब इच्छा नहीं होती तो आदमी मर जाता है, जिंदा होते हुए भी मर जाता है। तांत्रिक को जब दीक्षा दी जाती है तो कहा जाता है-जा मर जा। यह नहीं कहा जाता तू सुखी रह, सम्पन्न रह, सफल हो। ऐसा आशीर्वाद नहीं देते हैं। जब दीक्षा देते हैं तो कहते हैं—तू मर जा। आज तक जितना तुम्हारे भीतर भय था, समस्याएं थीं, बाधाएं थीं, उन्हें मार मार देता हूं। मैं तुम्हें जीना सिखा देता हूं। तुम्हें ही क्यों तुम औरों को भी जीवन दे सको वह शक्ति देता हूं। विजय का अर्थ है कि जो आपके जीवन में समस्याएं हैं उन पर सफलता प्राप्त होनी चाहिए। अभी वह क्षमता प्राप्त हुई नहीं है आपको, क्योंकि उस साधना के बल को प्राप्त नहीं कर पाए आप, बल छोड़ो गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए

आप। जब गुरु को भी प्राप्त नहीं कर पाए तो देवता कहां से आपके जीवन में आ पाएंगे? इसलिए आपको विजय की आवश्यकता है, आपको संघर्ष करने की जरूरत है, आपको निर्भय होने की आवश्यकता है, आपको निडर होने की जरूरत है और आपकी जो भी इच्छा है उसको पूरा करने की जरूरत है और प्रत्येक व्यक्ति के मन में इच्छा चाहिए। क्योंकि वह तांत्रिक अपने प्रति होना चाहिए, साधनामय होना चाहिए और आप जीवन में सफलता प्राप्त कर पाएं और निश्चय ही आप जीवन में विजयी हो पाएं, साधना का बल प्राप्त कर पाएं, पूर्ण रूप से सफल हो पाएं-ऐसा ही मैं आपको आशीर्वाद दे रहा हूं। आशीर्वाद इसलिए क्योंकि आप मेरे अपने हैं।

आप जीवन में धन चाहते हैं और मैं कहता हूं कि आपको धनवान होना ही चाहिए। मैं कहता हूं कि इतना अधिक होना चाहिए कि आप गिनते-गिनते थक जाएं।

मैं त्यागी नहीं हूं कि आपको कहूं कि धन त्याग दो, सब कपड़े खोल देना चाहिए। मैं ऐसी सलाह आपको नहीं दे रहा हूं। मैं कह रहा हूं आपके पास बहुत वैभव होना चाहिए, बहुत मकान होने चाहिए। ऊंची गाड़ी होनी चाहिए, आपको धनवान होना चाहिए क्योंकि आप मेरे शिष्य हैं, धन होना चाहिए, यश होना चाहिए, मान, पद-प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य होना चाहिए और वह सब कुछ साधना के बल से प्राप्त हो सकता है, आपके प्रयत्नों से प्राप्त नहीं हो सकता। आपके प्रयत्नों से प्राप्त होता तो अब तक आप करोड़पति होते, क्योंकि प्रयत्न करने में आप कमी करते ही नहीं।

दिनभर परिश्रम करते रहते हैं। प्रत्येक प्रकार से प्रयत्न करते हैं, कोई वस्तु छोड़ते नहीं आप। मगर उसके बावजूद भी आप उतनी ही तकलीफ में बंधे रहते हैं। चाहे तकलीफ पुत्र की हो, चाहे पुत्री की, चाहे पत्नी की, जिसे आप विवाह करके लाए।

सभी आपसे कुछ-ना-कुछ चाहते हैं। साधना के मार्ग में सहायक नहीं अवरोध उत्पन्न करते हैं। आपके जीवन में राग रंग, भोग, यश, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, सुख सभी होना चाहिए। यह संभव है केवल साधना के द्वारा। नवरात्र के समय पर आप नौ दिन नौ गुलाब की अगरबत्ती और अष्टमी के दिन दुर्गा को मिट्टी का अर्पण करके देखें। मैं क्या बोलूं, आप स्वयं बोलेंगे।

इस बार मैं एक बार फिर गुड़िया (डोल) के द्वारा सम्पन्न की जाने वाली साधना बता रहा हूं। अप्सराएं अपनी अतृप्त आकांक्षाओं एवं वासनाओं की पूर्ति के लिए प्रायः साधकों को परेशान करती हैं। किसी व्यक्ति पर भूत आदि का प्रकोप हो जाने अथवा किसी घर में दुष्टात्मा का वास हो जाने से भुक्तभोगी व्यक्ति का जीवन एकदम नरक समान हो जाता है, अस्त-व्यस्त हो जाता है, उसकी हरकतें, आदतें, इच्छाएं एकदम बदल जाती हैं, अमानवीय हो जाती हैं।

कई बार तो एक व्यक्ति के ऊपर सौ से भी अधिक आत्माएं डेरा जमा लेती हैं, उस व्यक्ति के शरीर के माध्यम से अपनी इच्छाओं की पूर्ति का प्रयास करती हैं। इनका समाधान भगवान मोम की गुड़िया की साधना से किया जा सकता है। मोम की गुड़िया किसी साधक को कष्ट नहीं देती है। इसके अलावा कई बार टोने-टोटके जैसी घृणित क्रियाओं को अपनाकर कुछ घटिया लोग अच्छे-भले, सीधे-सादे लोगों को कुछ खिला-पिला देते हैं अथवा तंत्र प्रयोग करवा देते हैं। तंत्र के इन कुकृत्यों से उस भले-चंगे व्यक्ति का जीवन बर्बाद हो जाता है, अच्छा-भला बर्बादी की कगार पर पहुंच जाता है। ईर्ष्यावश आजकल इस प्रकार के लोग सरलतापूर्वक करवा देते हैं, यह निश्चय ही अनैतिक व निन्दनीय कार्य है, परन्तु इसका समाधान भी मोम की गुड़िया से हो सकता है।

तंत्र ही वह क्रिया है, जिसके द्वारा जीवन को सुव्यवस्थित किया जा सकता है। मोम की गुड़िया की यह साधना इन सबका ही समाधान है। आज से कुछ वर्ष पूर्व जब मैं मिन्ही के साथ गोवा जाने के लिए मुम्बई में था, तो एक महिला मिन्ही के पास आई और तंत्र साधना करने की बात सुनाई। मिन्ही ने पूछा, क्या कुछ कर सकती है?

हां। अवश्य! पर धन मेरे पास नहीं है, मन मेरे वश में नहीं है और तन मेरे पति का, शेष सब कुछ मैं तंत्र के लिए अर्पित कर सकती हूं। मिन्ही ने मुस्कराकर मेरी ओर देखा, मैं भी मुस्कराकर चुप रह गया। मोम की गुड़िया की साधना के लाभ इस प्रकार हैं—रोग-नाश, आय के साधन बनाने के लिए, ग्रहदोष समाप्ति, तांत्रिक प्रयोग नष्ट करने हेतु, मुकदमेबाजी, विश्वासघात, चिंता-मुक्ति, व्यापार-बाधा, शत्रु-नाश, शीघ्र विवाह के लिए यह उत्तम प्रयोग है।

यह रात्रिकालीन साधना है। प्रयुक्त सामग्री प्राण प्रतिष्ठित होनी चाहिए, इसमें मोम की गुड़िया तथा गार्नेट की माला और मजमूहे के इत्र की आवश्यकता पड़ती है। यह साधना गुरुवार की रात्रि से प्रारंभ करनी है। साधक को चाहिए कि अपने सामने एक चौकी पर चमकीला लाल वस्त्र बिछाकर कामिया सिन्दूर से रंगे हुए चावलों से एक ढेरी बना लें। ढेरी पर गुड़िया को स्थापित करें। दाहिने हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना कहकर जल भूमि पर छोड़ दें। इसके पश्चात सुरक्षा कवच धारण करें। मेरे प्रिय साधक बार-बार सोचते होंगे कि गुरुजी बार-बार अप्सरा, डोल की साधना क्यों बतलाते हैं? मैंने भी मिन्ही से यही प्रश्न किया था।

मुझे बार-बार तुम्हारी आवश्यकता क्यों पड़ती है? तब मिन्ही ने मुझे रंभा की बात सुनाई थी—हे मुनिवर! जिस बाला के स्तन उन्नत हों, जिसके शरीर पर सुगंधित चन्दन का लेप किया गया हो। जिसके नयन चंचल और चपल हों, जो स्त्री अपने यौवन के भार में मस्त हो, जो शीलवती, गुरु-आज्ञा में रहने वाली हो उसका अगर किसी पुरुष ने प्रेमपूर्ण प्रणय निवेदन ना किया हो तो उसका जीवन सर्वथा व्यर्थ जाता है। गुरु का प्राप्त होना गोविन्द की कृपा से संभव है और गुरु कृपा से गोविन्द की प्राप्ति संभव है। आइए आपको मंत्र बतलाते हैं—

ॐ ह्रीं श्रीं त्रिभुवन-स्वामिनी, महा-देवी, महा-शक्ति!
लल लल हं हः सिद्धि देहि कुरु-कुरु ह्रीं नमः।

उत्तराखण्ड में भटकते हुए एक रात मिन्हीं ने मुझे अत्यन्त प्रेम और विश्वास के साथ कहा था, कुशोक! मोम की गुड़िया को साथ रखकर तंत्र साधना करने से उस घर में निरन्तर धन की वर्षा होती रहती है। साधना के समय में अप्सरा के रूप में आह्वान करते हुए उसे प्रेयसी शब्द से सम्बोधित किया जाए, तब वह अद्वितीय सिद्धि श्रेष्ठ और सम्पन्नता प्रदान करती है। इसकी साधना से निम्न लाभ स्वतः प्राप्त होने लगते हैं—आर्थिक बाधाएं दूर होती हैं और लाभ प्रारम्भ होते हैं। नौकरी में आने वाली कठिनाइयां दूर होती हैं। अगर पदोन्नति में बाधा हो तो वह दूर होती है। अगर व्यापार में वृद्धि से सम्बन्धित कठिनाइयां हों तो वह कठिनाइयां दूर होती हैं। जीवन के समस्त शोक समाप्त होते हैं। समाज में सम्मान व यश प्राप्त होता है। पूर्ण पुरुषत्व प्राप्त होता है, अगर पत्नी, संतान से सहयोग न मिल रहा हो तो सहयोग प्राप्त

होने लगता है। केवल-और-केवल समर्पण के द्वारा ही साधना द्वारा सिद्धि को प्राप्त किया जा सकता है। जहां तर्क, बुद्धि मध्य में आ जाती है वहां साधना में रुकावट आ जाती है। वास्तव में साधना एकत्व दिलाने के लिए ही होती है। साधना क्रियाएं किसलिये होती हैं, वे बातें केवल वे ही जान सकते हैं, जिनमें विश्वास होता है। साधक का कार्य केवल समर्पण भाव से आज्ञा-पालन करना है। समर्पण में वह शक्ति है जो सिद्धि को विवश कर देती है अपने साधक का उद्धार करने हेतु। जो युवक साधक बनना चाहे, वह सेवाभावी हो, उसके मन में मानवीय मूल्य विद्यमान हों, साधक केवल साधना करता रहे, परन्तु काफी समय बीतने पर भी साधना के विषय में एक भी शब्द न कहे और इस प्रकार की चर्चा चलने पर उसे टालता रहे, इतना होने पर भी उसकी साधना में या भावना में किसी प्रकार की कोई न्यूनता न आए। ऐसा ही युवक सच्चा साधक बन सकता है।

संपूर्णता की ओर...

लीजिए एक और पुस्तक संपूर्ण हो गई। अब मुझे प्रतीक्षा है आपकी प्रतिक्रियाओं और अनुभवों की। इस पुस्तक के लेखन में मैंने इस बात का सदैव ध्यान रखा है कि पहला ज्ञान वह है जो 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' हो, दूसरे ज्ञान किसी की बपौती नहीं है। तंत्र विद्या पर जितना मेरा अधिकार है, उतना ही आपका भी है। इसे व्यवहार में लाने के लिए आप पूरी तरह स्वतंत्र हैं। आपमें और मुझमें अंतर केवल इतना है कि मैंने तंत्र विज्ञान को गुरु के समीप रहकर सीढी-दर-सीढ़ी सीखा है। गुरु का प्यार पाया है और गुरु का क्रोध भी सहा है। एक तरफ भैरवी चक्र में रहा तो दूसरी ओर मां काली के मंदिर में कठोर साधना की। वास्तव में मेरी पुस्तक में जो कुछ भी है, वह गुरु प्रदत्त और मेरी अपनी अनुभूतियां हैं।

तंत्र-विज्ञान हमारा गौरव है। इसे पुनः स्थापित करने के लिए हम जो कुछ कर सकते हैं, करना चाहिए। यह इस युग की आवश्यकता है और मानव समाज की सेवा है। इसमें दिए गए प्रयोग करने के लिए हैं, पर उनका प्रयोग ईर्ष्या, अहंकार अथवा लोभवश करने से पाप लगता है। किसी को सुख देने के लिए किया गया प्रयोग निःसंदेह हमारा कल्याण करता है।

मेरा यह निवेदन है कि आप इस पुस्तक में लिखे गए शाबर प्रयोग व्यवसाय के रूप में न करें। व्यवसाय के मापदंड अलग हैं और तंत्र मार्ग के मापदंड अलग हैं, जैसाकि आप जानते हैं ज्ञान को, साधना को व्यवसाय के रूप में अपनाने पर हमारा लक्ष्य पूर्ण हो जाता है और इस लोभ के लिए हम सेवा को भूलकर स्वार्थी बन जाते हैं।

धन कमाना कोई बुरी बात नहीं है, पर वह धन पुरुषार्थ, परिश्रम और ईमानदारी से कमाया गया हो। तंत्र मार्ग में समझौता करने वाला लचीलापन नहीं है। वह तो समाज को समर्पित है, वहां मूल्य अविचल नहीं है। व्यक्ति या युग की स्थिति को देखकर उनमें परिवर्तन किया जाता है। वेद ज्ञान सनातन है, इसलिए शाश्वत है। उसमें विकार की संभावना है ही नहीं।

तंत्र मार्ग समझौतावादी बिल्कुल नहीं है, पर देश, काल और परिस्थिति को देखकर कभी-कभी समझौता कर लेता है। आप स्वयं अनुभव करें, आज के तांत्रिक ने तंत्र को कितना छला है, कितना दोहन किया है, पर तंत्र आज भी सुफल प्रदान कर रहा है और करता रहेगा।

आज के तांत्रिक ने वेश बदलकर, चमकीले लाल, काले वस्त्र पहनकर आडंबर रचा है। क्या कभी आपने पुस्तकों के अंतिम पृष्ठ पर छपे अनेक मालाधारी, राम नामी चादर ओढ़े, मस्तक पर बड़ा-सा तिलक लगाए तांत्रिकों को देखा है, अगर देखा है तो क्या कभी उनके कार्यालय जाकर उनकी वास्तविक स्थिति देखी है? घर या कार्यालय में वे अत्यंत साधारण इंसान दृष्टिगोचर होंगे। जब वे साधारण हैं तो असाधारण बनने का ढोंग क्यों?

तांत्रिक सामान्य होता है, सदाचारी होता है, पाखंड, आडंबर, प्रदर्शन, विज्ञापन से दूर रहता है। उसका जीवन साधना कक्ष से शुरू होता है और वहीं आकर संपूर्ण होता है। जो व्यक्ति असामान्य होता है, असाधारण होता है, नित नए पाखंड रचता है, आडंबर करता है। विज्ञापन द्वारा लोगों को भ्रमित करता है। वह और कुछ भी हो सकता है, किंतु तांत्रिक नहीं हो सकता।

हमारे तांत्रिक चिंतन में 'काम' काम को मुक्ति की ओर ले जाता है। वहां रतिक्रिया एक पवित्र यज्ञ है। योग-ध्यान के आसनों के समान ही काम कला के आसनों की व्याख्या तंत्र में की गई है, जिनमें से अनेक मिथुन मूर्तियों के रूप मे उत्कीर्ण किए गए हैं। इनमें कामोत्तेजना की अभिव्यक्ति के साथ-साथ असंख्य प्रकार के आलिंगन दिखाए गए हैं। वज्रयान और सहज संप्रदाय की विचारधाराओं के अनुसार वियोग नहीं, अपितु इस योग द्वारा प्राप्त पूर्णता ही जीवन का उद्देश्य है। यह मूर्तियां मिथुन का आध्यात्मिक महत्त्व प्रतिपादित करती हैं। प्रतीक भाषा के विज्ञ जन मिथुन को आत्मा और ब्रह्म के तादात्म्य का प्रतीक मानकर बात समाप्त कर देते हैं। तंत्र उन्हें प्रतीक मानकर

क्रियात्मक व्यवहार में ढालने की बात करता है। तंत्र विज्ञान का क्रियात्मक रूप यहीं से आरंभ होता है।

तंत्र मार्ग में अनेक स्त्रियों के नामों के विवरण मिलते हैं—बौद्ध वज्रयान में प्रज्ञा, नैरात्मा, नैरामणि अथवा शून्यता, सहज में दोम्बी, चांडाली, रजकी, नटी, कैवर्तकी, नाथ संप्रदाय में शबरी और अवधूतिका, तांत्रिकवाद में योगिनी और कुल-कुंडलिनी शक्ति, आदि। तंत्र की भाषा में ये स्त्रियां साधना कराने वाली भैरवी मानी गई हैं। तंत्र के अनुसार इन नारियों का अपना अलग महत्त्व है। नारियों को पूज्या कहकर तांत्रिकों ने तंत्र में व्यभिचार को बचाने की चेष्टा सामाजिक दृष्टिकोण से की है, परंतु क्रियात्मक रूप से नारी ही पुरुष की 'शक्ति' है। मेरे इस कथन का ताप्तर्य यह न समझें कि तांत्रिक व्यभिचार की ओर उन्मुख हुआ और नारी एक 'शक्ति' का रूप न रहकर मात्र उपभोग की वस्तु रह गई, तंत्र का पतन प्रारंभ हो गया था।

यहां एक बात समझने की है कि जब हम यह कहते हैं कि भोग हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, वहीं हमें यह भी ध्यान रखना है कि उस 'आनंद का अधिकारी दूसरा भी है', हम अपने आनंद के लिए दूसरे को पीड़ित नहीं कर सकते। अपना आनंद लेते समय दूसरे के आनंद का ध्यान रखना भी हमारा कर्तव्य हो जाता है। 'तंत्र' सत्य की अनुभूति के लिए यौन भावना की साधनात्मक क्रियाओं में परिवर्तित करके, अतिश्रेष्ठ, शाश्वत और अविनाशी योग का उद्भव लैंगिकता से करता है। लैंगिक नैतिकता के संदर्भ से सहज-सिद्धि और नाथ संप्रदाय ने वज्रयान के स्त्री-प्रतीक की रहस्यवादी अंतदृष्टि और शक्ति के दृष्टिकोण से पुनर्व्याख्या की ओर केवल साधना पर बल दिया। गुरु गोरखनाथ बराबर इस बात पर बल देते रहे हैं कि शाबर मंत्र साधना के लिए योग और साधना का बल आवश्यक है। भोग पर किसी का बस नहीं, भोग की कोई जाति, धर्म या अवस्था नहीं। कभी भी किसी से भी हो सकता है। एक बार जब हो गया, तो किसी भी प्रकार के बंधन पसंद नहीं करता। सच तो यह है पाबंदियों में प्यार अधिक गहरा होता है। तंत्र मार्ग में कामकुंठा से मुक्ति पाने के लिए आकर्षण, सम्मोहन और वशीकरण ये तीन प्रयोग किए जाते हैं, किंतु इन तीनों में अंतर है और जैसा इनका प्रभाव और स्वभाव है वैसा ही काम करते हैं। कोई किसी से विमुख है, या किसी अन्य कार्य में व्यस्त है, उस पर आकर्षण प्रयोग किया जाता है। जब उसकी हमारे

प्रति स्नेह की इच्छा होने लगे, तो सम्मोहन का प्रयोग अगले चरण में करना चाहिए।

गोरखनाथ जैसे सिद्धों ने हमारे ऊपर बहुत उपकार किया है कि उन्होंने इस गूढ़ और जटिल विज्ञान को साधारण व्यक्ति के लिए उपयोगी रूप दे दिया। शाबर मंत्रों का रूप विविध भी है और विचित्र भी। विविध इसलिए कि एक मंत्र में अनेक शैलियों का समावेश मिल सकता है और विचित्र इसलिए कि इसमें शुद्ध बीज मंत्रों के साथ ग्रामीण भाषा की शब्दावली स्पष्ट रूप से रहती है।

तंत्र विज्ञान के विषय में कहा जाता है कि तंत्र मैथुनजन्य है। तांत्रिक मुक्त रूप से पांच मकारों का सेवन करता है। पंच मकारों के सेवन के कारण वह अपना ज्ञान खो बैठता है और व्यभिचारों में लिप्त हो जाता है।

तंत्र नारी-पुरुष के योग (जननांगों के मिलन) से आरंभ होकर साधक के अर्धनारीश्वर बन जाने तक के लिए प्रयोग में लाया जाता है। उसके पश्चात साधक को संभोग की आवश्यकता नहीं रहती। ऐसा अर्धनारीश्वर (अपना वीर्य अपने भीतर स्वयं ही बिना संभोग के चढ़ा लेने की विधि में अभ्यस्त हो जाने के कारण) तंत्र साधक ही सच्चे अर्थों में पुरुष कहलाने योग्य है, चूंकि उसे नारी के पीछे भागने की आवश्यकता नहीं होती, नारी जब चाहे उसके पास आ सकती है। ऐसा नारी नचाने वाला साधक नारी-नटेश्वर कहलाता है। रुद्र ने अपनी संस्कति का चिन्ह ध्वज लिंग और योनि का सम्मिलित रूप माना, जो शिव लिंग नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह लिंग योनि में ऊपर से प्रविष्ट हुआ नहीं दिखाया, चूंकि यह एक ऐसा लिंग है जो ऊर्ध्वगति करता है (अर्थात वीर्य की अधोगति नहीं करता)। वीर्य की अधोगति करने वाला लिंग तो सर्वनाशी बन जाएगा, फिर वह शिवलिंग कहां रहेगा? ऐसे उर्ध्वमुखी लिंग को वासना मुक्त बनाए रखने के लिए उसकी साधना बेलपत्र से की जाती है। आप स्वयं देखें बेलपत्र आयुर्वेद के विश्वास से काम-वासना शांत करने वाले हैं। लिंग पूजा में लिंग के ऊपर जल की धारा प्रवाहित करने का भी महत्त्व है, जो साधक लिंग मुंड पर जल धारा डालता है, उसका जननेन्द्रिय संस्थान शक्तिशाली बनता है, यही नियम योनि के विषय में भी लागू होता है। लिंग को अधिक-से-अधिक योनि के संपर्क में रखने के लिए लिंग का सशक्त होना अनिवार्य है। यह शक्ति जल की धारा देती है।

यहां मेरा उद्देश्य काम भाव को स्थापित करना नहीं है। मैं तो केवल काम

ज्ञान के रहस्य परत-दर-परत खोलता जा रहा हूं, अब मैं केवल शाबर मंत्र तक सीमित रहकर अपनी बात संपूर्ण करूंगा।

कोई भी कह सकता है कि तंत्र-शास्त्र (शाबर) तो आधुनिक हैं, वेद-मंत्र अनादि है, उसमें इनका वर्णन असंगत है, परंतु भारतीय तंत्र ज्ञान में यह निश्चित है कि कोई वस्तु नवीन नहीं है। अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती। कारण से पृथक कार्य की प्रतीति केवल भ्रम मात्र है, इसलिए शाबर मंत्रों में सर्व-साधारण का कल्याण प्राचीनकाल से बन रहा है। परतंत्र रहने के कारण तंत्र की अवनति हुई, उसकी महत्त्वपूर्ण 'मंत्र विद्या' का विकास भी रुक गया। 'शाबर मंत्र' को कुछ तो अज्ञानवश, कुछ अपना एकाधिकार बनाए रखने के लिए तांत्रिकों ने छिपाया। छिपाते-छिपाते यह दशा हुई कि आज यह विद्या ही लुप्त हो चुकी है। सामान्य लोगों की श्रद्धा इस विद्या पर से उठ गई। लोगों को विश्वास ही नहीं होता कि इन अटपटे मंत्रों द्वारा जनसाधारण की इच्छाओं की पूर्ति संभव है।

यह बात ठीक है कि आज हर व्यक्ति को विपुलता चाहिए, संपन्नता चाहिए। अपना ही नहीं, दूसरों का भी सुनहरा भविष्य चाहिए, अन्यथा जीवन ही अर्थहीन बन जाएगा। काल का प्रभाव कितना प्रबल है कि दुख को सुख समझ लिया गया है। चिंताएं और तनाव इच्छाओं ने उत्पन्न किए हैं, उनसे हम सरलता से मुक्ति पा सकते हैं—कैसे?

पढ़िए। मेरी यह पुस्तक जो आपके लिए ही विशेष रूप से लिखी गई है। मेरी गोरखनाथ से प्रार्थना है कि वह आपको इन प्रयोगों के उचित प्रयोग में सफलता प्रदान करें। मैं जैसा हूं, आपकी सहायता के लिए सदैव प्रस्तुत हूं। कोई प्रयोग करने पर सफलता न मिले, तो निराश होने की बिल्कुल आवश्कता नहीं है, दूसरा कीजिए, उसे ही दोहराइए, सफलता मिलनी ही है। किया गया काम कभी भी निष्फल नहीं जाता, फिर यही कैसे जा सकता है?

मेरा निवेदन है कि पुस्तक आद्यांत पढ़ी जाए, क्योंकि आपके किसी प्रश्न का उत्तर संभव है, कहीं पर मिल जाए।

सुभाशीर्वाद

श्री सिद्ध गोरख चालीसा

।।दोहा।।

गणपति गिरजा पुत्र को सुमरूं बारंबार।
हाथ जोड़ विनती करूं शारदा नाम आधार।।

।।चौपाई।।

जय जय गोरख नाथ अनिवासी।
कृपा करो गुरु देव प्रकाशी।।
जय जय जय गोरख गुण ज्ञानी।
इच्छा रूप योगी वरदानी।।
अलख निरंजन तुम्हरो नामा।
सदा करो भक्तन हित कामा।।
नाम तुम्हारा जो कोई गावे।
जन्म जन्म के दुःख मिट जावे।।
जो कोई गोरख नाम सुनावे।
भूत पिशाच निकट नहीं आवे।।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे।
रूप तुम्हारा लख्या न जावे।।
निराकार तुम हो निर्वाणी।
महिमा तुम्हरी वेद न जानी।।
घट घट के तुम अंतर्यामी।
सिद्ध चौरासी करें प्रणामी।।
भस्म अंग गल नाद विराजे।
जटा शीश अति सुंदर साजे।।

तुम बिन देव और नही दूजा।
देव मुनि जन करते पूजा।।
चिदानन्द सन्तन हितकारी।
मंगल करण अमंगल हारी।।
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी।
गोरख नाथ सकल प्रकाशी।
गोरखनाथ सकल प्रकाशी।।
गोरख गोरख जो कोई ध्यावे।
ब्रह्म रूप के दर्शन पावे।।
शंकर रूप धर डमरू बाजे।
कानन कुंडल सुंदर साजे।।
नित्यानन्द है नाम तुम्हारा।
असुर मार भक्तन रखवारा।।
अति विशाल है रूप तुम्हारा।
सुर नर मुनि जन पावें न पारा।।
दीन बन्धु दीनन हितकारी।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी।।
योग युक्ति में हो प्रकाशा।
सदा करो सन्तन तन वासा।।
प्रातःकाल लें नाम तुम्हारा।
सिद्धि बढ़े अरू योग प्रचारा।।
हठ हठ हठ गोरक्ष हठीले।
मार मार बैरी के कीले।।
चल चल चल गोरख विकराला।
दुश्मन मार करो बेहाला।।

जय जय जय गोरख अविनाशी।
अपने जन की हरों चौरासी।।
अचल अगम है गोरख योगी।
सिद्धि देवो हरो रस भोगी।।
काटो मार्ग यम को तुम आई।
तुम बिन मेरा कौन सहाई।।
अजर अमर है तुम्हरी देहा।
सनकादिक सब जोरहि नेहा।।
काटिन रवि सम तेज तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।
योगी लखे तुम्हारी माया।
पार ब्रह्म से ध्यान लगाया।।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे।।
अष्टसिद्धि नव निधि घर पावे।।
शिव गोरख है नाम तुम्हारा।
पापी दुष्ट अधम को तारा।।
अगम अगोचर निर्भय नाथा।
सदा रहो सन्तन के साथा।।
शंकर रूप अवतार तुम्हारा।
गोपी चन्द, भरथरी, को तारा।।
सुन लीजो प्रभु अरज हमारी।
कृपा सिन्धु योगी ब्रह्मचारी।।
पूर्ण आस दास की कीजे।
सेवक जान ज्ञान को दीजे।।
पतित पावन अधम अधारा।
तिनके हेतु तुम लेत अवतारा।।

अलख निरंजन नाम तुम्हारा।।
अगम पन्थ जिन योग प्रचारा।।
जय जय जय गोरख भगवाना।
सदा करो भक्तन कल्याना।।
जय जयं जय गोरख अविनाशी।
सेवा करे सिद्ध चौरासी।।
जो ये पढ़हि गोरख चालीसा।
होय सिद्ध साक्षी जगदीशा।।
हाथ जोड़कर ध्यान लगावे।
और श्रद्धा से भेंट चढ़ावे।।
बारह पाठ पढ़ें नित जोई।
मनोकामना पूर्ण होई।।

।।दोहा।।

सुने सुनावे प्रेम वश, पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना, पूरे गोरखनाथ।।
अगम अगोचर नाथ तुम, पारब्रह्म अवतार।
कानन कुण्डल सिर जटा, अंग विभूति अपार।।
सिद्ध पुरुष योगेश्वरो, दो मुझको उपदेश।
हर समय सेवा करूं, सुबह शाम आदेश।।
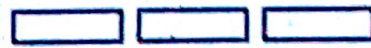
भगवान शिव के अंशावतार गुरु गोरखनाथ शाबर मंत्रों के रचयिता थे। गुरु गोरखनाथ द्वारा विरचित शाबर मंत्र अत्यंत सहज, सरल और चमत्कारी हैं जो अपने अंदर अथाह शक्ति का भंडार समेटे हुए हैं। शाबर मंत्रों, यंत्रों व टोटकों का प्रभाव अत्यंत तीव्र होता है। इनकी शक्ति के सामने दुष्प्रवृत्तियां, दुरात्माएं और दुर्भाग्य ठहर नहीं पाते। प्रस्तुत पुस्तक 'गोरखनाथ विरचित दुर्लभ शाबर मंत्र' में यंत्र और तंत्र के मर्मज्ञ विद्वान लेखक तांत्रिक बहल ने इस गूढ़तम विद्या के रहस्यों पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

राजा पॉकेट बुक्स

330/1, बुराड़ी, दिल्ली-110084, फोन : 27611410, 27612036